संस्कृत विभाग
वार्षिक रिपोर्ट 1988-89

Department of Culture
Annual Report 1988-89

भाग 2
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार

Part 2
Ministry of
Human Resource Development
Govt. of India

CSL-IOD-AR IO014950
306.0954
CUL, 1988

14950

संस्कृति विभाग
वार्षिक रिपोर्ट 1988-89
Department of Culture
Annual Report 1988-89

भाग 2
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार
Part 2
Ministry of
Human Resource Development
Govt. of India

378

सत्यमेव जयते

IOD-AR
30640954
CUL-A, 1988-89

IOD
AR
3/70

Acc. No. 24898
18/07/2001

CENTRAL SECRETARIAT LIBRARY
IO 014950
GOVERNMENT OF INDIA

सज्जा
डेज़िग्नेशन्स

फोटो टाइप सैटिंग
वर्डट्रोनिक

निर्माण
डिज़ाइन एंड प्रिंट

मुद्रण
पाल्स प्रैस

मुद्रण मुख पृष्ठ एवं रंगीन पृष्ठ
पी.एस. प्रैस सर्विसिज़

Designing
Designations

Phototypesetting
Wordtronic

Production
Design & Print

Printing
Pauls Press

Cover & Colour Plates Printing
P.S. Press Services

विषय-सूची

भूमिका 1

पुनरावलोकन 1985-89 3

प्राक्कथन 1988-89 6

1. संगठन 13

2. पुरातत्व 17

3. संग्रहालय 24

4. मानव विज्ञान और मानव जाति विज्ञान की संस्थाएं 40

5. अभिलेखागार और अभिलेख 47

6. तिब्बती, बौद्ध तथा अन्य ऐतिहासिक अध्ययन संस्थाएं 53

7. पुस्तकालय 57

8. अकादमियां और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय 62

9. संस्कृति की प्रोन्नति तथा प्रसार 69

10. प्रशिक्षण तथा अनुसंधान योजनाएं 77

11. स्मारक 78

12. शताब्दियां तथा जयन्तियां 83

13. सांस्कृतिक संबंध 87

14. भारत महोत्सव 90

15. अन्य कार्यकलाप 94

वर्ष 1987-88 के दौरान चर्चा किए गए विषयों के लिए वित्तीय आवंटन 95

संस्कृति विभाग से एक लाख रुपए और अधिक आवर्ती सहायता-अनुदान प्राप्त करने वाले निजी और स्वैच्छिक संगठनों के नाम दर्शाने वाला विवरण 99

प्रशासनिक चार्ट 101

भूमिका

1.1 सातवीं पँचवर्षीय योजना के अंतर्गत बुनियादी कार्यनीतियों में से एक कार्यनीति मानव संसाधन विकास रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में अंत में यह कहा गया है :—

> "सबसे बड़ा काम है शैक्षिक पिरामिड की बुनियाद को सुदृढ़ बनाना, उस बुनियाद को जिसमें इस शताब्दी के अंत तक लगभग सौ करोड़ लोग होंगे। यह सुनिश्चित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि जो इस पिरामिड के शिखर पर हों, वे विश्व में सर्वोत्तम स्तर के हों। अतीत में इन दोनों छोरों को हमारी संस्कृति के मूल-स्रोतों ने भलीभांति सिंचित रखा, लेकिन विदेशी आधिपत्य और प्रभाव के कारण इस प्रक्रिया में विकार पैदा हो गया। अब मानव संसाधन विकास का एक राष्ट्र व्यापी प्रयास पुनश्च शुरू होना चाहिये जिसमें शिक्षा अपनी बहुमुखी भूमिका पूर्ण रूप से निभाए।"

1.2 राष्ट्रसंघ बाल निधि (यूनिसेफ) 1989 में विश्व के बच्चों की दशा पर अपनी रिपोर्ट में इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि विश्व के कई विकासशील देशों में मानव संसाधन विकास पर पूंजी निवेश में अत्यधिक कमी आई है, कि सार्वजनिक व्यय पर कटौती के कारण शिक्षा पर प्रति व्यक्ति व्यय में लगभग 50% की गिरावट हुई है, कि राज्यों को कार्यसूची में मानव संसाधन विकास कार्यक्रमों को उच्च प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए; कि वास्तविक विकास पैक्ट "एक नयी मार्शल योजना" कार्यान्वित की जानी चाहिए जिसके अधीन उन्नत देश विकासशील देशों के लिए वास्तविक संसाधनों तक उनकी पहुंच को पर्याप्त रूप से बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे और ये देश भी अपनी निवेश-नीतियों को वास्तविक विकास की प्रवृत्ति की ओर पुनः अभिमुख करेंगे ताकि गरीब व्यक्ति को सबसे पहले प्राथमिकता मिले।

1.3 मानव संसाधन विकास में शिक्षा, युवा, महिलाओं एवं बच्चों, कलाओं, संस्कृति तथा खेलों के क्षेत्रों में मानवीय क्षमताओं के विकास के लिए समन्वित एवं सर्वतोमुखी प्रयास किये जाने की अपेक्षा की गई है।

1.4 रिपोर्ट के निम्नलिखित पांच भागों में, विभिन्न पहलुओं में, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निष्पादन की तस्वीर प्रस्तुत की गई है :

भाग 1	शिक्षा विभाग
भाग 2	संस्कृति विभाग
भाग 3	कला विभाग
भाग 4	महिला तथा बाल विकास विभाग
भाग 5	युवा कार्य तथा खेल विभाग

1.5.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के अधीन विभिन्न कार्यक्रमों को कार्यान्वित करते समय, मानव संसाधन विकास संबंधी बातों का ख्याल रखते हुये निम्नलिखित क्षेत्रों की ओर विशेष ध्यान दिया गया :

* प्रारम्भिक शिक्षा का सर्वसुलभीकरण;

* प्रौढ़ साक्षरता जिसमें कौशल विकास तथा मूल्यों का संचार करना शामिल है;

* सुविधाहीन वर्गों — अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन-जातियों, आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों तथा महिलाओं तक शिक्षा की पहुंच;

* शिक्षा की विषय-वस्तु तथा प्रक्रिया में सुधार।

1.5.2 उपर्युक्त क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने के लिए निम्नलिखित 3 महत्वपूर्ण कार्य-नीतियां अपनाई गई : — औपचारिक पद्धति से बाहर (चाहे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों द्वारा अथवा सुदूर शिक्षा द्वारा) शिक्षा तक पहुंच का प्रावधान करना; ग्रामीण निर्धन व्यक्ति के लाभ के लिए जन शक्ति विकास के लिए, प्रौद्योगिकियों आदि का हस्तांतरण जैसे कि सामुदायिक पालिटेक्निकों की योजना के अधीन और प्रौढ़ साक्षरता के लिए अर्थात् कालेज छात्रों, एन.सी.सी. कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयं सेवकों, भूतपूर्व सैनिकों आदि की सेवाओं का उपयोग करते हुए) शैक्षिक प्रयासों के लिए जन सहयोग प्राप्त करना।

1.6 संस्कृति विभाग ने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों तथा सहायता संसाधन के जरिए देश की सांस्कृतिक परम्पराओं के परिरक्षण, संवर्धन तथा समृद्धि के लिए अपने प्रयास जारी रखे। चालू वर्ष के दौरान भारत में सोवियत रूस तथा फ्रांस महोत्सवों का आयोजन, जापान में भारत महोत्सव का प्रारम्भ, बम्बई में अपना उत्सव, देश तथा विदेश में सांस्कृतिक प्रसार के क्षेत्र में प्रमुख उपलब्धियां रही हैं। 56 देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम तथा 75 देशों के साथ करार भी कार्यान्वित किये जा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न देश के लोगों को भारत के लोगों के और निकट आने में सहायता मिली है।

1.7 कला विभाग ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गां.रा.क.के.) के लिए अवस्थापना सुविधाएं स्थापित करने का अपना कार्य लगभग पूरा कर लिया । इ.गां.रा.क.के. के पांच प्रमुख प्रभाग अर्थात् कला निधि, कला कोश, जनपद-सम्पदा, कला दर्शन तथा सूत्रधार ने केन्द्र के विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। केन्द्र के अधीन परिकल्पित प्रमुख गतिविधियां इस प्रकार हैं :

* सहायता सुविधायें, पुस्तकालय, अभिलेखागारों आदि सहित कला, मानविकी और सांस्कृतिक परम्पराओं से संबंधित डाटा बैंक तथा कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना पद्धति का सृजन

* कलाओं तथा शिल्प कलाओं संबंधी शब्दकोशों, भारतीय कलाओं की पाठ्य पुस्तकों, लेखों के पुनर्मुद्रण, भारतीय कलाओं के विश्व- कोशों के बहु-संस्करण इत्यादि के निर्माण के कार्यक्रमों के जरिए मौलिक अनुसंधान

* लोक तथा जन जातीय कलाओं एवं शिल्प कला का प्रलेखन और

* अंतर-विषयक संगोष्ठियों का आयोजन।

1.8 राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (रा.प्र.यो.) — 1988-2000 ई. को भावी कार्यनीतियों के आधार के रूप में अंतिम रूप दिया गया ताकि महिलाओं के विकास, विशेष कर महिलाओं के सामाजिक तथा आर्थिक स्तर को ऊपर उठाने के कार्यक्रम पर मुख्य बल दिया जा सके। महिला एवं बाल विकास विभाग ने प्रारम्भिक बाल विकास सेवाएं प्रदान करने को प्राथमिकता देना जारी रखा। एकीकृत बाल सेवाओं का विस्तार कर उसमें वर्ष के दौरान लगभग 2000 परियोजनाएं 0-6 आयु वर्ग के बच्चों तथा गर्भवती एवं दूध पिलाने वाली महिलाओं के लाभ के लिए शामिल की गई।

1.9 विस्तृत विश्व व्यापी परामर्श के बाद नवम्बर, 1988 में युवाओं संबंधी एक राष्ट्रीय नीति संसद के सम्मुख रखी गई। नीति में देश के युवाओं के व्यक्तित्व तथा कार्यात्मक क्षमताओं के विकास के लिए अवसर पैदा करने की परिकल्पना की गई है। देश के विभिन्न भागों में आयोजित सामूहिक राष्ट्रीय एकता शिविरों ने युवाओं में राष्ट्रीय एकता की भावना को सर्वोपरि बनाये रखने में सहायता की। नेहरू युवक केन्द्र संगठन ने अपने कार्यकलापों का विस्तार किया है। भारतीय खेल प्राधिकरण (भा.खे.प्रा.) 1990 में बीजिंग में होने वाले एशियाई खेलों के लिए खिलाड़ियों के प्रशिक्षण पर ध्यान दे रहा है। दक्षिण ध्रुव अंतर्राष्ट्रीय स्की अभियान जैसे उत्साही कार्यक्रम भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा प्रतिभा की खोज जैसे कार्यक्रम, खेल-कूद कार्यकलापों के लिए अवस्थापना सुविधायें, खेल-कूद परियोजना विकास क्षेत्र योजना का आरम्भ किया जाना जैसे कार्यक्रम युवा कार्य तथा खेल विभाग की अन्य प्रमुख उपलब्धियां रहीं हैं। भारत के संविधान में भी खेल-कूद को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची में रखते हुये राज्य सभा में संविधान (61वां) संशोधन विधेयक 1988 जून पुनःस्थापित करके भारत सरकार ने स्वयं को खेलों में और अधिक मात्रा में शामिल करने का प्रयास किया है।

पुनरावलोकन (1985-89)

1 संस्कृति विभाग का मूल उद्देश्य देश के सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए प्रयास करना है। विभाग की मुख्य योजनाओं और कार्यक्रमों में ऐसी संस्कृति के प्रसार पर बल दिया गया है जिसमें मानवीय सर्जनात्मकता के विशाल क्षेत्र के विषय शामिल हैं। भारतीय संस्कृति की अवर्णनीय समृद्धि की असंख्य विविधताओं को प्रोन्नत करने, प्रस्तुत करने और परिरक्षित करने के लिए ही यह उद्देश्य रखा गया है। भारतीय संस्कृति जैसी सजीव संस्कृति की सीमाओं और प्राचलों का वर्णन करना कठिन है।

2 हमारे सांस्कृतिक प्रयासों के क्रम में क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों का उद्भव वास्तविक अर्थों में एक ऐतिहासिक घटना है। हमारे प्रधानमंत्री ने वर्ष 1985 में इस संबंध में परिकल्पना की थी और अब सभी 7 केन्द्रों का उद्घाटन किया जा चुका है। इस परियोजना का स्वीकृत उद्देश्य सांस्कृतिक बंधुत्व पर बल देना है, जो भौगोलिक सीमाओं की परिधि को भी पार कर जाता है। त्रिस्तरीय सम्पर्कों की श्रेणी में हमारा विचार स्थानीय संस्कृति के विषय में जागरूकता उत्पन्न करना, उसे सुदृढ़ करना तथा यह पता लगाना है कि किस तरह यह क्षेत्रीय पहचानों में विसरित होती है और अन्ततः भारत की सामासिक संस्कृति की समृद्ध विविधता का रूप धारण करती है। हमारे प्रधानमंत्री ने प्रायः कहा है कि हम लोगों को अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शामिल करने और उससे भी आगे उनकी सांस्कृतिक चेतना के नवीकरण और उन्नयन की आवश्यकता महसूस करते हैं। शांतिनिकेतन में सांस्कृतिक केन्द्र के उद्घाटन के अवसर पर प्रधान मंत्री जी ने कहा था कि भारत की संस्कृति फूलों के एक बाग की भांति है जहाँ फूल खिलते हैं और विकसित होते हैं तथा जिन्हें न तो काटा जाता है और न पानी से बाहर निकाला जाता है। इन सांस्कृतिक केन्द्रों के माध्यम से हमारा उद्देश्य न केवल सांस्कृतिक दृष्टि से सामान्य तत्वों पर बल देना है वरन् विलुप्त होते कला स्वरूपों और परम्पराओं को प्रलेखित और परिरक्षित करना तथा जहां तक सम्भव हो जीवंत रखना है।

3 भारत महोत्सव वर्ष 1985-86 के दौरान लंदन, अमरीका और फ्रांस में आयोजित किए गए। तत्पश्चात सोवियत संघ में भारत महोत्सव मनाया गया और 1987-88 में भारत में सोवियत महोत्सव मनाया गया। जापान में भारत महोत्सव का उद्घाटन प्रधानमंत्री जी ने अप्रैल, 1988 में किया। नई दिल्ली में अप्रैल/मई 1988 में क्यूबा सांस्कृतिक सप्ताह का आयोजन किया गया।

4 "गयाना में भारतीयों के आगमन की 150वीं जयन्ती" मनाने के लिए जार्जटाऊन, गयाना में एक सप्ताह का समारोह आयोजित किया गया। जून, 1988 में विभाग ने बुल्गारिया में एक सांस्कृतिक प्रदर्शन आयोजित किया और जनवरी, 1989 में भारत में बुल्गारिया का एक सांस्कृतिक प्रदर्शन आयोजित किया जा रहा है।

5 वर्ष 1989 के प्रारम्भ में फ्रांस महोत्सव शुरू हो चुका है और इस वर्ष के उत्तरार्ध में जापान महोत्सव प्रारम्भ किया जाना है। वर्ष 1990 में जर्मन संघीय गणराज्य में भारत-महोत्सव आयोजित किया जाना निश्चित हुआ है।

6 इसके अतिरिक्त 56 देशों के साथ, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों तथा 81 देशों के साथ करारों पर हस्ताक्षर किए गए जिनमें आगामी वर्षों में पारस्परिक आधार पर कार्यकलापों के क्षेत्र में आदान-प्रदान करने की परिकल्पना है। सांस्कृतिक संबंधों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक चरण भारत का चीन के साथ सांस्कृतिक करार (1988-89) एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान का कार्यक्रम है जिसकी दोनों देशों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

15. वर्ष के दौरान भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा की गई खोजों में निम्नलिखित का उल्लेख किया जा सकता है बनवाली की खुदाई — जिसमें हड़प्पन किलेबन्दी से सम्बद्ध मुख्य भाग प्रकाश में आया। पंजाब में संघोल में खुदाई से सील बनाने वाली भट्टी का पता चला। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने 18 अप्रैल, 1988 को विश्व विरासत दिवस मनाया जिसके दौरान विश्व विरासत सूची में अंकित 13 स्मारकों में विशेष फलकों का अनावरण किया गया। 19 नवम्बर, 1988 को श्रीमती इंदिरा गांधी की वर्षगाँठ के साथ विश्व विरासत सप्ताह आयोजित किया गया। सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के लिए उनका प्यार और दिलचस्पी अद्वितीय रूप से जगजाहिर था। स्मारक-स्थलों पर छायाचित्र प्रदर्शनियां आयोजित की गईं।

16. आगरा के ताजमहल परिसर में फेराकोर्ट में क्षीण अलंकारिक दासा पत्थरों, सीढ़ियों, बरामदों, फर्शों को बदलने तथा दीवारों पर प्लास्टर करने और छतों पर पुताई का काम किया गया। पश्चिमी ओर के बाड़े में जीर्णशीर्ण पत्थरों को बदलने, अग्रभाग की दीवारों की टीप, गढ़े और उत्कीर्ण अलंकारिक पत्थरों की व्यवस्था और पेयजल स्रोतों पर ध्यान दिया गया।

17. आगरा स्थित वायु प्रदूषण प्रयोगशाला सल्फर गैसों तथा विभिन्न अन्य तत्वों के उतार-चढ़ाव का आगरा के प्रख्यात स्मारकों पर पड़ने वाले संभावित बुरे प्रभाव का लगातार परिवीक्षण कर रही है और उसे रोकने के लिए अनुसंधान कर रही है। देहरादून स्थित भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की केन्द्रीय प्रयोगशाला स्मारकों, पुरावस्तुओं तथा चित्रों के रासायनिक उपचार तथा परिरक्षण की विभिन्न समस्याओं से संबंधित विविध अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन कर रही है। काले मिट्टी के बर्तनों के टी.जी.डी.टी.ए. अध्ययनों से पता चला है कि इन वस्तुओं का अग्नि-तापमान अवश्य ही 300 सेंटीग्रेड से 600 सेंटीग्रेड के बीच होगा। इसी प्रकार, लाल मिट्टी के बर्तनों तथा अन्य वस्तुओं का भी प्रयोगशाला में अध्ययन किया जा रहा है।

18. वर्ष 1985-86 और 1986-87 में स्थापित सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र पूरी तरह से गतिशील हैं। वे विभिन्न कार्यकलापों में संलग्न हैं और प्रतिमाह बड़ी धूमधाम और उत्साह के साथ स्थानीय उत्सव और राष्ट्रीय आयोजनों को मनाने के अतिरिक्त उत्सवों को क्षेत्रीय या आंचलिक रंग देने के बजाय अवसर राष्ट्रीय रूप देने में सहयोग देते हैं।

19. दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने नागपुर में एक आदिवासी लोक कला महोत्सव आयोजित किया जिसमें आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र से 224 कलाकारों ने भाग लिया।

पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र में एक ग्राफिक स्टूडियो का उद्घाटन किया गया। इस सुविधा से बड़ी तादाद में नई गतिविधियां और प्रयोग शुरू होने की उम्मीद है। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा शिमला में हिमाचल दिवस (27 अप्रैल 1988) सांस्कृतिक प्रदर्शन के साथ मनाया गया। समारोह 30 अप्रैल तक चला और प्रधानमंत्री ने समापन समारोह की शोभा बढ़ाई। यह समारोह गत वर्ष दिसम्बर में हुई प्रधानमंत्री की बैठक के अनुसरण में था जिसमें यह निश्चय किया गया कि प्रत्येक क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र में और अधिक अन्तःक्षेत्रीय समारोह हों।

20. उड़ीसा सरकार के सहयोग से पुरी में आयोजित "बीच फैस्टिवल" पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की एक बड़ी गतिविधि थी। पुरी के समुद्र तट पर 74 कलाकारों ने विशाल भीड़ का मनोरंजन किया। दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने ग्रीष्मावकाश के दौरान नागपुर के सुविधाहीन बच्चों के लाभार्थ एक कार्यशाला आयोजित की। उन्हें विभिन्न शिल्पों का प्रशिक्षण दिया गया और अपनी सहज प्रतिभाओं के प्रदर्शन के अवसर दिए गए।

21. उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा चलाया गया "पर्वतीय पर्व", उत्सव के रूप में, परंपरागत लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। उत्तर प्रदेश के गढ़वाल और कुमाऊं पहाड़ियों के आर-पार वर्ष में एक बार संगीत और नृत्य का यह उत्सव चलता है।

उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने गुड़गांव में मिट्टी के बर्तन बनाने पर एक कार्यशाला आयोजित की जिसमें पंजाब, चण्डीगढ़, राजस्थान और हरियाणा से, व्यावसायिक और हॉबी के तौर पर अपनाने वाले, दोनों तरह के कुम्भकारों ने भाग लिया।

दक्षिणी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा कन्नानोर में आयोजित ओणम उत्सव में भाग लेने के लिए पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा 50 कलाकार भेजे गए।

22. राष्ट्रीय एकता पर अक्तूबर में नई दिल्ली में आयोजित प्रसिद्ध "फूल वालों की सैर" वार्षिकोत्सव में पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने भाग लिया।

सांस्कृतिक केन्द्र अपने-अपने उत्सवों के आयोजन और राज्य और अन्तः क्षेत्रीय स्तरों के उत्सवों में भाग लेने के अलावा अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों के साथ भी सहयोग करते हैं जैसा कि दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने सितम्बर में नागपुर में भारत-रूस महोत्सव के "बैले" कार्यक्रम में किया था।

23. भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता — का मुख्य ध्यान अपनी राष्ट्रीय परियोजना "भारत के लोग" पर रहा जो अक्तूबर, 1985 में आरंभ की गई थी।

परियोजना का प्रयास देश के 4986 समुदायों पर अद्यतन सूचना प्राप्त करना तथा इन्हें साथ-साथ लाने वाले संपर्कों को सामने लाना है। सर्वेक्षण के 200 से अधिक वैज्ञानिक और तकनीकी सदस्य इस परियोजना में लगे हुए हैं। नवम्बर, 1988 तक 4373 समुदायों के लिए फील्ड वर्क पूरा हो गया है। रिपोर्ट लिखने, सारांश पूरा करने तथा संगणक प्रारूप भरने का कार्य क्रमशः 2634, 3946 और 3956 समुदायों के संबंध में किया गया है। 2663 समुदायों के लिए सामान्य प्रारूप भी भरे गए हैं।

प्रशिक्षण और अनुसंधान की योजनाएं

18 इस योजना का मुख्य लक्ष्य 10-14 वर्ष के आयु वर्ग में प्रतिभा का पता लगाना और विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में उनकी प्रतिभाओं का विकास करने के विचार से छात्रवृत्तियां प्रदान करना है। योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष 100 नई छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं जिसमें से 25 परम्परागत कलाकारों के परिवारों के बच्चों के लिए आरक्षित हैं। ये छात्रवृत्तियां 20 वर्ष की आयु अथवा शिक्षा की प्रथम डिग्री की समाप्ति तक, जो भी पहले हो, मान्य हैं। यह योजना भारत सरकार द्वारा पूर्ण वित्त पोषित स्वायत्त संगठन, सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा कार्यान्वित की जा रही है। इस योजना के तहत लगभग 350 क्रियाशील कलाकार हैं।

19 एक अन्य योजना भारत में संगीत, नृत्य, नाटक, पेन्टिंग, मूर्तिकला, पुस्तक-चित्रण और डिज़ाइन, काष्ठकला आदि के क्षेत्रों में उच्च प्रशिक्षण के लिए उत्कृष्ट युवा कलाकारों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की है।

20 प्रतिवर्ष पंद्रह वरिष्ठ और कनिष्ठ शिक्षावृत्तियां प्रदान करने की भी योजनाएं हैं। साहित्य, कला और अन्य क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त जरूरतमन्द व्यक्तियों को भी सहायता दी जाती है। अवकाश प्राप्त शिक्षावृत्तियों की एक योजना तैयार की गई है ताकि, उन कलाकारों को, जो अपने सम्बन्धित क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर चुके हैं किन्तु व्यवसाय से सेवानिवृत्त हो चुके हैं, आर्थिक सहायता दी जा सके ताकि वे वित्तीय दृष्टि से आश्वस्त होकर निरंतर अपना प्रयास कर सकें।

21 राष्ट्रीय संग्रहालय ने भारत महोत्सव के एक भाग के रूप में जापान में आयोजित नारा सिल्क रोड प्रदर्शनी में भाग लिया। भारत में सोवियत महोत्सव के तत्वावधान में "क्रेम्लिन के राजकीय संग्रहालयों की कला-निधियां" नामक प्रदर्शनी इस वर्ष का सबसे बड़ा संग्रहालय आयोजन था। वहां अस्त्र-शस्त्र, स्वर्ण और रजत के जेवरात प्रदर्शन के लिए रखे गए थे, जो मास्को की 17वीं शताब्दी का एक प्रसिद्ध संग्रह है।

22 भारत की विविध संस्कृति और इसके प्रसारण और प्रदर्शन की आवश्यकता संबंधी दोहरी समस्या को मद्दे-नज़र रखते हुए सरकार और निजी संगठन संस्कृति के संरक्षण और प्रोन्नति तथा भारतीय जनता की सांस्कृतिक पहचान को पुनः बनाने के प्रयास करते रहे हैं। संकीर्णता और कट्टरता हमारी राष्ट्रीय सांस्कृतिक पहचान को आसानी से उखाड़ सकते हैं। पं. नेहरू के शब्दों में, "हमें अपने सांस्कृतिक मानस के द्वार और खिड़कियां खुली रखनी चाहिए। हममें दूसरों का दृष्टिकोण भली प्रकार समझने की क्षमता होनी चाहिए भले ही हमेशा उससे सहमत हों या न हों। सहमति या असहमति का प्रश्न तभी उठता है जब हम किसी चीज को समझते हैं। अन्यथा, यह एक अंध-प्रतिवाद है जो किसी भी समस्या के समाधान का सांस्कृतिक ढंग नहीं है।

प्राक्कथन
1988-89

1. संस्कृति विभाग ने देश में सांस्कृतिक परम्पराओं का परिरक्षण, प्रोन्नति तथा समृद्धि करना जारी रखा। वर्ष के मुख्य-मुख्य कार्यक्रम क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के विविध कार्यकलाप रहे हैं जिनमें सांस्कृतिक साझेदारी तथा प्रसार पर जोर दिया गया। इसके अतिरिक्त बुल्गारिया और जापान में भारत के उत्सव तथा सोवियत रूस व फ्रांस के भारत में महोत्सव और बुल्गारियाई प्रदर्शन, वर्ष की प्रमुख गतिविधियाँ रही हैं। संस्कृति विभाग के तत्वावधान में 1988-89 में किए गए महत्वपूर्ण कार्यकलापों का सारांश भी निम्नानुसार है।

2. संस्कृति विभाग ने सृजनात्मक व्यक्तियों, संस्थाओं और स्वैच्छिक संगठनों को सहायता देने की अपनी योजनाओं को जारी रखा। इस संदर्भ में संस्कृति विभाग के मुख्य कार्य हैं : राष्ट्रीय महत्व के पुस्तकालयों और संग्रहालयों का संचालन करना, पुरातन स्मारकों और ऐतिहासिक स्थलों की खुदाई, संरक्षण और रक्षा करना, अभिनय, प्लास्टिक एवं साहित्य कलाओं को बढ़ावा देना, कला और संस्कृति के क्षेत्र में छात्रवृत्तियां प्रदान करना, महत्वपूर्ण व्यक्तियों की शताब्दियां और जयन्तियां आयोजित करना, विदेशों के साथ सांस्कृतिक करार और मैत्रीपूर्ण संधियां करना। संस्कृति विभाग देश में आने वाली तथा देश से बाहर जाने वाली प्रदर्शनियों का समन्वय भी करता है।

3. सोवियत रूस में भारत महोत्सव जुलाई, 1988 में स्मरणीय ढंग से सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में संगीत गोष्ठियों, प्रदर्शनियों तथा लोमोनोसोवस्की प्रोस्पेक्ट में महात्मा गांधी की प्रतिमा के अनावरण के दृश्य देखने को मिले। यह प्रतिमा इन्दिरा गांधी की उस प्रतिमा के सामने स्थापित है जिसका अनावरण महोत्सव के प्रारम्भ में हमारे प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था।

भारत में सोवियत महोत्सव 19 नवम्बर, 1988 को इन्दिरा गांधी स्टेडियम में महामहिम श्री गोर्बाच्योव, भारत के राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन, प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी और इन दोनों की पत्नियों तथा अन्य बहुत से उच्च अधिकारियों की उपस्थिति में एक शानदार कला प्रदर्शन के साथ मनाया गया। इस प्रदर्शन में 600 सोवियत और 400 भारतीय कलाकारों ने भाग लिया।

4. जापान में भारत महोत्सव का प्रधानमंत्री ने, जापान के प्रधानमंत्री की उपस्थिति में अप्रैल, 1988 में उद्घाटन किया। इसके पश्चात् पारम्परिक नृत्य और संगीत का एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

नई दिल्ली में अप्रैल/मई 1988 में क्यूबाई सांस्कृतिक सप्ताह मनाया गया।

जार्जटाउन, गयाना में "गयाना में भारतीयों के प्रवेश की 150वीं वर्षगांठ" की स्मृति में एक साप्ताहिक समारोह आयोजित किया गया।

5. भारत-बुल्गारिया सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत इस वर्ष जून में, संस्कृति विभाग ने एक सांस्कृतिक प्रदर्शन का आयोजन किया।

1989 के आरम्भ में फ्रांस महोत्सव बड़ी धूमधाम से शुरु हो चुका है और उसके कुछ समय बाद जापान महोत्सव, आदि अन्य भावी उत्सव और प्रदर्शन हैं। परिदृश्य के दूसरी ओर जर्मन संघीय गणराज्य में भारत-महोत्सव है जो कि 1990 में आयोजित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, 56 देशों के साथ बहुत से सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम और 81 देशों के साथ करारों पर हस्ताक्षर किए गए जिनमें आने वाले वर्षों में, अनेक कार्यक्षेत्रों में पारस्परिक आधार पर विनिमय की परिकल्पना की गई है।

6. अपने दिवंगत प्रख्यात नेताओं, जिन्होंने राष्ट्र के सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र में महान योगदान दिया है, उन्हें सम्मानित करने के निश्चय को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 1988-89 में छः शताब्दियां मनाई गईं, राष्ट्रीय शंकर जयन्ती महोत्सव के अतिरिक्त,

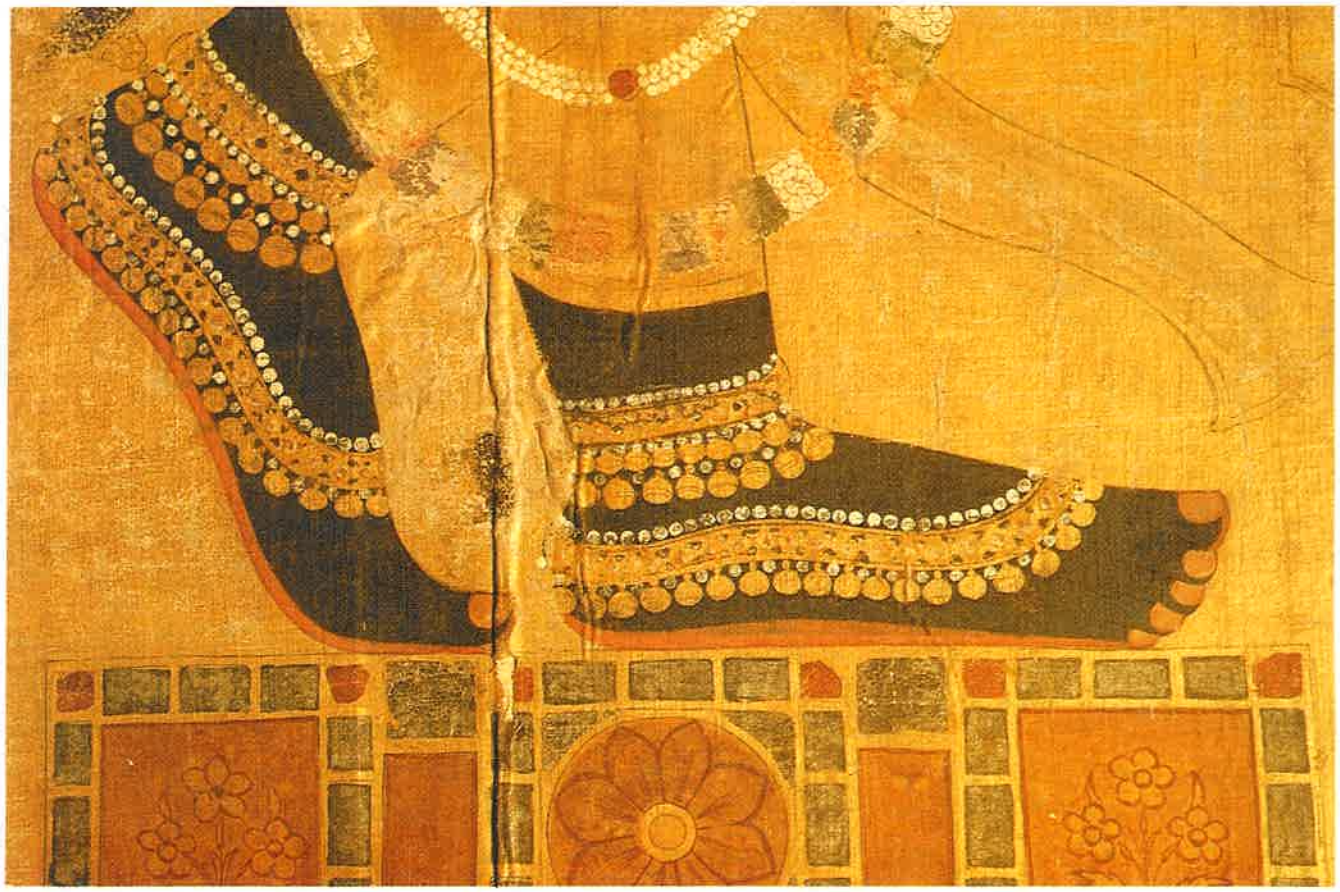

राष्ट्र ने गोविन्द वल्लभ पंत, डा. एस. राधाकृष्णन, के.एम. मुंशी, मौलाना आजाद और डा. श्री कृष्ण सिन्हा जैसे प्रकाश पुंजों को सम्मानित किया। उद्घाटन और समापन समारोह (कई मामलों में समापन समारोह अभी आयोजित होने हैं) अत्यन्त विशिष्ट व गम्भीर सभा के रूप में आयोजित किए गए। डाकटिकट जारी करना और पुस्तक विमोचन, अर्धप्रतिमा या प्रतिमा अनावरण, केन्द्र और उपयुक्त क्षेत्रीय स्तर पर सेमिनारों और प्रदर्शनियों का आयोजन वर्ष पर्यन्त समारोहों के मुख्य आकर्षण थे।

7. अकादमियों के क्षेत्र में — राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिषद् के निर्णय के अनुसरण में, श्री पी.एन. हक्सर की अध्यक्षता में एक उच्च-स्तरीय पुनरीक्षण समिति तीनों अकादमियों अर्थात् साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्य-संचालन का पुनरीक्षण करने के लिए गठित की गई है। रिपोर्ट एक वर्ष के अंदर मिलने की आशा है। अकादमियां वर्ष भर कार्यशील रहीं और इस संदर्भ में एक परम्परागत मृण्मूर्ति प्रदर्शनी का आयोजन उल्लेखनीय है जो मद्रास में पहले हुई सार्क मृण्मूर्ति कार्यशाला का ही प्रतिफल है। ललित कला अकादमी ने, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकों सहित चीन में, पेइचिंग शहर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। इसी अकादमी ने पोलैंड के साथ विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत दिल्ली और मद्रास में पोलैंड की आधुनिक कला की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की। संगीत नाटक अकादमी ने श्री कुमार गंधर्व को अध्येतावृत्ति प्रदान की और अभिनय कलाओं के विभिन्न क्षेत्रों के 24 कलाकारों को पुरस्कार भी दिए गए।

8. लोक-उत्सव जिसे कि 1984 में आरम्भ किया गया था, देश के कलाकारों के पारम्परिक संगीत, नृत्य और थियेटर प्रदर्शनों से एक चिरस्मरणीय पर्व बन गया है। संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित पांचवा लोक-उत्सव, अक्तूबर, 1988 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया जिसमें 250 लोक और जनजातीय कलाकारों ने भाग लिया।

9. हमारे संग्रहालय, गैलरियां और अभिलेखागार हमारी सांस्कृतिक विरासत के आधार स्तम्भ बने रहे साथ ही हमारी पुरातत्त्व और मानव विज्ञान संस्थाओं ने, अतीत की खोज में नई उपलब्धियाँ हासिल करने और हमारे विकास-क्रम के विषय में हमारे ज्ञानवर्धन के लिए अपने प्रयास जारी रखे।

10. राष्ट्रीय संग्रहालय ने भारत महोत्सव के भाग के रूप में, जापान में आयोजित नारा सिल्क रोड प्रदर्शनी में भाग लिया। भारत में सोवियत रूस महोत्सव के अंतर्गत "क्रेमलिन के राजकीय संग्रहालय की कला निधियां" पर एक प्रदर्शनी इस वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण संग्रहालय आयोजन था। इस प्रदर्शनी में अस्त्र, सोने और चांदी के जेवरातों को दिखाया गया जो कि मास्को के 17वीं शताब्दी के उत्कृष्ट संग्रह का एक नमूना था।

11. भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता ने, राजकीय संग्रहालय, मेघालय और संग्रहालय निदेशालय, असम के सहयोग से भारत सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा प्रायोजित "हमारी सृजनात्मक कलाओं की सम्पदा" पर दो अंतर्राज्यीय प्रदर्शनियां आयोजित कीं।

12. संग्रहालय में 31 मई, 1988 से 6 जून, 1988 तक नवाब मीर यूसुफ अली खान बहादुर सालारजंग 3 का 102वां जन्म दिन मनाया गया। समारोह का उद्घाटन आंध्रप्रदेश के पिछड़ा वर्ग कल्याण और पर्यटन मंत्री डा. अल्लादी पी. राजकुमार द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, नई दिल्ली द्वारा सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के तहत विभिन्न देशों के साथ निम्नलिखित प्रदर्शनियों का आदान-प्रदान किया गया :—

बाहर जाने वाली प्रदर्शनियां — "भारतीय महिला कलाकार" बुल्गारिया (सोफिया) और पोलैंड भेजी गई, "भारतीय समकालीन कला "जापान" भेजी गई, "रवीन्द्रनाथ टैगोर के चित्र और उनके स्मृतिचिन्ह" जापान भेजे गए।

आने वाली प्रदर्शनियां — जर्मन संघीय गणराज्य "पोयट्री थ्रू मैटीरियल, लाइट एंड मूवमेंट", भारत में सोवियत महोत्सव के तत्वावधान में 19वीं से 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक की "रूसी पेन्टिंगें", कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से "विज़न्स ऑफ इनर स्पेस", भारत में सोवियत महोत्सव के तत्वावधान में "सोवियत कलाकारों की दृष्टि में भारत", जर्मन संघीय गणराज्य से सातवें दशक की ग्राफिक्स, "गुटनिरपेक्ष देशों की जोसिफ ब्रॉज टीटो आर्ट गैलरी, टीटोग्राद; युगोस्लाविया से संग्रह"।

13. नेहरू स्मारक संग्रहालय जिसमें जवाहरलाल नेहरू के जीवन और काल को दृश्य सामग्रियों के जरिए समझाया गया है, भारत और विदेशों से आने वाले पर्यटकों के लिए रुचि का केन्द्र बना रहा। लगभग आठ लाख दर्शक संग्रहालय आए जिसका अर्थ है कि कार्यदिवसों को प्रतिदिन औसतन उपस्थिति 3817 रही; और रविवार तथा अन्य छुट्टी वाले दिन 4337 दर्शक। भारत और विदेशों से राजधानी आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा देखे गए परिभ्रमण स्थलों की सूची में इसका प्रमुख उल्लेख रहा। दर्शकों ने प्रदर्शनियों में भी, जो इस संग्रहालय का स्थायी अंग हैं, गहरी दिलचस्पी ली।

14. नेहरू स्मारक पुस्तकालय, जिसमें भारत के आधुनिक इतिहास तथा समाज विज्ञान पर मुख्य ध्यान दिया गया है, ने जहाँ अपने संग्रहों में वृद्धि की, वहाँ अपनी सेवाओं की कोटि में भी सुधार किया। 3685 पुस्तकें और जोड़ी गईं जिससे उनकी संख्या अब 1,16,652 हो गई। नेहरू आना शीर्षक की पुस्तकें 1,095 तक, गांधीयाना की 1,677 तक पहुँच गई है तथा इंदिराना शीर्षक की 282 पुस्तकें हैं। इन तीनों भागों के अंतर्गत प्राप्त की गई पुस्तकें अंग्रेजी, हिन्दी और विभिन्न अन्य भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में हैं। समाचार-पत्रों की फाइलें तथा शोध प्रबंधों (माइक्रोफिल्मों पर) की संख्या क्रमशः 4,668 तथा 825 तक बढ़ गई। पुस्तकालय के फोटो अनुभाग में उसके फोटो संग्रहों की संख्या 74,482 तक बढ़ी है।

7 राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समृद्ध करने वाले अपने सुविख्यात दिवंगत नेताओं को सम्मानित करने के अपने निर्णय के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में निम्नलिखित व्यक्तियों की शताब्दियां मनाई गईं :

1. आचार्य काका कालेलकर
2. रवीन्द्र नाथ टैगोर
3. पं. मदन मोहन मालवीय
4. मैथिलीशरण गुप्त
5. पं. गोविन्द बल्लभ पंत
6. डा. श्रीकृष्ण सिंह
7. डा. एस. राधाकृष्णन
8. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
9. राजा सवाई जय सिंह - द्वितीय
10. बहादुर शाह ज़फर
11. श्री के.एम. मुंशी

इनके अतिरिक्त, राष्ट्र ने शंकर जयन्ती महोत्सव का भी आयोजन किया।

8 केन्द्र की अवधारणात्मक योजना के अनुसार इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आई.जी.एन.सी.ए.) के कार्यक्रमों को केन्द्रीभूत करने के लिए कला विभाग में भी कार्य शुरू किया गया। प्रारम्भ किए जाने वाले महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल हैं : सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय का विस्तार और कला, मानविकी तथा सांस्कृतिक विरासत सम्बन्धी संगणकीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली और आँकड़ा बैंक को सुयोजित करना। दूसरा महत्वपूर्ण कार्य जनजातीय कला एटलस तैयार करने की योजना है। इं.गां.रा.क. के. का पंजीकरण एक स्वायत्त न्यास के रूप में हुआ जिसके अध्यक्ष श्री राजीव गांधी हैं और इसकी कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री पी.वी. नरसिंह राव।

9 1861 में स्थापित भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने विभिन्न क्षेत्रों में अपने कार्यकलाप जारी रखे। खुदाई के दौरान पंजाब के लुधियाना जिले में संघोल से लाल बलुआ पत्थर से बनी मुंडेर के तक्षित 117 टुकड़ों की खोज उल्लेखनीय सिद्ध हुई।

10 कंसाई विश्वविद्यालय, जापान के सहयोग से "उत्तर प्रदेश और बिहार में बौद्ध स्थलों का उत्खनन सर्वेक्षण और श्रावस्ती में उत्खनन" नाम से एक संयुक्त परियोजना प्रारम्भ की गई। खुजराहो के मन्दिरों, अजन्ता-एलोरा की गुफाओं और अन्य महत्वपूर्ण स्थलों और स्मारकों में विस्तृत रासायनिक परिरक्षण का कार्य जारी है। हमारे स्मारकों और स्थलों में से 13 को विश्व सम्पदा सूची में अब तक अंकित किया जा चुका है। श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्म दिवस के साथ हम प्रतिवर्ष 19 नवम्बर, 1988 से विश्व सम्पदा सप्ताह मनाते हैं, क्योंकि श्रीमती गांधी का सांस्कृतिक और प्राकृतिक सम्पदा के प्रति स्नेह और अनुराग सुप्रसिद्ध है।

11 "सार्क" कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्य सदस्य देशों के सहयोग से विभिन्न स्थानों पर नियमित सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं।

12 एक पुरातत्वीय दल संरचनात्मक मरम्मतों के साथ-साथ अंकोरवाट के प्रसिद्ध मन्दिर परिसर के रासायनिक परिरक्षण के लिए कम्पूचिया भेजा गया है।

13 एन्थ्रोपोलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया ने "भारत के लोग" परियोजना के अन्तर्गत 3695 समुदायों का अध्ययन अब तक पूरा किया है।

14 राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिषद् के निर्णय के अनुपालन में अकादमियों के क्षेत्र में श्री पी.एन. हक्सर की अध्यक्षता में गठित एक उच्चाधिकार प्राप्त समीक्षा समिति का गठन किया गया है जो तीन अकादमियों — साहित्य, संगीत नाटक और ललित कला तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्यों की समीक्षा करेगी। एक वर्ष के भीतर रिपोर्ट आने की उम्मीद है।

15 देश के सभी भागों से लोक और शास्त्रीय कलाकारों तथा शिल्पकारों के एक प्रभावशाली समूह को एक साथ लाकर 1986 में नई दिल्ली में अपना उत्सव आयोजित किया गया था। ऐसा ही एक उत्सव बम्बई में 1989 में आयोजित किया गया।

16 भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली ने स्वयं को अभिलेखों के परिग्रहण और परिरक्षण से सम्बन्धित कार्यकलापों में लगाया है। मूल दस्तावेजों और छायाचित्रों सहित हमारे स्वतंत्रता-संग्राम की कथा से संबंधित "आजादी की ओर" तथा "नियति से एक भेंट" नाम से दो महत्वपूर्ण प्रदर्शनियां आयोजित की गई थीं।

17 संस्कृति विभाग नृत्य-नाटक और रंगमंच समष्टियों के साथ-साथ स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को निरन्तर वित्तीय सहायता देता है और विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में कलाकारों को छात्रवृत्तियां, शिक्षावृत्तियां और वित्तीय सहायता प्रदान करता है। वर्ष 1987-88 में अनेक बौद्ध/तिब्बती संगठनों को भी, लगभग 45 लाख रुपए का अनुदान दिया गया।

24. संस्कृति विभाग के अधीन एक स्वायत्त संगठन राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल देश और काल में मानवता की कथा के चित्रण के प्रति समर्पित है।

"ट्राइबल हैबिटेट" नामक आदिवासी घरों की एक खुली प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें वातावरण दृश्यों, जीवन शैली, भौतिक संस्कृति, वास्तुकला आदि जैसे पक्षों को उजागर किया गया। यह जनता के लिए खोली गई राष्ट्रीय मानव संग्रहालय की पहली स्थायी प्रदर्शनी थी।

25. निम्नलिखित अभिलेखों की प्राप्ति के द्वारा भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार का संग्रह और अधिक समृद्ध हुआ — सार्वजनिक अभिलेख-1873-1950 की अवधि की निम्नलिखित मंत्रालयों/विभागों से संबंधित 5147 फाइलें प्राप्त की गईं : रक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय तथा मंत्रिमंडल सचिवालय; निजी कागजात — 1905-48 की अवधि के गांधी जी के कागजात का एक सेट जिसमें गांधी-पोलक पत्र-व्यवहार के नाम से ज्ञात 4335 विषय भी शामिल हैं, जिन्हें सॉथेबीज लंदन में हुई सार्वजनिक नीलामी के जरिए भारत सरकार द्वारा प्राप्त करने के बाद भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार की अभिरक्षा को हस्तांतरित कर दिया गया है। संग्रह में पत्र, तार, टिप्पणियां, लेख, मुद्रित सामग्रियां, प्रेस कतरनें, फोटोग्राफ आदि शामिल हैं। अधिकांश पत्र गांधी जी द्वारा जोन्सबर्ग में अपने आर्टिकल्ड क्लर्क और कानूनी भागीदार हेनरी पोलक को लिखे गए हैं।

26. राष्ट्रीय पुस्तकालय देश में सबसे बड़ा पुस्तकालय है। इसमें लगभग 19.60 लाख पुस्तकें है और यह मुख्यतः बेल्वेदेर, कलकत्ता में है। यह पुस्तक परिदान अधिनियम 1954 (1956 में संशोधित) के प्रावधानों के अधीन एक प्रापी पुस्तकालय है और संयुक्त राष्ट्र देशों के अभिलेखों का प्रमुख भण्डार है। यह शोधकर्ताओं के लिए संदर्भ केन्द्र के रूप में भी कार्य करता है।

भारत में प्रकाशित वर्तमान पुस्तकों, समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं की प्राप्ति का मुख्य स्रोत पुस्तक परिदान अधिनियम के अधीन है। विदेशों में प्रकाशित होने वाली अंग्रेजी पुस्तकें और पत्रिकाएं खरीद के जरिए प्राप्त की जाती हैं। इस पुस्तकालय का 80 देशों की 192 संस्थाओं के साथ पुस्तक विनिमय कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम विदेशी प्रकाशनों की प्राप्ति का उत्कृष्ट स्रोत है जो अन्यथा सामान्य व्यापार माध्यमों के जरिए सुलभ नहीं होते।

वर्ष के दौरान राष्ट्रीय पुस्तकालय ने चार प्रकाशनों को प्रकाशित किया : (1) पुस्तकालय सामग्रियों का संरक्षण; (2) रवीन्द्र ग्रन्थ सूची (बंगाली, में) स्वप्न मजूमदार द्वारा संकलित की गई; (3) भारत में ग्रन्थ सूची केन्द्र; (4) भारत-विद्या अध्ययन और दक्षिण एशिया ग्रन्थ-सूची;

27. केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय में, हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा खण्ड जो बहावलपुर हाउस में है, और रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली का एक शाखा पुस्तकालय शामिल है। यह पुस्तकालय सरकारी संगठनों, पुस्तकालय के सदस्यों, अनुसंधान अध्येताओं और अन्य लोगों को अनुसंधान एवं संदर्भ सेवाएं प्रदान करने में लगा है। इसमें अंग्रेजी हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में केवल सदस्यों के लिए छोटा संग्रह है।

इस पुस्तकालय में सात लाख से भी अधिक पहले के मुख्य संग्रह में हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की लगभग 8661 पुस्तकें और जोड़ी गईं। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय को गजट, कानूनी अभिलेखों और विधायी निकायों की कार्यवाहियों सहित केन्द्र और राज्य सरकारों के प्रकाशनों की 32177 मदें प्राप्त हुई। यूनेस्को, संयुक्त राष्ट्र, आई.एल.ओ. और अन्य देशों की सरकारों जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों से प्राप्त सरकारी प्रकाशनों की संख्या 2330 से बढ़ गई है। पुस्तकालय को माइक्रोफ़िश रूप में अमरीका सरकार के 400 प्रकाशन प्राप्त हुये।

28. एक स्वायत्त संगठन राजा राममोहन राय लाइब्रेरी प्रतिष्ठान, कलकत्ता, देश में पुस्तकालय सेवाएं बढ़ाने में लगा है, जिसे, यह राज्य/संघ शासित क्षेत्रों की सरकारों के सहयोग से करता है।

देश में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं में सुधार के लिए इसने बराबर और गैर-बराबर सहायता की नौ योजनाएं क्रियान्वित की हैं। वर्ष 1987-88 के दौरान सहायता की कुल राशि 189.00 लाख रुपये थी। विभिन्न स्तरों पर लगभग 6000 पुस्तकालयों को सहायता दी गई।

29. खुदाबख्श प्राच्य पब्लिक लाइब्रेरी, उपमहाद्वीप में 1600 से ऊपर पाण्डुलिपियों, 90,000 प्राचीन और दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों और 200 से ऊपर मुगल राजपूत, ईरानी और तुर्की शैलियों के चित्रों के संग्रह सहित समृद्धतम लाइब्रेरियों में से एक के रूप में उभरी है। इसे संसद के एक अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व की एक संस्था घोषित करते हुए भारत सरकार ने 1969 में इसका नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया था। इसका प्रबन्ध अब बिहार के राज्यपाल के नेतृत्व में एक बोर्ड द्वारा किया जाता है।

30. सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र जो कि भारत सरकार द्वारा पूर्णतया वित्त पोषित एक स्वायत्त निकाय है, कालेज और स्कूल के छात्रों के बीच संस्कृति के प्रचार के लिए उत्तरदायी है।

वर्ष के दौरान केन्द्र ने छः अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किये जिनमें विभिन्न राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के 414 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। शिक्षकों व छात्रों के लिए देश के विभिन्न भागों में अनेक कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

शिक्षा के लिए कठपुतली कला में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए पांच कार्यक्रम चलाए गए जिनमें 400 शिक्षकों ने भाग लिया। "शिक्षक-प्रशिक्षक और शिक्षा प्रशासक" कार्यक्रम के अन्तर्गत 180 शिक्षकों के साथ छः सेमिनार आयोजित किये

गये। जुलाई-अगस्त, 1988 में अमरीकी स्कूल और कालेज शिक्षकों के लिए "प्राचीन और आधुनिक भारत" पर एक विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

31. सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र ने नई शिक्षा नीति के अंतर्गत कार्रवाई योजना से जुड़ी पांच योजनाओं को शुरू किया है। "संग्रहालयों में भारत की कलात्मक विरासत" के जरिए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारकों की यात्रा और अध्ययन के लिए दो हजार से ऊपर स्कूली छात्रों को शैक्षिक सुविधाएं प्रदान की गई। स्लाइडों, फोटोग्राफों और रिकार्डिंगों में अनेक कला रूपों को प्रलेखित किया गया।

32. सामुदायिक गायन के जरिए राष्ट्रीय और भावनात्मक एकता को बढ़ावा देने के लिए देश के विभिन्न भागों में 1982 से अनेक शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) इस योजना को कार्यान्वित कर रही है। वर्ष 1988-89 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. का 24 क्षेत्रीय स्तर के शिविर और 4 राष्ट्रीय स्तर के शिविर लगाने का इरादा है।

33. 1988 में प्रमाणित 773 फीचर फिल्मों में से 471 को "यू" प्रमाण-पत्र, 95 को "यू ए" और 207 को "ए" प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

1988 में प्रमाणित 118 विदेशी फीचर फिल्मों में से 52 को "यू" प्रमाण-पत्र, 11 को "यू ए" और 55 को "ए" प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। 43 विदेशी फिल्मों का प्रमाणन मना कर दिया गया।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने 1662 भारतीय लघु फिल्मों को (1630 को "यू" प्रमाणपत्र के साथ, 3 को "यू ए" के साथ और 29 को "ए" प्रमाणपत्र के साथ) प्रमाणित किया, जबकि प्रमाणित विदेशी लघु फिल्मों की संख्या 486 थी (464 को "यू" प्रमाणपत्र के साथ, 3 को "यू ए" के साथ और 12 को "ए" के साथ तथा 7 को "एस" प्रमाणपत्र के साथ।

वर्ष 1988 के दौरान प्रमाणित लम्बी भारतीय और विदेशी फिल्मों की संख्या क्रमशः 5 और 4 थी।

424 फिल्में मुख्यतः शैक्षिक फिल्मों के रूप में वर्गीकृत की गईं।

34. केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने 589 वीडियो फिल्मों को प्रमाण-पत्र जारी किए। इनमें से 41 भारतीय फीचर फिल्में, 42 लम्बी भारतीय फिल्में (फीचर फिल्मों से अलग), 6 विदेशी लम्बी फिल्में थीं। 570 वीडियो फिल्मों ने "यू" प्रमाणपत्र प्राप्त किए, 2 ने "यू ए", 6 ने "ए" और 11 ने "एस" प्रमाण-पत्र प्राप्त किए। 66 भारतीय लघु और 434 विदेशी लघु फिल्मों को भी प्रमाणपत्र जारी किए गए।

35. वित्तीय सहायता — यह योजना साहित्य कला और जीवन के ऐसे ही अन्य क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त व्यक्तियों को जो गरीबी की हालत में हैं और 58 वर्ष से अधिक आयु के हैं को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। कुछ मामलों में उनके आश्रितों पर भी जिनका और कोई साधन नहीं है, योजना के तहत विचार किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत खर्च भारत सरकार और संबंधित राज्य सरकारों द्वारा 2:1 अनुपात में वहन किया जाता है। आपवादिक मामलों में सम्पूर्ण व्यय भारत सरकार द्वारा वहन किया जाता है। वर्तमान में 474 लाभाग्राही हैं और वर्ष 1988-89 में 60 व्यक्ति चुने गये।

36. गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने आवधिक प्रदर्शनियां, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कार्यक्रम, सेमिनार, सम्मेलन, शिविर, प्रकाशन, प्रतियोगिताएं, वाद-विवाद तथा गांधीजी व अन्य राष्ट्रीय नेताओं पर फिल्म शो आयोजित किये।

समिति एक सूचना और प्रलेखन केन्द्र स्थापित कर रही है और गांधी-साहित्य का एक सम्पूर्ण संदर्भ पुस्तकालय स्थापित करने का प्रस्ताव रखती है।

समिति गांधी जी पर साहित्य, मोनोग्राफी आदि प्रकाशित करने का प्रस्ताव रखती है और उन्हें विद्वानों, पुस्तकालयों और अन्य रुचि रखने वाले पक्षों को उपलब्ध कराना चाहती है।

37. इसका सिर्फ युवाओं और बच्चों के लिए कार्यक्रम तैयार करने का भी प्रस्ताव है और 'स्कूल चलें गांधी की ओर' नामक योजना विद्यमान है।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने उन संस्थाओं को, जिनके लक्ष्य और उद्देश्य विचार और व्यवहार की दृष्टि से गांधीवादी हैं, को फोटोग्राफों की सप्लाई के जरिए गांधी जी को लोकप्रिय बनाने की योजना की भी परिकल्पना की है।

38. सरकार द्वारा नालन्दा में निर्मित ह्वेनसांग मेमोरियल हाल का नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा में विलय का प्रस्ताव बिहार सरकार के परामर्श से भारत सरकार के विचाराधीन है।

39. संस्कृति विभाग को राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अधीन इस आधार पर अधिसूचित किया गया था कि विभाग के 80% स्टाफ को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग से वार्षिक कार्यक्रम प्राप्त हुआ है और इसे सभी संबंधित लोगों के ध्यान में लाया गया है।

40. ऊपर संस्कृति विभाग के प्रमुख कार्यकलापों का सारांश दिया गया है। अगले अध्यायों में विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत कार्यकलापों की विस्तृत समीक्षा की गई है।

अध्याय 1

संगठन

1.1 संस्कृति विभाग भारत सरकार (कार्य विभाजन) नियम, 1961 के 174वें संशोधन के अन्तर्गत स्थापित तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक भाग है। मानव संसाधन विकास मंत्री के समग्र प्रभार में यह विभाग राज्यमंत्री के नेतृत्व में कार्य करता है। सचिव, विभाग सचिवालय के प्रमुख है जिनकी सहायता के लिए एक अपर सचिव तथा दो संयुक्त सचिव हैं। भारत महोत्सव सैल के प्रमुख, महानिदेशक, भारत महोत्सव हैं, जो सीधे सचिव की देखरेख में काम करते हैं। संस्कृति विभाग का संगठनात्मक स्वरूप परिशिष्ट-1 पर दिए गए चार्ट में दर्शाया गया है।

1.2 विभाग के दो संबद्ध कार्यालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार हैं। उसके अधीन अनेक अधीनस्थ कार्यालय तथा अन्य स्वायत्त संगठन हैं।

1.3 संस्कृति विभाग अनेक नवप्रवर्तित सहायता योजनाओं का संचालन करता है, जिनकी संस्कृति के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका है। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र योजना के अन्तर्गत, पटियाला, शांतिनिकेतन, तंजावूर, नागपुर, कोहिमा, उदयपुर तथा इलाहाबाद में 7 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र पंजीकृत सोसाइटियों के रूप में स्थापित किए गए हैं।

1.4 संस्कृति विभाग के कुछ महत्वपूर्ण कार्य हैं : राष्ट्रीय महत्व के पुस्तकालयों व संग्रहालयों का प्रबन्ध करना; अभिनय, प्लास्टिक व साहित्यिक कलाओं को प्रोत्साहित करना; कला व संस्कृति के क्षेत्र में छात्रवृत्तियाँ प्रदान करना; महत्वपूर्ण व्यक्तियों की शताब्दियों व वर्षगांठों का आयोजन, स्मारकों का रखरखाव तथा विदेशों के साथ सांस्कृतिक करार व सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन। विभाग, भारत महोत्सव के अन्तर्गत अमेरिका, फ्रांस, यू.के., स्वीडन, सोवियत रूस तथा इसी प्रकार की अन्य बाहर जाने वाली व विदेशों से आने वाली प्रदर्शनियों के समन्वय सम्बन्धी कार्य भी करता है।

बजट

1.5 संस्कृति विभाग के लिए वर्ष 1988-89 तथा 1989-90 का बजट प्रावधान निम्नलिखित है :-

(लाख रुपये में)

विवरण	बजट अनुमान 1988-89	संशोधित अनुमान 1988-89	बजट अनुमान 1989-90
मांग सं. 50 (अब संशोधित) कला व संस्कृति	123,59	123,59	117,14

टिप्पणी : इसमें सचिवालय तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का प्रावधान शामिल है।

1. सम्बद्ध कार्यालय

1. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली।
2. भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

2. अधीनस्थ कार्यालय

1. भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता।
2. राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।
3. राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि, नई दिल्ली।
4. राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता।
5. केन्द्रीय सन्दर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता।
6. राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ।
7. केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड, लखनऊ।

3. स्वायत्त संगठन

1. राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल।
2. राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कलकत्ता।
3. नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली।
4. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली।
5. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
6. ललित कला अकादमी, नई दिल्ली।
7. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली।
8. सांस्कृतिक संसाधन व प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली।
9. गांधी स्मृति और दर्शन समिति, नई दिल्ली।
10. इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद।
11. दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली।
12. राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता।
13. केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, वाराणसी।
14. केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह (लद्दाख)।
15. विक्टोरिया मेमोरियल हाल, कलकत्ता।
16. भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता।
17. एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता।
18. सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद।
19. खुदाबख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना।
20. रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर।
21. जलियांवाला बाग राष्ट्रीय स्मारक न्यास, अमृतसर।
22. टी.एम.एस.एस.एम. पुस्तकालय, तंजावूर।

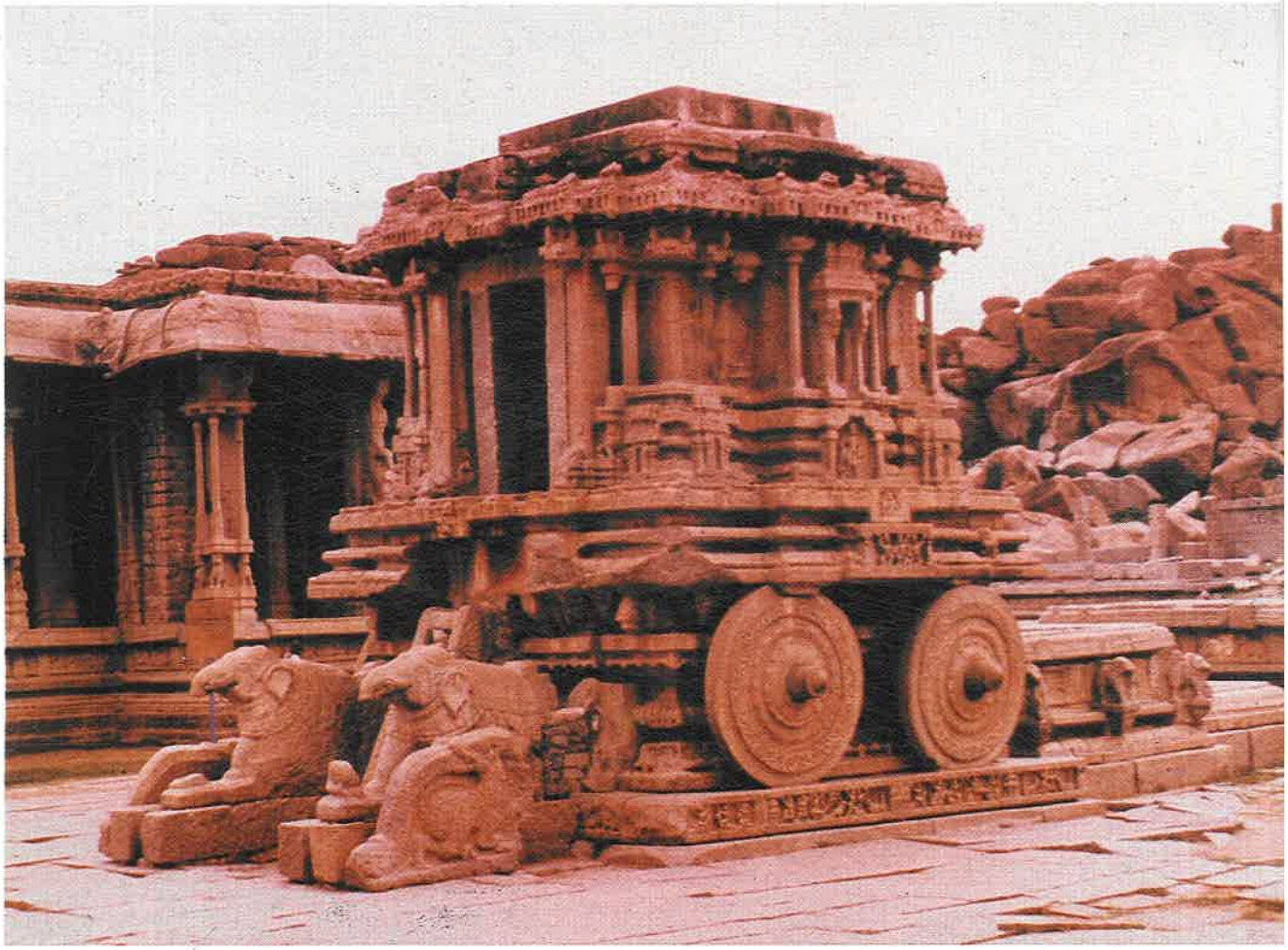

अध्याय 2

पुरातत्त्व

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

2.1 भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, जिसकी स्थापना पुरातत्वीय अवशेषों का पता लगाने, उन्हें संरक्षित करने तथा उनका अध्ययन करने के उद्देश्य से 1861 में हुई थी, निरन्तर अपने कार्यों को प्रभावी ढंग से पूरा कर रहा है। निदेशालय का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है और यह एक विशाल संगठन के रूप में विकसित हो चुका है जिसके अंतर्गत देश के विभिन्न भागों में 16 मंडल, दो लघु मंडल, तेरह विशिष्ट अध्ययन शाखायें तथा कुछ अन्य इकाइयां स्थित हैं।

2.2 उक्त सर्वेक्षण के मुख्य कार्यों में शामिल है : केन्द्र द्वारा सुरक्षित स्मारकों, पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेषों का संरक्षण एवं परिरक्षण, स्मारकों के चारों ओर बागों की स्थापना, पुरातत्वीय स्थलों तथा पुरावस्तुओं का रासायनिक परिरक्षण, प्राचीन स्थलों की खोज और उनका उत्खनन, अभिलेखों की खोज तथा उनका अध्ययन, स्थल संग्रहालयों की स्थापना तथा उनका रख-रखाव, पुरातत्त्व संस्थान के माध्यम से पुरातत्त्व की विभिन्न शाखाओं में विशिष्ट अध्ययन को प्रोत्साहन, धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष इमारतों का वास्तुशिल्पीय सर्वेक्षण, भारत तथा विदेशों में पुरातत्त्व के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन का आयोजन, स्मारकों, पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेषों से संबंधित उत्खनन रिपोर्ट, गाइड बुक, स्थापत्य संबंधी मोनोग्राफ तथा रंगीन तथा सादे पोस्टकार्ड आदि का प्रकाशन।

2.3 उक्त सर्वेक्षण के कार्यों में पुरावस्तु तथा कलानिधि अधिनियम 1972 को लागू करना भी शामिल है ताकि पुरावस्तुओं तथा कलानिधियों के निर्यात व्यापार को नियमित किया जा सके तथा इस क्षेत्र में होने वाली तस्करी और धोखाधड़ी को रोका जा सके।

2.4 असम, गुजरात, जम्मू और कश्मीर, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के विभिन्न भागों में गांव-गांव के सर्वेक्षण और खोज के दौरान अनेक स्थल प्रकाश में आए हैं जिससे प्रागैतिहासिक काल से मध्यकाल तक की अवधि के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय उपलब्धियां इस प्रकार हैं :— असम के गोआलपाड़ा जिले में मध्यकाल के मन्दिर और पृथक प्रतिमाएं; लोथल (जिला अहमदाबाद, गुजरात) के निकट प्राप्त एक आयताकार हड़प्पीय मृण्मुद्रा; जिला सूरत (गुजरात) में ब्राह्मण देवी-देवताओं की मूर्तियां, वीरगल, सूक्ष्माश्म, एक मध्यकालीन बांध तथा पुराश्म उपकरण; जिला करनाल (हरियाणा) के अंतर्गत अटा में एक मन्दिर समूह, वसेरा में एक टीला, चूलूकाना में एक बावली सहित एक सराय और पुराना अष्टभुजी शिखरयुक्त मन्दिर, जुरासास जट्टीपुर में एक प्राचीन कूप तथा बड़ा टीला, रक्षरा में एक ईदगाह तथा शहर मालपुर में एक मध्यकालीन शिव मन्दिर, जिला मंडी (हिमाचल प्रदेश) में प्रस्तर प्रतिमाएं तथा बावलीयुक्त काष्ट एवं पत्थर के मंदिर; जिला लद्दाख (जम्मू और कश्मीर) में आलची में एक पाषाणयुगीन स्थल, स्तोक, रणधीरपुरा तथा निम्मो में ऐतिहासिक स्थल, रुंडदम, पदम, फे, सानी, जोंखुल, करसारिंजिड़, तोन्दे और जाडूला में तक्षित शिलायें तथा जन्सकार घाटी में कर्छेखार और जाड़ला में शिलाघटित शिल्पाकृतियां;

जिला बेल्लारी (कर्नाटक) के तोरंगल नामक स्थान में लोहा गलाने के स्थान तथा बुर्ज, कोलार जिले के मुलबागल तालुक में कुछ मध्ययुगीन बस्तियों के अवशेष, तिम्मरवा तनहली तथा दूसरे स्थानों में 9वीं-10वीं शतियों की कन्नड़ लिपि में अंकित

अभिलेख तथा वीरगल; इसुर, जिला शिमोगा, में राष्ट्रकूटकालीन एक अभिलेख और एक द्वयस्र मंदिर, तुमकुर जिले में पट्टादेवरहल्ली में होपसल मंदिर तथा दो अभिलेख, जिला माण्डया, मुरकुनाहल्ली तालुक के सिध्दघट्टा नामक स्थान में होयसाल काल की मूर्तियां, आईहोल, जिला बीजापुर (कर्नाटक) में आरंभिक चालुक्य काल की क्षत-विक्षत भैरव मूर्ति, मध्य प्रदेश में गुलना, जिला धार में परमार कालीन एक सीढ़ी सहित कुंआ, बड़केश्वर, जिला होशंगाबाद के निकट परमार कालीन मन्दिर समूहों के अवशेष, गांव कोटवार, जिला मोरेना के निकट एक ताम्राश्मयुगीन स्थल, पूर्वी निमाड़ जिले के बलवाड़ा तथा बीजापुर कल्याण में पूर्व पुराश्मयुगीन उपकरण, कुकडल में मध्यपुराश्मिक उपकरण, करोली में सूक्ष्माश्म, कोटरा में अलंकृत ईंटें, लोहे की वस्तुएं तथा ताम्बे का छल्ला; विजलपुरकलां में एक ऐतिहासिक स्थल, जोगीबिडा में मूर्तियुक्त मन्दिर के अवशेष तथा विजलपुरकलां में स्मारकीय-फलक; लोहटगांव में देवी भदगवारी की क्षतिग्रस्त मूर्ति, शिवलिंग और गणेश प्रतिमा, मदलमाई में सीढ़ीदार कुंआ तथा ब्राह्मणीय प्रतिमाएं, मनमोदीवारी में एक मध्ययुगीन बांध तथा खण्डोबा मंदिर, सिन्ध खेड़ में दुर्गा मंदिर और स्थानभ्रष्ट प्रतिमाएं, कोलेगांव में हिन्दू मूर्तियां, मध्ययुगीन मंदिर तथा एक देवनागरी लेख, रायगढ़ जिले के वकरूल में दो खम्भे और मण्डपयुक्त अपूर्ण शिलाघटित गुफा और नागपुर के अदम नामक स्थल में पक्की मिट्टी के मण्डलकूप तथा मिट्टी के ठीकरे और किला में दो अरबी लेखयुक्त सिक्के, उड़ीसा के जिला ढेकानल में मंदिरों के अवशेष और जिला कालाहांडी के सरयार नामक स्थान में चित्रित शिलाश्रय तथा किसी राजा का ग्रीष्मकालीन स्नानागार; राजस्थान के भरतपुर जिले में दो प्राचीन स्थल तथा एक हवेली के अवशेष, उत्तर प्रदेश के जिला इटावा में उमराई, चकवा बुर्ज और लांगपुर में मध्यकालीन मंदिर, दुगावली में एक पुरानी मस्जिद, पचदेवरा, जसवंतनगर, लचवाली, कमेत मानकपुर, बिसु, महाराजापुर और सराय में एकदिल में मन्दिर; तमिलनाडु के चिंगलपट्ट जिले में एरिकलंगल में प्रारम्भिक ऐतिहासिक स्थल और तमिल लेख, सिरखनाकुनरम में दुर्गामन्दिर, वेडक्कुपुत्तु में एक ध्वस्तप्रायः मन्दिर, बिखरी हुई मूर्तियां, अम्मन मन्दिर, पीतल की दुर्गा तथा भिक्षाटन प्रतिमायें, एकाश्मीय दीप तथा आइयेनार मंदिर; कोंजाराय मानबट्टू में महाशमीय स्मारक, प्रारम्भिक ऐतिहासिक युग की शिलें, शिला फलक पर तामिल लेख, पंचमुखी सर्प सहित शिव मंदिर, विष्णु और लक्ष्मी की मूर्तियुक्त लक्ष्मीनारायण जिला चेंगल पट्टू के उरथी में नवाश्म और सूक्ष्माश उपकरण, 18 पंक्तियों का तामिल लेख तथा एकाश्मदीपयुक्त विष्णु मंदिर, उत्तरी अर्काट जिले में पैरियाकुप्पम् में वीरगल तथा वीमाकुलम में नवाश्म उपकरण और तमिलनाडु के उत्तरी क्षेत्र और पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले में बागोल, गन्टी, जलिथा, मदनमोहनपुर और शिरोमणिपुर में मध्यकालीन मंदिर, हुगली जिले में 11 सोने के सिक्के, 45 सोने के मनके, जलपइगुड़ी जिले में 786 चांदी के सिक्के एवं पश्चिम दीनाजपुर जिले में विष्णु की प्रस्तर प्रतिमा।

स्थापत्य — सर्वेक्षण

2.5 मध्य प्रदेश में रावेर जिला खरगोन में प्राचीन सराय पेशवा बाजीराव-1 की छतरी का प्रलेखीकरण तथा देवास, उज्जैन, धार और मन्दसौर जिलों में परमार मन्दिरों का सर्वेक्षण किया गया। पुरगीलाना तथा कोठारी जिला झालावार, राजस्थान में परमार मन्दिरों का विस्तृत अध्ययन और प्रलेखन के प्रयोजन के लिए सर्वेक्षण किया गया।

कर्नाटक में चोल मन्दिरों का सर्वेक्षण किया जा रहा है। दिल्ली में दारा शिकोह के पुस्तकालय जैसे धर्मनिरपेक्ष भवनों, फ्लैग स्टाफ टावर के आसपास का क्षेत्र, बदली की सराय, रंगमहल क्षेत्र, सुलतान गारी मकबरे के अवशेषों, उत्तर प्रदेश में कनखल, जिला सहारनपुर, तथा राजस्थान के जिला जैसलमेर के भवनों तथा पुरावस्तुओं संबंधी अवशेषों का अध्ययन तथा प्रलेखन के लिए सर्वेक्षण किया गया था।

खुदाई

2.6 बिहार के जिला मुज्जफ्फरपुर में कुशी, ज़िला कुरुक्षेत्र के थानेश्वर में, जिला हिसार; (हरियाणा) के बनवाली, हम्पी, ज़िला बेल्लारी और सन्नती, ज़िला गुलबर्गा (दक्षिण एशियाई अध्ययन सोसायटी, लंदन के सहयोग से) कर्नाटक, खजुराहो जिला छतरपुर, (मध्य प्रदेश), दौलताबाद ज़िला औरंगाबाद, (महाराष्ट्र), ललितगिरी तथा उदयगिरी जिला कटक (उड़ीसा), संघोल ज़िला लुधियाना (पंजाब); श्रावस्ती, ज़िला बहराइच (उत्तर प्रदेश) (कनसाई विश्वविद्यालय, जापान के सहयोग से), बल्लालदिपी, जिला नदिया (पश्चिम बंगाल) में खुदाइयां शुरु की गई थीं।

रोचक संरचनात्मक अवशेषों तथा अनेक पुरावस्तुओं को उत्खनन के फलस्वरूप प्रकाश में लाया गया। उनमें से प्रमुख हैं : कुशी में मृण्मय आकृतियां, मनके, शंकुक-वस्तुएं, मोहर तथा मुद्रांकन, प्लेट्स, ईंट-भट्टें तथा कुषाणकालीन बर्तन, थानेसर में उत्तर मध्यकालीन इतिहास की पुरावस्तुएं, हम्पी में मंडप के चिन्ह, पत्थर का जलाशय, जल एकत्र करने और बन्द नाली, कुंओं की ओर ले जाने वाली मिट्टी के पाइपों सहित ढका हुआ मार्ग, एक महाद्वार, वीरभद्र मन्दिर का अर्ध मंडप, नवरंग, अनेक वास्तुकला संबंधी वस्तुएं, चबूतरों के अवशेष तथा उत्तर-दक्षिण की ओर एक नाली, सन्नाती में स्तूप के दक्षिण भाग पर एक वर्गाकार ईंटों का चबूतरा, सातवाहन के कांस्य सिक्के, शीशे के मनके तथा ताम्बा मिश्रित धातु की वस्तुएं, दौलताबाद में ध्वस्त लेखांकित प्रस्तर खंड, एक आयताकार ईंट का प्लेटफार्म, मिट्टी के मनके, कुण्डल, पशु आकृतियां, गोट, एक कटार, भाले, मृदभांड, पत्थर व शीशे के मनके, मोहरे, लोहे के बाण के सिरे, मिट्टी के लैम्प, तकलियां, कीलें, एक तलवार, कौड़ी, मिट्टी की पशु-आकृतियां मानव-सिर, माला-कुण्डल, यादव और मुस्लिम काल के गहने और मिट्टी के बर्तन आदि अनेक पुरावस्तुएं हैं।

पुरालेखविद्या

2.7 पुरालेखीय सर्वेक्षण के दौरान, अध्ययन के लिए भारत के विभिन्न भागों से 316 पत्थर के शिलालेख, 95 ताम्र पत्रों की प्रतियां तैयार की गई हैं। विभिन्न पुरालेखीय खोजों में प्रभुत्व है — हेमावती आंध्र प्रदेश से 12वीं शती का कन्नड़ रिकार्ड, जो मन्दिरों के पुनर्निर्माण के संबंध में है; 12वें और 14वें अशोकीय शिलालेखों से मिलता-जुलता सन्नति कर्नाटक से एक क्षतिग्रस्त चित्रित ब्राह्मी शिलालेख, द्विबरनाला, मध्य प्रदेश में; उड़ीसा में ललितगिरी का ब्राह्मी में प्राकृत अभिलेख; तमिलनाडु में तंजावूर से एक स्तम्भ शिलालेख; इलाहाबाद से एक सालन्कायान शिलालेख, मथुरा से प्राकृत और संस्कृत में अंकित अभिलेख, लखनऊ, उत्तर प्रदेश से मौखरी शासक ईशानवर्म्मन के एक संस्कृत प्रलेख।

बिहार, गुजरात, हरियाणा, राजस्थान, तथा तमिलनाडु से विस्तृत अध्ययन के लिए 111 फारसी और अरबी के शिलालेखों की प्रतियां तैयार की गई हैं।

स्मारकों का संरक्षण, परिरक्षण और पर्यावरण-संबंधी विकास

2.8 सामान्य देखभाल और रख-रखाव के अतिरिक्त भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने-7 पंचवर्षीय योजना के दौरान विशेष ध्यानार्थ 153 स्मारकों/स्थलों का विशेष संरक्षण किया है। संरक्षण कार्यक्रमों में स्मारकों और राष्ट्रीय महत्व के अवशेषों, जिनकी खुदाई की गई है, की संरचनात्मक मरम्मत और स्मारकों का रासायनिक परिरक्षण, दोनों शामिल हैं। इसके अतिरिक्त 452 स्मारकों/स्थलों का कार्य भी शुरू किया जा रहा है।

आगरा के ताजमहल परिसर में ध्वस्तप्राय डासा अलंकरण, सीढ़ियों, बरामदों और फर्श के पत्थरों का नवीनीकरण, तथा झड़े हुए तथा जीर्ण-शीर्ण प्लस्तर की परतों को फिर से बनाया गया। क्षतिग्रस्त तथा विनष्ट पत्थरों को फिर से लगाया गया; जोड़ों पर टीप की गई तथा तक्षित एवं अलंकृत पत्थरों तथा पीने के पानी का प्रावधान किया गया और पश्चिम की ओर के फव्वारों का अनुरक्षण किया गया।

2.9 आगरा किला परिसर में क्षीण तथा खोये हुए पत्थरों को पुनः लगाने, कंगूरों का पुनर्निर्माण, टीपकारी व प्लास्टर का कार्य पूर्ण किया गया था। जामा-मस्जिद, आगरा में दो मीनारों के क्षत-विक्षत भाग का पुनर्निर्माण, अकबर के मकबरे के मुख्य छत की पुरानी गचकारी का नवनिर्माण तथा बाहरी दीवारों के पुनः प्लास्टर का कार्य भी किया गया है तथा चीनी-के-रोज़े, आगरा में नदी की ओर लाखोरी ईंट की रक्षण दीवार भी बनाई गई है।

बद्रीनाथ मंदिर, द्वाराहट पर टूटी तारों तथा गिरी हुई दीवारों की मरम्मत, टूटी तथा खराब पत्थर की दीवार का पुनर्निर्माण तथा राधा वल्लभ मंदिर, वृंदावन पर ध्वस्त पत्थरों की टीपकारी करना भी शामिल है।

औरंगाबाद मंडल में ऊबड़ खाबड़ पत्थर के फर्श को पुनः ठीक करने के साथ-साथ प्लास्टर को हटाने और दौलताबाद किले पर हेमाड़पंथी मंदिर का जीर्णोद्धार और अंजता, एलोरा पर मरम्मत का कार्य चल रहा है। ताम्बदे सुर्ला के महादेव मंदिर की छत के टूटे और खोये हुए छत के पत्थर बदलने और मंदिर के आसपास मखमरी पत्थर की पटरी का कार्य से कैथड्रल के दरवाजे, खिड़कियों की मरम्मत का कार्य तथा लकड़ी पर परिरक्षण रसायन लगाने; सेंट आगास्टीन चर्च की सतह को दिखाने हेतु मलवा साफ करने; वेलहा गोवा के बोम जीसस चर्च के जीर्ण शीर्ण और खोए हुए भाग की मरम्मत और ओगोडा किले की दीवार के गिरे भाग की दरारों को भरने, और कुर्दी के महादेव मंदिर को स्थानांतरित करने के लिए नींव रखने का कार्य सम्पन्न होने के विभिन्न चरणों में है।

बंगलौर मंडल में, असार महल बीजापुर की चारदीवारी का पुनर्निर्माण तथा किनारे के पत्थरों को पुनः लगाने, तालाब के किनारे सीमेंट कंकरीट बिछाने तथा अमरुतेश्वर मंदिर की नींव सुदृढ़ करने के पश्चात् पूर्वीय तथा दक्षिण प्राकारा के धंसे हुए भाग की पत्थर दीवार की मरम्मत का कार्य चल रहा हैं।

2.10 भोपाल मंडल में 4 व 6 गुफाओं में आर सी सी के निर्माण और बाग गुफाओं की छत पर चूना कंकरीट बिछाने, कोशक महल के फेसिंग पत्थरों की मरम्मत, चंदेरी में जामा मस्जिद, गुम्बदों की वाटर टाईटिंग, सतह प्लेटफार्म की मरम्मत तथा खजुराहो के मंदिर के चारों ओर के पुरातत्त्व क्षेत्र को चारदीवारी से घेरने का कार्य पूर्ण होने के विभिन्न स्तरों पर है।

कलकत्ता मंडल में, कूच बिहार के महल में भोजनशाला तथा नाच घर की मरम्मत, विष्णुपुर के मुरली मोहन तथा दूसरे मंदिरों का अनुरक्षण, वैदपुर कालना में रामचन्द्र मंदिर समूह और मालदा की लोटन, गुनमंत, चामकटी मस्जिदों, लूकाचरी दरवाजा अदीना मस्जिद आदि में मरम्मत का कार्य; बासबेड़ियों की हंसेश्वरी तथा वासुदेव मंदिरों की चारदीवारी; मुर्शिदाबाद में हजारद्वारी महल और कटरा में मुर्शीद कुली खान की मस्जिद और उसके मज़ार के मरम्मत का कार्य सम्पाप्ति पर है।

चंडीगढ़ मंडल में लाहौल और स्पीति घाटी के ऐतिहासिक बौद्ध विहार ताबु की संरचनात्मक मरम्मत; कांगड़ा किले के अंदर हम्माम और कब्रगाह के पास तथा जहांगीरी तथा अंधेरी द्वारों के बीच पुश्ता दीवारों का पुनर्निर्माण, आदिनाथ तथा अम्बिका देवी के मंदिरों के चारों ओर से मलवा हटाने का कार्य और किले की कोठरियों के फर्श की मरम्मत चम्बा की चामुंडा देवी की भग्न पुश्ता दीवार का निर्माण तथा खरंजा लगाने का कार्य और मंडी के अर्द्धनारीश्वर मंदिर के चबूतरे का परिरक्षण शीघ्र ही पूरा किये जाने की स्थिति में है।

दिल्ली मंडल के अन्तर्गत आदिलाबाद किले के भग्न भागों और ढहती दीवारों का जीर्णोद्धार, कुतुबमीनार की पहली मंजिल में जंग खाये हुये लोहे की चिमटों का बदलाव, हुमायुं के मकबरे का स्थापत्यीय अनुरक्षण, ईसा खान के मकबरा, बावली मस्जिद और उसके निकट दूसरी मस्जिद के छत और फर्श की मरम्मत, कोटला फिरोजशाह के परकोटे के दक्षिणी भाग का पुनर्निर्माण और लाल किले की पूर्वी दीवार में संगमरमर की चौखटें लगाने का कार्य लगभग पूर्ण होने को है।

हैदराबाद मंडल में चंद्रगीरी किले के भीतर राजा-रानी महल के छत की मरम्मत तथा छज्जे के टूटे और खोये हुए पत्थरों के लगाने का कार्य, गुलबर्गा की मस्जिद की छत और गुम्बदों के प्लस्तर का नवीनीकरण तथा इस स्मारक में जाली लगाने का कार्य, गूटी किले की दीवार की दरारों को भरने का कार्य, ताडीपतरी के श्री चीनतला वेंकटरमन्ना मंदिर के झुके हुए कल्याण मंडप का पुनर्निर्माण, लेपाक्षी मंदिर के एकाश्म वृष के आसपास क्षेत्र में सुधार; नंदलर के श्री सोमायानंद मंदिर के गोपुर की बाहरी भाग के प्लास्टर का नवीनीकरण और गोलकुण्डा दुर्ग की कोठरियों के फर्श तथा छतों की मरम्मत का कार्य प्रगति पर है।

2.11 जयपुर मंडल में इस वर्ष के लिए भरतपुर किले की खाई, दीवारों की संरचनात्मक मरम्मत, किले की दीवारों के दरार वाले भागों का पुनर्निर्माण, डीग महल के गोपाल भवन में महारानी के कमरे में टूटी कड़ी को बदलने, भरतपुर में जवाहर बुर्ज के तटबंध को भरने, देव सोमनाथ की टूटे पत्थर कड़ी और सरदल बदलने, जैसलमेर किले के टूटे हुए भाग का पुनर्निर्माण, टोंक तथा चित्तौड़गढ़ में स्मारकों की संरचनात्मक मरम्मत तथा लखनऊ मंडल में गुलाब बाड़ी, फैजाबाद के बाहर चार दीवारी पर स्पष्ट तथा सांचे में ढले चूना प्लास्टर का पुनर्निर्माण, पीपरावाहाके स्तूप व विहार की नयी नींव रखने और टीपकारी के कार्य; झांसी किले में दीवारों का चूना प्लास्टर करने, कक्षों की मरम्मत तथा फर्श बिछाने के कार्य इस वर्ष आरंभ किए गए हैं।

मद्रास मंडल में पांडिचेरी के पंचनंदेश्वर मंदिर के अन्तर्गत अमन देवालय की टूटी कड़ियां बदलने, कुदमियाँ मलै पुदुकोटै के श्री शिखानाथ स्वामी के मंदिर के मलयाण मंडप की छत तथा छज्जे के पत्थरों का पुनर्निर्माण और मरम्मत; कलत्तर श्री सुंदरचोटीश्वर मंदिर की छत की टपकन की रोक; मत्तकोइल नंगुपट्टी के अमन मंदिर और मंडप के खम्भों, बल्लियों और छत के प्लस्टरों का पुनर्निर्माण और तुरुमुरुगा पोण्डी पेरियर के मुरुगनाथ स्वामी मंदिर के प्राकार की मरम्मत और पटना मंडल में सारनाथ के धार्मिक स्तूप और अनुग्रह स्तूप, नालंदा के अवशेषों की मरम्मत कराई और सासाराम के हुसैन शाह और शेरशाह के मकबरों और कुम्राहार के अवशेषों के लिए रास्ते बनाये और कुम्राहार के आहाते की मरम्मत की।

इसी प्रकार श्रीनगर तथा बड़ोदरा में भी संरचनात्मक मरम्मत और जीर्णोद्धार के आरंभ किए गए कार्य पूर्ण किए जा रहे हैं।

रासायनिक परिरक्षण

2.12 भारत के पुरातत्त्वीय सर्वेक्षण की विज्ञान शाखा ने देहरादून में अपने मुख्य कार्यालय तथा भुवनेश्वर, हैदराबाद, अजंता, इंदौर, आगरा, मद्रास, पटना, चंडीगढ़, औरंगाबाद, मैसूर, बड़ोदरा और दिल्ली में क्षेत्रीय व मंडलीय कार्यालयों के साथ केन्द्रीय अनुरक्षित स्मारकों, अवशेषों तथा स्थलों पर रासायनिक संरक्षण कार्य आरंभ किया था।

असम में शिवसागर में शीवदोल तथा विष्णुदोल में तथा दमन के संघ शासित क्षेत्र में काई की बढ़ोतरी को हटाने के लिए रासायनिक सफाई तथा पवित्र जीसस चर्च के दूषित व खराब हुए चित्रों की रासायनिक उपचार आरंभ किया गया।

गुजरात में रासायनिक अनुरक्षण कार्य से पाटन में रानी-की-वाव की भूमि पर भगवान शिव, विष्णु तथा वराह की मूर्तियों की सुंदरता दिखाई पड़ती है। मोढेरा में सूर्य मंदिर के ढांचे और मूर्तियों के विघटित पत्थर को संरक्षित करने के उद्देश्य से रासायनिक यांत्रिक साधनों द्वारा चूना प्लास्टर के पुराने और सख्त अन्तवर्कता को हटाने का कार्य पूर्ण होने को है।

2.13 मध्य प्रदेश में, बाग गुफाओं में से इपोक्सी रेज़ीन तथा गुफा सं. 4 से फाइबर ग्लास में भित्ति चित्र तैयार किया गया है तथा खुजराहो के कंदरिया महादेव मंदिर के महामंडप के उत्तर की ओर पुरोहरण बढ़ोतरी को रसायनिक तौर से हटाया गया है तथा मूल संरचना और सुंदरता को बनाए रखने के लिए मरम्मत की गई थी। महाराष्ट्र में अजंता गुफाओं में विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों के अनुसार माडल कार्य के अतिरिक्त गुफा सं. 17 की पूर्वी दीवार पर रासायनिक उपचार द्वारा मानव के सुंदर चित्रों के साथ जानवरों के पेवलियन प्रस्तुत तथा संरक्षित किए गए है तथा ऐलोरा के कीर्ति स्तंभ, ध्वज स्तंभ और कैलाश मंदिर (गुफा सं. 16) की मूर्तियों का रासायनिक उपचार किया जाना था।

ऐलोरा (महाराष्ट्र) में रासायनिक उपचार के फलस्वरूप बौद्ध धर्म से सम्बद्ध तीन ताल गुफा (गुफा नं. 12) में कुछ उड़ती हुई आकृतियां बोधिसत्व के दोनों ओर खड़े परिचारक तथा पत्रलता को दर्शाते हुए नये भित्ति चित्र प्रकाश में आए।

उड़ीसा में कोणार्क सूर्य मंदिर के उपचार किए गए भागों के संरक्षण के साथ जगमोहन मन्दिर की सतह दीवार से काई की बढ़ोतरी को समाप्त करने के लिए रसायनिक सफाई जारी थी तथा तमिलनाडु में तंजावूर में बृहदेश्वर मंदिर की मुख्य प्रतिमा के मार्ग के कक्ष सं. 10 में डीस स्टेको प्रक्रिया द्वारा नायिका चित्रों को अलग करके चोलकालीन भगवान विष्णु के एक सुंदर चित्र तथा खड़ी हुई मुद्रा में दो महिलाओं के चित्रों को स्पष्ट किया गया है।

उत्तर प्रदेश में ताजमहल आगरा की बाहरी संगमरमर दीवार पर ऊपरी सतह के कारण आए पीलेपन को हटाने के लिए मिट्टी पैक तकनीक आरंभ की गई। शहज़ादा खुसरो के मकबरे की दीवारों को बाहर से मिट्टी, गंदगी तथा सूखी काई की बढ़ोतरी की अभिवृद्धि को हटाने के लिए उनकी रासायनिक तरीके से सफाई की गई। इसके साथ-साथ इलाहाबाद में खुसरो बाग में

फफूंदी नाशक उपचार तथा अभिरक्षण किया गया। अल्मोड़ा में जगेश्वर मंदिरों की बाहरी सतह पर से अलगे, फुंगी तथा पश्चिम बंगाल के हजारद्वारी महल में विभिन्न संग्रहालय वस्तुएं जैसे चित्र, संगमरमर वस्तुएं, हाथी दांत की वस्तुएं, धातु के शो पीस, लकड़ी का फर्नीचर तथा पुस्तकालय में संग्रह की गई पुस्तकों का रसायनिक उपचार किया जा रहा है।

प्रयोगशालाएं

2.14 आगरा में वायु प्रदूषण प्रयोगशाला आगरा के प्रसिद्ध स्मारकों पर प्रभाव डालने वाली सल्फर गैसों तथा विभिन्न अन्य तत्वों का लगातार अनुश्रवण कर रही है तथा उन्हें रोकने के लिए अनुसंधान कर रही है। देहरादून में ए.एस.आई. की केन्द्रीय प्रयोगशाला स्मारकों, पुरावस्तुओं तथा चित्रों का संरक्षण तथा रासायनिक उपचार की सहायता विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित भिन्न-भिन्न अनुसंधान परियोजनायें चला रहा है। इसी प्रकार मृदभाण्ड तथा अन्य वस्तुओं पर भी प्रयोगशाला में अध्ययन किया जा रहा है।

ताबू मठ, खुसरो बाग, डीग महल, किला अंदरून (पटियाला) से प्राचीन चित्रों से रंगद्रव्यों का अध्ययन आरंभ किया गया है। अंकोर वट मंदिर कम्पूचिया पर कार्य कर रही रसायन शाखा से ए.एस.आई. दल के विशेषज्ञ रासायनिक उपचार तथा परिरक्षण का कार्य कर रहे हैं। प्रक्रिया में क्राईप्टोगेमिक बढ़ोतरी कनसोलीडेशन को हटाने के लिए रसायन तथा विरोधी सूक्ष्म जीव-विज्ञानी उपचार और परिरक्षण शामिल है।

भूटान सरकार की इच्छानुसार विज्ञान शाखा से एक दल विभिन्न मठों में चित्रों को ठीक करने का कार्य कर रहा है।

पर्यावरणात्मक विकास

2.15 उद्यान विज्ञान शाखा द्वारा आगरा में अपने मुख्य कार्यालय तथा दिल्ली, आगरा और मैसूर में मंडलीय कार्यालयों के साथ मुख्य उद्यान वैज्ञानिक के अधीन पर्यावरण संबंधी तथा उद्यान विज्ञान कार्यों का पर्यवेक्षण किया जा रहा है। जम्मू व कश्मीर में अवंतीपुर में परिहासपुर, अवंतीस्वामी मंदिर तथा अवंतीश्वर मंदिरों में तंजावूर में वृहदेश्वर मंदिर, तमिलनाडु में गंगायकोन डेचोलापुरम, पश्चिम बंगाल के विश्नपुर में कलाचंद तथा राधामाधव मंदिर, उत्तर प्रदेश जौनपुर में शाही किले में भू-दृश्य तथा नए पुरातत्वीय उद्यान विकसित किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

ताजमहल आगरा, उत्तर प्रदेश, हुमायूँ का मकबरा तथा लालकिला नई दिल्ली, बीबी का मकबरा औरंगाबाद तथा शनवारखड़ा, पुणे, महाराष्ट्र, चित्तौड़गढ़ किला, राजस्थान, वेल्हा गोवा, गोवा में चर्च के आस-पास प्रसिद्ध पुरातत्वीय उद्यानों का उचित रूप से पर्यवेक्षण किया जा रहा है।

स्थल संग्रहालय

2.16 सर्वेक्षण की संग्रहालय शाखा देश में फैले 29 स्थल संग्रहालयों की देखभाल करती है। यह शाखा कलकत्ता में मुख्य कार्यालय के साथ दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास तथा वेल्हा गोवा में स्थित चार क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ कार्य कर रही है।

2.17 सिंहपुर महल, चंदेरी, ग्वालियर का किला, मध्य प्रदेश; हजारद्वारी महल, मुर्शीदाबाद, पश्चिम बंगाल; राजामहल चंद्रगिरि, आंध्र प्रदेश में नए संग्रहालय स्थापित करने का कार्य प्रगति पर है। हजारद्वारी महल, मुर्शीदाबाद में 9 वीथियों के संगठन और रसायनिक उपचार तथा पांडुलिपियों और पुस्तकों का प्रबंध का कार्य पूर्ण किया जा चुका है। दिल्ली के लाल किले में स्थित संग्रहालयों, पुराना किला और भारतीय युद्ध स्मारक संग्रहालयों में, आंध्र प्रदेश में कोंडापुर, अमरावती और नागार्जुनकोंडा, बिहार में बौद्ध गया, नालन्दा और वैशाली, गुजरात में लोथल, गोवा में वेल्हा गोवा; कर्नाटक में ऐहोल बादामी, बीजापुर, हम्पी, हड़ेविदुर और श्रीरंगपटनम, मध्य प्रदेश में खजुराहो और सांची, उड़ीसा में कोणार्क, राजस्थान में कालीबंगा और उत्तर प्रदेश में सारनाथ में वीथियों के पुनर्संगठन का कार्य प्रगति पर है।

2.18 सारनाथ के स्थल संग्रहालय में भारी संख्या में आने वाले दर्शकों के लिए आवधिक व्याख्यान के लिए एक निकट वृत्तीय दूरदर्शन यंत्र लगाया गया है।

ऊपर दी गई सूची के विभिन्न संग्रहालयों में प्रदर्शित वस्तुओं के सूचकांक और चित्र प्रलेखन के कार्य में काफी प्रगति हुई है।

2.19 रत्नागिरि में स्थल संग्रहालय के लिए भवन का कार्य लगभग पूरा होने को है। रोपड़ में स्थल संग्रहालय के लिए भवन का कार्य हाल ही में शुरू किया गया है और वीथियों के गठन के लिए तैयार किया जा रहा है।

2.20 विभिन्न स्थानीय प्रदर्शनियों के अतिरिक्त इन अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों के लिए पुरातत्व और कला वस्तु उपलब्ध कराई गई थीं:

सोवियत संघ मास्को में भारत महोत्सव, के दौरान "द्रुज्बा दोस्ती",

जापान में भारत महोत्सव के दौरान नारा में "सिल्क रोड एक्सपोजीशन"।

2.21 19.11.88 से 25.11.1988 के बीच मनाये गए "विश्वदाय सप्ताह" के दौरान आंध्र प्रदेश, बिहार, दिल्ली, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में स्मारकीय दाय पर चित्र प्रदर्शनियां आयोजित की गईं।

नवम्बर 1988 में महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय की तीसरी शताब्दी मनाई गई।

यूनेस्को आई.सी.ओ.एम. ओ.एस.

2.22 16 नवम्बर 1972 को यूनेस्को के 17वें सत्र में आम सभा द्वारा पारित किए गए विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत संरक्षण के लिए सम्मेलन आयोजित किया गया और 1977 में भारत द्वारा इसकी अभिपुष्टि की गई।

2.23 विश्वदाय समिति ने 1977 में हुई अपनी बैठक में विशिष्ट सार्वभौमिक मूल्यों के सांस्कृतिक और प्राकृतिक स्थलों को शामिल करने के लिए नामांकन पत्र आमंत्रित करने का निर्णय किया गया है। भारत ने 25 सांस्कृतिक स्थलों के संबंध में प्रस्ताव भेजा है जिनकी सूची संलग्न है। इसके अतिरिक्त कथित सूची में 9 राष्ट्रीय स्थलों को भी शामिल करने का प्रस्ताव है। 1987 के अंत तक 25 सांस्कृतिक स्थलों में से 13 विश्व विरासत सूची में शामिल किए जा चुके हैं।

2.24 भारत सरकार के निर्णयानुसार भारत में विश्वदाय स्मारकों और स्थलों की उन्नति के लिए 18 अप्रैल, 1988 को विश्वदाय दिवस मनाया गया। तदनुसार 13 विश्वदाय स्मारकों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। दर्शकों को यादगार के लिए एक सुरुचिपूर्ण सांकेतिक पास भी दिया गया। धातु पट्टिकाएं जिन पर विश्वदाय शब्द लिखे हुए थे और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने उपरोक्त सभी स्मारकों का विश्वदाय के स्तर की शिलालेखों से प्रचार किया और इन समारोहों पर प्रकाश डालने के लिए कपड़े के बैनर लगा दिए। इन स्मारकों के विशिष्ट संदर्भ में भारतीय विरासत पर फिल्म शो और पुरातन कलाओं और ऐतिहासिक कलाओं पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन इस समारोह का एक भाग थे।

2.25 भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने भारत की स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की वर्षगांठ के अवसर पर सारे देश में 19 नवम्बर से 25 नवम्बर तक विश्वदाय सप्ताह मनाया। दिल्ली में, भारत में विश्वदाय स्मारकों पर दो चित्र प्रदर्शनियां, बाल भवन में कलाकारियों, पक्षियों और जानवरों के चित्रांकन, खेलों और पुरातन मनोरंजन के तरीकों, बौद्ध दन्त कथाओं आदि पर बल दिया गया।

पुरातत्त्व संस्थान

2.26 भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने, पुरातत्त्व के विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण और अनुसंधान की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को जुटाने के लिए 1959 में एक पुरातत्त्व स्कूल स्थापित किया। व्यावहारिक प्रशिक्षण देने के लिए इसका नाम बदल कर पुरातत्त्व संस्थान रखा गया और 1986-88 में इसका पहला सत्र शुरू किया गया।

2.27 1986-88 के वर्ग का पुरातत्त्व प्रशिक्षण में दो वर्ष का स्नातकोत्तर डिप्लोमा पूर्ण हो गया है। सितम्बर 1988 में प्रशिक्षणार्थी संस्थान से चले गये, 1987-89 के वर्ग के विद्यार्थियों का प्रशिक्षण प्रगति पर है और 1988-90 के लिए चयन का कार्य पूर्ण हो गया है और 15 प्रशिक्षणार्थी चुन लिए गए हैं। इस वर्ग के विद्यार्थी हरियाणा में थानेश्वर क्षेत्र में उत्खनन का प्रशिक्षण ले रहे हैं।

2.28 जून-जुलाई 1988 में हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा में संरचनात्मक तथा रसायन संरक्षण में एक अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के 87-89 के वर्ग के विद्यार्थियों और भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के 16 मनोनीत व्यक्तियों और पुरातत्त्व राज्य विभागों और अन्य संस्थानों द्वारा भाग लिया गया। पुरालेखों और मुद्राशास्त्र पर एक अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। वर्ष 1988-89 के दौरान पुरालेख में उच्च अध्ययन/अनुसंधान, पुरातत्त्व, लुप्त भाषाओं, लिपियों और मुद्राशास्त्र के लिए अध्येतावृत्ति प्रदान करने के लिए 6 आवेदकों का चयन किया गया है।

प्रकाशन

2.29 सुरकोटाडा उत्खनन की रिपोर्ट प्रेस में है। मंदिरों के पुरातत्त्व सर्वेक्षण की शृंखला में "प्रतिहार मंदिर" और "खुजराहो मंदिर" भी प्रेस में है।

पुरालेख पर पुस्तकें, 1974-75, 1979-80 और 1980-81 वर्षों की वार्षिक रिपोर्ट, एपीग्राफिका इंडिका खंड 40 (भाग 3-7), 41 और 42 सभी छापे जायेंगे। इन्सक्रिप्सन्स कारपस इण्डिकेरम् की श्रृंखला में खंड सात (भाग 2) और दक्षिण भारतीय शिलालेख खंड 26 भी पूरे किये जायेंगे। पुनर्प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत, सूचकांक और अन्य प्रकाशन जो इस समय स्टॉक में नहीं है, भी छापे जायेंगे।

केन्द्रीय पुरातत्त्व पुस्तकालय

2.30 भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के केन्द्रीय पुरातत्त्व पुस्तकालय में 87,791 पुस्तकें है जिनमें अधिकतर पुरातत्त्व की विभिन्न शाखाओं पर दुर्लभ पुस्तकें है। 1988-89 के दौरान 1949 नई पुस्तकें और पत्रिकाएं संग्रह में शामिल की गई हैं।

विदेशों में अभियान

2.31 गत वर्ष के कार्यक्रम के क्रम में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के 13 सदस्यों का एक दल अंकोर वट के मन्दिर परिसर के रसायनिक संरक्षण और संरचनात्मक अनुरक्षण के लिए कम्पूचिया भेजा गया और भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के सभी सदस्यों का एक दल लुआंडा- (अंगोला), में "केन्द्रीय सशस्त्र सेवा संग्रहालय का नवीकरण" परियोजना कार्य के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

2.32 भारत-नीदरलैण्ड सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत दो प्रतिनिधि अप्रैल, 1988 में आये, भारत-अफगान के अन्तर्गत अगस्त 1988 में एक प्रतिनिधि आया, भारत-सोवियत संघ के अंतर्गत नवम्बर-दिसम्बर, 1988 में एक प्रतिनिधि आया, और भारत-जर्मन प्रजातांत्रिक गणतंत्र के अंतर्गत जनवरी, 1989 में दो प्रतिनिधि आए।

2.33 भारत-अफगान; भारत-बहरीन; भारत-बंगलादेश; भारत-मिस्र; भारत-फ्रांस; भारत-इटली; भारत-यूनान; और भारत-चैक के सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के आदान-प्रदान को कार्यान्वित करने की कार्रवाई की गई।

2.34 भारत-फ्रांस विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत फ्रांस से 8 सदस्यों के एक दल ने भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के सहयोग से हरियाणा के रोहतक-जींद-हिसार क्षेत्र का संयुक्त पुरातात्विक कार्य शुरू किया है और क्षेत्र के सांस्कृतिक क्रम को सुनिश्चित करने के लिए परीक्षण खाइयां खोदी गईं।

सार्क कार्यकलाप

2.35 भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण से 4 सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल दिसम्बर, 1988 में इस्लामाबाद गया और तीसरे दक्षिणी एशियाई पुरातात्विक कांग्रेस में भाग लिया।

स्मारक और पुरावस्तु

2.36 प्राचीन स्मारक, पुरातात्त्विक स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 में किए गए प्रावधान के अनुसार निम्नलिखित 16 स्मारक राष्ट्रीय महत्त्व के घोषित किए गए हैं :—

सराय शाहजी में स्मारक समूह,दिल्ली; सुरकोटाडा, जिला कच्छ, गुजरात में प्राचीन स्थल; गांव गोराज, ज़िला वडोदरा, गुजरात में प्राचीन स्थल; तिसारू, लेह, जम्मू एवं कश्मीर में प्राचीन स्तूप; नौरंगाबाद, जिला भिवानी हरियाणा में प्राचीन स्थल; अरातीपुर जिला मंड्या, कर्नाटक में प्राचीन जैन स्मृति चिन्ह बरहट, रेवा, मध्य प्रदेश में शिलाश्रय महाश्म और बिहार आदि; गऊ मुख नाथ मन्दिर, नचना, जिला पन्ना, मध्य प्रदेश; बटेश्वर में मन्दिरों का समूह, जिला मोरेना, मध्य प्रदेश; उक्काद में उकादेश्वर मन्दिर और महादेव मन्दिर, जिला भिंड, महाराष्ट्र; भुवनेश्वर महादेव मन्दिर भुवनेश्वर, जिला कटक, उड़ीसा; झोर में बाबर उद्यान स्थल, जिला धौलपुर, राजस्थान; दुब्दी मठ, सिक्किम, सिक्किम की प्राचीन राजधानी, रबेनत्से का स्थल युकसन के समीप नोरबूगंज का राज्याभिषेक स्थल, सिक्किम, और वक्षनगर में प्राचीन अवशेष, पश्चिमी त्रिपुरा, त्रिपुरा।

2.37 पुरावशेष एवं कला निधि अधिनियम, 1972 के कार्यान्वयन के संबंध में पर्याप्त प्रगति की गई है। सितम्बर 1988 तक 7419 पुरावशेषों को पंजीकृत किया गया।

2.38 रोकी गई कला वस्तुओं की जांच के लिए जो बैठकें हुई थीं उन सभी 17 अपील बैठकों में सीमा शुल्क केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो के साथ-साथ निजी मालिकों द्वारा भी भाग लिया गया था। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के अपीलीय प्राधिकरण द्वारा 210 वस्तुओं की जांच की गई थी, जिनमें से 66 वस्तुओं को पुरावशेष और शेष 144 वस्तुओं को पुरावशेष नहीं पाया गया।

2.39 विभिन्न विदेश प्रदर्शनियों में पुरावशेषों के लिए 12 अस्थायी निर्यात अनुमति-पत्र 4196 पुरावशेषों/चित्रकला के लिए जारी किए गए।

केन्द्रीय रूप से संरक्षित किए गए विभिन्न स्मारकों से मूर्ति की चोरी के 6 मामले तथा मूर्ति की क्षति का एक मामला सूचित कर दिया गया था। ये केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो को जांच के लिए सूचित कर दिए गए हैं। पुरावशेषों से संबंधित फर्मों के लाइसेंस के नवीनीकरण के लिए लाइसेंस अधिकारी द्वारा 5 पुरावशेष दुकानों का निरीक्षण किया गया था।

भारत उत्सव

2.40 सोवियत संघ में भारत उत्सव के दौरान भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण से 8 सदस्यों ने शीर्षक द्रुज्बा-दोस्ती पुरातत्त्व अनुभाग नामक प्रदर्शनी में भाग लिया और भारत उत्सव के दौरान नारा, जापान में "सिल्क रोड एक्सपोजीशन" प्रदर्शनी के लिए 10 कलावस्तुएं उधार दी गई थीं।

औद्धारिक पुरातत्व

2.41 नर्मदा घाटी परियोजना के दौरान इन्दिरा सागर परियोजना के आप्लावित क्षेत्र में महत्वपूर्ण पुरातत्व संबंधी सम्पत्ति के उद्धार के लिए एक व्यापक खोज की जा रही है।

2.42 गोवा में कुर्दी के महादेव मन्दिर के स्थानांतरण के लिए दूसरे स्थान में नींव रखे जाने का कार्य प्रगति पर है।

आंध्र में श्रीशैलम बांध निर्माण के कारण, आलमपुर में कुडावल्ली संगमेश्वर मंदिर को गिरा दिया गया था और दूसरे स्थान पर मूल रूप में इसका पुनर्निर्माण शुरु कर दिया गया था। नए स्थान आलमपुर में मंदिर का पुनर्निर्माण कार्य प्रगति पर है।

समुद्री पुरातत्त्व

2.43 अब भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने समुद्री पुरातत्त्व के लिए राष्ट्रीय समुद्री विज्ञान संस्थान गोवा के साथ सहयोग किया है। इसके लिए प्रशिक्षण एवं अन्य कार्यकलापों के लिए इसने अपने कर्मचारियों को प्रतिनियुक्त किया है।

अध्याय 3

संग्रहालय

1. भारतीय कला और पुरातत्त्व संग्रहालय

राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

क्रय

3.1 82,37,842.50 रुपए की राशि की 840 कला-वस्तुओं का लिखित प्रमाण सामान्य प्राप्ति रजिस्टर में दर्ज किया गया।

श्री कृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र के लिए दो कला वस्तुएं अर्थात् (1) पत्ते के फलक पर कृष्ण-लीला का दृश्य दिखाते हुए एक पेंटिंग और (2) कृष्ण-लीला पर 47 चित्रों सहित एक पांडुलिपि 45,000/- रुपए में क्रय की गई, तथा दर्ज की गई।

3.2 इस अवधि के दौरान खरीदी गई अन्य उत्कृष्ट कला-वस्तुएं हैं : मैसूर स्कूल पेन्टिंग्स, केरल के हाथी दांत की पालकी और कल्पसूत्र की चित्रों सहित पांडुलिपियां, ऊनी शालें, चार फुल्कारी, राजस्थानी पेन्टिंगें, पद्मटंका का सोने का सिक्का, नादिरशाह का सोने का एक सिक्का, एक क्लब, सोने की पच्चीकारी, एक सोने की पच्चीकारी वाली तोड़ेदार बंदूक; सोने की एक हंसुली, सोने और हीरे की चूड़ियों का एक जोड़ा, पालकी के चार पायों का एक सैट, फारसी में औरंगजेब का फरमान; एक चित्रित जैन पिछवई; कशीदे वाली चद्दरें; कशीदाकारी के ऊनी चोगे; वलूचर साड़ियां; एक चित्रित जैन पट; कांगड़ा शैली की पेंटिंगें, चांदी की सुराहियां, दीवार लटकनें; चित्रित पर्दे; चांदी का हुक्का; चांदी का एक फूलदान; घोड़े के जेवरों का एक सैट, हाथीदांत की पेंटिंगों सहित चांदी का एक पर्दा, महिषासुरमर्दिनी और रसिक-प्रिया की एक साधारण पेंटिंग।

दान : उपहार

3.3 (क) प्रधानमंत्री कार्यालय से 21 मानव-शास्त्रीय वस्तुएं।
(ख) अफगानिस्तान के राष्ट्रपति द्वारा भेंट किया गया संगमरमर का एक बॉक्स
(ग) स्वीडन की सुश्री सुज़ेना वेज्लेंड से तमिल में एक पत्ते के फलक पर लिखी पांडुलिपि
(घ) श्रीलंका के प्रधानमंत्री द्वारा चाँदी की एक प्लेट
(ङ) मास्को के रूब्लीव संग्रहालय द्वारा ताँबे की एक प्लेट।

कला क्रय समिति की बैठकों के दौरान 1,36,64,155.15 रुपए मूल्य द्वारा क्रय की गई 1928 उपार्जित कला-वस्तुओं का फोटो प्रलेख किया गया और विभिन्न विभागों को वितरित किया गया।

राष्ट्रीय संग्रहालय के संग्रह में जेवरातों और कीमती पत्थरों का मूल्य-निर्धारण किया गया। रिपोर्ट संस्कृति विभाग को दी गई।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

3.4 भारत सरकार के विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम हैं और राष्ट्रीय संग्रहालय (1) संग्रहालय कार्मिकों के आदान-प्रदान (2) कला-प्रदर्शनियों के आदान-प्रदान (3) कला-प्रकाशनों के आदान-प्रदान और (4) कला वस्तुओं की प्रतिभूतियों (कला के कार्यों के पुनर्निर्माण) के आदान-प्रदान के संबंध में 88 देशों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ा है।

CENTRAL LIBRARY

3.5 राष्ट्रीय संग्रहालय ने "बुल्गारिया में भारतीय संस्कृति दिवस" के तत्वाधान में 69 लघु चित्रों की एक प्रदर्शनी सोफिया, बुल्गारिया भेजी।

राष्ट्रीय संग्रहालय चीन, इटली, आस्ट्रेलिया, अल्जीरिया, अफगानिस्तान, यूगोस्लाविया, क्यूबा और सोवियत संघ जैसे देशों के साथ भी पारस्परिक आधार पर प्रदर्शनियां लगाने के लिए बातचीत कर रहा है।

शिक्षा एवं संस्कृति पर भारत-अमरीका उप-आयोग

3.6 राष्ट्रीय संग्रहालय ने, सांस्कृतिक विरासत और उद्यम की संयुक्त समिति का सचिवालय होने के कारण समिति से संबंधित सभी कार्यों को उससे संबद्ध संगठनों तथा उप-आयोग के अमरीकी सचिवालय, आई.सी.सी.आर. तथा यू.एस.आई.एस. नई दिल्ली को अद्यतन बनाए रखा है।

इस समिति की वार्षिक बैठक भारत और अमरीका में बारी-बारी से होती है। इस वर्ष संयुक्त बैठक भारत में होगी और इसकी तैयारियां चल रही है।

भारत में प्रदर्शनियां

3.7 भारत में सोवियत महोत्सव के तत्वावधान में "क्रेम्लिन" मास्को के राजकीय संग्रहालयों से कला-निधियों का आयोजन।

नागालैंड, बस्तर, अंडमान और निकोबार और संथाल परगना बिहार से "आदिवासी कला"।

भारत महोत्सव के तत्वावधान में सोवियत रूस में आयोजित प्रदर्शनी के लिए भारत द्वारा उधार दी गई "तंजोर और मैसूर स्कूल पेन्टिंग्स" की कला-वस्तुएं।

भारत में फ्रांस-महोत्सव के लिए "फ्रेंच ब्रांजेज-रेनेसां रोदां-फ्राम द लारे, पेरिस" की उद्घाटन प्रदर्शनी।

मैक्समूलर भवन के सहयोग से "सिन्धु घाटी सभ्यता" की एक फोटो प्रदर्शनी आयोजन।

पांडुलिपि वीथि, प्रागैतिहासिक वीथि, केन्द्रीय एशियाई पुरातत्व वीथि और मानव शास्त्र वीथि का पुनर्गठन।

विदेशों में प्रदर्शनी

3.8 नारा राष्ट्रीय संग्रहालय जापान में "सिल्क रूट एक्सपोजिशन", भारतीय चित्र बुल्गारिया भेजे गए। भारत महोत्सव प्रदर्शनियों के लिए उधार ली गई कला-वस्तुएं संबद्ध व्यक्तियों को लौटा दी गईं।

शैक्षिक कार्यकलाप

3.9 संग्रहालय-शास्त्र में 20वां अल्पकालीन सेवाकालीन पाठ्यक्रम चलाया गया।

जिज्ञासुओं और छात्रों के लिए संग्रहालय-शास्त्र में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

"भारत के गौरवशाली वास्तुकार" सहित एक चल प्रदर्शनी बस एक माह के भ्रमण पर राजस्थान भेजी गई।

हर माह "घटनाओं के कैलेण्डर" की 1500 प्रतियां शैक्षिक संस्थाओं, संग्रहालयों और अन्य रुचि लेने वाले व्यक्तियों को भेजी गईं।

3.10 संग्रहालय में अतिविशिष्ट व्यक्तियों सहित 1,01,232 पर्यटक आए।

आम जनता और स्कूली बच्चों के लिए प्रतिदिन आठ सूचनादर्शी भ्रमण दौरे आयोजित किए गए।

प्रतिदिन चार फिल्म शो-प्रदर्शित किए गए।

प्रति माह चार वीथि-वार्ताओं की व्यवस्था की गई।

स्कूली बच्चों के लिए "भारतीय कला" पर ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

"कला मूल्यांकन" पर चार माह का पाठ्यक्रम चलाया गया।

"भारतीय कला और संस्कृति" पर चार माह का एक पाठ्यक्रम शुरू किया गया।

"सिंधु घाटी सभ्यता" पर एक सेमिनार आयोजित किया गया।

विख्यात विद्वान श्री विओदिजमियर्स ब्रंज द्वारा पॉलिश कला पर दो व्याख्यान। बारह गैलरी शीट्स बिक्री के लिए रखी गईं।

इस वर्ष के दौरान 30 नवम्बर, 1988 तक 6000 स्लाइडें, तैयार की गई। इसके अतिरिक्त अमरीका से 1000 स्लाइडों का उपहार प्राप्त हुआ। 5000 से ऊपर स्लाइडों की पहचान की गई और उनका मूल्य-निर्धारण किया गया।

कला-इतिहास रक्षण तथा संग्रहालय-शास्त्र

3.11 कला का इतिहास, परिरक्षण और संग्रहालय-शास्त्र की संग्रहालय-शास्त्र संस्था को राष्ट्रीय संग्रहालय में स्थापित किया जा रहा है और शीघ्र ही इसे विश्वविद्यालय स्तर की मान्यता दी जाने की सम्भावना है।

संरक्षण

3.12 विभिन्न विभागों में 335 वस्तुओं पर कार्य पूरा हो गया है और 204 वस्तुओं पर कार्य प्रगति पर है।

तकनीकी अध्ययन के लिए दीर्घकालीन परियोजनाएं प्रारम्भ की गईं।

तैलीय और अन्य चित्रों की विश्लेषणात्मक और अनुप्रस्थ वर्गीय जांच की गई।

धातुरचना-विज्ञान की जांच के लिए स्तरीय नमूने तैयार किए गए।

3 पत्थर की वस्तुओं के विशिष्ट भार का पता लगाया गया। राष्ट्रीय संग्रहालय के ट्यूबवैल से पानी के नमूने का भारीपन ज्ञात किया गया। संदिग्ध रसायनों की शुद्धता का पता लगाया गया।

3.13 प्राप्त वस्तुओं के लिए फोटो-प्रलेखन, विवेचन चार्ट्स का निर्माण, रिकार्ड और सूची-पत्र बनाए गए। संरक्षण की प्रतिक्रियाएं दिखाने के लिए स्लाइडें तैयार की गईं।

नारा (जापान) प्रदर्शनी के पहले और बाद पत्थर की 24 पत्थर प्रतिमाएं, बुल्गारिया को भेजी गई, लघु चित्रों और सोवियत संघ से प्राप्त जेवरातों की प्रतिबन्धित रिपोर्ट की तैयारी।

वीथियों में पर्यावरणात्मक परिस्थितियों के मौके पर अध्ययन के लिए, एक स्टाफ-सदस्य को सोफिया, बुल्गारिया भेजा गया।

प्रतिरूपण (मॉडलिंग)

3.14 मूर्तियों की उत्कृष्ट कलाओं के 2591 कच्ची आकृतियों को प्लास्टर की पुताई करके तैयार किया गया। उसमें से 2491 आकृतियों को पूरा किया गया और 2373 आकृतियों पर रंग किया गया। इसके अतिरिक्त 13 उत्कृष्ट कलाकृतियां और रबर के दो ढांचे तैयार किए गए।

इन्दिरा गाँधी स्मृति संग्रहालय से प्राप्त 20 प्रतिमाओं की मरम्मत की गई।

रबर के नौ ढांचे और फाइबर ग्लास की 137 प्रतिकृतियां तैयार की गई।

श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र के लिए मूल प्रतिमाओं से दो नई प्रतिकृतियां और एक उसी आकार की एकरूप मूर्ति तैयार की जानी है।

प्रकाशन

संग्रहालय ने निम्न प्रकाशन जारी किए :

3.15 (क) डा. जाकिर हुसैन के जीवन पर एक चित्रमय एलबम
(ख) बच्चों के लिए "भारतीय कला पर ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम" के लिए प्रमाण-पत्र
(ग) संग्रहालय-शास्त्र में बीसवें अल्पकालीन सेवा-कालीन प्रशिक्षण के लिए प्रमाण-पत्र
(घ) "राजस्थानी चित्रों" के प्रकाशन का प्रारूप
(ङ) "दक्षिण भारतीय चित्रों" की प्रदर्शनी के लिए 5000 चित्रित फोल्डर
(च) "दक्षिण भारतीय चित्रों" की प्रदर्शनी के लिए लेबल
(छ) बीदरीवेयर "सूचीपत्र"
(ज) "क्रेम्लिन-मास्को से कला-निधियाँ तथा फ्रेंच ब्रांजेज प्रदर्शनी के लिए पोस्टर, लेबल, फोल्डर और ब्राशर्ज।

पुस्तकालय

3.16 (क) 1,73,564/- रुपए मूल्य की कला, पुरातत्व-शास्त्र, संस्कृति और इतिहास पर समृद्ध 400 पुस्तकें।

(ख) 1212 पुस्तकें सुलभ करवाई गईं, 844 पुस्तकों की सूची बनाई गई और 671 पुस्तकों को वर्गीकृत किया गया।
(ग) 153 पुस्तकों और पत्रिकाओं की जिल्द बाँधी गई।

विभिन्न संग्रहालयों को वित्तीय सहायता की योजना

3.17 "अन्य संग्रहालयों के पुनर्गठन और विकास के लिए वित्तीय सहायता" की योजना के अंतर्गत विभिन्न संस्थाओं को 13 लाख रुपए का अनुदान दिया गया।

भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता

3.18 भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता देश में सबसे बड़ा और अत्यधिक प्राचीन संग्रहालय है। इसकी स्थापना 1814 में की गई थी। इस संग्रहालय में कला, पुरातत्व विज्ञान, मानव विज्ञान, भू-विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और औद्योगिक प्राणीशास्त्र सहित प्रत्येक अनुभाग में पर्याप्त मात्रा में दीर्घाएं हैं। तीनों सांस्कृतिक अनुभागों का नियंत्रण इसके निदेशालय के अंतर्गत न्यासी बोर्ड करता है तथा बाकी तीन विज्ञान अनुभाग भारतीय सर्वेक्षण कार्यालयों के साथ हैं।

प्रदर्शनियां

3.19 2 फरवरी, 1988 को संग्रहालय के 174वें स्थापना दिवस के अवसर पर कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. भास्करानन्द रॉय चौधरी द्वारा "शक्ति प्रतिमा" पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया।

पहली मार्च, 1988 को गांधार पत्थर की वास्तुकला पर चित्रित बुद्ध के जीवन की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया।

4.8.1988 को *कालटालिक* की 11वीं वार्षिक बैठक के सहयोग से भारतीय संग्रहालय के हिन्दी में कार्यकलापों पर उसी तिथि को एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

6.9.1988 को गुरुसदय संग्रहालय में लोक और आदिवासी कला की एक झांकी आयोजित की गई और भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री ए.एन. राय द्वारा इसका शुभारम्भ किया गया।

20 से 31 दिसम्बर, 1988 तक मैक्स मूलर भवन के सहयोग से "मोहनजोदड़ो" एक विस्मृत नगर आयोजित किया गया था।

भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता ने राजकीय संग्रहालय, मेघालय और संग्रहालय निदेशक, आसाम के सहयोग से भारत सरकार के संस्कृति विभाग द्वारा प्रायोजित हमारी "सज्जात्मक कलाओं की विरासत" पर दो अन्तर्राज्यीय प्रदर्शनियां आयोजित कीं।

विदेशों में प्रदर्शनियां

3.20 भारतीय संग्रहालय ने अपने अनुभाग से बुद्ध की अभय मुद्रा में एक पत्थर की मूर्तिकला नारा राष्ट्रीय संग्रहालय, जापान में आयोजित "सिल्क रोड एक्सपोजीशन" प्रदर्शनी में भेजी।

चल प्रदर्शनी

3.21 पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थानों को दो प्रदर्शनियां भेजी गईः

(क) ग्रेटमेन ऑन म्यूजियम और भारतीय संग्रहालय के प्रारम्भिक संगठनकर्ता।
(ख) भारतीय संग्रहालय में आधुनिक मानवशास्त्रीय संग्रह।

मासिक प्रदर्शन

3.22 रामनवमी के अवसर पर "भारत-बर्मी कला में राम-सीता", कालिदास जयन्ती पर "कालिदास द्वारा प्रेरित वास्तुकला और चित्रकला"

कलकत्ता शहर के 298वें स्थापना दिवस के अवसर पर "बर्ड्स ऑफ कलकत्ता"

"चीनी सज्जात्मक कलाएं" —

सेमीनार

3.23 संग्रहालय के स्थापना सप्ताह समारोह पर एक ही विषय पर प्रदर्शनी के साथ-साथ "शक्ति प्रतिमाओं" पर एक कार्यशाला सेमीनार आयोजित किया गया।

भारतीय संग्रहालय और कलकत्ता की मुद्राशास्त्रीय सोसायटी द्वारा संयुक्त रूप से "प्राचीन बंगाल के सिक्के और अन्य प्रचलित मुद्राएं" पर एक दिवसीय सेमीनार आयोजित किया गया और भारतीय संग्रहालय और फोटोग्राफिक एसोसिएशन, दमदम द्वारा "मुद्राशास्त्रीय फोटोग्राफी" पर संयुक्त रूप से अन्य सेमीनार आयोजित किए गए।

हड़प्पा संस्कृति की पूर्व ऐतिहासिक अवधि के नए अनुसंधान, वैज्ञानिक और मुद्राशास्त्रीय उपलब्धियों को प्रकाश में लाने के लिए गोयथे इन्स्टीट्यूट, तथा मैक्समूलर भवन, कलकत्ता के सहयोग से एक दिवसीय सेमीनार की व्यवस्था की गई।

प्रशिक्षण-कार्यक्रम

3.24 दूसरा सेवाकालीन संग्रहालय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस दो माह के पाठ्यक्रम में लखनऊ, देहरादून, नई दिल्ली, गोहाटी के निदेशकों और ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन के एक प्रतिनिधि के साथ-साथ शहर के प्रसिद्ध विद्वानों और संग्रहालयशास्त्रियों द्वारा दिए गए 52 व्याख्यानों और प्रदर्शन-वार्ताओं का आयोजन किया गया।

भारतीय वास्तुकलाओं, चित्रों, सिक्कों, मन्दिर-शिल्प के साथ-साथ पुरातत्वों के उद्भव, वृद्धि और विकास पर संग्रहालय अध्ययन में चतुर्थ अल्प-पाठ्यक्रम चलाया गया।

विशेष व्याख्यान

3.25 छः व्याख्यानों की व्यवस्था की गई — "गंगा घाटी में टेरीकोटा का तकनीकी विश्लेषण", "सुदूर पूर्वी कला" (2 व्याख्यान), "कोरियाई कला", "डायमंड माइनिंग इन पन्ना", "भारत की लोक और आदिवासी कला का एक परिचय" और "इतिहास, मानवशास्त्र और शरतचन्द्र राय"

संग्रहालय शिक्षा का स्कूल और कॉलेज पाठ्यक्रम के साथ सहसम्बन्ध स्थापित करने के लिए दस व्याख्यानों का आयोजन किया गया। कक्षाओं के पश्चात् फिल्म-शो दिखाया गया।

एक जनसंचार कार्यक्रम की व्यवस्था की गई। "उदयशंकर" पर एक फिल्म दिखाई गई।

भारत और यूरोप के चित्र और चित्रकारों के कथानक पर तीन दिन का एक फिल्मोत्सव आयोजित किया गया। वन्य-जीवों के कथानक पर एक अन्य फिल्मोत्सव आयोजित किया गया।

प्रकाशन

3.26 वर्ष 1987-88 की उपलब्धियों और वर्ष 1988-89 के लिए लक्ष्यों को प्रकाश में लाने के लिए रंगीन चित्रों वाले पोस्टकार्डों, रंगीन वार्षिक फोल्डरों और फोटोग्राफी यूनिट के लिए लिफाफों का प्रकाशन/भारतीय संग्रहालय बुलेटिन 21, वार्षिक रिपोर्ट (ई.एन.जी.) 1987-88, शिलांग और गोहाटी में अंतर्राज्यीय प्रदर्शनी के लिए फ़ोल्डर और पोस्टर और प्रकाशन एकक ने तीन पुस्तक मेलों — विश्व पुस्तक मेला, नई दिल्ली; कलकत्ता पुस्तक मेला और पटना पुस्तक मेला, में भाग लिया।

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद

3.27 सुदूर पूर्वी चीनी-मिट्टी के बर्तनों की एक नई वीथि का वैज्ञानिक आधार पर पुनर्गठन किया गया था। सुदूर पूर्वी क्षेत्र अर्थात् चीन और जापान के इन 267 चीनी-मिट्टी के बर्तनों को 18 शो-केसों में प्रदर्शित किया गया। सुदूर पूर्वी मूर्ति-संग्रह की अन्य वीथि को आधुनिक वैज्ञानिक आधार पर पुनर्गठन करने के लिए लिया गया है। इस वीथि में बर्मा, नेपाल, तिब्बत, चीन और जापान आदि से 62 कला-वस्तुएं चुनी गई।

छः वीथियों का वातानुकूलन केन्द्रीय लोक-निर्माण विभाग (सी.पी.डब्लू.डी.) को सौंपा गया।

प्रलेखन

3.28 अधिकारियों ने विभिन्न श्रेणियों की 2440 कला-वस्तुओं का प्रत्यक्ष सत्यापन कर लिया है। संग्रहालय के कीपर-1 और कीपर-2 मुख्य खाताबही में कला वस्तुओं के 150 छायाचित्रों पर प्रति हस्ताक्षर कर चुके हैं।

शैक्षिक कार्यकलाप

3.29 "1947 से आंध्र प्रदेश की समकालीन कला के 40 वर्ष", "कुतुब शाही काल की सुलेखकला", "सिन्धु घाटी के विस्मृत शहर", और अन्तिम "भारतीय कला में पशु-पक्षी", पर चार अस्थाई प्रदर्शनियां आयोजित की गईं।

"सलारजंग-III और उनका काल", "संग्रहालय प्रदर्शन तकनीक", "केवार्कियन एलबम : खोए हुए संग्रह की खोज"; "टोंक संग्रहालय और पुस्तकालय", "सिंधु घाटी सभ्यता खोज का इतिहास" और "सिन्धु सभ्यता की कला" पर पांच व्याख्यान आयोजित किए गए।

"फाउन्डर्स गैलेरी", "क्लॉक्स गैलेरी", "मॉडर्न इण्डियन पेन्टिंग्स", "ब्रांजेज एण्ड पेन्टेड टैक्सटाइल्स"; "आइवरी गैलेरी" और "साउथ इण्डियन माइनर आर्ट्स गैलेरी" पर संग्रहालय के शिक्षा प्रकोष्ठ के अधिकारियों द्वारा छः गैलेरी वार्ताएं दी गई।

ब्रिटेन के श्री क्रिस्टोफर हडसन द्वारा "संग्रहालय प्रदर्शन" पर एक दो-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी।

प्रकाशन

3.30 दी सलारजंग म्यूजियम बाई. - एनुअल रिसर्च जर्नल वाल्यूम 21-22 भारत की सज्जात्मक कलाओं को समर्पित।

अस्त्र-शस्त्र और बख्तरबन्द की सूची की नमूने की प्रति तैयार है और मुद्रण के लिए भेजी जानी है।

अरबी पाण्डुलिपियों के वाल्यूम 6 की सूची की नमूने की प्रति अस्थाई प्रदर्शनी के अवसर पर "1947 से आंध्र प्रदेश की समकालीन कला के 40 वर्ष" पर एक सूचीपत्र प्रकाश में लाया गया।

अन्य कार्यकलाप

3.31 सलारजंग 3 जन्मदिन समारोह। 31 मई, 1988 से 6 जून, 1988 तक संग्रहालय में नवाब मीर युसुफ अली खान बहादुर सलारजंग-3 की 102 वीं वर्षगांठ मनाई गई। समारोह का उद्घाटन आंध्रप्रदेश सरकार के पिछड़ा वर्ग कल्याण और पर्यटन मंत्री डा. अल्लादी पी. राजकुमार द्वारा किया गया।

3.32 संग्रहालय की कुछ वीथियों के काफी बड़े भाग में विद्युत यंत्रों को लगाने का कार्य पूरा कर दिया गया है।

"1947 से आंध्र प्रदेश की समकालीन कला के विकास की परम्पराएं" पर एक सेमीनार आयोजित किया गया। इस अवधि के दौरान पाण्डुलिपि अनुभाग के अधिकारियों ने 3439 पाण्डुलिपियों (उर्दू, फारसी और अरबी पाण्डुलिपियां) का प्रत्यक्ष सत्यापन कर लिया है, और अनुलग्नकों सहित 4801 पारसी पाण्डुलिपियों की सूची बना ली है।

पुस्तकालय स्टाफ ने 7452 छपी हुई पुस्तकों को सत्यापित किया, और 2415 सूचीपत्र कार्ड तैयार किए और 1175 पुस्तकें विषय-वार वर्गीकृत की गईं। परिरक्षण (संरक्षण) प्रयोगशाला स्टाफ द्वारा 794 कला-वस्तुओं और लघु चित्रों को रासायनिक रूप से संसाधित किया गया। चित्र प्रत्यास्थापक ने 10 तैलचित्रों को प्रत्यास्थापित किया।

इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद

3.33 इलाहाबाद नगर निगम द्वारा, इलाहाबाद संग्रहालय, 29 अप्रैल 1986 को मौजूदा इलाहाबाद संग्रहालय सोसायटी को औपचारिक रूप से सौंप दिया गया था। यह उत्तर प्रदेश सरकार से 5.36 लाख रुपए की निश्चित वित्तीय सहायता सहित केन्द्र सरकार द्वारा पूर्णरूप से वित्त पोषित एक पंजीकृत स्वायत्त निकाय है। इस संग्रहालय में पंडित जवाहरलाल नेहरू, मुंशी प्रेमचन्द, कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त और श्रीमती महादेवी वर्मा जैसे विख्यात प्रकाण्ड विद्वानों के अलग संग्रह है।

संग्रहालय ने संग्रहालय शिक्षा और प्रकाशनों के माध्यम से अपना अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम शुरू किया है। आजकल इसने पंडित जवाहरलाल नेहरू शताब्दी समारोहों के साथ-साथ विशेष प्रदर्शनी लगा रखी है। संग्रहालय ने 8 लाख रुपए के मूल्य की कला-वस्तुएं क्रय की हैं जिनमें तिब्बती और चीनी तन्खाओं का संग्रह शामिल है। केन्द्र सरकार इस संग्रहालय को एक राष्ट्रीय संग्रहालय के रूप में विकसित करने के लिए विभिन्न योजनागत योजनाएं शुरू कर रही है जिससे यह निकट भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में कला-वस्तुएं भेजने और उन्हें प्राप्त करने में सक्षम बने।

प्रदर्शनियां

3.34 1. भारत में सोवियत महोत्सव के एक भाग के रूप में "टॉल्सटॉय और गांधीः जीवन और कार्य" पर प्रदर्शनी का आयोजन।

2. निम्नलिखित अस्थाई प्रदर्शनियां आयोजित की गईं :

(क) आधुनिक भारतीय चित्र
(ख) नेहरू जन्मशताब्दी समारोह की शुरुआत के अवसर पर नेहरू व्यक्तित्व

3. 26 अक्तूबर से 30 अक्तूबर, 1988 तक "भारतीय सिनेमा के 75 वर्ष" पर "इलाहाबाद फिल्म सोसायटी" और "उत्तर मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद के सहयोग से एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

4. जी.आर. शर्मा पुरातत्वीय सोसाइटी, इलाहाबाद के सहयोग से "नेहरू और आधुनिक भारत का निर्माण" पर एक प्रदर्शनी का आयोजन। भारत के उप-राष्ट्रपति माननीय डा. एस.डी. शर्मा ने 27 नवम्बर, 1988 को इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

5. कुम्भ-मेला दिसम्बर 88 जनवरी 1989 में, "इलाहाबाद काल के माध्यम से" के कथानक पर "गौरव नगरी प्रयाग" प्रदर्शनी आयोजित की गई।

सेमीनार और संगोष्ठी (परिसंवाद)

3.35 1. प्रोफेसर बी.आर. नन्दा द्वारा 29 से 31 मई, 1988 तक "टॉल्सटॉय और गांधी" पर राष्ट्रीय सेमीनार का उद्घाटन

2. आई.सी.ओ.एम.ओ.एफ. ओ.एस. द्वारा "संगीतशास्त्र और विकासशील देश" पर 29 नवम्बर, 1988 को एक अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन।

3. देतो बंका विश्वविद्यालय, जापान के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध संकाय के एक दल द्वारा 6 दिसम्बर, 1988 को सेमीनार-शैक्षिक ट्रिप किया गया।

4. "इलाहाबाद फिल्म सोसायटी" और "उत्तर मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद" के सहयोग से 28 अक्तूबर से 30 अक्तूबर, 1988 तक "भारतीय सिनेमा में महिलाएं" पर एक सेमीनार आयोजित किया गया।

5. 9 सितम्बर, 1988 को समाज-विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद द्वारा गोविन्द बल्लभ पंत जन्म-शताब्दी समारोह का समापन समारोह आयोजित किया गया। भारत सरकार के शिक्षा एवं संस्कृति राज्यमंत्री श्री एल.पी. शाही समारोह के मुख्य अतिथि थे।

शैक्षिक कार्यकलाप

3.36 आउट रीच कार्यक्रम के अंतर्गत इलाहाबाद जिले के 80 स्कूलों और कॉलेजों के 5,886 छात्रों ने इलाहाबाद संग्रहालय देखा।

2. कला, संस्कृति और विरासत पर दिन में दो बार नियमित डाक्यूमेन्ट्री फिल्म प्रदर्शन आयोजित किए गए।

3. दिन में दो बार छात्रों के लिए नियमित निर्देशित गैलेरी टूर आयोजित किए गए; टूर शिक्षा अधिकारियों और संग्रहालयीय स्टाफ द्वारा करवाए गए।

4. छात्रों के लिए प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा कला इतिहास पर तीन विशेष व्याख्यान आयोजित किए गए।

5. "इलाहाबाद विज्ञान मंच" द्वारा भ्रमणकारी स्कूली बच्चों के लिए प्रारम्भिक विज्ञान पर नियमित स्लाइड-लेक्चर आयोजित किए गए हैं।

6. पंडित जवाहरलाल नेहरू जन्मशताब्दी समारोह का श्रीगणेश 14 नवम्बर, 1988 पंडित जवाहर लाल नेहरू के आदमकद चित्र का अनावरण — विभिन्न आयु वर्ग के स्कूली बच्चों के लिए ऑन-द-स्पॉट चित्र प्रतियोगिता। कोलाज प्रतियोगिता; प्रतिष्ठित लेखकों और कवियों के मार्ग-दर्शन में स्कूल कालेज छात्रों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी में रचनात्मक लेखन कार्यशाला; प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कविता पाठ सत्र।

7. इन्दिरा गांधी वर्षगांठ : 19 नवम्बर, 1988 — नेहरू के व्यक्तित्व पर प्रदर्शनी का उद्घाटन।

चित्र और कोलाज प्रदर्शनी।

स्कूलों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम।

पुरस्कार वितरण समारोह

सामान्य अवाप्ति रजिस्टर : तैयारी —

3.37 1. वास्तुकलाएं — 560 कला-वस्तुओं का प्रत्यक्ष सत्यापन और जी.ए.आर. में प्रविष्टि
2. टेराकोट्टा — 2,725 — वही —
3. नेहरू संग्रहण — 1,221 — वही —
4. पाण्डुलिपियां — 1,500 — वही —
5. सज्जात्मक कला, प्रागैतिहासिक शस्त्र आदि — 617 — वही —

वीथियों का पुनर्गठन

3.38 1. नई प्रकाश व्यवस्था और रंग-योजना सहित प्राचीन वास्तुकला वीथि को नई दृष्टि दी गई।

2. मध्यकालीन वास्तुकलाएं एक नई वीथि में स्थानान्तरित की गईं।

3. एक आदर्श वीथि के रूप में आधुनिक प्रकाश व्यवस्था और प्रदर्शन तकनीक के साथ एक विशेष वीथि का निर्माण अस्थाई प्रदर्शनियों के लिए किया गया।

4. आगन्तुकों को निःशुल्क और आरामदायक संचरण के लिए चार वीथियों का पुनर्गठन किया गया।

विविध

3.39 1. स्टाफ केन्टीन, स्टाफ और आगन्तुकों के लिए मौजूदा शेड को एक केन्टीन में तब्दील किया जा रहा है।

2. पम्प हाउस से लॉन तक और अन्य वांछित स्थानों तक पानी की पाइप लाइन बिछाई गई है।

3. शीर्ष टंकी का निर्माण कार्य पूरा कर दिया गया है।

4. लानों के विकास का कार्य आंशिक रूप से पूरा किया गया है।

5. बोरिंग पम्प से आवासीय गृहों तक पाइप-लाइन बिछाई गई।

आगन्तुक

3.40 1,03,232 भारतीय और विदेशी पर्यटक, शोधकर्ता आदि के रूप में इलाहाबाद संग्रहालय में आये। (इन आंकड़ों में संग्रहालय आने वाले बच्चों की संख्या शामिल नहीं है।)

स्टाफ को प्रशिक्षण और व्याख्यान-प्रायोगिक प्रदर्शन

3.41 1. श्रीमती सुनीता बक्षी, पूर्व निदेशक, शिल्प-संग्रहालय, नई दिल्ली;

2. श्री एच.के. नाथानी, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण, लखनऊ।

2. समकालीन इतिहास और कला संग्रहालय

विक्टोरिया मेमोरियल हाल, कलकत्ता

शैक्षिक कार्यक्रम

3.42 सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रम, जो मेमोरियल के कार्यकलापों का नियमित अंश हैं जिनमें जनता के लिए आवधिक लैक्चर, विशेष प्रदर्शनियां, प्रकाशन और गाइड सेवाएं शामिल हैं, जारी रखे गए।

विशेष प्रदर्शनियां

3.43 मेमोरियल के दरबार हाल में अप्रैल, मई और नवम्बर, 1988 में 3 विशेष प्रदर्शनियां लगाई गईं। पहली दो भारत में सोवियत महोत्सव के संबंध में थीं। वे सोवियत संघ की जनता की समकालीन सज्जात्मक और व्यावहारिक कलाओं पर और सोवियत महिलाओं पर थीं।

तीसरी प्रदर्शनी मेमोरियल और भारतीय पुरातत्त्व संस्थान, पश्चिम बंगाल चेप्टर द्वारा इस विषय पर संयुक्त रूप से प्रायोजित सेमीनार के अवसर पर हमारी पुरातत्त्वीय विरासत पर थी। इसमें एक माह से भी अधिक के लिए लोगों के लिए बड़ी संख्या में छायाचित्र, नक्काशियां और लीथोग्राफ अवलोकनार्थ थे।

सेमीनार

3.44 हमारी पुरातत्त्वीय विरासत के परिरक्षण पर सेमीनार से अलग दरबार हाल में दिसंबर, 1988 में कलकत्ता की त्रिशताब्दी के लिए एक शहरी परिप्रेक्ष्य पर दूसरा सेमीनार आयोजित किया गया। सेमीनार का उद्घाटन पश्चिम बंगाल के राज्यपाल प्रोफेसर एस. नूरूल हसन द्वारा किया गया।

विक्टोरिया मेमोरियल ने कलकत्ता के दलित बच्चों के लिए विविध कार्यों के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र और आई.एन.टी.ए.सी.एच. (बर्दवान) के साथ मिलकर कार्य किया। कलकत्ता की गन्दी बस्तियों से एक सौ से अधिक बच्चों ने इसमें भाग लिया।

प्रकाशन

3.45 इस अवधि के दौरान, विक्टोरिया मेमोरियल पर नए पिक्चर पोस्टकार्ड चित्रित करवाए गए और विभिन्न कोणों से मेमोरियल को प्रदर्शित करते हुए पुनर्मुद्रित पिक्चर पोस्टकार्ड बिक्री के लिए जारी किए गए। उर्दू की एक मार्गदर्शी पुस्तक और एमिली एडन के स्केचों का विवेचनात्मक सूचीपत्र (दो नए प्रकाशन) और ब्रिटिश काल के चुने हुए दस्तावेजों का रिप्रिंट और बंगाल के नवाबों पर एक इतिहास-रेखाचित्र शीघ्र ही बिक्री के लिए रखा जाएगा। विक्टोरिया मेमोरियल पर एक बहुरंगी फोल्डर प्रकाशनाधीन है।

इस अवधि के दौरान मेमोरियल के प्रकाशन बिक्री काउन्टर से कुल 5060 प्रकाशन बेचे गए।

आगन्तुक

3.46 गाइड द्वारा गैलेरी के इर्दगिर्द 3,800 आगन्तुकों को घुमाया गया और विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं से कुल 76 छात्र और शिक्षक आए। देश के विभिन्न भागों से 150 स्कूलों के छात्र निःशुल्क रूप से मेमोरियल आए। 22 प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण व्यक्तियों को मेमोरियल दिखाया गया।

राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि, नई दिल्ली

3.47 राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि संस्कृति विभाग का एक अधीनस्थ कार्यालय है। वीथि 1850 से आगे की आधुनिक कला वस्तुओं का अधिग्रहण तथा उनका परिरक्षण करती है और देश तथा विदेशों में प्रदर्शनियां आयोजित करती है।

कला संग्रह

3.48 252 कलाकृतियों का एक संग्रह 17,92,445/- रु. में खरीदा गया। चार कलाकृतियां उपहार स्वरूप प्राप्त हुई (दो सोवियत रूस से, एक पुर्तगाल तथा एक कलकत्ता से)।

प्रदर्शनियां

3.49 सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न देशों के साथ निम्नलिखित कला प्रदर्शनियों का आदान-प्रदान किया गया —

बाहर भेजी जाने वाली प्रदर्शनियां

"भारतीय महिला कलाकार" बुल्गारिया (सोफिया) तथा पौलेण्ड भेजी गई।
"भारतीय समकालीन कला" जापान भेजी गई।
"रवीन्द्रनाथ टैगोर की चित्रकलाएं तथा उसके स्मृति चिन्ह" जापान भेजी गई।

3.50 देश में बाहर से आने वाली प्रदर्शनियां जर्मनी से "सामग्री, रोशनी तथा लय कविता"
भारत में सोवियत महोत्सव के दौरान 19वीं तथा 20वीं शताब्दी की "रूसी चित्रकलाएं।"

केलिफोर्निया विश्वविद्यालय से "विजन आफ इन्नर स्पेस"

भारत में सोवियत महोत्सव के दौरान "सोवियत कलाकारों की नजर में भारत।"

जर्मनी से "70 के ग्राफिक"

गुट निरपेक्ष देश, टीटोगार्ड तथा यूगोस्लवाकिया से जोसिप ब्राज़ टीटो कला वीथि से संग्रह।

वर्ष के दौरान "स्वतंत्रता पूर्व की कला" तथा "रविन्द्रनाथ टैगोर की नई कलाकृतियां तथा चित्रकला" की अन्य प्रदर्शनियां भी लगाई गईं। चल प्रदर्शनी बस में "चित्रों में समकालीन आधुनिक कला" प्रदर्शनी विभिन्न महत्वपूर्ण पुरातत्त्व स्थलों पर भेजी गई और इस प्रदर्शनी को 2023 लोगों ने देखा।

अन्य कार्यकलाप

3.51 राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि में लगभग 119 स्कूल/दल आए। 89 विदेशी दलों को आयोजित दौरों की सुविधा उपलब्ध कराई गई। कला छात्र तथा जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली के छात्रों के लिए "राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि की पहचान" नामक एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 258 फिल्म शो आयोजित किए गए। विभिन्न आयु वर्गों के लिए 26 वैकल्पिक रविवारों को कला स्कैच बैठकें आयोजित की गईं।

तीन कलाकारों पर तीन महत्वपूर्ण मोनोग्राम अर्थात् अवनीन्द्रनाथ टैगोर, रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा अमृता शेरगिल पर द्विभाषी रूप में निकाले गए।

कला संदर्भ पुस्तकालय में कला पर 790 पुस्तकें और जोड़ी गईं तथा 38 पत्रिकाएं तथा समाचार पत्र मंगाएं गए।

फोटो अनुभाग में विभिन्न परियोजनाओं के लिए 2223 नेगेटिव, 6779 श्वेत एवं श्याम फोटोग्राफ, 521 रंगीन फोटोग्राफ तथा 25 एम.एम. की 517 स्लाईडें तथा 2-1/4 × 2-1/4 की 240 स्लाईडें विशेष प्रदर्शनी सहित तैयार की गईं। अनुसंधान और प्रलेखन के लिए विशेष प्रदर्शनियों की छः एल्बम तैयार की गई।

3.52 निम्नलिखित पर पुनर्स्थापन कार्य शुरू किया गया — 15 चित्रकारी, सभी देश तथा विदेश को जाने वाले प्रदेशों की जांच की गई। बम्बई शाखा के संग्रह में 96 कला-कृतियों को ठीक-ठाक किया गया तथा रखा गया।

यह निर्णय लिया गया है कि सर सी.जे. पब्लिक हाल, बम्बई की तत्काल मरम्मत की जाए तथा एक वर्ष के अन्दर आम जनता के लिए रा.आ. कला वीथि की एक शाखा खोली जाए।

नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

3.53 नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय में निम्नलिखित संग्रह हैं : (1) एक व्यक्तिगत संग्रहालय जो जवाहरलाल नेहरू और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर संकेन्द्रित है। (2) एक पुस्तकालय जिसमें भारत के आधुनिक इतिहास पर मुद्रित सामग्री, पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार पत्रों और चित्र संग्रहीत हैं, (3) संस्थाओं के अमुद्रित प्रलेख और प्रख्यात भारतीयों के निजी कागजात, जो ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए मूल सामग्री उपलब्ध करते हैं, (4) पुराने दस्तावेजों, प्रलेखों और समाचार पत्रों की माइक्रोफिल्मों के लिए एक प्रतिलेखन (रिप्रोग्राफिक) एकक, (5) लिखित प्रलेखों के अनुपूरक के रूप में एक मौखिक इतिहास प्रभाग जिसमें सार्वजनिक मामलों में भाग लेने वाले पुरुषों और स्त्रियों के अनुसरण भी शामिल हैं, और (6) एक अनुसंधान केन्द्र।

3.54 वे संग्रहालय, जिनमें जवाहरलाल नेहरू के जीवन और उनके काल को दृश्य सामग्री के माध्यम से चित्रित किया गया है, वे भारत और विदेश से आए दर्शनार्थियों के लिए लगातार रुचि का केन्द्र बने हुए हैं। अवधि के दौरान संग्रहालय में लगभग सात लाख दर्शनार्थी आए जिनकी कार्य दिवसों में औसत दैनिक उपस्थिति 3817 रही, और रविवार और अन्य छुट्टियों में 4337 दर्शनार्थी आए। इसमें भारत और विदेश से भ्रमण पर आने वाले उच्चाधिकारियों के यात्रावृत्त को भी लगातार प्रमुख रूप से चित्रित किया जाता रहा है। वे प्रदर्शनियां, जो संग्रहालय में प्रदर्शनों का स्थाई अंग हैं, दर्शकों में गहरी रुचि उत्पन्न करती रहीं।

3.55 पुस्तकालय, जिसमें आधुनिक भारतीय इतिहास और समाज विज्ञान पर मुख्य ध्यान दिया गया है, ने लगातार अपने संग्रहों में वृद्धि की और अपनी सेवाओं की कोटि में सुधार किया। भण्डार में 3685 पुस्तकों की वृद्धि की गई, जिनकी संख्या अब 1,16,652 है। नेहरूआना पुस्तकों की संख्या 1,095 तक, गांधीयाना पुस्तकोंकी संख्या 1,677 तक पहुंच गई है और इंदिरायाना शीर्षक पर 282 पुस्तकें हैं। इसके अन्तर्गत प्राप्त की गई पुस्तकों के अंग्रेजी, हिन्दी और विभिन्न अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं के तीन अनुभाग हैं। समाचार पत्रों की फाइलों और शोध प्रबंधों (माइक्रोफिल्मों पर) की संख्या क्रमशः 4,668 और 825 तक बढ़ गई है। फोटो अनुभाग में उसके फोटो संग्रहों की संख्या 74,482 तक बढ़ी है।

3.56 रिप्रोग्राफी एकक में अनुसंधान और संदर्भ के लिए पुस्तकालय की माइक्रोफिल्मों के संग्रह में वृद्धि की गई और समाचार पत्रों की नेगेटिव फिल्मों के लगभग 1,55,829 फ्रेम, पोजीटिव फिल्मों के 10,000 मीटर, 33,222 माइक्रोफिश फ्रेम, 8291 फोटोग्राफ, माइक्रोफिल्मों के 13,488 इलैक्ट्रोस्टेटिक प्रिंट और रिकार्ड और अध्येताओं के लिए 63,196 जीरोक्स प्रतियां

तैयार की गई। यूनिट ने अपने रिकार्ड के लिए पुराने फोटोग्राफ के 554 नेगेटिव कापी रखीं। जनवरी से मार्च, 1989 की अवधि के दौरान यूनिट "द मद्रास मेल 1968-1981" की माइक्रोफिल्म कापी तैयार करने के कार्य में लगा रहा।

3.57 परिरक्षण एकक मूल्यवान दस्तावेजों की मरम्मत और पुनरुद्धार के कार्य में लगातार अपनी उपयोगी सेवाएं प्रदान करता रहा है।

संगठन में संचालित किए जा रहे इतिहास और समाज विज्ञान के अनुसंधानों में महत्वपूर्ण प्रगति की गई। इसके अतिरिक्त नेहरू संग्रहालय द्वारा भारतीय समाज में समझ और परिवर्तन के सम्बन्धित विषयों पर 3 व्याख्यान और 16 सेमिनार/संगोष्ठियां आयोजित की गईं।

चार प्रकाशन जवाहरलाल नेहरू के पत्र, एक सूची; जवाहर लाल नेहरू एक जीवनी, समाजवाद; (सोशलाइजेशन) शिक्षा और महिलाएं (एजुकेशन एंड वुमेन); और जवाहरलाल नेहरू, विज्ञान और समाज की धारणा पर (जवाहरलाल नेहरू आन साइंस एण्ड सोसायटी) जारी किए गए। जवाहरलाल नेहरू; एक ग्रंथ सूची मुद्रणाधीन हैं।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कलकत्ता

3.58 राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् (रा.वि.सं.प.) मुख्यतया विभिन्न कार्यक्रमों तथा कार्यकलापों के माध्यम से विशेष रूप से छात्रों तथा सामान्य रूप से लोगों के बीच विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के कार्य में लगी हुई है।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् देशभर में निम्नलिखित विज्ञान/संग्रहालयों/केन्द्रों की देखभाल तथा व्यवस्था करती है :

1. बिरला औद्योगिक तथा प्रौद्योगिकी संग्रहालय, कलकत्ता।
2. विश्वेश्वैरया औद्योगिक तथा प्रौद्योगिकीय संग्रहालय, बंगलौर।
3. नेहरू विज्ञान केन्द्र, बम्बई।
4. राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली।
5. जिला विज्ञान केन्द्र, पुरुलिया।
6. श्रीकृष्ण विज्ञान केन्द्र, पटना।
7. जिला विज्ञान केन्द्र, गुलबर्गा।
8. जिला विज्ञान केन्द्र, धर्मपुर।
9. जिला विज्ञान केन्द्र, तिरुनेलवेली।
10. रमन विज्ञान केन्द्र, नागपुर।
11. क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, भुवनेश्वर।

उद्देश्य

3.59 राष्ट्रीय विज्ञान परिषद् के उद्देश्य इस प्रकार है :

(क) विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना।

(ख) स्कूलों और कॉलेजों में दी गई विज्ञान शिक्षा में अनुपूर्ति करना।

(ग) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।

(घ) विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थाओं, संग्रहालय स्कूलों और अन्य निकायों के कालेजों को सहायता देना।

(ङ) विज्ञान संग्रहालय वस्तुओं, प्रदर्शन उपकरण तथा वैज्ञानिक शिक्षण सामग्री आदि का विकास, तैयार किया जाना और बनाना।

(च) महत्वपूर्ण ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह पुनः एकत्रित करना, तथा परिरक्षण करना।

(छ) विशेषरूप से भारत के संदर्भ में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के इतिहास में अनुसंधान करना।

3.60 राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय, परिषद ने संग्रहालयों/केन्द्रों को स्थायी दीर्घाओं में प्रदर्शनी के लिए नए प्रदर्शों के आयोजन; विभिन्न विज्ञान संग्रहालयों तथा केन्द्रों में नई दीर्घा बनाने तथा नए विज्ञान केन्द्रों की स्थापना पर बल दिया। भुवनेश्वर, लखनऊ, गोवाहाटी में क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्रों और दिल्ली में राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र के मुख्य भवन का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। नागपुर में रमन विज्ञान केन्द्र और भुवनेश्वर में क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र के विज्ञान पार्कों और चल विज्ञान प्रदर्शनी यूनिटों को पूरा किया गया, तथा यहां पर प्रतिदिन बड़ी संख्या में दर्शक आते हैं। भोपाल, गोवा और कालीकट में तीन जिला विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के लिए योजना कार्य जारी रहा। क्षे.वि.के. भुवनेश्वर में "सूर्य", क्षे.वि.के., गुवाहटी में "पृथ्वी" और क्षे.वि.के. लखनऊ में "धाराओं" नामक तीन स्थायी दीर्घाओं का निर्माण कार्य जारी रहा।

केन्द्रीय अनुसंधान तथा प्रशिक्षण प्रयोगशाला, कलकत्ता

3.61 केन्द्रीय अनुसंधान तथा प्रशिक्षण प्रयोगशाला 2.5 एकड़ भूमि पर पर्याप्त विस्तार की व्यवस्था सहित प्रथम चरण में 45,000 वर्ग फुट के 10 मंजिले इस भव्य भवन का निर्माण कार्य साल्ट लेक सिटी, कलकत्ता में जोरशोर से कर रही है जिसके निर्माण में दो करोड़ का खर्च शामिल हैं। यह कार्य पूर्ण प्रगति पर है। यह प्रयोगशाला अनुसंधान तथा प्रोटोटाइप प्रदर्श विकास, नए संग्रहालय तकनीक के विकास और सम्पूर्ण भारत का विदेशों से आनेवाले विज्ञान संग्रहालय कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए सुविधाएं प्रदान करेगी। इस साल में केन्द्र ने पूर्णरूपेण काम करना शुरू कर दिया है।

बिड़ला औद्योगिकी तथा प्रौद्योगिकी संग्रहालय, कलकत्ता

3.62 1. बि.औ.प्रौ.सं. ने राज्य स्तरीय विज्ञान सेमिनार आयोजित किया जिसमें पश्चिम बंगाल के सभी जिलों के छात्रों ने भाग लिया।

2. बि.औ.प्रौ.सं. ने रसायन विज्ञान "कैमेस्ट्री इन फन" पर एक नया तथा भव्य प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह केवल छात्रों के लिए ही नहीं बल्कि आम व्यक्तियों के लिये भी है।

3. वर्ष के दौरान बि.औ.प्र.सं. ने संग्रहालय तथा संग्रहालय से बाहर दोनों में 250 विज्ञान प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किये। लगभग 25,000 छात्र उन्हें देखने के लिए आए।

4. संग्रहालय में 18 रचनात्मक योग्यता केन्द्र अथवा अभिरुचि केन्द्र कार्यक्रम आयोजित किए गए। विभिन्न परियोजनाओं के इन कार्यक्रमों में 60 छात्रों ने कार्य किया।

5. 19 आकाश अवलोकन कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें लगभग 1300 व्यक्तियों ने भाग लिया।

6. 32 लोकप्रिय व्याख्यान आयोजित किए गए। इनमें लगभग 3000 व्यक्तियों ने भाग लिया।

7. वर्ष के दौरान 5 शिक्षक "प्रशिक्षण कार्यक्रम" आयोजित किए गए। 90 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया।

8. 6 अव्यवसायी रेडियो कार्यक्रम आयोजित किए गए। कुल 74 कक्षाओं में से 30 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया।

नेहरू विज्ञान केन्द्र, बम्बई

3.63 1. नेहरू विज्ञान केन्द्र, बम्बई ने अपने छात्रों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों पर 11 नवम्बर, 1988 को अपनी तीसरी वर्षगांठ मनाई।

2. ने.वि.के. की चल विज्ञान प्रदर्शनी यूनिटों ने 123 से अधिक प्रदर्शनी के दिनों में 59 स्थलों में प्रदर्शनियां आयोजित कीं। इन प्रदर्शनियों में 7000 कि.मी. तक की दूरी का स्थान लिया गया। इन प्रदर्शनियों तथा फिल्म प्रदर्शनों को 2,00,000 से अधिक व्यक्तियों ने देखा।

3. इनसे 2000 से अधिक छात्रों को लाभ पहुंचाने के लिए 22 विज्ञान प्रदर्शन व्याख्यान आयोजित किए गए।

4. 8 रचनात्मक योग्यता केन्द्र कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें लगभग 500 छात्रों ने भाग लिया। कुल मिलाकर 126 परियोजनायें पूरी की गईं।

5. 25 आकाश अवलोकन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

6. दो संगणक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 45 बच्चों ने भाग लिया और दो सोफ्टवेयर तैयार किए गए।

7. 100 से अधिक अमेच्योर रेडियो आप्रेटरों को 28 सैक्शनों में प्रशिक्षण दिया गया।

8. 173 स्कूलों से 350 स्कूली बच्चों ने 21 विज्ञान प्रश्नावली प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

विश्वेश्वरैया औद्योगिक तथा प्रौद्योगिक संग्रहालय, बंगलौर

3.64 1. वि.औ.सं. की चल प्रदर्शनी यूनिटों ने 101 से अधिक प्रदर्शनी के दिनों में 43 स्थलों पर अपनी प्रदर्शनियां और फिल्म-शो प्रदर्शित किए। इनको लगभग 3,50,000 दर्शक देखने के लिए आए। इनकी कुल दूरी 7176 कि.मी. में थी।

2. 12 विज्ञान प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें लगभग 900 छात्रों ने भाग लिया।

3. 8 लोकप्रिय व्याख्यान आयोजित किए गए। इनमें 610 व्यक्तियों ने भाग लिया।

4. दो शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 20 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया।

5. छः संगणक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 63 छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया।

6. 15 विज्ञान प्रश्नावली प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। जिनमें 30 छात्रों ने भाग लिया।

7. 12 अभिरुचि केन्द्र कार्यक्रम आयोजित किए गये। इनमें 20 परियोजनाएं पूरी करने के लिए लगभग 100 छात्रों ने भाग लिया।

8. संग्रहालय ने मद्रास में सैन्ट अब्बा हाई सैकण्डरी स्कूल में दक्षिण भारतीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की। दक्षिण क्षेत्र के 5 राज्यों से 123 स्कूलों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली

3.65 राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली में प्रदर्शित एक विशाल "ऊर्जा बाल" दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र रहा। इस प्रदर्शन में गैंदों की गति के लिए 3000 वर्ग फुट से अधिक स्थान जिनका 650 फुट का मार्ग था, उपयोग में लाया गया। वे रोचक ढंग से ऊर्जा का रूपान्तर बाहुबल से शक्ति, शक्ति से गतिक, गतिक से विद्युत तक प्रदर्शित करते हैं। इसके अतिरिक्त संवेग, अपकेन्द्र शक्ति, कोणीय संवेग का संरक्षण और ग्रहीय गति पर केपलर के कानून का अंतरण होना भी दिखाते हैं। सम्भवतः यह प्रदर्श अपने प्रकार का सबसे बड़ा है और इसे विज्ञान केन्द्र में पहली बार दिखाया गया है।

2. केन्द्र की यह चल विज्ञान प्रदर्शनियां 88 से अधिक दिनों में 56 स्थलों पर लगाई गईं। इन्हें लगभग 1,00,000 व्यक्तियों ने देखा।

3. लगभग 400 व्यक्तियों के लिए चार लोकप्रिय व्याख्यान आयोजित किए गए।

4. 2 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें 20 शिक्षकों ने भाग लिया। 10 शिक्षण साधन तैयार किए गए।

5. एक संगणक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 31 स्कूली छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया।

6. एक विज्ञान प्रश्नावली प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 22 छात्रों ने भाग लिया।

7. रा.वि.के. दिल्ली ने एक राष्ट्रीय विज्ञान सेमिनार, 1988 आयोजित किया तथा अपने नए परिसर में विज्ञान संग्रहालय में अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की।

श्रीकृष्ण विज्ञान केन्द्र, पटना

3.66 श्रीकृष्ण विज्ञान केन्द्र, पटना ने अपने कार्यकलाप जारी रखे। गत वर्ष में नई दीर्घा "अवर सैन्सिज" बाल कार्नर और जीवन विज्ञान प्रयोगशाला का कार्य पूरा हो गया और ये सभी आयु वर्ग के दर्शकों विशेषकर बच्चों के लिए उपयोगी सिद्ध हुई। 1,00,000 से अधिक व्यक्ति इस केन्द्र को देखने के लिए आए। केन्द्र के महत्वपूर्ण कार्यकलापों में स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न नियमित शैक्षिक कार्यक्रम तथा प्रौढ़ों तथा गृहणियों के लिए कार्योन्मुख कार्यक्रम आयोजित करके राज्य स्तरीय विज्ञान सेमिनार आयोजित किए गए।

जिला विज्ञान केन्द्र

3.67 पुरुलिया, गुलबर्गा, धर्मपुर तथा तिरुनेलवेली जिला केन्द्रों ने स्कूली छात्रों, जनजाति के लोगों तथा गांव के अन्य समुदायों के लिए अपने कार्यक्रम जारी रखे। इन केन्द्रों को पर्याप्त संख्या में लोग देखने आए तथा उन्होंने इन कार्यक्रमों में भाग लिया। जिला विज्ञान केन्द्र, पुरुलिया ने इस वर्ष एक नई लोकप्रिय विज्ञान दीर्घा खोली। जिला विज्ञान केन्द्र, तिरुनेलवेली ने भी एक स्थायी सभागृह और अस्थायी प्रदर्शनियों के लिए एक अवस्थापना की। नियमित कार्यकलापों के अलावा, "कीटों को जानो" तथा "बेकरी प्रदर्शन" से लेकर "संगणक जागरूकता" तक के बाह्य भित्ति कार्यक्रमों का अतिरिक्त प्रवाह था।

विस्तार कार्यकलाप

3.68 बस संग्रहालय अथवा चल विज्ञान प्रदर्शनी यूनिटों ने देश के काफी स्थलों का भ्रमण किया। उन्होंने पश्चिमी बंगाल, बिहार, उड़ीसा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, दादरा और नगर हवेली के दूरवर्ती अन्तः क्षेत्रों का दौरा किया। लगभग 10,00,000 लाख व्यक्ति इन्हें देखने के लिए आए। इन प्रदर्शनियों में 16,000 कि.मी. से अधिक की दूरी तय की गई। इसके अतिरिक्त विभिन्न ग्रामीण स्थानों पर प्रदर्शित किए गए वैज्ञानिक फिल्म प्रदर्शनों में 2,00,000 से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया।

3.69 वि.औ.प्रौ.सं., बंगलौर, रा.वि.के. बम्बई तथा बि.औ.प्रौ.सं., कलकत्ता में प्रत्येक वर्ष विज्ञान प्रदर्शन व्याख्यान नियमित आधार पर आयोजित किए जाते हैं। अन्य केन्द्रों पर भी इसी पद्धति का अनुसरण किया जाता है जिससे लाभग्राहियों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। इसे अनूठे तरीके से प्रस्तुत करने में वैज्ञानिक पाठ्यपुस्तकों में सजीवता लाई जाती है और इनका प्रभाव संपूरक स्कूली शिक्षा की अपेक्षा कहीं अधिक होता है।

संग्रहालयों/केन्द्रों ने गुवाहटी और बंगलौर में बहुतायत में विज्ञान मेले तथा शिविर आयोजित करने में मदद की। सितम्बर-अक्तूबर, 1988 में दक्षिण भारतीय विज्ञान मेला वि.औ.प्रौ.सं. द्वारा बंगलौर में आयोजित किया गया। इसमें 123 स्कूलों ने भाग लिया। फरवरी, 1987 के दौरान पूर्वी भारत विज्ञान शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में 139 स्कूलों के 265 प्रतियोगी शामिल हुए और 14 विज्ञान क्लबों ने अपनी संरचनात्मक योग्यताएं दिखाने के लिए 200 मॉडल तैयार किए थे। एरोमॉडलिंग पर प्रशिक्षणोन्मुख प्रदर्शन शिविर, जीवन विज्ञान तथा इलैक्ट्रोनिक्स कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें समग्र पूर्वी भारत से 46 प्रेक्षकों ने भाग लिया।

बि.औ.प्रौ.सं., कलकत्ता ने "क्विस्ट" नाम से विज्ञान पर एक प्रश्नावली प्रतियोगिता आयोजित की जिसका प्रसारण राष्ट्रीय दूरदर्शन कार्यक्रम के द्वारा किया जाता है।

राष्ट्रीय विज्ञान सेमिनार, 1988

3.70 राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद ने राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली में राष्ट्रीय विज्ञान सेमिनार, 1988 आयोजित किया। इसका विषय सूचना क्रान्ति था। इस सेमिनार में सभी राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों से छात्रों ने भाग लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

3.71 रा.वि.स. परिषद् ने दिसम्बर, 1988 के दौरान भारत में "दीवार रहित विज्ञान संग्रहालय" नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की। पूरे देश से 60 विज्ञान संग्रहालय विशेषज्ञों ने भाग लिया। कार्यशाला दिल्ली, बम्बई, बंगलौर तथा कलकत्ता चार स्थानों पर आयोजित की गई जहां रा.वि.स. परिषद् ने देश के बाहर भी विज्ञान संग्रहालय आन्दोलन फैलाने के लिए अवस्थापना विकसित की। इस परियोजना में यूनेस्को, अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद् तथा शिक्षा और संस्कृति पर भारत-अमेरिका उप आयोग ने रा.वि.स. परिषद् के साथ सहयोग दिया है।

खेल विज्ञान

3.72 कार्यशाला के साथ-साथ, राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, दिल्ली में 5 दिसम्बर, 1988 को केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री पी. शिवशंकर द्वारा एक "खेल विज्ञान" वीथी का उद्घाटन किया गया। यह विज्ञान के 13 विषयों में 101 अन्तर-क्रियात्मक सहभागी प्रदेशों का एक सैट था जिसे रा.वि.स. परिषद् ने सहायता के रूप में विकसित किया ताकि भारत तथा विदेशों में विज्ञान केन्द्रों को बनाया जा सके।

पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा सी.वी. रमन जन्म शताब्दी समारोह

3.73 भारत के दो महान व्यक्तियों की शताब्दी मनाने के लिए रा.वि.सं. परिषद् ने व्यापक विस्तार कार्यक्रम शुरू किए, जो नवम्बर, 1988 से नवम्बर, 1989 तक पूरे वर्ष चलते रहेंगे। नेहरू समारोह कार्यक्रम के अन्तर्गत संग्रहालय परिषद् ने देश के विभिन्न भागों में लोगों के लिए कई नई सुविधाएं प्रदान कीं। सी.वी. रमन की जन्म शताब्दी मनाने के लिए, उनके जीवन तथा कार्यों की दो प्रदर्शनियां कलकत्ता तथा बंगलौर में साथ-साथ आयोजित की गई। बी.आई.टी.एम. कलकत्ता ने बी.आई.टी.एम. बंगलौर की सहायता से एक रुचिकर प्रदर्शनी लगाई।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा परिरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ

3.74 प्रयोगशाला जो कि संस्कृति विभाग का एक अधीनस्थ कार्यालय है, ने अनुसंधान, परिरक्षण, पुस्तकालय तथा प्रलेखन में निरन्तर प्रगति की। प्रयोगशाला को अपने विभिन्न कार्यक्रमों के लिए यू.एन.डी.पी. तथा यूनेस्को से सहायता प्राप्त होती है।

भारत की स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ मनाने के लिए "भारत में परिरक्षण के चार दशक" नामक एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया। एन.आर.एल.सी. के एक यूनिट क्षेत्रीय परिरक्षण प्रयोगशाला, मैसूर ने भारतीय संस्कृतिक सम्पदा परिरक्षण अध्ययन संघ के सहयोग से मैसूर में एक राष्ट्रीय परिरक्षण सेमिनार आयोजित किया गया।

अनुसंधान परियोजनाएं

3.75 अठारह लौह युग स्थानों, जिनका तकनीकी अध्ययन पूरा हो गया है, का अध्ययन कार्य अपने अन्तिम चरणों में है। तथ्यों के आधार पर "प्राचीन भारत में लौह धातुकर्मी विकास" नामक एक शोध निबन्ध को इटली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय पुराधातुकर्मी संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए। "लेमिनेशन टेकनीक इन आयरन आर्टीफैक्ट्स इन एन्शियेंट इंडिया" नामक दूसरा निबन्ध यू.के. से प्रकाशित होने वाली ऐतिहासिक धातुकर्मी पत्रिका में प्रकाशन के लिए स्वीकृत किया गया।

एक सर्वेक्षण किया गया, सैम्पल लिए गए तथा लकड़ी के सम्पर्क में आने से धातु संक्षारण का अध्ययन, धातु के लिए विभिन्न रक्षात्मक परतों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, जंग पर नियंत्रण के लिए रक्षात्मक परतों, पुरातत्व लौह तथा तांबे की कला कृतियों में से हानिकारक लवणों को दूर करने के लिए रेसिन का प्रयोग, कांस्य का परिरक्षण, प्रतिमा को कोई नुकसान पहुँचाए बिना उपचय को दूर करने के लिए, नई तकनीकों का विकास करने के लिए प्राथमिक अध्ययन शुरू किया गया।

चूने पर आधारित मोर्टारों और प्लास्तरों के विभिन्न प्रकार के मिश्रणों तथा कई महत्वपूर्ण तत्वों को तैयार किया जा रहा है तथा उन्हें ताजमहल की दरारों को भरने के लिए एक उपयुक्त सामग्री के रूप में प्रयोग करने के लिए परीक्षण किया जा रहा है।

संगमरमर के 75 नमूनों को एक जैसी सतह में समान रूप तराशा तथा पालिश किया गया, 75 नमूनों पर जंग तथा धब्बों को विकसित किया गया और 14 विभिन्न प्रकार के सफाई फार्मूले तैयार किए गए। संगमरमर के 12 नमूनों को सोडियम सल्फेट के तरीके से 3 चक्रों द्वारा अपक्षयन के लिए प्रभावित किया गया तथा 10 नमूनों को 10 साइकल के अनुसार तैयार किया गया। सफाई के लिए तैयार किए गए 15 तत्वों की बनावटी धब्बों वाले नमूनों पर जांच की गई।

"बर्च पार्क" पर निम्नलिखित एडहेसीव के प्रयोग का अध्ययन किया गया-मिथाईल सैलूलोस, सी.एम.सी., स्टार्च, पोलिविनाएल एसीटेट, पोलिविनाईल एल्कोहल, गलू आदि।

परिरक्षण

3.76 प्रयोगशाला, संग्रहालयों तथा अन्य संस्थाओं से उनकी कृतियों के परिरक्षण तथा संरक्षण के लिए नियमित रूप से अनुरोध कर रही है। प्रयोगशाला विभिन्न कृतियों का परिरक्षण कर रही है — भारत कला भवन वाराणसी से 8 भित्ति चित्र; आनन्द भवन, इलाहाबाद से 3 चित्र; राज भवन, कलकत्ता से चार तैल चित्र; राज्य संग्रहालय, लखनऊ से सम्बन्धित 190 पृष्ठों वाली कृष्ण-लीला; राज्य संग्रहालय, लखनऊ से सम्बन्धित एक बड़ी "पिछवाई"

रूमटेक धर्म चक्र केन्द्र, सिक्किम की दीवार चित्रकला तथा तोवांगमठ, अरुणाचल प्रदेश की दीवार चित्रकला तथा कलाकृतियों की पुनरुद्धार परिरक्षण रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

इन्टैक परिरक्षण केन्द्र के सहयोग से दीवार चित्रकारी के परिरक्षण की एक राष्ट्रीय परियोजना तैयार की गई है। इससे भारतीय दीवार चित्रकारी के सम्बन्ध में हमारी जानकारी काफी बढ़ेगी। पूरे देश से विशेषज्ञों की एक बैठक एन.आर.एल.सी. में एक जुलाई 1988 को आयोजित की गई जिसमें परियोजना पर चर्चा करने तथा उसे लागू करने पर विचार किया गया। परियोजना शुरू कर दी गई है तथा नागपुर किला तथा हम्पी जैसे विभिन्न दीवार चित्रकारी स्थलों का पहले ही सर्वेक्षण किया जा चुका है।

प्रारम्भ में यह परियोजना 3 वर्षों की अवधि के लिए तैयार की गई है।

सेमिनार

3.77 भारत की स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए एन.आर.एल.सी. में "भारत में परिरक्षण के चार दशक" नामक दो-दिवसीय एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें पूरे देश से विख्यात पुरातत्त्ववेत्ता, संग्रहालयवेत्ता, अभिलेखागारवेत्ता तथा परिरक्षकों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण और कार्यशालाएं

3.78 पुरातत्त्व सामग्री के परिरक्षण में एक छः माह का परिरक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें वियतनाम, ईरान तथा थाईलैण्ड से तीन छात्रों सहित 10 छात्रों ने भाग लिया। एन.आर.एल.सी. वैज्ञानिकों तथा बाहर से आमंत्रित अन्य विशेषज्ञों ने लैक्चर दिए। छात्रों ने विभिन्न प्रकार की वस्तुओं पर व्यापक व्यवहार्य कार्य किया तथा उन्हें समस्याओं तथा व्यवहारों पर मौके पर अध्ययन के लिए दिल्ली मैसूर, मद्रास तथा तंजावुर ले जाया गया।

संग्रहालय वस्तुओं की देख-रेख तथा रख-रखाव के लिए दस दिनों की अवस्थापना कार्यशाला आयोजित की गई। विदेशों से 3 छात्रों सहित इसमें 16 छात्रों ने भाग लिया। केन्द्रीय शिक्षा तथा संस्कृति राज्य मंत्री श्री एल.पी. शाही ने विदाई भाषण दिया तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

क्षेत्रीय परिरक्षण प्रयोगशाला, मैसूर में संग्रहालय वस्तुओं की देख-रेख तथा रख-रखाव पर दस दिनों की अवस्थापना कार्यशाला आयोजित की।

इनटैक परिरक्षण केन्द्र, लखनऊ के सहयोग से कलाकृतियों की देख-रेख पर पांच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। जोधपुर और लखनऊ की कार्यशाला में 40 सेना अधिकारियों ने भाग लिया।

संस्कृति सम्पदा की भौतिक विकृति से सम्बन्धित एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 20-25 फरवरी, 1988 को आयोजित किया गया।

पुस्तकालय तथा प्रलेखन

3.79 574 पुस्तकें प्राप्त की गईं — पत्र-पत्रिकाओं के 860 अंकों को प्राप्त किया गया — 610 पुस्तकों को वर्गीकृत किया गया तथा सूची बनाई गई, 8500 प्रविष्टियों को संगणक में भरा गया, नई उपस्कर, मिनोल्टा आर.पी. 505 माइक्रोफिल्म, माइक्रोफिश, रीडर/प्रिंटर।

फोटो प्रलेखन

3.80 कई श्वेत श्याम कला-कृतियाँ - 1700, रंगीन पारदर्शी - 1200, रंगीन प्रिन्ट - 1500, श्वेत श्याम पारदर्शी - 60, फोटो प्रिन्ट और एन्लार्जमैन्ट - 2500

प्रकाशन

3.81 एन.आर.एल.सी. द्वारा लगभग 10 पुस्तकें तथा निबन्ध प्रकाशित किए गए।

अध्याय 4

मानव विज्ञान तथा नृजाति विज्ञान संस्थाएं

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता

4.1 सर्वेक्षण के प्रयास का मुख्य बल राष्ट्रीय परियोजना "भारत के लोग" पर रहा जिसे अक्तूबर, 1985 में प्रारम्भ किया गया था। इस परियोजना का उद्देश्य देश के 4986 समुदायों के संबंध में अद्यतन सूचना प्राप्त करना तथा उन्हें साथ लाने वाले सम्पर्कों पर प्रकाश डालना है। सर्वेक्षण के 200 वैज्ञानिक और तकनीकी सदस्यों में से अधिकांश को इस परियोजना में लगाया गया है। नवम्बर 1988 तक 4373 समुदायों से संबंधित क्षेत्र कार्य पूरा हो चुका है। क्रमशः 2634, 3946 और 3956 समुदायों के लिए रिपोर्ट लिखने, सारांश तैयार करने और संगणक प्रपत्र भरने का काम पूरा किया गया। 2663 समुदायों के लिए सामान्य प्रपत्र भी भरे गए हैं। राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, नई दिल्ली पर सूचनाओं का संगणकीकरण प्रारम्भ किया गया। 2590 समुदायों के लिए संगणक प्रपत्र और 1455 समुदायों के लिए सारांश वर्ड प्रोसेसर को हस्तांतरित किए गए। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के समुदायों के संबंध में रिपोर्ट प्रैस के लिए तैयार है। मार्च 1989 तक पांडिचेरी, लक्षद्वीप, मणिपुर, मेघालय, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के समुदायों पर संस्करण पूरा करने की भी योजना है। दो अंतिम रिपोर्टें प्राप्त हुई हैं जिनमें मणिपुर और मेघालय के समुदाय शामिल किए गए हैं। गुवाहाटी, इटानगर, हिमालय अध्ययन संस्थान, उत्तरी बंगाल विश्वविद्यालय, बागडोगरा में विचार-विमर्श किया गया। विभिन्न विश्वविद्यालयों के विभागों, जनजातीय अध्ययन संस्थानों तथा अन्य संगठनों के विद्वान इसमें शामिल किए गए थे। स्थानीय विद्वानों के लिए त्रिवेन्द्रम, पांडिचेरी, अगरतला, और लक्षद्वीप में अनेक कार्यशालाएं आयोजित की गई। महानिदेशक ने अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा तथा अन्य स्थानों का दौरा करते हुए 90 दिन भ्रमण में बिताएं।

4.2 भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने ऐसी 13 परियोजनाएं शुरू की हैं जिनका सातवीं योजना के सामान्य उद्देश्यों पर भी प्रभाव पड़ता है। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के अनेक बार विचार-विमर्श कर लेने के उपरांत 13 नई परियोजनाओं के शैक्षिक प्रपत्रों को अंतिम रूप दिया गया और उनमें से अधिकांश पर कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

भारत में छठी योजना परियोजना जनजातीय परिवर्तन के अंतर्गत लिटिल अंडमान में ओंज के बारे में क्षेत्र अन्वेषण प्रारम्भ किया गया।

तीन विलम्बित परियोजनाओं की प्रक्रिया को गति देने के लिए तीन कार्य दलों का गठन किया गया है। इनके प्रयास के फलस्वरूप चार खंडों : अखिल भारतीय मानवसमिति सर्वेक्षण, (दक्षिणी क्षेत्र), अखिल भारतीय मानवमिति सर्वेक्षण (उत्तरी क्षेत्र, असम), अखिल भारतीय मानवमिति सर्वेक्षण (उत्तरी क्षेत्र, बिहार) और अखिल भारतीय जैव मानव विज्ञान सर्वेक्षण (प्रारम्भिक तालिकायें) का प्रकाशन संभव हो सका।

प्रदर्शनियां

4.3 महानिदेशक डा. के.एस. सिंह ने भारत-सोवियत प्रदर्शनी के संबंध में दो बार मास्को का दौरा किया। मई 1988 में मास्को में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में सर्वेक्षण ने पहली बार सक्रिय रूप से भाग लिया। सर्वेक्षण ने नई दिल्ली में

आयोजित भारत-सोवियत प्रदर्शनी में भी भाग लिया। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने नई दिल्ली में प्रगति मैदान में आयोजित भारत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भी भाग लिया। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ने भारत-सोवियत प्रदर्शनी के लिए एकत्रित नृजातीय शिल्प तथ्य अधिग्रहित कर लिए जो देहरादून स्थित कार्यालय को स्थानान्तरित किए गए हैं। महानिदेशक ने जाग्रेब, यूगोस्लाविया में आयोजित मानव विज्ञानी और नृजातीय संगोष्ठी के 12वें अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भी भाग लिया और भारत की नृजातीय स्थिति, भारत के लोग और संकटपूर्ण प्रबंध के दौर के मानव विज्ञान संबंधी विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने स्थानीय विद्वानों से विचार-विमर्श के लिए लेनिनग्राद और हिडनेवर्ग का भी दौरा किया।

संगोष्ठियां

4.4 स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ और नेहरू जन्म शताब्दी समारोह के अंग के रूप में दो राष्ट्रीय संगोष्ठियां, एक भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण और दूसरी जवाहरलाल नेहरू, जनजातियां और जनजातीय परिवर्तन पर आयोजित की गईं।

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आर.एम.एस.), भोपाल

4.5 यह संग्रहालय, जो कि संस्कृति विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है, समय और दूरी के साथ मानवता की कहानी चित्रित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मास्टर प्लान

4.6 निर्धारित स्थल पर एक अस्थायी प्रदर्शन-भंडारण भवन का निर्माण मार्च 1989 तक पूरा हो जाने की संभावना है। इसके बाद इसका प्रयोग होने लगेगा।

60 लाख रुपये की अनुमानित लागत से सीमित संख्या में स्टाफ क्वार्टरों और एक अतिथिगृह व छात्रावास भवन का निर्माण कार्य मध्य प्रदेश सरकार के एक स्वायत्त संगठन को सौंपा गया।

पूरा होने की स्थिति में पहुंचने वाले मास्टर प्लान को अंतिम रूप दिए जाने की प्रक्रिया के साथ ही राष्ट्रीय मानव संग्रहालय द्वारा वर्ष 1988-89 के अंत तक मुख्य संग्रहालय भवन के निर्माण की औपचारिकता प्रारम्भ किए जाने की सम्भावना है।

अवस्थापनात्मक सुविधाएं जैसे पानी, बिजली, चहारदीवारी और स्थल पर वृक्षारोपण की दिशा में सुविधाएं प्रदान करने के लिए कदम उठाए गए।

खुली प्रदर्शनियां

4.7 जनजातीय घरों की एक खुली प्रदर्शनी "जनजातीय आवास" लगाई गई जिसमें वास्तुशिल्प सामग्री संस्कृति, जीवन शैली, पर्यावरणात्मक विशेषताएं आदि पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। यह राष्ट्रीय मानव संग्रहालय की पहली स्थायी प्रदर्शनी थी जिसे जनता के लिए खोला गया।

राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अहाते में पड़े प्रागैतिहासिक चित्रित-शिला शरण खंडों का उपयोग करके, शिला-कला विरासत पर एक खुली प्रदर्शनी का विकास प्रारम्भ किया गया।

अंतरंग प्रदर्शनियां

4.8 "मानव की कहानी" नामक प्रदर्शनी आगंतुकों के लिए आकर्षण केन्द्र बनी रही। इस प्रदर्शनी को अस्थायी प्रदर्शन-भंडारण भवन में ले जाने की तैयारी चल रही है जो निर्धारित स्थल पर बनाया जा रहा है।

जनजातीय समाज में बच्चे विषयक प्रदर्शनी तैयार की गई जिसके शीघ्र प्रारम्भ किए जाने की सम्भावना है। पं. जवाहर लाल नेहरू की जन्मशताब्दी समारोह मनाने के लिए "पुत्री को पिता के पत्र" नामक पुस्तक पर आधारित एक विशेष प्रदर्शनी बच्चों के लिए लगाई गई। वर्ष 1988-89 के अंत में यह प्रदर्शनी जनता के लिए खोली जाएगी।

संग्रह और प्रलेखन

4.9 देश के विभिन्न भागों से संस्कृति सामग्री की 550 से अधिक वस्तुएं राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में जोड़ी गईं। सर्वाधिक उल्लेखनीय हाल में अधिग्रहण किया गया बस्तर (म.प्र.) से प्राप्त एक 10 मीटर का लकड़ी का दशहरा रथ था जिसे संग्रहालय के "आपरेशन सालवेज" कार्यक्रम के अंतर्गत प्राप्त किया गया। वर्ष के अंत तक संग्रह में दूसरी 400 वस्तुएं जोड़ी जाने की संभावना है।

क्षेत्र प्रलेखन और उत्तर संग्रह विषय सूची का निर्माण भी किया गया। संग्रहालय प्रलेखन को संगणकीकृत करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

फोटोग्राफी

4.10 इंडेक्स और सूची कार्ड तैयार करने के लिए संग्रहालय की लगभग 100 वस्तुओं की फोटो ली गई। अनुरक्षण और प्रकाशन तैयार करने के दुहरे उद्देश्य से खुली प्रदर्शनियों के जनजातीय घरों के आंतरिक भागों के फोटो-प्रलेखन तैयार किए गए। संग्रहालय में घटित होने वाली सभी अन्य घटनाओं तथा प्रदर्शनियों के भी फोटो-प्रलेखन तैयार किए गए। जनजातीय और लोक-जीवन के क्षेत्रों को शामिल करने पर 1200 रंगीन नैगेटिव तैयार हुए।

लेखाचित्र एकक

4.11 बच्चों के लिए दो विशेष प्रदर्शनियों के लिए चित्र, रेखाचित्र और स्केच तैयार किए गए। खुली और विषयक प्रदर्शनियों की योजना बनाने के लिए नक्शे तैयार किए गए। संग्रहालय शैक्षिक कार्यक्रम के लिए शैक्षिक सामग्रियों के डिजाइन तैयार किए गए। हाल ही में प्राप्त किए गए दशहरा रथ का रेखाचित्र प्रलेखन तैयार किया गया।

संग्रहालय शिक्षा

4.12 जनजातीय विकास और सार्वजनिक प्रशासन में संलग्न संगठनों के प्रशिक्षणार्थियों और विद्यार्थियों के दिशा निर्देशित दौर और संस्था प्रायोजित सामूहिक भ्रमण तथा दौर आयोजित किए गए। प्रायोगिक परीक्षण के पाठ्यचर्योन्मुख शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किए गए।

परिरक्षण

4.13 परिरक्षण प्रयोगशाला ने निम्नलिखित संरक्षण कार्य किए :

खुले में प्रदर्शित 200 वस्तुओं के लिए संरक्षणात्मक और उपचारी उपायों की व्यवस्था, सुरक्षित संग्रह के 325 नृजातीय वस्तुओं का रासायनिक परिरक्षण और क्षतिग्रस्त मृण्मूर्तियों और वाद्ययंत्रों का जीर्णोद्धार।

संदर्भ पुस्तकालय

4.14 आर.एम.एस. एक विशिष्ट संदर्भ पुस्तकालय और प्रलेखन केन्द्र विकसित कर रहा है ताकि अनुसंधान प्रदेशों की तैयारी और शिक्षा को सुकर बनाया जा सके। 350 नई पुस्तकें, विदेशी पत्रिकाओं के 300 अंक और भारतीय व्यावसायिक पत्रिकाओं के 111 अंक जोड़े गए।

राष्ट्रीय और लोकप्रिय व्याख्यान

4.15 भारतीय स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ मनाने के लिए आर.एम.एस. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय व्याख्यान माला के एक भाग के रूप में डा. बी.एन. मिश्रा ने "मानव विकास अध्ययन में हाल की उन्नतियों" पर एक व्याख्यान दिया। डा. गोपाल शरण ने "मानवता के ज्ञान में मानव विज्ञान का योगदान" विषय पर इस व्याख्यान माला का अंतिम व्याख्यान दिया। लोकप्रिय संग्रहालय व्याख्यान माला के अंतर्गत "मानव संग्रहालय और समाज" विषय पर प्रथम व्याख्यान के लिए आलेख डा. एन.सी. चौधरी से प्राप्त हुआ।

अन्य संस्थागत विकास

4.16 संग्रहालय ने जनजातीय और लोक जीवन के दृश्य और श्रव्य प्रस्तुतीकरण और प्रलेखन को सुकर बनाने के लिए ध्वनि अंकन सुविधा प्रदान करने और एक वीडियो टेक स्थापित करने का कार्य प्रारम्भ किया।

Imp corr A/56

सीमला [illegible] ७

भाई संपूर्णानंद –

आपका खत मिला। आपने पूर्ण विचार नहीं किया है। खादीवाले शुद्ध होंगे तो खादी काम गड़बड़ नहीं बनेगा। आज खादी हमारे पास बहुत कम है। खादी शास्त्र का और खादी कार्य का गहरा अभ्यास कीजिये।

आपका

मो. क. गांधी

अध्याय 5

अभिलेखागार और अभिलेख

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

5.1 भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (एन.ए.आई.) भारत सरकार के स्थाई महत्व के अप्रचलित अभिलेखों का सबसे बड़ा संग्रह स्थल है। इसके कार्यकलाप सार्वजनिक अभिलेखों, राष्ट्रीय महत्व के निजी कागजात और विदेशों से भारतीय हित के अभिलेखों की माइक्रोफिल्म प्रतियां अधिग्रहीत करने से संबंधित हैं।

भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग

5.2 जम्मू व कश्मीर सरकार के आमंत्रण पर भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग का 52वां सत्र 15-16 अक्तूबर, 1988 को भारत सरकार के शिक्षा और संस्कृति राज्यमंत्री श्री एल.पी. शाही की अध्यक्षता में श्रीनगर में आयोजित हुआ।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार सौध

5.3 भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार सौध का निर्माण कार्य वर्ष 1988-89 के दौरान भी जारी रहा। वातानुकूलन नलिकाओं को लगाने का कार्य प्रगति पर है।

प्रकाशन

5.4 इस अवधि के दौरान निम्नलिखित प्रकाशन निकाले गए :

(i) दी इण्डियन आर्काइव्ज वाल्यूम XXXV नं. 2; (ii) राष्ट्रीय अभिलेखागार का वार्षिक प्रतिवेदन 1986 (हिन्दी); (iii) नेशनल रजिस्टर आफ प्राइवेट रिकार्ड्स, वाल्यूम XVI (iv) रेप्रोग्राफिक्स एण्ड आर्काइव्ज।

अधिग्रहण

5.5 निम्नलिखित अभिलेखों के अधिग्रहण द्वारा भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के संग्रह को और समृद्ध बनाया गया।

सार्वजनिक प्रलेख : निम्नलिखित मंत्रालयों/विभागों की 1873-1950 तक की अवधि की 5147 फाइलें अधिग्रहीत की गईं: रक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और मंत्रिमंडल सचिवालय।

निजी कागजात : 1905-48 तक की अवधि के दौरान गांधी जी से संबंधित दस्तावेज का एक सैट, गांधी-पोलक पत्राचार शीर्षक के अंतर्गत, जिसमें 4335 मदें समाविष्ट हैं, लंदन स्थित सोथबी द्वारा की गई एक सार्वजनिक नीलामी के माध्यम से भारत सरकार द्वारा अधिग्रहीत किए जाने के बाद, भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार के संरक्षण में हस्तांतरित किया गया। इस संग्रह में पत्र, तार, टिप्पणियां, लेख, मुद्रित सामग्री, प्रेस की कतरन, छाया चित्र इत्यादि शामिल हैं। अधिकांश पत्र गांधी जी द्वारा हेनरी पोलक को लिखे गये हैं जो जोहान्सबर्ग में गांधी जी के क्लर्क और कानूनी सहयोगी थे।

इसके अतिरिक्त विभाग के संरक्षण में भारत सरकार द्वारा सोथबी, लंदन के माध्यम से अधिग्रहीत गांधी-कालेनबैच का संग्रह है जिसमें 1909-46 तक की अवधि के 287 पत्र और 137 तार शामिल हैं। अभी तक अप्रकाशित ये पत्र गांधी जी के दक्षिणी अफ्रीका प्रवास पर प्रकाश डालते हैं। ये फोनेक्स बस्ती तथा टाल्सटाय फार्म में उनके जीवन और गतिविधियों पर प्रकाश डालते हैं। इन्हीं स्थानों पर गांधीजी ने आत्म-निर्भर समुदायों का प्रयोग प्रारम्भ किया था। ये कागजात गांधीजी की सर्वाधिक सबल अवधारणा अर्थात् अहिंसा और सत्याग्रह के शनैः शनैः निर्माण और दक्षिणी अफ्रीका में रंगभेद की नीति के खिलाफ लड़ने की उनकी नीति का वर्णन करते हैं।

महात्मा गांधी द्वारा गोविन्द बल्लभ पंत को लिखे गए (1932-48) और कांग्रेस कार्यसमिति में हिन्दुओं, मुसलमानों तथा अन्य जातियों को चुनने से संबंधित 5 पत्रों की फोटो प्रतियां और सी.पी. रामास्वामी के भाषणों, व्याख्यानों, रेडियो-वार्ताओं के 41 रोल अधिग्रहीत किए गए हैं।

5.6 *माइक्रोफिल्में* : चार्ल्स वालेस ट्रस्ट ग्रांट के तहत ब्रिटिश पुस्तकालय, लंदन से निम्नलिखित सामग्री प्राप्त की गई — युद्ध स्टाफ फाइलों के 111 रोल (1939-49) जिनमें सुरक्षा, कश्मीर का मामला, भारतीय सेना का राष्ट्रीयकरण जैसे विषयों से संबंधित सूचनाएं हैं; थाम्पसन संग्रह (1903-35) के 7 रोल जो पंजाब में भूमि की पट्टेदारी, जलियाँवाला बाग गोलीकांड पर जनरल डायर की रिपोर्ट से संबंधित है; सर लुईस डेन संग्रह (1849-1939) का 1 रोल; फज़ल-इ-हुसैन संग्रह (1924-36) के 4 रोल; टेम्पिलउड (1926-53) के 14 रोल जिनमें संसदीय पत्र गांधीजी के जीवन से संबंधित टिप्पणियां शामिल हैं; हारटोग संग्रह (1928-29) के 8 रोल; और स्टोपफोर्ड संग्रह (1930-32) के 2 रोल।

5.7 एक विनिमय करार के अंतर्गत निम्नलिखित 13 रोल ब्रिटिश पुस्तकालय, लंदन से प्राप्त किए गए; वाइसराय के निजी सचिव के कार्यालय से संबंधित 5 रोल 1947; प्रतिबंधित प्रकाशनों के 6 रोल; राजनीतिक और गुप्त विभाग अभिलेखों का 1 रोल; और भारत पर रूसी हमले की आशंका से संबंधित सर जान मालकम की टिप्पणियों का 1 रोल।

अनुसंधान और संदर्भ

5.8 अनुसंधान कक्ष और पुस्तकालय सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए लगभग 8681 अध्येता अभिलेखागार आए। आलोच्य अवधि के दौरान नामांकित 260 अध्येताओं में से 18 अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, ग्रीस, जापान, स्विटजरलैंड,पश्चिम जर्मनी, यू.के., अमेरिका, सोवियत रूस जैसे अन्य देशों से थे। प्रलेखों, पुस्तकों और माइक्रोफिल्मों के लिए लगभग 79,000 मांगपत्रों को निपटाया गया और प्रलेख उद्धरणों के लगभग 10026 पृष्ठों की टाइप प्रतियां/जीरोक्स प्रतियां उन्हें प्रदान की गईं। इसके अतिरिक्त 120 सार्वजनिक/निजी अभिकरण/व्यक्तियों को विभाग में उपलब्ध सामग्री से संबंधित सूचना प्रदान की गई।

संदर्भ माध्यम

5.9 सेंट्रल इंडिया एजेंसी (1858-1870) के 6210 पत्रों की सारांश सूची तैयार की गई और निजी कागजात के लगभग 7707 विषयों का सूचीकरण किया गया। इनायत जंग संग्रह के 2002 प्रलेखों की वर्णनात्मक सूची तैयारी की गई। फारसी पत्र-व्यवहार (1803) के 245 पत्रों की वर्णनात्मक सूची तैयार की गई।

अभिलेख और अभिलेखागारों का प्रबंध

5.10 विभिन्न विभागों और मंत्रालयों की 79599 फाइलों का मूल्यांकन किया गया। ये विभाग/मंत्रालय हैं : गृह मंत्रालय (1956-62), कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (1955-62), संसदीय कार्य मंत्रालय (1952-62), प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग (1954-62) और कम्पनी कार्य विभाग (1954-62)। इस मूल्यांकन के फलस्वरूप प्रतिवर्ष 30,542/- रुपए प्रतिवर्ष और 153 मीटर ताक स्थान (शेल्फ स्पेस) की बचत की गई।

20 मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के रिकार्डों को रखने की प्रतिधारण अनुसूचियों की जांच का कार्य पूरा किया गया; 20 मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के अभिलेख कक्षों का निरीक्षण किया गया; 6 मंत्रालयों/कार्यालयों के अभिलेख प्रबन्ध अध्ययन आयोजित किए गए और उन्हें तत्काल ही सलाह दी गई।

स्वतंत्रता की ओर

5.11 इस "परियोजना" के अन्तर्गत प्रासंगिक सामग्री के चयन का काम जारी रहा। इस संबंध में भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार और विभिन्न राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के अभिलेखागारों में उपलब्ध 1940-47 तक के सार्वजनिक और निजी अभिलेखों /माइक्रोफिल्मों की जांच की गई। परियोजना-खंड में शामिल करने के लिए चुनिंदा उद्धरणों के लगभग 6565 पृष्ठ भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली को भेजे गए।

अभिलेख अध्ययन स्कूल

5.12 स्कूल द्वारा आयोजित अभिलेख अध्ययन के 1 वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अतिरिक्त व्यावसायियों और उप-व्यावसायियों के लाभ के लिए आठ सप्ताह की अवधि के विभिन्न अल्पावधि पाठ्यक्रम आयोजित किए गए।

विभाग ने क्रमशः 18-19 नवम्बर, 1988 और 28-30 सितम्बर 1988 तक भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में "रेप्रोग्राफी" और "राष्ट्रीय प्रलेख विरासत का संरक्षण" पर दो कार्यशालाएं आयोजित कीं।

वित्तीय सहायता की योजना

5.13 (क) "पाण्डुलिपियों के परिरक्षण के लिए वित्तीय सहायता की योजना" के कार्यान्वयन के लिए अनुदान समिति का 18 जुलाई 1988 को पुनर्गठन किया गया। 6 अक्तूबर 1988 को अभिलेख निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित अपनी प्रथम बैठक में समिति ने यह सिफारिश की थी कि 15,39,300/- रुपए की राशि अनुदान के रूप में 27 संगठनों को वितरित की जानी चाहिए।

(ख) "राज्य अभिलेखागारों के विकास के लिए वित्तीय सहायता की योजना" के कार्यान्वयन के लिए अनुदान समिति का पुनर्गठन 8 अगस्त, 1988 को किया गया। अभिलेख निदेशक की अध्यक्षता में 15 नवम्बर, 1988 को आयोजित अपनी प्रथम बैठक में समिति ने सिफारिश की कि 22,23,000/- रुपए की धनराशि अनुदान के रूप में निम्नलिखित 7 राज्यों को वितरित की जाए : गुजरात, हिमाचल प्रदेश, केरल, मध्य प्रदेश, मणिपुर, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश।

(ग) रजिस्टर नेशनल योजना के अंतर्गत निजी संरक्षण में उपलब्ध अभिलेखों के सर्वेक्षण और सूची तैयार करने के कार्य को गति देने के लिए वित्त वर्ष 1987-88 के दौरान 1.10 लाख रुपये मंजूर किए गए जिसमें असम, गुजरात, केरल, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल राज्य के प्रत्येक अभिलेखागार को 15,000 रुपयों की धनराशि मंजूर की गई। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश राज्य अभिलेखागार को 5,000 रुपये की धनराशि मंजूर की गई।

प्रदर्शनी

5.14 सोवियत संघ में भारत महोत्सव के अंतर्गत, विभाग ने ट्रेढयोकोव कलावीथि, मास्को में आयोजित "दुज्बादोस्ती, सदियों पुराने भारत-सोवियत संबंध" नामक प्रदर्शनी में भाग लिया।

विभाग ने, भारत में सोवियत संघ महोत्सव के अंतर्गत ललित कला अकादमी वीथि, नई दिल्ली में आयोजित "दोस्ती द्रुज्बा, काल और अंतरिक्ष में भारत और सोवियत संघ" नामक प्रदर्शनी में भी हिस्सा लिया।

विभाग द्वारा 4 नवम्बर, 1988 से 25 दिसम्बर, 1988 तक "अंतिम चरण — हमारे स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम दशक की कहानी" नामक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

अभिलेख सप्ताह

5.15 नवम्बर, 1988 में "अभिलेख सप्ताह" आयोजित किया गया। इस अवधि के दौरान अभिलेखागार के स्टेक एरिया के एक अनुभाग, परिरक्षण व रेप्रोग्राफी एककों के निर्देशित भ्रमण की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त "भारत में शिक्षा का विकास" से संबंधित मूल दस्तावेजों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

तकनीकी सेवाएं

5.16 संरक्षण और रेप्रोग्राफी से संबंधित 95 सरकारी और निजी संस्थाओं को तकनीकी सूचना देने के अतिरिक्त, कुल मिलाकर 1,17,416 रिकार्ड-शीटों की मरम्मत की गई, 4,800 वाल्यूम/पुस्तकों व अन्य सामग्री की जिल्दसाजी की गई। इसके अतिरिक्त विभाग में माइक्रोफिल्मों के 2,00,000 एक्सपोजर, 74000 जेरोक्स प्रतियां, 16,000 मीटर पॉजिटिव माइक्रोफिल्में और 2473 प्रिंट तैयार किए गए।

क्षेत्रीय कार्यालय

5.17 भोपाल, पांडिचेरी, और जयपुर स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों ने अपनी सामान्य गतिविधियां जारी रखीं।

क्षेत्रीय कार्यालयों ने दस्तावेजों के लगभग 43,238 शीटों की मरम्मत की और 556 वाल्यूम/पुस्तकों आदि की जिल्दसाजी की। पांडिचेरी अभिलेख कार्यालय में 1-7 नवम्बर, 1988 तक अभिलेख सप्ताह मनाया गया और "सामाजिक परिवर्तन के पहलुओं" पर एक प्रदर्शनी लगाई गई। जयपुर अभिलेख कार्यालय में इस आयोजन के दौरान अभिलेख प्रबन्ध से संबंधित एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। भोपाल, अभिलेख कार्यालय ने "सामाजिक परिवर्तन के पहलुओं — 1900-1947" पर एक प्रदर्शनी लगाई।

एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता

5.18 देश में शैक्षिक महत्व की एक प्रमुख संस्था एशियाटिक सोसाइटी वर्ष 1984 में राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में प्रतिष्ठित हुई। इसके मुख्य कार्यकलाप हैं : पुस्तकालय में सुधार; पुस्तकालय सामग्री और संग्रहालय वस्तुओं का संरक्षण और परिरक्षण, अनुसंधान गतिविधियों और प्रकाशनों को बढ़ावा देना।

सलाहकार समिति ने प्रशासक को संस्कृत अध्ययन के 32 विद्यार्थियों के लिए शिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए अधिकृत किया। भारत सरकार ने इस प्रयोजनार्थ छः महीने के लिए 1,62,000 रुपए के तदर्थ अनुदान की स्वीकृति दी है। यह भी निश्चय किया गया है कि उच्च संस्कृत अध्ययन संस्थान और 1985 में शुरु की गई अन्य संस्थायें समाप्त कर दी जाएं।

अनुसंधान कार्य बढ़ाने के लिए सलाहकार समिति ने 6 अनुसंधान फेलोशिप प्रारम्भ करने की स्वीकृति दे दी। प्रत्येक अनुसंधान फैलोशिप दो वर्ष के लिए होगी तथा एक और वर्ष के लिए नवीकृत हो सकेगी। फैलोशिप की राशि प्रति माह 3000/- रुपए होगी, साथ ही प्रति वर्ष 10,000/- रुपए का आकस्मिक अनुदान भी दिया जाएगा।

5.19 पत्रिकाओं के प्रकाशन को नियमित बनाने के लिए कदम उठाए गए हैं। सोसाइटी का मासिक बुलेटिन अब नियमित रूप से प्रकाशित होने लगा है। सोसाइटी के प्रकाशनों की बिक्री तथा लोकप्रियता बढ़ाने के लिए सोसाइटी ने लखनऊ में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेला और कलकत्ता पुस्तक मेले में भाग लिया।

एशियाटिक सोसाइटी ने राष्ट्रीय पुस्तकालय और रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान के सहयोग से भारतविद्या अध्ययन पर 21 से 23 नवम्बर, 1988 तक एक सम्मेलन आयोजित किया। इसमें बहुत से प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने भाग लिया।

जून, 1988 से सोसायटी ने प्रति माह अनेक शैक्षिक व्याख्यान प्रारम्भ किए। कलकत्ता पुस्तक मेले के अवसर पर "एशियाटिक अनुसंधान के 200 वर्ष" पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई।

5.20 भारत सरकार के सुझाव पर सोसाइटी ने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम को यथासंभव कार्यान्वित करने का निश्चय किया। मार्च 1987 में गोर्की विश्व साहित्य संस्थान मास्को, सोवियत रूस के अनुसंधान फैलो डा. आई. सेरेब्रिएनी भारत-सोवियत सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत एशियाटिक सोसाइटी आए।

देश के सबसे पुराने पुस्तकालय, सोसाइटी के पुस्तकालय ने अध्येताओं और अनुसंधान छात्रों को उनके अध्ययन में मदद देने के लिए सुविधाओं में सुधार किया है। एक स्टाक जांच एकक का सृजन किया गया है ताकि वाचनालय कार्ड, ग्रंथसूची निर्माण और अनुक्रमणिका कार्य में सुधार के लिए पुस्तकों और पाण्डुलिपियों का उचित हिसाब रखा जा सके।

संग्रहालय और अभिलेख

5.21 पांडुलिपियों का सूचीनिर्माण जारी रहा। 174 पांडुलिपियों की सूचियां बनाई गईं। 2913 संस्कृत पांडुलिपियों के स्टॉक की चैकिंग और प्रत्यक्ष जांच की गई। अभिलेखीय कागजात की वर्णाक्षरात्मक, सूची बनाई गई। लगभग 28449 पांडुलिपियों को साफ किया गया।

संरक्षण अनुभाग वर्षभर पुस्तकालय और संग्रहालय तथा पांडुलिपि अनुभागों में रखी पुस्तकों, पांडुलिपियों, चित्रों तथा अन्य कागजात के परिरक्षण और जीर्णोद्धार में सक्रिय रहा।

रेप्रोग्राफी अनुभाग में कुल मिलाकर 31030 फाइलों की फोटोप्रति कराई गई। सोसाइटी के संग्रह में से विभिन्न पुस्तकों और पांडुलिपियों से माइक्रोफिल्म कापी के 7089 फोलियो और पॉजिटिव कापी के 36,000 फोलियो निकाले गए।

प्रकाशन अनुभाग : दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और 31 मार्च 1989 तक चार और पुस्तकों के प्रकाशित होने की संभावना है।

उपलब्ध पुस्तकों की एक सूची भी प्रकाशित की गई है।

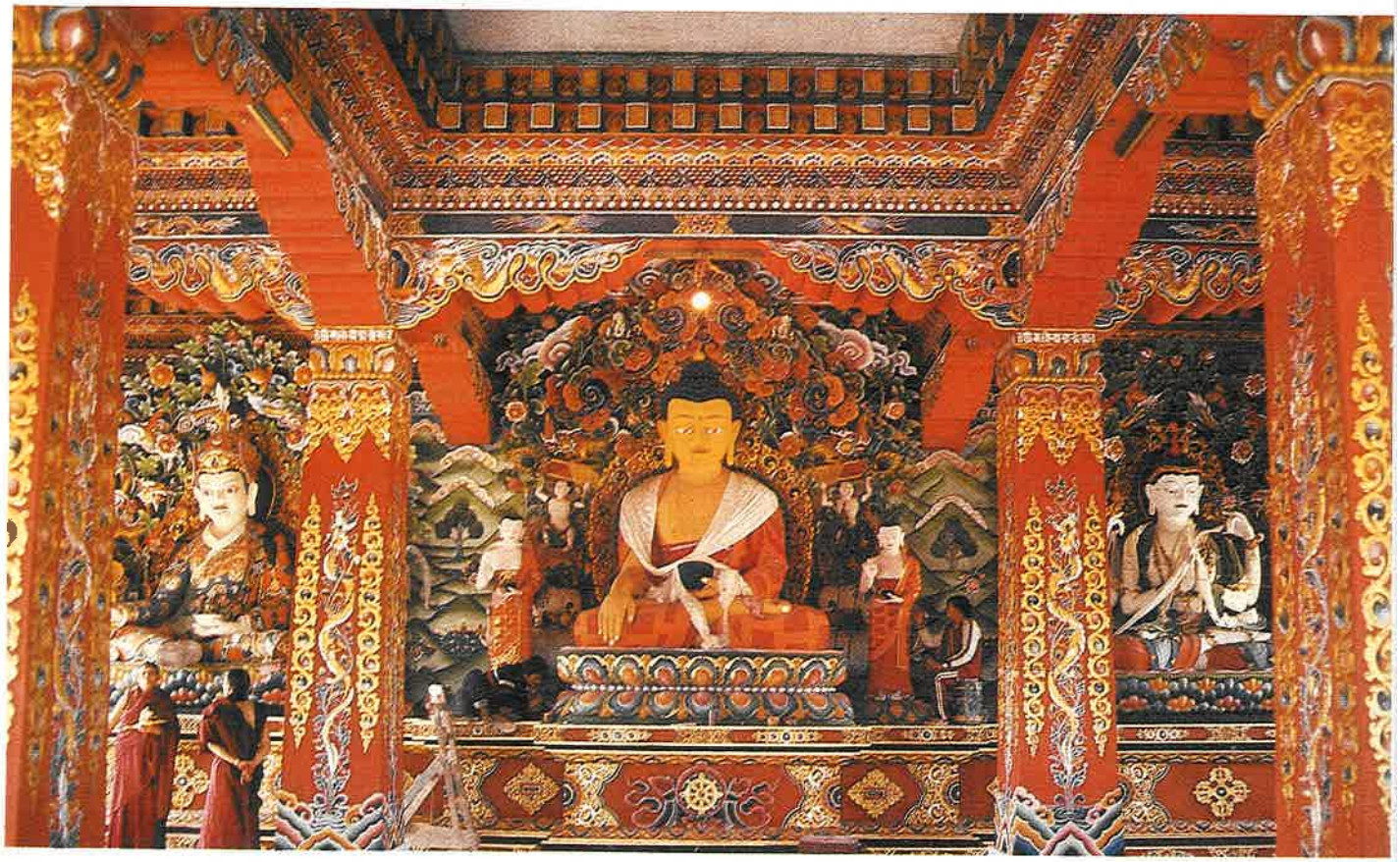

अध्याय 6

तिब्बती, बौद्ध तथा अन्य ऐतिहासिक अध्ययन संस्थाएं

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह (जम्मू व कश्मीर)

6.1 केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, एक स्वायत्त संगठन है जिसके लिए धन की व्यवस्था पूरी तरह केन्द्र सरकार करती है। संस्थान का मूल उद्देश्य, छात्रों को आधुनिक विषयों के साथ-साथ बौद्ध दर्शन, साहित्य तथा कलाओं की शिक्षा देकर उनके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना है। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, भोट साहित्य और बौद्ध दर्शन जहां अनिवार्य विषय हैं, वहां सामाजिक विज्ञान, राजनीति विज्ञान, गणित और अर्थशास्त्र ऐच्छिक विषय हैं। पाठ्यक्रम संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा निर्धारित किया गया है, जिससे यह संस्थान सम्बद्ध है।

केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

6.2 केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ एक स्वायत्त संगठन है जिसके लिए धन की व्यवस्था की पूर्ण जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की है। इसकी स्थापना तिब्बती संस्कृति और परम्परा के परिरक्षण, तिब्बती भाषा में सुरक्षित प्राचीन भारतीय साहित्य के पुनरुद्धार तथा सीमान्त क्षेत्रों के छात्रों के लिए बौद्ध-अध्ययन की उच्च शिक्षा की व्यवस्था करने के उद्देश्य से की गई थी। संस्थान संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए छात्रों को तैयार करता है। 5 अप्रैल, 1988 को संस्थान को विश्वविद्यालय के समकक्ष दर्जा दिए जाने की घोषणा के बाद से संस्थान ने काफी प्रगति की है।

सिक्किम तिब्बती विद्या अनुसंधान, गंगतोक

6.3 यह संस्थान सिक्किम सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन है तथा सिक्किम के राज्यपाल इसके शासी निकाय के अध्यक्ष हैं। इसकी स्थापना तिब्बती विद्या में अध्ययन और अनुसंधान के लिए की गई है। संस्थान ने अनुसंधान और प्रतिमाविज्ञान, औषध, ज्योतिष और इतिहास जैसे सह-विषयों को प्रोत्साहित करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है। संस्थान का एक विशेष अनुसंधान और प्रकाशन कार्यक्रम भी है।

वर्ष के दौरान शोध-पत्रिका तिब्बती विद्या के बुलेटिन (3 अंक) के अतिरिक्त संगस्त्रय्यस-स्तोंग (सहस्त्र बुद्ध) — बौद्ध प्रतिमाविज्ञान पर एक पुस्तक, जिसमें भगवान बुद्ध के 4 रंगीन फोटो और 80 रेखाचित्र तथा मुद्रा चिन्हों की व्याख्याओं सहित बोधिसत्व शामिल हैं, का प्रकाशन किया गया।

तिब्बती रचनाओं और अभिलेखों का पुस्तकालय, धर्मशाला

6.4 तिब्बती रचनाओं और अभिलेखों का पुस्तकालय एक स्वैच्छिक संगठन है। इसका उद्देश्य तिब्बती पुस्तकें और पांडुलिपियां प्राप्त करना और उन्हें सुरक्षित रखना, संदर्भ सेवा प्रदान करना तथा तिब्बती स्रोत सामग्री, पांडुलिपियों और चित्रों एवं कला-वस्तुओं संबंधी पूछताछ के लिए संदर्भ केन्द्र के रूप में कार्य करना है।

पुस्तकालय में निम्नलिखित विभाग हैं :—

(i) तिब्बती पुस्तक और पांडुलिपि पुस्तकालय, जिसमें 60,000 पुस्तकें और पांडुलिपियां हैं। बहुत सी पांडुलिपियां अमूल्य और हस्तलिखित हैं।

(ii) विदेशी भाषा संदर्भ पुस्तकालय, जिसमें तिब्बत, हिमालय और बौद्ध धर्म पर अंग्रेजी और अन्य यूरोपीय भाषाओं की 5000 पुस्तकें, पत्रिकाएं और संवाद पत्र हैं।

(iii) संग्रहालय और अभिलेखागार, जिसमें 700 प्रतिमाएं, चित्र, स्तूप, अनुष्ठान संबंधी वस्तुएं और 350 ऐतिहासिक दस्तावेज और 13-19वीं शताब्दी के 4600 प्राचीन तिब्बती फोटो हैं।

पुस्तकालय में तिब्बत से प्राप्त तिब्बती संस्कृति और बौद्ध अध्ययन संबंधी 299 तिब्बती पाठ और पांडुलिपियां शामिल की गई हैं।

6.5 छठे दलाई लामा के काल में सुलेखित कग्यार के अद्वितीय 90 भागों वाले फुग्दराय की माइक्रोफिल्मिंग तथा 337 दुर्लभ दस्तावेजों के छाया-चित्रण का कार्य पश्चिमी जर्मनी की मध्य एशियाई अध्ययन की बेयर अकादमी के सहयोग से पूरा किया गया।

मौखिक इतिहास परियोजना के अधीन वरिष्ठ तिब्बती विद्वानों के साथ तिब्बती ज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर सात लंबे साक्षात्कारों का आयोजन किया गया; मौखिक रूप से संप्रेषित 15 उपदेशों/शिक्षाओं को रिकार्ड किया गया और पहले से रिकार्ड की गई 29 महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृतियों का लिप्यंतरण किया गया।

अमरीका और यूरोप के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा प्रायोजित 22 अधिकृत छात्रों और भारत सरकार द्वारा सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत भेजे गए, छात्रों ने पुस्तकालय के विद्वानों के मार्गदर्शन में अनुसंधान कार्य किया।

परम्परागत थांग्का चित्रकला के सभी पहलुओं पर एक सात वर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने के लिए एक कला विद्यालय और काष्ठ-उत्कीर्णन के परम्परागत कौशल पर तीन-वर्षीय व्यावहारिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रदान करने के लिए एक शिल्प विद्यालय की स्थापना की गई है। ये विद्यालय भारत में तिब्बती ललित कला के प्रमुख केन्द्र हैं तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

पुस्तकालय को अपने अनुरक्षण और अन्य परियोजनाओं के लिए भारत सरकार से नियमित अनुदान मिलता है।

बौद्ध/तिब्बती संगठनों को वित्तीय सहायता

6.6 संस्कृति विभाग बौद्ध/तिब्बती संगठनों, जिनमें बौद्ध मठ भी शामिल हैं, के लिये, संबद्ध क्षेत्रों में बौद्ध/तिब्बती संस्कृति, परम्परा और अनुसंधान के प्रचार और वैज्ञानिक विकासार्थ वित्तीय सहायता की एक योजना चला रहा है। अनुदान तदर्थ और अनावर्ती आधार पर दिए जाते हैं और किसी एक संगठन के लिए अनुदान की अधिकतम सीमा 2.00 लाख रुपये है। प्रत्येक अनुमोदित परियोजना पर होने वाला खर्च केन्द्र सरकार और संबंधित राज्य सरकार के संगठन द्वारा 3:1 के अनुपात में वहन किया जाता है। अब तक 84 संस्थाओं को वित्तीय सहायता अनुदानों के लिए चुना गया है।

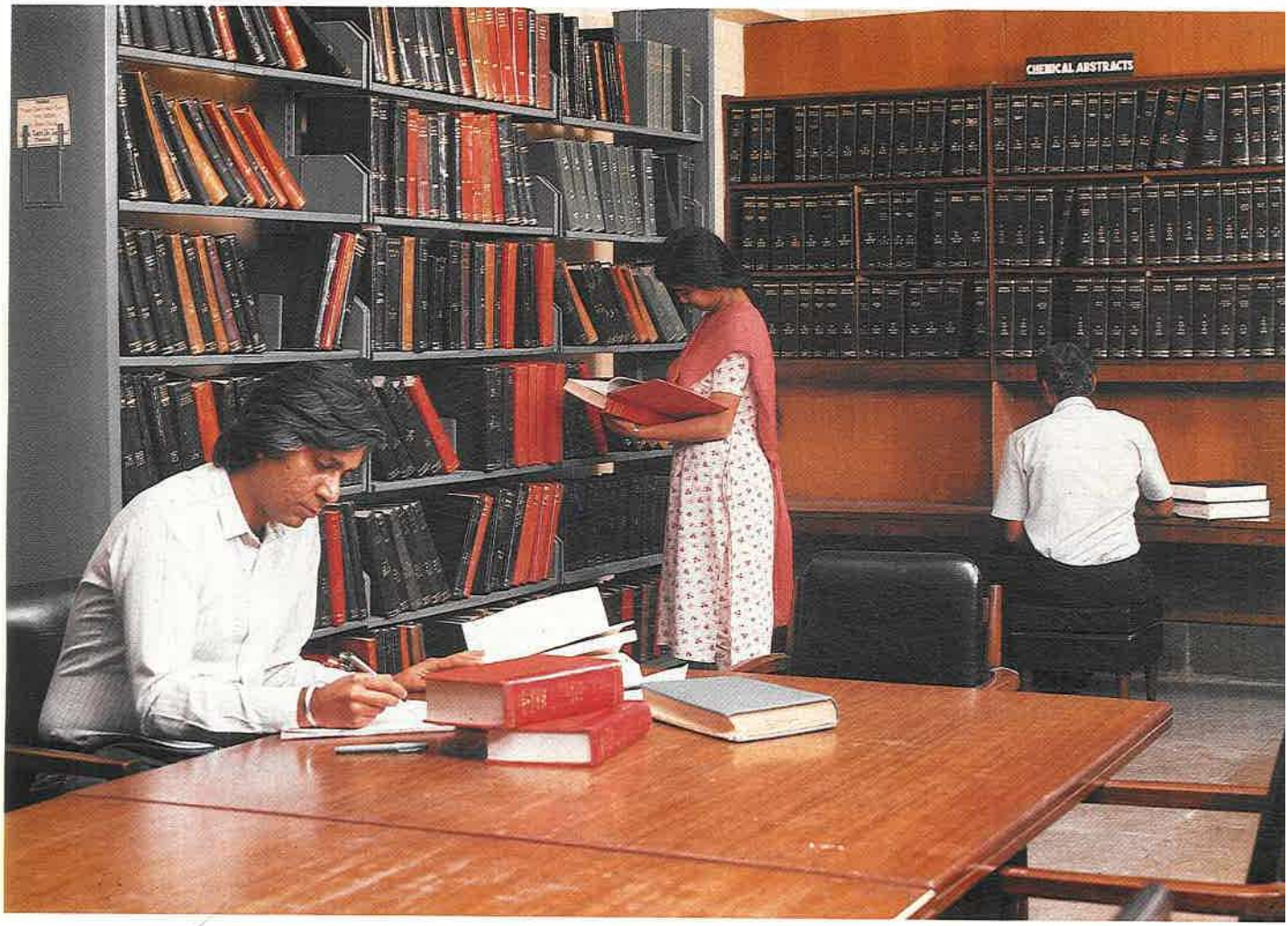
CHEMICAL ABSTRACTS

अध्याय 7

पुस्तकालय

राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता

7.1 राष्ट्रीय पुस्तकालय, देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। इसमें लगभग 19.60 लाख पुस्तकें हैं और ये प्रमुखतः बेलवेदयर, कलकत्ता में हैं। यह पुस्तक परिदान अधिनियम 1954 (1956 में संशोधित) के उपबन्धों के अंतर्गत एक प्रापी पुस्तकालय है। इसमें संयुक्त राष्ट्रों के दस्तावेज संग्रहीत है। यह संस्थान अध्येताओं के लिए एक संदर्भ केन्द्र के रूप में भी कार्य करता है।

भारत में प्रकाशित वर्तमान पुस्तकों, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की प्राप्ति का मुख्य स्रोत परिदान अधिनियम के अंतर्गत है। विदेशों में प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तकें तथा पत्रिकाएं खरीद के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं। इस पुस्तकालय का 80 देशों की 192 संस्थाओं के साथ पुस्तक विनिमय कार्यक्रम होता है। जो विदेशी पुस्तकें सामान्य व्यापार माध्यमों से उपलब्ध नहीं की जा सकती हैं, उनके प्राप्त करने के लिए यह कार्यक्रम एक उत्कृष्ट स्रोत है।

7.2 भारत तथा विदेशों के पाठकों और अनुसंधान अध्येताओं को बड़ी-बड़ी पुस्तकें एवं संदर्भ सेवा के रूप में सुविधाएं प्रदान करना इस पुस्तकालय के प्रमुख कार्यों में से एक है। पुस्तकालय ने ग्रंथ सूचियां और विवरणात्मक पुस्तकों की सूचियां प्रकाशित की हैं ताकि अध्येताओं को पुस्तकों के संबंध में सूचना प्रदान की जा सके। यह पुस्तकालय राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के संबंध में पुस्तकों तथा चित्रों की प्रदर्शनियां आयोजित करता है। इस संबंध में शरत चंद्र बोस के पत्रों, प्रलेखों तथा फोटुओं की 5 सितम्बर, 1988 को उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनियों; तथा 14 नवम्बर, 1988 को पंडित जवाहरलाल नेहरू की जन्म शताब्दी के अवसर पर "जवाहर लाल नेहरू और स्वतंत्र भारत" पर आयोजित प्रदर्शनी का उल्लेख किया जा सकता है।

माइक्रो फिल्म निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत, यह पुस्तकालय दुर्लभ तथा ऐसी पुस्तकें जिनका संग्रह समाप्त हो जाता है, के सारांशों का परिरक्षण करता है। पुस्तकालय उपलब्ध अनुसंधान सामग्री की माइक्रो फिल्म/फोटो/जीरोक्स प्रतियां भी प्राप्त करता है और उन्हें लागत मूल्य पर अध्येताओं को मुहैया कराता है।

पुस्तकालय लगभग 7,000 पाठकों को, जो "अध्ययन कक्ष सदस्य" के रूप में नामांकित है, "पाठक सेवाएं प्रदान" करता है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय ऋण के राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में भी कार्य करता है। वर्ष के दौरान पाठकों को लगभग 88,500 पुस्तकें दी गईं तथा पुस्तकें उधार लेने वालों को लगभग 32,000 पुस्तकें दी गईं।

वर्ष के दौरान, राष्ट्रीय पुस्तकालय ने चार प्रकाशन प्रकाशित किए हैं अर्थात् (1) पुस्तकालय सामग्री का परिरक्षण (2) रवीन्द्र ग्रन्थ सूची (बंगाली में), स्वप्न मजूमदार द्वारा संकलित (3) भारत में केन्द्रीय ग्रंथ सूची और (4) भारत-विद्या अध्ययन तथा दक्षिण एशिया ग्रंथ सूची।

केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता

7.3 केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय संस्कृति विभाग का एक अधीनस्थ कार्यालय है। यह पुस्तकालय राष्ट्रीय पुस्तकालय परिसर में स्थित है और यह मुख्यतः दो योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी है अर्थात् (1) भारतीय राष्ट्रीय ग्रंथ सूची का संकलन, मुद्रण तथा प्रकाशन (रोमन लिपि तथा संबंधित भारतीय भाषा लिपि दोनों में) और (2) इन्डियाना इंडेक्स का संकलन तथा प्रकाशन (रोमन लिपि में) जो प्रमुख भारतीय भाषाओं की वर्तमान भारतीय पत्रिकाओं में छपे लेखों का इंडेक्स होता है।

भारतीय राष्ट्रीय ग्रन्थ सूची

7.4 अत्यधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि रोमन लिपि में भारतीय राष्ट्रीय ग्रन्थ सूची के मासिक को नए तरीके से निकालना है जिसे 1978 में भारत सरकार के प्रेसों में कम्पोजिंग तथा मुद्रण में हुई देर के कारण बन्द कर दिया गया था। यू.एस.ए. से आयातित एक फोटो-कंपोजिंग मशीन से कार्य किया जाता है। 1984 तथा 1985 के मासिक अंक पहले ही प्रकाशित किए जा चुके हैं। पिछले कार्य को पूरा करने के लिए निजी मुद्रकों के जरिए 1986 तथा 1987 के मासिक अंक मुद्रित करने के लिए कार्रवाई की गई है। तदनुसार जनवरी से दिसम्बर, 1986 तक के मासिक अंक इस अवधि के दौरान प्रकाशित किए जाएंगे। 1980-81 के लिए एकत्रित वार्षिक खंड इस अवधि के दौरान प्रकाशित होने की सम्भावना है 1983 के वार्षिक खंडों की पांडुलिपियों को तैयार करने का कार्य प्रगति पर है। 1984 के वार्षिक खंड की पांडुलिपि भारत सरकार प्रेस, कोयम्बतूर को मुद्रण के लिए प्रस्तुत की गई है। 1986 तथा 1987 (के वार्षिक खंडों) के लिए हिन्दी भाषा ग्रन्थ सूची, 1987 (वार्षिक) के लिए मलयालम, 1984 (वार्षिक) के लिए तमिल और उर्दू 1981-82 तथा 1986-87 (एकत्रित) भाषा ग्रन्थ सूचियां प्रकाशित की गई हैं। अन्य भाषाओं की ग्रन्थ सूचियों को भी इस अवधि में छापने के लिए कदम उठा लिए गए हैं।

इन्डेक्स इण्डियाना

7.5 इस समय इन्डेक्स इण्डियाना वार्षिक खंडों के रूप में प्रकाशित होता है जिसमें केवल छः भारतीय भाषाएं अर्थात् बंगला, हिन्दी, गुजराती, मराठी, मलयालम तथा तमिल है। शेष भाषाएं भी भविष्य में इसमें शामिल की जाएंगी। और जैसे ही शेष भाषाओं के लिए उप-सम्पादकों के प्रस्तावित नए पद बना लिए जाते हैं, ये प्रकाशन अद्यतन निकाले जाएंगे। इन्डेक्स इण्डियाना का वार्षिक खंड 1983 पहले ही प्रकाशित हो गया है। 1984-85 एकत्रित खंड प्रेस में भेजने के लिए तैयार है।

भारत सरकार की सरकारी योजनाओं के लिए हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

7.6 राजभाषा कार्यान्वयन समिति का इस उद्देश्य से गठन किया गया है कि केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सरकारी आदेशों को कार्यान्वित किया जा सके। कुल मिलाकर वर्ष के दौरान चार बैठकें आयोजित की गईं। हिन्दी कार्य के लिए मुख्य रूप से एक हिन्दी सहायक नियुक्त किया गया है, 80% कर्मचारियों ने (वर्ग घ स्टाफ को छोड़कर) प्राज्ञ परीक्षा पास कर ली है अथवा प्राज्ञ स्तर के समकक्ष या इससे अधिक स्तर की हिन्दी भाषा दक्षता प्राप्त कर ली है।

केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय

7.7 केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय में हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषा का स्कन्ध, जो बहावलपुर हाउस में है तथा रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली का एक शाखा पुस्तकालय भी शामिल है। यह पुस्तकालय सरकारी संगठनों, पुस्तकालय के सदस्यों, अनुसंधान अध्येताओं तथा अन्य लोगों को अनुसंधान तथा संदर्भ सुविधाएं प्रदान करता है। इसमें अंग्रेजी, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में, केवल सदस्यों के लिए एक छोटा संग्रह है।

इस पुस्तकालय में हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की लगभग 8661 पुस्तकें और मंगाई गई हैं। पुस्तकालय के पहले के मुख्य संग्रह में सात लाख से भी अधिक पुस्तकें है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय में केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के 32177 प्रकाशन प्राप्त हुए हैं जिनमें गजट, कानूनी प्रलेख तथा वैधानिक निकायों की कार्यवाहियां शामिल हैं। अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों जैसे यूनेस्को, संयुक्त राष्ट्र, आई.एल.ओ. तथा अन्य विदेशी सरकारों से प्राप्त सरकारी प्रकाशन 2330 से अधिक हैं। पुस्तकालय को माइक्रो फिश रूप में 400 यू.एस. सरकारी प्रकाशन भी प्राप्त हुए हैं।

पुस्तकालय में 4076 सदस्य नामांकित किए गए और 169590 पुस्तकें उधार दी गईं। 553 से भी अधिक खंड अंतर पुस्तकालय ऋण आधार पर विभिन्न स्थानीय पुस्तकालयों को दिए गए और 112 पुस्तकें अंतर पुस्तकालय ऋण आधार पर उधार ली गई ताकि सदस्यों की मांग को पूरा किया जा सके। पुस्तकालय ने अनुसंधान अध्येताओं, वैयक्तिकों तथा संस्थानों को दस्तावेजों की 21104 फोटो-प्रतियां मुहैया कीं।

केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय कम्प्लेक्स के रीडिंग हाल हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में स्थानीय के साथ-साथ भारत में कहीं से भी प्रकाशित लोकप्रिय समाचार पत्रों के माध्यम से पंजीकृत सदस्यों तथा गैर-सदस्य पाठकों की जरूरतों को पूरा करते हैं। नियमित रूप से इस प्रकार मंगाए जाने वाले समाचार पत्रों की संख्या 45 है। इसी प्रकार पुस्तकालय में अंग्रेजी, हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में चंदा, उपहार तथा विनिमय के जरिये प्राप्त पत्रिकाओं की कुल संख्या 1047 हैं।

7.8 पुस्तकालय विस्तार कार्यकलाप कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित आयोजन किए गए :—

1. "खेल-कूद के जरिए राष्ट्रीय एकता" विषय पर 15 मार्च, 1988 को संसद सदस्य तथा भारतीय ओलम्पिक हाकी दल के भूतपूर्व कैप्टन श्री असलम शेर खान द्वारा "राष्ट्रीय एकता व्याख्यान माला" के अंतर्गत भाषण।

2. माइक्रोग्राफिक यूनिट को बेहतर गुणवत्ता की माइक्रोफिशें तथा माइक्रोफिल्में तैयार करने के लिए और सुदृढ़ बनाया गया। हमारे परिरक्षण कार्यक्रम के भाग के रूप में संग्रह से भुरभुरी दुर्लभ पुस्तकों की माइक्रोफिश/माइक्रोफिल्म प्रतियां तैयार की जा रही हैं।

3. 5 से 16 दिसम्बर, 1988 तक आई.डी.आर.सी. संसाधन व्यक्ति की सहायता से एक प्रशिक्षण कार्यक्रम "एम.आई.एन.आई. एस.आई.एस." आयोजित किया गया। पत्रिकाओं के पूर्ण अभिलेख जब मशीन-पठनीय रूप में उपलब्ध हैं। वर्तमान मोनोग्राफ एक सी.एस.एल. ग्रन्थसूची आंकड़ा आधार तैयार करने के लिए नियमित रूप से शामिल किए जा रहे हैं।

पुस्तकालय स्कूलों से तीन नए स्नातकों को हमारे नियमित कार्यक्रम के भाग के रूप में वर्ष के दौरान 3 माह का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

हिन्दी ग्रंथसूची परियोजना के लिए आंकड़ा संग्रह का कार्य प्रगति पर है। भारतीय पांडुलिपि का ग्रंथसूची सर्वेक्षण (आई.एन.टी.ए.सी.एच. द्वारा प्रायोजित तथा वित्तपोषित एक संयुक्त परियोजना) भी संतोषजनक रूप से प्रगति कर रहा है।

केन्द्रीय पुस्तकालय, बंबई

7.9 पुस्तक परिदान अधिनियम के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार ने चार पुस्तकालयों को प्रापी पुस्तकालय घोषित किया है जिनमें देश में प्रकाशित पुस्तकों/समाचार-पत्रों की एक-एक प्रति भेजी जाती है। इस प्रयोजन के लिए केन्द्रीय पुस्तकालय, बंबई एक प्रापी पुस्तकालय है। केन्द्रीय सरकार पुस्तकालय के पुस्तक परिदान अधिनियम की धारा को कायम रखने के लिए पुस्तकालय को अनुदान देती है।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली

7.10 दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना यूनेस्को द्वारा वित्तीय तथा तकनीकी सहायता से शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 1951 में हुई थी। यह दिल्ली के नागरिकों की निःशुल्क पुस्तकालय सेवा करती है। इसने पुरानी दिल्ली में एक छोटे पुस्तकालय के रूप में कार्य करना आरम्भ किया था। अब यह महानगर सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के रूप में विकसित हो गई है। इसमें एक केन्द्रीय पुस्तकालय, सरोजनी नगर स्थित एक क्षेत्रीय पुस्तकालय, बवाना स्थित एक ग्रामीण क्षेत्रीय पुस्तकालय, 29 शाखाएं एवं उप-शाखाएं, 31 आर.सी. पुस्तकालय, एक ब्रेल विभाग तथा दिल्ली संघ शासित क्षेत्र में चारों ओर फैले 66 क्षेत्रों तथा 19 संग्रह स्टेशनों के लिए चलते-फिरते स्टेशनों का एक नेटवर्क है।

दो खेल पुस्तकालय खेल प्रेमियों के प्रयोग के लिए नेशनल स्टेडियम तथा तालकटोरा तरणताल कम्प्लेक्स में भारतीय खेल प्राधिकरण के सहयोग से स्थापित किए गए थे।

पुस्तकालय में 8,49,902 खंड तथा 84,468 पंजीकृत पाठक हैं। इसने वर्ष के दौरान घर पर पढ़ने हेतु 21,94,056 पुस्तकें जारी की थीं।

राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी प्रतिष्ठान, कलकत्ता

7.11 यह प्रतिष्ठान एक स्वायत्त संगठन है जो देश की पुस्तकालय सेवाओं को आगे बढ़ाता है जिसे यह राज्य/संघ शासित क्षेत्र सरकारों के सहयोग से करता है।

देश में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं को सुधारने के क्रम में, इसने बराबर तथा गैर-बराबर सहायता की नौ योजनाओं को कार्यान्वित किया है।

वर्ष 1987-88 के दौरान, सहायता की मात्रा 189.00 लाख तक थी। विभिन्न स्तरों पर लगभग 6000 पुस्तकालयों की सहायता की गई।

प्रतिष्ठान ने देश में पुस्तकालय आन्दोलन के संवर्धन को ध्यान में रखते हुए, अनेक संवर्धनात्मक कार्यकलाप भी शुरू किए हैं। राजा राम मोहन राय वार्षिक स्मारक भाषण प्रोफेसर एस. गोपाल द्वारा दिया गया था। एक राष्ट्रीय सेमिनार स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगाठ तथा पंडित जवाहरलाल नेहरू की जन्म शताब्दी मनाने के लिए आयोजित किया गया था।

7.12 प्रतिष्ठान ने नियमित आधार पर सार्वजनिक पुस्तकालयों पर सूचना के संग्रह, संकलन, भंडारण तथा प्रसार के लिए कार्यक्रम शुरू किया है। इसने राज्य केन्द्रीय पुस्तकालयों तथा जिला पुस्तकालयों से आंकड़े एकत्र करने के लिए एक परियोजना शुरू की है। इसने आवधिक रूप में "डायरेक्टरी ऑफ इंडिया पब्लिक लाइब्रेरीज" को अद्यतन करने का भी निर्णय लिया है।

वर्ष 1986 में उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित करने के अतिरिक्त, तीन और क्षेत्रीय कार्यालय बंबई, मद्रास तथा कलकत्ता में खोले गए थे। तीन अतिरिक्त तलों सहित प्रतिष्ठान के भवन के विस्तार हेतु कार्य शुरू हो गया है।

भारतीय विश्व कार्य पुस्तकालय परिषद, नई दिल्ली

7.13 भारतीय विश्व कार्य पुस्तकालय परिषद, नई दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय अध्ययन के लिए अनुसंधान सुविधाएं प्रदान करती है। इसका पुस्तकों, दस्तावेजों, पत्रिकाओं तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर प्रैस कतरनों का एक बहुत समृद्ध संग्रह है। इसका सूक्ष्म फिल्मों तथा मानचित्रों का भी एक प्रभावी संग्रह है। यह संयुक्त राष्ट्र पुस्तक प्रणाली पर आधारित एक संग्रह पुस्तकालय है। केन्द्रीय सरकार इस परिषद को रख-रखाव के लिए तदर्थ अनुदान देती है।

खुदा बख्श प्राच्य पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

7.14 बिहार के एक प्रख्यात सपूत, व्यवसाय से एक एडवोकेट तथा पुस्तक-प्रेमी खुदा बख्श खान ने पाण्डुलिपियों तथा मुद्रित पुस्तकों के स्वयं के व्यक्तिगत संग्रह से 1891 में एक "पब्लिक लाइब्रेरी" स्थापित की और एक न्यास-पत्र द्वारा उसी वर्ष अपना समूचा संग्रह जनता को दान कर दिया। इस पुस्तकालय को अब खुदा बख्श प्राच्य पब्लिक लाइब्रेरी के रूप में जाना जाता है, यह इस उप-महाद्वीप में पाण्डुलिपियों के समृद्धतम संग्रहों में से एक संग्रह के रूप में उभरी है जिसमें 1600 से अधिक पाण्डुलिपियां, 90,000 प्राचीन तथा दुर्लभ मुद्रित पुस्तकें, तथा मुगल, राजपूत, ईरानी तथा तुर्की शैली की 200 से भी अधिक पेंन्टिंगे हैं। एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में संसद अधिनियम द्वारा इसकी घोषणा करते हुए भारत सरकार ने इसका नियंत्रण 1969 में अपने हाथ में लिया था। आजकल इसका प्रबंध एक बोर्ड द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष बिहार के राज्यपाल हैं।

ज्ञान का परिरक्षण

7.15 पुस्तकालय विशेष रूप से पाण्डुलिपियों और सामान्य रूप से पुस्तकों के रूप में महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय विरासत के अधिग्रहण के साथ ज्ञान के परिरक्षण तथा प्रसार कार्य में लगा है। प्रशिक्षित कर्मचारियों की सहायता से पांडुलिपियों और दुर्लभ पुस्तकों को रासायनिक उपचार, लेमिनेशन, अपेक्षित मरम्मत तथा जिल्दसाजी के जरिए नई तथा अच्छी स्थिति प्रदान की जा रही है। पुस्तकालय अन्य संग्रहों तथा परिरक्षण के लिए अपना सहयोग दे रहा है।

ज्ञान का प्रसार

7.16 विस्तृत आधार पर ज्ञान के प्रसार के लिए, खुदा बक्श लाइब्रेरी ने अध्येताओं को अनुसंधान कार्यों में सभी सम्भव सहायता प्रदान करने के लिए एक बहु-आयामी कार्यक्रम तैयार किया है। पांडुलिपियों की विवरणात्मक सूचियों के 21 खंड प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त विशेषज्ञ 10 और खंडों का कार्य पूरा करने में लगे हैं जो अगले कुछ वर्षों में प्रकाशित किए जाएंगे। लाइब्रेरी के कुछेक विशेष विषयों पर अरबी तथा फारसी पांडुलिपियों के मुख्य केटालोग (हाथ से बनी सूचियां) पूरी की गई हैं और तीन दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सेमिनारों के दौरान प्रकाशित की गई हैं। महत्वपूर्ण अंक तथा 36 दुर्लभ पांडुलिपियों तथा मोनोग्राफों का प्रकाशन किया जा चुका है। पुस्तकालय की नई पत्रिकाओं के सम्पूर्ण संग्रह की सूची तैयार की जा रही है ताकि अध्येताओं को सूक्ष्म-सूचना मुहैया की जा सके। वार्षिक/विस्तार व्याख्यान, वार्ता तथा संगोष्ठियां नियमित रूप से आयोजित की जा रही हैं जहां प्रसिद्ध अध्येताओं को भाषण देने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है।

अनुसंधान तथा प्रकाशन

7.17 1953 में पुस्तकालय का दौरा करते समय जवाहरलाल नेहरू ने नवीनतम तकनीकों द्वारा पुनः प्रस्तुत लाइब्रेरी की दुर्लभ सामग्री को देखने की इच्छा व्यक्त की थी। उनकी इच्छा को पूरा करने के लिए मुख्य अंक तथा 30 दुर्लभ सामग्रियां प्रकाशित की जा चुकी हैं। सामग्री की उपलब्धता को सुकर बनाने के लिए, इस लाइब्रेरी में पांडुलिपियों के सम्पूर्ण संग्रह की विवरणात्मक सूची बनाई गई है। इस लाइब्रेरी की त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका में इस पुस्तकालय में परिरक्षित सामग्री पर आधारित लेखों का प्रकाशन एक अन्य प्रयास है जिसका परिव्यय ज्ञान के अध्येता जगत को भी मिलता है।

स्वतंत्रता आन्दोलन पर काफी मात्रा में सामग्री पुरानी पत्रिकाओं में विद्यमान है। पुस्तकालय तीस खंडों में प्रकाशित करने के लिए ऐसी सभी सामग्री एकत्र कर रहा है। लगभग साठ पृष्ठों वाला मोतीलाल नेहरू का एक दुर्लभ भाषण पहले ही प्रकाशित हो चुका है।

शैक्षणिक सार्क का विकास

7.18 पुस्तकालय की दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सेमिनार की योजना का उद्देश्य एक शैक्षणिक अवस्थापना का सृजन करना है ताकि एक सफल दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग हेतु दक्षिण एशिया के लिए राजनीतिक सुपर संरचना का एक मजबूत आधार तैयार हो सके।

अब तक आयोजित हुए तीन सेमिनारों में से, प्रत्येक क्रमशः तिब्ब तसव्वुफ और उर्दू पांडुलिपियों के संबंध में था, जिनसे शोध पत्रों को पढ़ने के साथ-साथ दक्षिण एशियाई देशों से संबंधित विषयों पर पाण्डुलिपियों की सूचियां तैयार करने में काफी सहायता मिली। इसके अतिरिक्त, ये सेमिनार सार्क संबंधों को शैक्षिक स्तर पर सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मान्यता पुरस्कार

7.19 पुस्तकालय ने अध्येताओं के लिए एक पुरस्कार की योजना भी आरम्भ की है। यह पुरस्कार पुस्तकालय की अरबी/फारसी/उर्दू इस्लामी अध्ययन/तिब्ब/दक्षिण एशियाई अध्ययन/पश्चिम एशियाई अध्ययन/केन्द्रीय एशियाई अध्ययन/ तुलनात्मक धर्म/सूफीवाद/भारत की सामाजिक संस्कृति के विशेष क्षेत्रों में अनुसंधान के लिए उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया जाएगा। ये पुरस्कार साहित्य अकादमी तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार के समान हैं।

अधिग्रहण

7.20 पुस्तकालय ने क्रय, विनिमय, उपहार अथवा महत्व के द्वारा पांडुलिपियों का प्राप्त करना जारी रखा। पुस्तकालय ने प्रति वर्ष 287 पांडुलिपियां प्राप्त की हैं। इसके अतिरिक्त, 9260 मुद्रित पुस्तकों और लगभग 50 माइक्रोफिल्में/ फोटोस्टेट प्राप्त किए हैं।

उत्कृष्टताओं का संरक्षण

7.21 भारत की उत्कृष्टताओं के अभिलेख बनाने तथा परिरक्षण करने के लिए अलग से श्रव्य व दृश्य टेपों का एक संग्रह तैयार किया जा रहा है। एक सौ से अधिक श्रव्य तथा 43 दृश्य टेपों को तैयार किया गया है।

तंजावूर महाराजा सरफोजी का सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजावूर

7.22 तंजावूर महाराजा सरफोजी का सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजावूर एक उत्कृष्ट स्तर की संस्था है। इसमें दुर्लभ तथा महत्वपूर्ण पांडुलिपियों के संग्रह हैं जो कला, संस्कृति तथा साहित्य के अनेक पहलुओं के संबंध में हैं। इस पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य उन दुर्लभ तथा पुरानी पांडुलिपियों को प्रकाशित करना है जो अपने आप में अद्वितीय हों ताकि अनुसंधान अध्येता और आम जनता उनसे लाभ उठा सके।

इस पुस्तकालय के पास मराठा राजाओं के समय की पांडुलिपियों तथा पुस्तकों का पर्याप्त संग्रह है। इस पुस्तकालय की, जो 1918 तक मराठा शाही परिवार की देख-रेख में कार्य करता रहा था, वर्ष 1986 में तमिलनाडु के शिक्षा मंत्री की अध्यक्षता में इसकी एक रजिस्टर्ड सोसाइटी बनाई गई।

इस पुस्तकालय में संस्कृत, मराठी, तेलुगु तथा तमिल भाषाओं तथा कुछेक फारसी में ताड़-पत्र तथा कागज दोनों में 44,477 से भी अधिक पांडुलिपियां हैं। इनमें से विभिन्न लिपियों अर्थात् ग्रन्थ, देवनागरी, नंदीनागरी तथा नागरी लिपियों में ताड़-पत्र तथा कागज दोनों में 37,499 की संख्या में संस्कृत में सबसे बड़ा संग्रह है। पांडुलिपियों के अलावा इस पुस्तकालय में महाराजा सरफोजी (1832 से पूर्व) के काल के दौरान 4500 पुरानी पुस्तकें ब्रिटेन में मुद्रित यूरोप की भाषाओं में हैं।

रामपुर रज़ा पुस्तकालय, रामपुर

7.23 अच्छी प्रबन्ध व्यवस्था तथा सरकारी वित्तीय सहायता देने के लिए भारत सरकार ने इस पुस्तकालय को 1 जुलाई, 1975 को रामपुर रज़ा पुस्तकालय अधिनियम 1975 के अंतर्गत अपने हाथ में ले लिया था। इस पुस्तकालय को एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में घोषित किया गया था। हालांकि इसे संस्कृति विभाग द्वारा वित्तीय सहायता दी जाती है, उत्तर प्रदेश सरकार से भी इसे 48,000 रुपये सामान्य वार्षिक अनुदान प्राप्त होता है। पुस्तकालय का प्रबन्ध एक उच्च अधिकार प्राप्त बोर्ड द्वारा किया जाता है जिसके अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के राज्यपाल हैं। इसके लिए एक उपाध्यक्ष तथा 12 अन्य सदस्यों का भी प्रावधान है जो रामपुर के पूर्व शासी परिवारों, अरबी, फारसी और उर्दू साहित्य के वरिष्ठ इतिहासकार/अध्येताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय और राज्य सरकारों के अधिकारी भी जो पुस्तकालय के कार्यों से संबंध रखते हैं, इसका प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस पुस्तकालय में लगभग 50,000 मुद्रित पुस्तकें, 15,000 पांडुलिपियां हैं। इसके साथ काफी संख्या में लघु चित्र, भोज पत्र का भी संग्रह है। चूंकि पुस्तकालय के संग्रह पहले कभी प्रत्यक्ष रूप से जांचे नहीं गए थे इसलिए रामपुर रज़ा पुस्तकालय बोर्ड ने 13 दिसम्बर, 1986 को हुई अपनी बैठक में एक समिति गठित की ताकि पुस्तकालय के संग्रहों के स्टॉक की जांच सुनिश्चित की जा सके। मार्च, 1987 में पांडुलिपियों की सूचियां बनाने का कार्य शुरू हुआ था और जुलाई, 1988 में पूरा हो गया।

अध्याय 8

अकादमियां और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

8.1 संगीत नाटक अकादमी की स्थापना भारत सरकार द्वारा 1953 में देश में प्रदर्शन कलाओं की प्रोन्नति के लिए की गई थी। अकादमी ने अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लोक, आदिवासी और प्राचीन कला-रूपों के परिरक्षण, संवर्धन, प्रलेखन और प्रसार के लिए कुछ योजनाएं आरम्भ की है।

अकादमी ने नई दिल्ली में कत्थक केन्द्र और इम्फाल में जवाहरलाल नेहरू मणिपुरी नृत्य अकादमी नामक दो प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की है, जहां कत्थक और मणिपुरी नृत्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है। अकादमी, संस्थाओं को सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रशिक्षण और निर्माण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है और 1988 में 156 संस्थाओं ने अकादमी से अनुदान प्राप्त किए।

वर्ष के दौरान अकादमो द्वारा आरम्भ और आयोजित किए गए कुछ निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य है :—

भारतीय सोवियत संगीत सेमिनार, भारत-सोवियत नृत्य बेक्स सेमिनार, जापान में भारत महोत्सव, भारत में फ्रांस महोत्सव, बालासरस्वती की भरत-नाट्यम् नृत्य शैली परियोजना, लोक-उत्सव 88 और नृत्योत्सव।

युवा थियेटर कर्मियों को सहायता

8.2 यह योजना 1979-80 में आरम्भ की गई थी और वर्ष के दौरान चार नाट्योत्सव आयोजित किए गए।

प्रलेखन और प्रसार

8.3 अकादमी की प्रलेखन इकाई द्वारा अभिलेखीय संग्रह के लिए 72 घंटे 50.1/2 मिनट की वीडियो (दृश्य) रिकार्डिंग और 85 घंटे 25.1/2 मिनट की ऑडियो (श्रव्य) रिकार्डिंग की गई।

प्रकाशन

8.4 त्रैमासिक पत्रिका "संगीत नाटक" के दो अंक सं. 87-88 का प्रकाशन किया गया। मार्च 1989 तक दो और अंक प्रकाशित किए जाएंगे।

अकादमी के कार्यकलापों पर एक त्रैमासिकी "संगीत नाटक अकादमी न्यूज बुलेटिन" का प्रकाशन, वर्ष के दौरान नियमित रूप से हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

8.5 अवधि के दौरान विनिमय कार्यक्रमों के अंतर्गत देश में सात अलग-अलग दौरे आयोजित किए गए।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

8.6 साहित्य अकादमी एक स्वायत्त संगठन है। इसकी स्थापना 1954 में, सभी भारतीय भाषाओं के साहित्यिक कार्यकलापों को गति प्रदान करने और उन्हें समन्वित करने तथा इनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता बढ़ाने के उद्देश्य से, भारतीय साहित्य के विकास के लिए सक्रिय रूप से कार्य करने और ऊँचे साहित्यादर्श स्थापित करने के लिए की गई थी।

अकादमी के प्रमुख कार्य हैं : लेखकों और भाषाओं को लोकप्रिय बनाना, साहित्यिक पुरस्कारों की घोषणा करना, मानार्थ अध्येतावृत्ति प्रदान करना, साहित्य की प्रवृत्तियों का मूल्यांकन करना; अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से भारतीय भाषाओं में प्रयोग की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना, अपनी विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से लेखकों की युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करना, लेखकों को अनुदान देना और साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां प्रदान करना है।

अप्रैल-दिसंबर 1988 के दौरान, अकादमी ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में 68 पुस्तकों, भारतीय साहित्य विश्वकोश के द्वितीय खंड का प्रकाशन किया तथा दस संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित की गईं। अकादमी के नई दिल्ली, बंबई, कलकत्ता और मद्रास स्थित चार कार्यालयों में 18 साहित्य-मंच सभाएं आयोजित की गईं। भारतीय अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित लेखक से भेंट नामक श्रृंखला के अंतर्गत पांच लेखकों को साहित्य प्रेमियों से संवाद के लिए निमंत्रित किया गया। पंडित जवाहर लाल नेहरू जन्म शताब्दी के अवसर पर 14 नवम्बर, 1988 को नई दिल्ली में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

"इंडियन लिट्रेचर" के चार और "समकालीन भारतीय साहित्य" (हिन्दी त्रैमासिक) के तीन अंक प्रकाशित किए गए।

अवधि के दौरान 11.00 लाख रुपए मूल्य की पुस्तकों की बिक्री हुई।

प्रदर्शनियां

8.7 कलकत्ता, बंबई और दिल्ली में (i) साहित्य अकादमी प्रकाशन प्रदर्शनी; (ii) साहित्य अकादमी गुजराती प्रकाशन प्रदर्शनी; (iii) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की प्रकाशित कृतियां; (iv) साहित्य अकादमी और भारत में न्यूजीलैंड उच्चायोग के सहयोग से एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

विभिन्न भारतीय भाषाओं के 22 उत्कृष्ट लेखकों को वार्षिक अकादमी पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

ललित कला अकादमी, नई दिल्ली

8.8 ललित कला अकादमी की स्थापना 1954 में की गई थी और 1957 में इसका पंजीकरण किया गया। अकादमी मुख्य रूप से कला के संवर्धन के लिए कार्य करती है और इसने कई कार्यक्रम और परियोजनाएं आरम्भ की हैं।

निम्नलिखित दो प्रदर्शनियां विदेश भेजी गईं :

(i) यथार्थ कला त्रैवार्षिकी, सोफिया, बुल्गारिया।

(ii) द्वितीय एशिया-यूरोपीय कला द्विवार्षिकी, अंकारा, तुर्की।

निम्नलिखित प्रदर्शनियों का स्वागत किया गया :

(i) चित्रों में क्यूबा (क्यूबा इन पेपर)।

(ii) पोलिश आधुनिक कला प्रदर्शनी।

(iii) दो बुल्गारियाई कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्रों और मूर्तियों की प्रदर्शनी।

अन्य प्रदर्शनियां हैं :–

(i) सार्क महोत्सव के दौरान मद्रास क्षेत्रीय केन्द्र पर आयोजित कार्यशाला में तैयार परंपरागत टैराकोटा कला-कृतियों की प्रदर्शनी।

(ii) प्रो. आर.एस. बिष्ट की चुनिंदा कला-कृतियों की चल प्रदर्शनी।

(iii) राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी-1988 की चुनिंदा कला-कृतियों की चल-प्रदर्शनी।

(iv) ललित कला अकादमी द्वारा हाल ही में प्राप्त कलाकृतियों की प्रदर्शनी।

(v) अकादमी के कलकत्ता संग्रह की चुनिंदा 15 मूर्तियां।

चल प्रदर्शनी संख्या 17

8.9 अकादमी-संग्रह के 39 रंग-चित्रों, 6 रेखाचित्रों और 5 मूर्तियों की एक प्रदर्शनी पालघाट, कलपेट्टा, कालीकट और कोचीन में आयोजित की गई।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली

8.10 राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (रा.ना.वि.) संगीत नाटक अकादमी द्वारा 1959 में स्थापित प्रमुख नाट्य संस्थान है। 1975 में संस्कृति विभाग द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित एक स्वायत्त संस्था के रूप में इसका पंजीकरण किया गया। इसका प्रमुख लक्ष्य देश में नाट्य-शिक्षा के विकास और उच्चादर्श स्थापित करने के विशिष्ट दायित्व सहित भारत में नाट्य संवर्धन है।

8.11 इस समय, अध्येतावृत्ति योजना के अंतर्गत विद्यालय में 55 छात्र हैं। विद्यालय स्नातकोत्तर छात्रों को परियोजनाओं पर कार्य करने के लिए 20 प्रशिक्षु अध्येतावृत्तियां प्रदान करता है।

1988 के दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता शिक्षा एवं संस्कृति राज्यमंत्री, श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही ने की।

फरवरी, 1988 में, रा.ना.वि. ने भारत में सोवियत संघ महोत्सव के अंतर्गत "भारत महोत्सव" के सहयोग से एक भारत-सोवियत नाट्य-संगोष्ठी की मेजबानी की।

भारत सरकार की राज्यमंत्री, श्रीमती शीला दीक्षित ने "भारतीय और रूसी रंगमंच का विकास-प्रविधि और परम्पराएं" नामक तीन दिवसीय सेमिनार का उद्घाटन किया।

8.12 विद्यालय की रंग-मंडली ने कलकत्ता, ग्वालियर, कानपुर और लीलुह के ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया और विभिन्न नाटकों के 50 प्रदर्शन किए। विद्यालय ने जापान के परम्परागत नाट्यरूप के अनुवाद करवाए हैं। छात्रों और रंग-मंडली द्वारा मंचन के लिए अंग्रेजी और तमिल भाषा के तीन नाटकों का हिन्दी में अनुवाद किया गया है। बाल रंगमंच कार्यशाला के अंतर्गत लगभग 400 बालकों ने "भारतीय स्वाधीनता संग्राम के 90 वर्ष" पर 8 नाटक प्रस्तुत किए।

अध्याय-9

संस्कृति की प्रोन्नति और प्रसार

9.1 भारत सरकार, संस्कृति विभाग ने संस्कृति की प्रोन्नति, संरक्षण और प्रसार के अपने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में दो योजनाएं तैयार की हैं, अर्थात्

(1) जनजातीय और लोक कला तथा संस्कृति की प्रोन्नति और प्रसार की योजना।

(2) हिमालय की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और विकास की योजना। (सातवीं पंच वर्षीय योजना के अधीन 1) इन योजनाओं में स्वैच्छिक संगठनों, संस्थाओं, आदि को नीचे दिए गए ब्यौरों के अनुसार वित्तीय सहायता प्रदान करने की परिकल्पना की गई है :

जन-जातीय और लोक कला तथा संस्कृति की प्रोन्नति और प्रसार की योजना

इस योजना में पंजीकृत स्वैच्छिक संगठनों, संस्थाओं और अलग-अलग व्यक्तियों को, जो जन-जातीय कला और शिल्प कला के क्षेत्र में निम्नलिखित परियोजनाओं का कार्य करने में लगे हैं, अनुदान/आर्थिक सहायता प्रदान करने की परिकल्पना की गई है,

(क) कलात्मक प्रदर्शन का प्रलेखन, अनुसंधान सर्वेक्षण और फोटोग्राफी रिकार्ड;

(ख) जन-जातीय संस्कृति और जीवन के प्रति जागरूकता का प्रचार करने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा पद्धति में परियोजना निर्धारित करना; और

(ग) जन-जातीय कला, शिल्पमुखी परम्पराओं और जन-जातीय तथा ग्रामीण संस्कृति के अन्य पहलुओं का संरक्षण तथा प्रचार।

वित्तीय सहायता के लिए आवेदन करने वाले व्यक्ति या तो किसी ऐसी संस्था जिसमें उनकी परियोजनाओं को शुरू करने के लिए आवश्यक अवस्थापना संबंधी सुविधाएं उपलब्ध हों, से सम्बद्ध हों अथवा उन्हें अपने आपको ऐसी संस्था से सम्बद्ध करना पड़ेगा।

हिमालय की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और विकास की योजना

9.2 इस योजना में (क) विश्वविद्यालयों के संबंधित विभाग सहित संस्थाओं (ख) स्वैच्छिक संगठनों, संग्रहालयों, पुस्तकालयों अनुसंधान निकायों, और (ग) विशेषज्ञ व्यक्तियों को जो निम्नलिखित कार्यों में लगे हों, को वित्तीय सहायता प्रदान करने की व्यवस्था है :

(क) सांस्कृतिक विरासत के सभी पहलुओं का अध्ययन और अनुसंधान,

(ख) कला और शिल्प कला की वस्तुओं का संग्रह तथा लोक संगीत, नृत्य और साहित्य सहित सांस्कृतिक कला वस्तुओं का प्रलेखन

(ग) कला और संस्कृति का दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों के माध्यम से प्रसार,

(घ) परम्परागत तथा लोक कला में प्रशिक्षण, और

(ङ) हिमालय संस्कृति के संग्रहालयों और पुस्तकालयों आदि की स्थापना और सहायता।

यह योजना दीर्घकालीन कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय मानव संग्रहालय द्वारा तथा अल्पकालीन कार्यक्रमों के लिए संस्कृति विभाग द्वारा कार्यान्वित की जा रही है।

यह दोनों योजनाएं अब सभी राज्य सरकारों/संघ शासित क्षेत्रों और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के बीच परिचालित कर दी गई हैं जिसमें उन्हें यह सलाह दी गई है कि पात्र संगठनों, संस्थाओं से आवेदन-पत्र प्राप्त करके अपनी सिफारिशों सहित उन्हें संस्कृति विभाग को भेज दें। 1988-89 के दौरान इस योजना के लिए निम्नलिखित बजट व्यवस्था है :—

1.	जन-जातीय लोक कला की प्रोन्नति के लिए वित्तीय सहायता	45 लाख रुपये
2.	हिमालय कला और संस्कृति के संरक्षण और प्रोन्नति के लिए वित्तीय सहायता	40 लाख रुपये

सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र

9.3 सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र (सा.स.प्र.के.) जो एक स्वायत्त निकाय है और जो पूरी तरह भारत सरकार द्वारा वित्त-पोषित है, कालेज तथा स्कूल विद्यार्थियों के बीच संस्कृति के प्रचार के लिए उत्तरदायी है।

वर्ष के दौरान केन्द्र ने छः अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित किए जिनमें विभिन्न राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के 414 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए भारत के विभिन्न भागों में विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

कठपुतली कला में शिक्षा के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए पांच कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें 400 शिक्षकों ने भाग लिया। "शिक्षक प्रशिक्षक तथा शिक्षा प्रशासक" कार्यक्रम के अंतर्गत 180 शिक्षकों सहित छः सेमिनार आयोजित किए गए। "प्राचीन और आधुनिक भारत" पर अमरीकी स्कूल शिक्षकों और कालेज शिक्षकों के लिए जुलाई-अगस्त, 1988 में एक विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

9.4 सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केन्द्र ने नई शिक्षा पद्धति के अधीन कार्रवाई कार्यक्रम से संबंधित पांच योजनाएं शुरू की हैं। दो हजार से भी अधिक स्कूली विद्यार्थियों को, संग्रहालयों में भारत की कलात्मक विरासत का अध्ययन करने के लिए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारकों का भ्रमण करने की शैक्षिक सुविधाएं प्रदान की गईं। विभिन्न कला स्वरूपों को स्लाईडों, फोटो तथा रिकार्डों में प्रलेखित किया गया।

300 सांस्कृतिक किट, जिनमें, रंगीन स्लाईड, कैसट, पुस्तकें और उपस्कर शामिल हैं, उन विद्यालयों को निःशुल्क बांटे गए जहां अनुस्थापना पाठ्यक्रम में शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया था।

"सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति" योजना 10-14 वर्ष के आयु वर्ग के उत्कृष्ट युवा विद्यार्थियों को सुविधाएं प्रदान करती है। इस केन्द्र ने छात्रवृत्ति के लिए भारत के विभिन्न भागों से 300 विद्यार्थियों का चयन किया। कुल मिलाकर इस योजना के अंतर्गत 1122 से अधिक विद्यार्थी छात्रवृत्तियां प्राप्त कर रहे हैं।

सांस्कृतिक संगठनों को भवन-निर्माण अनुदान

9.5 इस योजना का उद्देश्य स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को भवनों का निर्माण करने तथा उपस्कर खरीदने के लिए अनुदान देना है। इस योजना के अंतर्गत (धार्मिक संस्थाओं, सार्वजनिक पुस्तकालयों, संग्रहालयों, नगरपालिकाओं, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और केन्द्रीय, राज्य सरकारों द्वारा पूर्णतया वित्तपोषित संस्थाओं को छोड़कर) विशेषकर, नृत्य, नाटक, संगीत, ललित कला, भारत-विद्या और साहित्य के क्षेत्रों में कार्यरत संगठनों को सहायता दी जाती है।

भवन-निर्माण के लिए और उपस्कर खरीदने हेतु अनुदान देने के लिए राज्य सरकारों के माध्यम से सांस्कृतिक संस्थाओं से आवेदन-पत्र आमंत्रित किए गए थे। 11 संगठनों को अनुदान संस्वीकृत किए गए थे।

नृत्य, नाटक और थियेटर मंडलियों को वित्तीय सहायता

9.6 वित्तीय सहायता की दो योजनाएं चल रही है। पहली योजना में प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में सुस्थापित संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने की व्यवस्था है। 1988-89 के दौरान इस योजना के अंतर्गत 53 संस्थाएं वित्तीय सहायता प्राप्त कर रही हैं।

दूसरी योजना में विशिष्ट प्रदर्शन कलाओं, परियोजनाओं, नाटक-दलों, संगीत मंडलियों, आरकेस्ट्रेशन इकाइयों, बाल थियेटरों, कठपुतली थियेटरों, सामाजिक कलाकारों के लिए व्यावसायिक दलों और व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की व्यवस्था है और प्रदर्शन कलाओं के सभी स्वरूपों पर विचार किया जाता है। इस योजना के अधीन 1988-89 के दौरान अनावर्ती तदर्थ आधार पर लगभग 97 दल और व्यक्ति वित्तीय सहायता प्राप्त कर रहे हैं।

सामूहिक गायन कार्यक्रम

9.7 सामूहिक गायन के माध्यम से राष्ट्रीय और भावनात्मक एकता को बढ़ावा देने के लिए 1982 से देश के विभिन्न भागों

में भिन्न-भिन्न शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अनु.प्र.प.) इस योजना को कार्यान्वित कर रही है। 1988-89 के दौरान रा.शै.अनु.प्र.परि. 24 क्षेत्रीय स्तर के शिविर और 4 राष्ट्रीय स्तर के शिविर आयोजित करने का इरादा रखती है।

सांस्कृतिक संगठनों को अनुदान

9.8 सांस्कृतिक कार्यकलापों के विकास में लगी अखिल भारतीय स्वरूप की संस्थाओं को, अनुरक्षण और विकासात्मक कार्यकलापों से संबंधित अपने व्यय का एक भाग वहन करने के लिए, वित्तीय सहायता दी जा रही है। जिन संस्थाओं को सहायता दी गई उनमें, रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान (कलकत्ता), ऐतिहासिक अध्ययन संस्थान (कलकत्ता), न्यूमिस्मेटिक सोसायटी (वाराणसी), भारतीय विद्या भवन (बम्बई), और परम्परागत संस्कृति संस्थान (मद्रास) शामिल हैं।

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र

9.9 वर्ष 1985-86 और 1986-87 के दौरान देश में स्थापित सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र पूरी तरह काम करने लग गए हैं। ये केन्द्र लगभग 3 वर्षों से उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा शुरू किए गए कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम नीचे दिए गए हैं : —

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला

9.10 (क) शिमला में 27.4.88 से 30.4.88 तक हिमाचल उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, वाईस एडमिरल श्री आर.के.एस. गांधी द्वारा किया गया और इसकी अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री वीर भद्र सिंह ने की। इसमें उत्तर क्षेत्र के पांच राज्यों के लगभग 400 कलाकारों ने भाग लिया। सभी अवसरों पर इसमें प्रतिदिन 1,25,000 से 1,50,000 के बीच श्रोताओं ने भाग लिया।

(ख) कुम्हारी बर्तनों पर एक कार्यशाला गुड़गांव में आयोजित की गई। इसमें उत्कृष्ट शिल्पकारों के बीच विचारों के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान किया गया और इसमें भाग लेने वाले विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शिल्पकारों से कुछ सीखने का मौका दिया गया।

(ग) इस केन्द्र ने हिमाचल प्रदेश में चम्बा में भिंजोर मेले में, हरियाणा के 15 सदस्यों के घूमर नृर्तक दल के साथ भाग लिया।

(घ) जम्मू और कश्मीर, पंजाब तथा हरियाणा के 52 कलाकारों की एक टीम को, दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा आयोजित अंतर-क्षेत्रीय सांस्कृतिक उत्सव में भाग लेने के लिए कन्नानौर (केरल) भेजा गया।"

(ङ) 5.9.88 से 11.9.88 तक किला मुबारक में एक अंतर्राष्ट्रीय फोटोग्राफी प्रदर्शनी आयोजित की गई और गुड़गांव में 5 से 11 सितम्बर, 1988 तक टेराकोटा प्रदर्शनी आयोजित की गई।

(च) निम्नलिखित पर पटियाला में एक 25 दिवसीय बाल डिजाइन कार्यशाला आयोजित की गई — कागज कतरन, टेराकोटा, फेबरिक पेंटिंग, मुखौटा निर्माण और पोस्टर कार्ड मैकिंग।

(छ) 23.10.88 से एक विशाल समारोह-हरियाणा उत्सव आयोजित किया गया और रोहतक में इसके अंतिम रूप से समापन से पहले यह उत्सव चार जिलों में किया गया। इस उत्सव में जम्मू और काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान के लगभग 210 कलाकारों ने भाग लिया।

दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र तंजावुर

9.11 (क) पूर्वीय क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से अंडमान निकोबार द्वीप महोत्सव आयोजित किया गया जिसमें 250 कलाकारों ने भाग लिया।

(ख) इस केन्द्र ने शिमला में उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के साथ हिमाचल उत्सव का आयोजन किया, इस उत्सव में तमिलनाडु के 25 कलाकारों ने भाग लिया।

(ग) 10.8.88 से 18.8.88 तक डी जूरे पांडिचेरी दिवस के समय ही एक विशाल उत्सव "फेटे डे पांडिचेरी" आयोजित किया गया। इस उत्सव का उद्घाटन तमिलनाडु के राज्यपाल ने किया और इसकी अध्यक्षता पांडिचेरी के उपराज्यपाल ने की। समारोह में प्रति दिन 75,000 श्रोताओं ने भाग लिया।

(घ) हम्पी, कर्नाटक राज्य में विजयनगर दशहरा महोत्सव आयोजित किया गया था जिसकी अध्यक्षता कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने की थी। हस्तशिल्प कला और चित्रकला प्रदर्शनी आयोजित की गई। 350 कर्नाटक के लोक और शास्त्रीय कलाकारों और अन्य संघटक राज्यों के 130 कलाकारों ने रंगारंग नृत्य प्रस्तुत किया। परम्परागत नृत्य उत्सव के रूप में यह महोत्सव महत्वपूर्ण था और इसे कृष्ण देवराय के 400 वर्ष बाद पुनः शुरू किया गया था।

(ङ) इस केन्द्र में अपनी दसवीं वर्षगांठ समारोह के अवसर पर सूर्या, जो केरल का एक सांस्कृतिक संगठन है के साथ सहयोग किया। यह उत्सव एक महीने तक चला और इसमें लगभग 10,000 लोगों ने भाग लिया।

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

9.12 (क) निम्नलिखित पर पिछड़े वर्गों और जन-जातियों के बच्चों के लिए अल्पकालीन कार्यशालाएं आयोजित की गईं : विज्ञान, साबुन-नक्काशी और थियेटर।

(ख) उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला द्वारा 27.4.88 से 30.4.88 तक शिमला में आयोजित हिमाचल उत्सव में भाग लेने के लिए महाराष्ट्र के 17 कलाकारों का एक सांस्कृतिक दल भेजा गया।

(ग) भाग लेने वाले सभी राज्यों के बच्चों के लिए एक बाल नाट्य प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

(घ) दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा 25-27 अगस्त, 1988 तक कन्नानोर में आयोजित अंतर-क्षेत्रीय ओनम महोत्सव में 50 कलाकारों के चार दलों ने भाग लिया।

(ङ) इस केन्द्र ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, दिल्ली के सहयोग से नागपुर में बैले कलाकारों के कार्यक्रम के साथ भारत में सोवियत महोत्सव में भाग लिया।

(च) इस केन्द्र ने 25.10.88 से 6.11.88 तक पटना (बिहार) में डा. एस.के. सिन्हा के शताब्दी समारोहों में भाग लिया। इसमें आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के 76 कलाकारों ने भाग लिया।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर

9.13 (क) आदिम जातियों द्वारा निर्मित नाटक "मरखनिया" और लोक संगीतों का एक रंगारंग कार्यक्रम उदयपुर की केन्द्रीय जेल में प्रस्तुत किया गया। जेल के 700 कैदियों और कार्यकर्त्ताओं ने इसे देखा।

(ख) उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा शिमला में आयोजित हिमाचल उत्सव में भाग लेने के लिए गुजरात के 50 सिद्धि कलाकारों को भेजा गया।

(ग) शिमला जिला में दाली में बहरे और नेत्रहीन बच्चों के लिए एक शान्त थियेटर कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 50 बच्चों ने भाग लिया।

(घ) इस केन्द्र ने, उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय बैलार्ड गायकों के राष्ट्रीय उत्सव में भाग लिया। 15.9.88 को नासिक, अहमदाबाद और जोधपुर में पश्चिमालाप कार्यक्रम मनाया गया।

(ङ) इस केन्द्र की आदिम जातियों ने उदयपुर और दुर्गापुर जिलों के जन-जातीय ग्रामों का दौरा किया जिसके दौरान निरक्षरता, पर्यावरण, दहेज, अंधविश्वास और शराब जैसे विषयों पर आधारित "मरखानिया, तिदोराव तथा उजाला देख अंधेरा भागे" नाटक प्रस्तुत किए। नाटक में पहले केन्द्र द्वारा प्रशिक्षित केन्द्रीय जेल के 20 कैदियों ने "मोहम्मद भाई की दुश्मन" नाटक का अभिनय किया।

(च) भारत की परम्पराओं की एक साथ विभिन्नता और निरन्तरता पर लक्षित समारोह मनाने के लिए एक अंतर क्षेत्रीय उत्सव मरु से सागर तक (भारत मिलन) तीन सप्ताह तक आयोजित किया गया। सभी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के 300 प्रदर्शनकारी कलाकारों/शिल्पकारों ने राजस्थान में जयपुर, अजमेर, पाली में, गुजरात में गांधी नगर, अहमदाबाद, बड़ोदा और सूरत में, गोआ में दमन और पणजी में, इस उत्सव में भाग लिया।

उत्तर पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर

9.14 (क) इस केन्द्र ने पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र तथा मिजोरम सरकार के सहयोग से आईजौल (मिज़ोरम) में 2 दिन तक नेहू समारोह आयोजित किया।

(ख) नागालैंड के जन-जातीय मोआत्सु समारोह से संबंधित मई उत्सव, 1988 दीमापुर में आयोजित किया गया। इस उत्सव में 630 कलाकारों ने भाग लिया।

(ग) भारत महोत्सव के महा-निदेशक के निर्देश पर दीमापुर में एक पॉप संगीत समारोह आयोजित किया गया। नागालैंड के जनजातीय लोगों ने इस समारोह में भाग लिया।

(घ) इस केन्द्र ने उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए नागालैंड का कचारी दीमासा सांस्कृतिक दल नैनीताल भेजा।

(ङ) गुवहाटी में 27.7.88 से 2.8.88 तक कला और शिल्प पर एक सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की गई।

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

9.15 (क) "चलो मन गंगा यमुना तीर" नामक पहला अंतर्क्षेत्रीय सांस्कृतिक उत्सव माघ मेले के अवसर पर आयोजित किया गया जिसमें सभी सातों क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों ने भाग लिया। इसमें देश के सभी भागों के लगभग 1000 कलाकारों ने अपने लोक और शास्त्रीय नृत्यों तथा गीतों के विशिष्ट रूप प्रस्तुत किए।

(ख) ग्रामीण दर्शकों के लिए राय बरेली जिले के 16 खंडों में 7-19 जुलाई 1988 तक "चौपाल मंच" नामक सांस्कृतिक जागरूकता संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए गए। बाल मिलन तथा महिलाओं के लिए प्रेरणा मंच जैसे दो नए कार्यक्रम इलाहाबाद में आयोजित किए गए।

(ग) इलाहाबाद, वाराणसी तथा गोरखपुर में एक थियेटर कार्यशाला आयोजित की गई। इंदौर में वर्षाऋतु पर एक उत्सव वर्षा मंगल उत्सव आयोजित किया गया।

(घ) उत्तर प्रदेश और राजस्थान के चुने हुए क्षेत्रों में 2.10.88 से 23.10.88 तक सीमांचल सांस्कृतिक यात्रा आयोजित की गई। इसमें उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर उड़ीसा, बिहार, मध्य प्रदेश, और राजस्थान के कलाकारों ने भाग लिया।

(ङ) जयपुर में शरद उत्सव और इलाहाबाद में प्रेरणा मंच तथा संस्कृति संध्या आयोजित की गई।

पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, शांति निकेतन

9.16 (क) रांची में छेटा नागपुर महोत्सव आयोजित किया गया जिसमें 33 कलाकारों ने भाग लिया।

(ख) इस केन्द्र ने दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से 7.4.88 से 17.4.88 तक अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह में द्वीप महोत्सव आयोजित किया। इसमें दो केन्द्रों से 107 कलाकारों ने भाग लिया।

(ग) संस्कृति विभाग उड़ीसा सरकार के सहयोग से पुरी में बीच उत्सव आयोजित किया गया। इसमें असम, बिहार, उड़ीसा, मणिपुर, सिक्किम और पश्चिम बंगाल से 74 कलाकारों ने भाग लिया।

(घ) विक्टोरिया स्मारक हाल, कलकत्ता में सोवियत महिलाओं पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। लगभग 5 लाख लोग प्रदर्शनी देखने आये।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

9.17 भारत में फिल्मों को जनता में केवल तभी प्रदर्शित किया जा सकता है जब वे केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (के.फि.प्र.बो.) द्वारा प्रमाणित की गई हों। चलचित्र अधिनियम, 1952 के अधीन स्थापित बोर्ड में एक अंशकालिक अध्यक्ष होता है जिसका मुख्यालय बम्बई में है। इसके छः क्षेत्रीय कार्यालय हैं, जो बंगलौर, बम्बई, कलकत्ता, हैदराबाद, मद्रास और त्रिवेन्द्रम में हैं। फिल्मों की जांच में इन क्षेत्रीय कार्यालयों की सहायता केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त सलाहकार पैनलों द्वारा की जाती है जिनमें विख्यात शिक्षाविद्, कला-समालोचक, पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्त्ता, डाक्टर, वकील और अन्य शामिल होते हैं।

फिल्म प्रमाणन ऐपेलेट ट्रिब्यूनल

9.18 फिल्म प्रमाणन ऐपेलेट ट्रिब्यूनल का गठन मार्च, 1984 में किया गया था जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। इसने केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के निर्णयों के विरुद्ध अपीलों को सुनना जारी रखा।

1988 के दौरान प्रमाणित फिल्में

9.19 भारत ने विश्व में सबसे अधिक फीचर फिल्म बनाना जारी रखा। प्रमाणित फीचर फिल्मों की संख्या 1952 में 219 थी जो बढ़कर 1955 में 287, 1965 में 326, 1975 में 475 हो गई और पराकाष्ठा में पहुंचकर 1985 में 912 हो गई किन्तु इसके बाद यह संख्या कुछ घटने लगी और 1986 में 840 फिल्में 1987 में 806 और 1988 में 773 हो गई। जब कि 1987 में तमिल फिल्मों का बोल-बाला रहा और इनकी संख्या 167 रही इसके बाद तेलुगु फिल्मों की बारी थी जिनकी संख्या 163 और उसके बाद हिन्दी फिल्मों की जिनकी 150 थी। चालू वर्ष में हिन्दी फिल्मों में वृद्धि हुई और इसने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिसकी फिल्मों की संख्या 182 है। वर्ष 1987 के विपरीत बोर्ड द्वारा प्रमाणित विदेशी फीचर फिल्मों की संख्या में काफी गिरावट आई, इनकी संख्या पिछले वर्ष के 199 से घटकर इस वर्ष 118 रह गई।

भारतीय फीचर फिल्में

9.20 1988 में प्रमाणित 773 फीचर फिल्मों में से 471 को "यू" प्रमाण-पत्र, 95 को "यू ए" और 207 को "ए" प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये।

विदेशी फीचर फिल्में

9.21 1988 में प्रमाणित 118 विदेशी फीचर फिल्मों में से 52 को "यू" प्रमाण-पत्र, 11 को "यू ए" प्रमाण पत्र और 55 को "ए" प्रमाण-पत्र दिये गये। 43 विदेशी फिल्मों को प्रमाण-पत्र देने से इन्कार कर दिया गया।

लघु फिल्में

9.22 केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने 1,662 भारतीय लघु फिल्मों को प्रमाणित किया (जिनमें से 1630 को "यू", 3 को "यू ए" और 29 को "ए" प्रमाण-पत्र प्रदान किये (जबकि प्रमाणित विदेशी लघु फिल्मों की संख्या 486 थी) जिनमें से 464 को "यू", 3 को "यू ए" और 12 को "ए", 7 को "एस" प्रमाण पत्र प्रदान किये।

लम्बी (गैर-फीचर) फिल्में

9.23 1988 के दौरान प्रमाणित भारतीय और विदेशी लम्बी फिल्मों की कुल संख्या क्रमशः 5 और 4 थी।

शैक्षिक फिल्में

9.24 424 फिल्मों को प्रधानतः शैक्षिक फिल्मों की श्रेणी में रखा गया।

वीडियो फिल्में

9.25 केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने 589 वीडियो फिल्मों को प्रमाण-पत्र जारी किये। उनमें से 41 भारतीय फीचर फिल्में थीं, 42 भारतीय लम्बी फिल्में (फीचर फिल्मों को छोड़कर) 5 विदेशी लम्बी फिल्में, 570 वीडियो फिल्मों को "यू" प्रमाण-पत्र, 2 को "यू ए" 6 को "ए" और 11 को "एस" प्रमाण-पत्र मिले। 66 भारतीय लघु फिल्में और 434 विदेशी लघु फिल्में थीं।

अध्याय 10

प्रशिक्षण तथा अनुसंधान योजनाएं

विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कार्यकर्त्ताओं को छात्रवृत्तियां प्रदान करना

10.1 इस योजना का उद्देश्य संगीत, नृत्य, नाटक, पेंटिंग, मूर्तिकला, सचित्र पुस्तकों तथा डिजाइन, काष्ठ कला तथा अन्य ऐसे सांस्कृतिक कार्यकलापों के क्षेत्रों में भारत में उत्कृष्ट प्रतिभा वाले युवा कलाकारों को उच्च प्रशिक्षण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। वित्त वर्ष 1988-89 से इन छात्रवृत्तियों की संख्या 100 से बढ़ाकर 150 कर दी गई है। सामान्यतः इन छात्रवृत्तियों की अवधि दो वर्ष है, परन्तु विशिष्ट मामलों में, इसे एक वर्ष और बढ़ाया जा सकता है। छात्रवृत्तियों की राशि प्रतिमाह 400 रु. है। छात्रवृत्तियां देते समय इस बात पर ध्यान रखा जाता है कि यह उन विषयों में ही दी जाएं जो लुप्त हो रहे हैं।

निष्पादन, साहित्य तथा प्लास्टिक कलाओं के क्षेत्रों में अत्यधिक उत्कृष्ट कलाकारों को सेवा निवृत्ति शिक्षावृत्तियां

10.2 सेवानिवृत्ति शिक्षावृत्तियों की योजना उन कलाकारों के लिए तैयार की गई है जिन्होंने अपने अपने क्षेत्र में अत्यधिक निपुणता प्राप्त कर ली है परन्तु अब अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। इसका उद्देश्य उन्हें वित्तीय सहायता देना है ताकि वे धन की कमी महसूस न करें और अपनी कला को आगे बढ़ा सकें। शिक्षावृत्तियों की दर 2000 रुपये प्रतिमाह है तथा समयावधि 2 वर्ष है तथा यह प्रत्येक वर्ष प्रदान की जाती हैं। यह योजना 1983-84 से प्रारम्भ की गई थी। इस समय 20 फैलो हैं।

निष्पादन, साहित्य तथा प्लास्टिक कलाओं के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कलाकारों को शिक्षावृत्तियां प्रदान करना

10.3 इस योजना के अन्तर्गत वरिष्ठ और कनिष्ठ अध्येताओं को शिक्षावृत्तियां दी जाती हैं। इनकी राशि क्रमशः 1,000 रु. प्रतिमाह और 500 रु. प्रतिमाह है। वरिष्ठ अध्येता शिक्षावृत्तियों की संख्या 15 से बढ़ाकर 30 तथा कनिष्ठ अध्येता शिक्षावृत्तियों की संख्या 35 से बढ़ाकर 75 कर दी गई है। ये पुरस्कार प्रति वर्ष दिए जाते हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य, साहित्यिक प्लास्टिक, तथा निष्पादन कलाओं के क्षेत्र में 25-65 आयु वर्ग के उत्कृष्ट लोगों को उच्च प्रशिक्षण अथवा व्यक्तिगत सृजनात्मक प्रयासों अथवा कला के परम्परागत स्वरूपों के पुनरुत्थान के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। 39 वरिष्ठ अध्येताओं और 57 कनिष्ठ अध्येताओं को शिक्षावृत्तियां दी गई हैं।

साहित्य, कलाओं और जीवन के ऐसे ही अन्य क्षेत्रों में अभावग्रस्त उत्कृष्ट व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना

10.4 इस योजना के अन्तर्गत साहित्य तथा कला आदि के क्षेत्र में उन उत्कृष्ट व्यक्तियों को, जो गरीबी की हालत में हैं तथा 58 वर्ष से अधिक आयु के हैं, वित्तीय सहायता प्रदान की जाती हैं। कुछ मामलों में उनके आश्रितों की सहायता हेतु, जिनका और कोई साधन नहीं है, योजना के अन्तर्गत विचार किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत खर्च भारत सरकार तथा संबंधित राज्य सरकारों द्वारा 2:1 अनुपात में वहन किया जाता है। कुछ विशेष मामलों में, पूरा खर्च भारत सरकार उठाती है। इस योजना के अन्तर्गत अब तक 474 व्यक्तियों को लाभ पहुँचा है। वर्ष 1988-89 की योजना के अन्तर्गत 60 व्यक्तियों का चयन किया गया।

अध्याय-11

स्मारक

गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति, नई दिल्ली

11.1 गांधी दर्शन समिति की स्थापना, राष्ट्रीय गांधी शताब्दी समिति द्वारा शताब्दी समारोहों के एक भाग के रूप में, 1969 में की गई थी और गांधी स्मृति समिति की स्थापना 1973 में की गई थी। इन दोनों समितियों को, 1984 में नई स्थापित गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने, जो सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के अधीन एक पंजीकृत सोसायटी है, मिलाकर अपने नियंत्रण में ले लिया था।

उद्देश्य

11.2 i) महात्मा गांधी के जीवन तथा कृतियों से सम्बन्धित वैयक्तिक दस्तावेज तथा अन्य ऐतिहासिक सामग्री का अधिग्रहण, रख-रखाव और संरक्षण करना।

ii) मंडपों, शहीद-स्तम्भों और गांधी दर्शन मैदान तथा समिति परिसर का संरक्षण।

iii) गांधी स्मृति तथा दर्शन समिति के माध्यम से ऐसे कार्यकलाप शुरू करना जिससे महात्मा गांधी के जीवन, कार्य और विचारधारा को बेहतर समझने में सहायता मिलेगी।

iv) महात्मा गांधी की विचारधारा और उनसे सम्बद्ध राष्ट्रीय उद्देश्य की प्रोन्नति के लिए कार्यकलापों की योजना बनाकर कार्यान्वित करना।

कार्यकलाप

11.3 समिति ने आवधिक प्रदर्शनियां, सांस्कृतिक शैक्षिक कार्यक्रम, सेमिनार, सम्मेलन, शिविर, प्रकाशन, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित कीं तथा गांधी जी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं पर फिल्म शो दिखाए।

समिति एक सूचना तथा प्रलेखन केन्द्र स्थापित कर रही है और गांधी जी की विचारधारा से सम्बन्धित साहित्य का एक पूर्ण संदर्भ पुस्तकालय स्थापित करने का प्रस्ताव है।

समिति का, गांधी जी पर व्याख्यानों, विनिबन्धों और ऐसी ही अन्य सामग्री को प्रकाशित करने का प्रस्ताव है तथा इसे अध्येताओं, पुस्तकालयों तथा अन्य इच्छुक पक्षकारों को उपलब्ध कराएगी।

विशेषकर युवाओं और बच्चों के लिए कार्यक्रम तैयार करने का प्रस्ताव है और "गांधी जी को स्कूलों में ले जाना" नामक एक योजना भी है।

गांधी समिति और दर्शन समिति ने उन संस्थाओं को, जिनके उद्देश्य और लक्ष्य, विचारधारा और कार्य की दृष्टि से, गांधीवादी हैं, फोटो प्रदान करके गांधी जी को लोकप्रिय बनाने की योजना की भी परिकल्पना की है।

समिति में एक फोटो-अनुभाग पहले ही कार्यरत है और राष्ट्रीय महत्व के दिवसों पर चलती-फिरती और आवधिक प्रदर्शनियां आयोजित की जाएंगी जिनमें चित्रों, चार्टों, लेखों और उक्तियों के माध्यम से गांधी जी के संदेश को प्रस्तुत किया जाएगा।

चिल्ड्रन कार्नर

11.4 गांधी दर्शन परिसर में एक चिल्ड्रन कार्नर (बच्चों का कोना) स्थापित किया जा रहा है। यह वैसा ही होगा जैसे शताब्दी वर्ष 1969 के दौरान गांधी दर्शन में था।

गांधी समिति और दर्शन समिति प्रदर्शनी में पांच प्रसंग मण्डप तथा दो दीर्घाएं हैं। अब यह प्रस्ताव है कि इन मंडपों की प्रदर्शन व्यवस्थाओं में कुछ वृद्धि और परिवर्तन किया जाए ताकि वे अधिक संगत, अर्थपूर्ण, शिक्षाप्रद हों तथा सदैव अपनी मूल विषय-वस्तु से सम्बद्ध हों।

ह्वेनसांग स्मारक भवन

11.5 भारत सरकार बिहार सरकार की सहमति से ह्वेनसांग स्मारक भवन, जिसे सरकार ने नालन्दा में बनवाया था, के नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा में विलय के प्रस्ताव पर विचार कर रही है।

पंडित
गोविन्द बल्लभ पंत

डा. श्रीकृष्ण सिंह

मौलाना
अबुल कलाम आज़ाद

के.एम. मुन्शी

डा. एस. राधाकृष्णन

शंकर जयन्ती महोत्सव

अध्याय 12

शताब्दियां और जयंतियां

12.1 उन विशिष्ट व्यक्तियों, जिन्होंने हमारे देश के जीवन पर अमिट छाप छोड़ी है, की जयन्तियां मनाना भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता के बाद से शुरू किए जाने वाले महत्वपूर्ण कार्यकलापों में से एक है। स्वतंत्रता ने सरकार को साधन और सुअवसर दिए ताकि वह ऐसे महान पुरुषों और महिलाओं जिन्होंने हमारे देश के लिए सामाजिक-राजनीतिक धरातल को समृद्ध बनाने के लिए अमूल्य योगदान दिया है, को उजागर कर सके। ऐसे कार्यक्रमों के जरिए तीन महत्वपूर्ण लक्ष्यों की प्राप्ति करनी थी। पहला लक्ष्य इन विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन और कार्यकलापों को उजागर करना है और इनके द्वारा विश्व का ध्यान, उन विचारों और आदर्शों की ओर आकर्षित करना है जिनके लिए वे डटे रहे और जिनकी प्रासंगिकता शताब्दियों तक बनी रहेगी। दूसरा लक्ष्य हमारे देश की युवा पीढ़ी में हमारी विरासत के प्रति जागरूकता पैदा करना है और उनमें इन कार्यक्रमों के जरिए भारत के सांस्कृतिक और आत्मिक मूल्यों, जिसके लिए वे अडिग रहे. का पुनः प्रतिपादन करना था। अन्त में इन कार्यक्रमों से विश्व समुदाय में दूसरे देशों के विख्यात व्यक्तियों के स्मरणोत्सव/समारोहों को शामिल करके अन्तर्राष्ट्रीय सूझबूझ को बढ़ाना था।

12.2 उन शताब्दियों/वर्षगांठों के लिए राष्ट्रीय समितियां बनाई जाती हैं जिन्हें राष्ट्रीय महत्व का समझा जाता है। सरकार द्वारा गठित ऐसी समितियों द्वारा वर्ष के कार्यक्रम बनाए जाते हैं, जिनका कार्यान्वयन शताब्दी वर्ष के दौरान किया जाता है। इन कार्यक्रमों में आमतौर पर राष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन, मूर्तियों की स्थापना, उत्सव, डाक टिकिट जारी करना, प्रकाशन, प्रदर्शनियां आदि शामिल हैं।

संस्कृति विभाग उन पंजीकृत स्वैच्छिक संगठनों को भी वित्तीय सहायता प्रदान करता है जो संस्कृति विभाग से उन विशिष्ट व्यक्तियों की शताब्दियां मनाने के लिए अनुदान हेतु सम्पर्क करते हैं जिनका आयोजन भारत सरकार ने नहीं किया है।

शताब्दियां और जयन्तियां

12.3 वर्ष 1988-89 के दौरान निम्नलिखित महत्वपूर्ण शताब्दियां तथा वर्षगांठ प्रारम्भ हुई :—

1. पं. गोविन्द बल्लभ पंत जन्म शताब्दी समारोह।
2. डा. एस.के. सिन्हा जन्म शताब्दी समारोह
3. मौलाना अबुल कलाम आजाद जन्म शताब्दी समारोह।
4. के.एम. मुन्शी जन्म शताब्दी समारोह।
5. डा. एस. राधा कृष्णन जन्म शताब्दी समारोह।
6. राजा सवाई जय सिंह-II की तृतीय शताब्दी
7. राष्ट्रीय शंकर जयन्ती महोत्सव।

भारत के उप राष्ट्रपति की अध्यक्षता में क्रमशः डा. एस. राधाकृष्णन और के.एम. मुन्शी की जन्म-शताब्दियां मनाने के लिए राष्ट्रीय समितियां गठित की गई है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शंकर जयन्ती महोत्सव और मौलाना अबुल कलाम

आजाद की जन्म शताब्दी मनाने के लिए भी राष्ट्रीय समितियां गठित की गईं। संस्कृति विभाग ने खान अब्दुल गफ्फार खां की जन्म शताब्दी मनाने के लिए भी कदम उठाए हैं।

जयन्तियां और शताब्दियां मनाने के लिए स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता।

12.4 पंजीकृत स्वैच्छिक संगठनों द्वारा जयन्तियां और शताब्दियां मनाने के लिए वित्तीय सहायता दी गई है। इनमें बाबा अल्लाउद्दीन खान की 125वीं जन्म शताब्दी, बाबा साहेब डा. बी.आर. अम्बेदकर की 97वीं जन्म तिथि, स्वर्गीय राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद की 11वीं पुण्य तिथि, नवाब वाजिद अली शाह की पुण्य-तिथि शताब्दी, पं. गौरी शंकर मिश्रा की शताब्दी, उस्ताद हाफिज़ अली खान की 101वीं जन्म तिथि, तमिल कवि नामक्कल रामालिंगम पिल्लै की जन्म शताब्दी, आसफ अली की जन्म शताब्दी, डा. एस.डी. किचलू की जन्म शताब्दी, प्रो. पूरन सिंह की 107वीं जन्म तिथि, पं. जुगल किशोर शुक्ला की दूसरी शताब्दी, बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय की 150वीं जन्म तिथि, राजकुमारी अमृत कौर की जन्म शताब्दी, बहादुरशाह ज़फर की 125वीं पुण्य तिथि मनाने के लिए अनुदान शामिल हैं।

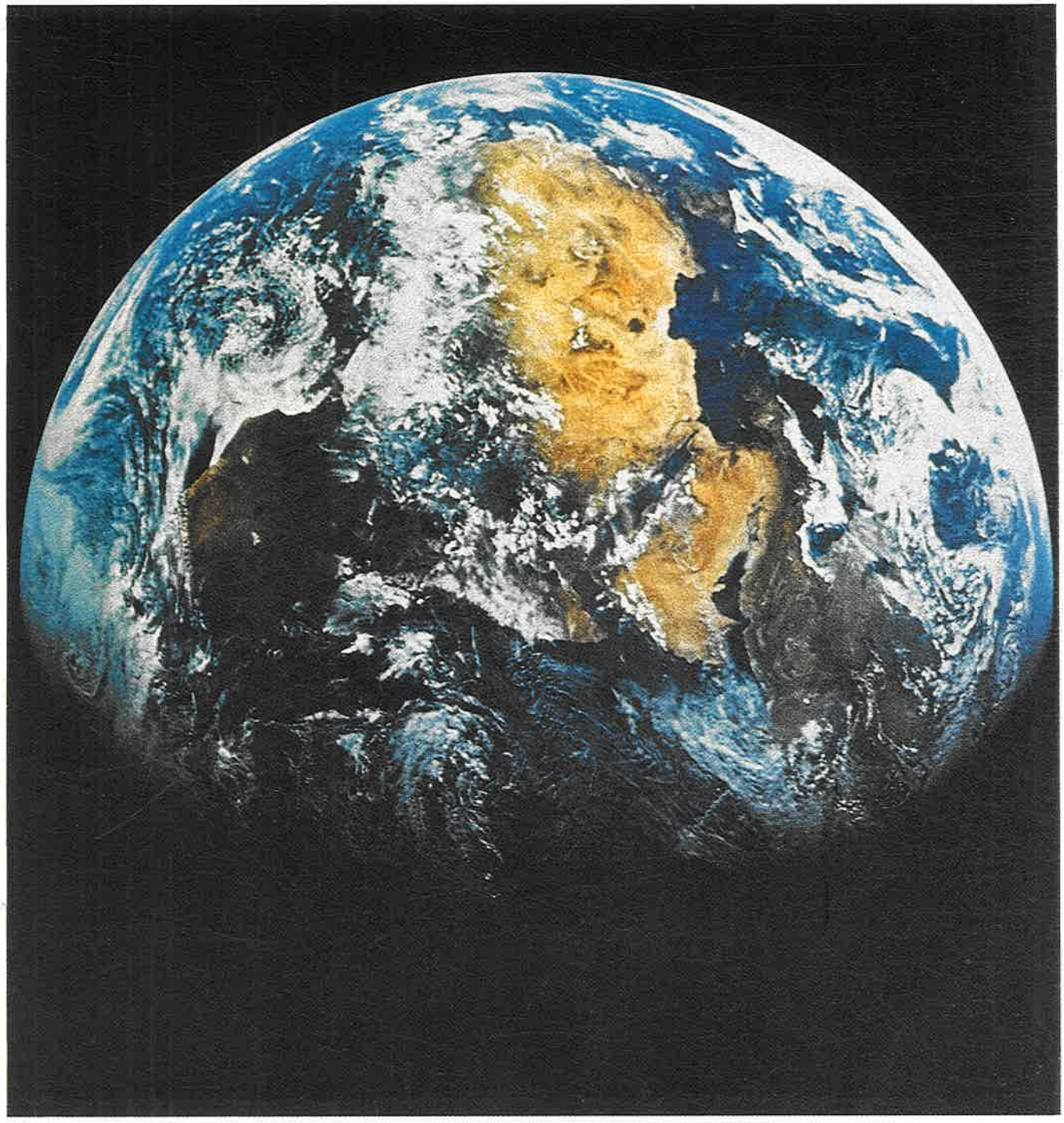

अध्याय 13

सांस्कृतिक संबंध

सांस्कृतिक करार/सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

13.1 शिक्षा, कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सूचना के क्षेत्र में आदान-प्रदान लोगों तथा राष्ट्रों के मध्य अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना पैदा करने और उसे पुष्ट करने के लिए अत्यधिक उपादेय हैं। एक सुस्थिर विश्व समाज के निर्माण तथा सामाजिक और आर्थिक विकास को बल प्रदान करने में ऐसे विनिमयों का महत्व देशों में निरंतर बढ़ रहा है।

संस्कृति विभाग विश्व के बहुत से देशों के साथ सांस्कृतिक संबंध बनाने की अपनी नीति पर सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है और यह भारत के समग्र अंतराष्ट्रीय प्रयासों का एक अनिवार्य और जीवंत भाग है। सांस्कृतिक करारों की संख्या 1970 की 21 की तुलना में अब बढ़कर 81 हो गई है, जिनमें इस वर्ष चीन, पाकिस्तान और जिबूती के साथ संपन्न तीन सांस्कृतिक करार भी शामिल हैं।

सांस्कृतिक करारों में सहयोग के व्यापक सिद्धान्त निर्धारित किए जाते हैं। इन करारों का कार्यान्वयन सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों (सां.वि.का.) के माध्यम से होता है जिनमें आदान-प्रदान के ब्यौरे दिए जाते हैं। इन कार्यक्रमों को हर 2-3 वर्षों के लिए तैयार किया जाता है। तथा इनकी समीक्षा होती है। सांस्कृतिक करारों के मूल ढांचे के भीतर अनेक देशों के साथ नियमित रूप से सां.वि.का. तैयार करने के लिए प्रयास किए जाते रहे हैं। इन (कार्यक्रमों) की संख्या आजकल 56 है, जिनमें इस वर्ष अलजीरिया, मिस्र, अरब गणराज्य, आस्ट्रेलिया, चीन, साइप्रस, संघीय जर्मन गणराज्य, फ्रांस, जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य, पौलैंड, सोमाली, स्पेन, ट्यूनीशिया, तुर्की और सोवियत संघ के साथ सम्पन्न नवीकृत 14 सां.वि.का. भी शामिल हैं।

13.2 जिन देशों के साथ अभी तक नियमित सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम संपन्न नहीं हो पाए हैं, इनके साथ प्रदर्शन दलों के दौरे और छात्रवृत्तियां प्रदान करने जैसे तदर्थ सांस्कृतिक कार्यकलापों के आधार पर द्विपक्षीय सांस्कृतिक संबंधों को बनाए रखा गया है। प्रदर्शन शिष्टमंडलों, प्रदर्शनियों तथा अध्येताओं के आदान-प्रदान के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम ने संस्कृति दर्शन और द्विपक्षीय आधार पर हमारे संपूर्ण विदेश संबंधों के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे विनिमय कार्यक्रम अभिनव क्षेत्रों की खोज कर रहे हैं और अब छात्रों, शिक्षकों और कलावस्तुओं के विनिमय के पुराने ढर्रे तक ही सीमित नहीं है। इनमें खेल-कूद, जनप्रचार माध्यम, भारतीय और विदेशी उच्च शिक्षण संस्थाओं के मध्य शैक्षिक संपर्क, भाषा-अध्ययन कार्यक्रम विशेषज्ञों का आदान-प्रदान, सम्मेलनों में सहभागिता, व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण, संग्रहालय-विज्ञान और पुरातत्व आदि अनेक सहयोग के क्षेत्र शामिल किए गए हैं। ये कार्यक्रम हमारे अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंधों को नए आयाम देने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं।

सद्भावना यात्राएं/सरकारी शिष्टमंडल

13.3 सांस्कृतिक संबंधों के विकास में उच्च स्तरीय सद्भावना यात्राओं का ऐतिहासिक महत्व है। गुयाना में भारतीय आप्रवास की 150वीं वर्षगांठ संबंधी समारोहों में भारत की सहभागिता के सिलसिले में संस्कृति-सचिव, श्री एम. वरदराजन के नेतृत्व में

एक 2 सदस्यीय शिष्ट मंडल ने फरवरी, 1988 में गुयाना का दौरा किया। शिक्षा और संस्कृति राज्यमंत्री, श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही ने मई 1988 में जापान का दौरा किया। तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री पी.वी. नरसिंहराव के नेतृत्व में एक उच्चाधिकार प्राप्त सरकारी शिष्टमंडल ने और शिक्षा और संस्कृति राज्यमंत्री श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही ने "भारत में बुल्गारियाई संस्कृति दिवस" के लिए जून 1988 में बुल्गारिया का दौरा किया।

संस्कृति विभाग की उप-सचिव, श्रीमती अंशु वैश्य ने जून 1988 में आयोजित 8वें भारत-अफगान आर्थिक, तकनीकी और व्यापारिक सहयोग आयोग की मध्यावधि समीक्षा बैठक में भाग लेने वाले भारतीय शिष्टमंडल की एक सदस्या के रूप में काबुल का दौरा किया। संस्कृति विभाग के संयुक्त सचिव श्री मनमोहन सिंह ने भारत-मिस्र अरब गणराज्य संयुक्त आयोग के द्वितीय अधिवेशन में भाग लेने के लिए अक्तूबर 1988 में काहिरा का दौरा किया। दक्षेस खेल-कूद, कला और संस्कृति तकनीकी समिति की सातवीं बैठक में भाग लेने के लिए विदेश मंत्रालय द्वारा प्रायोजित भारतीय शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में संस्कृति विभाग के संयुक्त सचिव, श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी ने अक्तूबर 1988 में काठमांडू का दौरा किया।

13.4 जापान सरकार के विदेश मंत्रालय में सांस्कृतिक कार्य विभाग के महानिदेशक, श्री ताकाशी जाजीमा के नेतृत्व में एक जापानी शिष्ट मंडल ने भारत-जापान आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए जनवरी, 1988 में भारत का दौरा किया। भारत-अमेरिका शिक्षा और संस्कृति उपायोग के अमरीकी सह-अध्यक्ष, श्री जॉन आर. हब्बर्ड के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय संयुक्त राज्य शिष्टमंडल ने नई दिल्ली में आयोजित भारत-अमरीका शिक्षा और संस्कृति उपायोग की 14वीं संयुक्त बैठक में भाग लेने के लिए भारत का दौरा किया। बर्मा के संस्कृति और सूचना मंत्री, श्री यू. उंग क्या मिंग के नेतृत्व में एक 10-सदस्यीय बर्मी सांस्कृतिक शिष्टमंडल ने, जिसमें बर्मा के गृह और धार्मिक कार्य मंत्री कर्नल खिनमुंग विंग भी शामिल थे, अप्रैल 1988 में भारत का दौरा किया। क्यूबा की संस्कृति उपमंत्री, श्रीमती मर्सिया लेयसिकन के नेतृत्व में एक 2 सदस्यीय सांस्कृतिक शिष्टमंडल ने अप्रैल-मई 1988 में "भारत में क्यूबाई सांस्कृतिक यात्रा" के सिलसिले में भारत का दौरा किया। मानव संसाधन विकास मंत्री के निमंत्रण पर मारीशस के शिक्षा, कला और संस्कृति राज्यमंत्री महामहिम ए. परशुरमण ने भारत का दौरा किया। बुल्गारियाई संस्कृति समिति में विकासशील देश विभाग की प्रमुख, श्रीमती ए.सेनडोवा ने "भारत में बुल्गारियाई संस्कृति दिवस" की तैयारियों के संबंध में सितम्बर 1988 में भारत का दौरा किया। विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय की निदेशक, श्रीमती ईस्तेव-कॉल तथा सलाहकार, श्री राबर्ट स्केल्टन ने नवम्बर, 1988 में भारत का दौरा किया।

13.5 भारत और चीन के मध्य सांस्कृतिक करार और वर्ष 1988-89 के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर, संस्कृति सचिव के नेतृत्व में 4 सदस्यीय भारतीय सरकारी शिष्टमंडल के दौरे के दौरान, पेइचिंग में मई 1988 में विचार-विमर्श के उपरांत अंतिम रूप देकर हस्ताक्षर किए गए। 1988-89 की अवधि के लिए भारत साइप्रस, भारत-तुर्की और भारत-ट्यूनिस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों पर संस्कृति विभाग के संयुक्त सचिव के नेतृत्व में भारतीय शिष्टमंडल के दौरे के दौरान क्रमशः निकोशिया, अंकारा और ट्यूनिस में जून 1988 में हस्ताक्षर किए गए। 1989-91 के लिए भारत और स्पेन तथा भारत और संघीय जर्मन गणराज्य के मध्य सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम पर संस्कृति विभाग के संयुक्त सचिव के नेतृत्व में भारतीय शिष्टमंडल के दौरे के दौरान सितम्बर 1988 में हस्ताक्षर किए गए। अलजीरियाई सरकार के उच्चतर शिक्षा मंत्रालय के निदेशक महामहिम श्री बेन्स्मेल मेहदी ने मार्च 1988 में भारत का दौरा किया और नई दिल्ली में भारत-अलजीरियाई सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम 1988-90 पर हस्ताक्षर किए। भारत-जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम, 1988-90 पर नई दिल्ली में हस्ताक्षर किए गए; भारत-फ्रांस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम, 1988-89 पर नई दिल्ली में जुलाई 1988 में हस्ताक्षर किए गए। भारत और मिस्र अरब गणराज्य के बीच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम और भारत-सोवियत सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम, 1989-90 पर नई दिल्ली में हस्ताक्षर किए गए। भारत-आस्ट्रेलियाई सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम, 1989-91 को नई दिल्ली में नवम्बर, 1988 में अंतिम रूप देकर इस पर हस्ताक्षर किए गए। चीन के संस्कृति उपमंत्री, श्री लियु दियाऊ के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल ने 1988-90 के वर्षों के लिए भारत-चीन सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए दिसम्बर 1988 में भारत का दौरा किया। हंगरी जनवादी गणराज्य के संस्कृति और शिक्षा उपमंत्री, श्री फेरेंक रेतकई नैं और चेकोस्लावाकिया के विदेश संबंध विभाग के निदेशक, श्री मेचल क्लीपैक के नेतृत्व में एक 3 सदस्यीय शिष्टमंडल ने भारत के साथ अपने-अपने सांस्कृतिक विनिमय, कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा करने के लिए क्रमशः नवम्बर 1988 और दिसम्बर 1988 में भारत का दौरा किया।

13.6 1987-89 के लिए सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम में एक-दूसरे की संस्कृतियों की झाँकियां प्रस्तुत करने की परिकल्पना की गई है। इसके अनुसार "भारतीय संस्कृति दिवस" नामक भारतीय सांस्कृतिक प्रदर्शन का बुल्गारिया में 25 जून से 2 जुलाई 1988 तक आयोजन किया गया।

"भारत में बुल्गारियाई संस्कृति दिवस" नामक पारस्परिक बुल्गारियाई सांस्कृतिक प्रदर्शन का संस्कृति विभाग द्वारा 5-12 जनवरी, 1989 को आयोजन किया गया। प्रदर्शन में संस्कृति विभाग के अतिरिक्त भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, साहित्य अकादमी, बाल भवन, राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, फिल्मोत्सव निदेशालय, राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, विकास-आयुक्त (हस्तशिल्प), ललित कला अकादमी और आयोजना और वास्तुशिल्प विद्यालय ने भाग लिया। प्रदर्शन में निम्नलिखित कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए :

पॉप ग्रुप, कठपुतली नाटक, रिद्मिक जिमनास्ट,
ट्रेकिया लोक साहित्य-दर्शन और दिमोव क्वार्टेट।

इसके अतिरिक्त भारतीय और बुलगारियाई लेखकों/कवियों की बैठकें; एक बुल्गारियाई पुस्तक प्रदर्शनी, ग्रामोफोन रिकार्ड और छायाचित्र और बाल रंगचित्र, बुल्गारियाई कोष (थ्रेस i–iv सी) में रोमन युग की कांस्य मूर्तियां, बुल्गारियाई सिनेमा सप्ताह, बुल्गारियाई हस्तशिल्प और बुल्गारियाई महिला कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी तथा बुल्गारियाई प्राचीन और समकालीन वास्तुशिल्प प्रदर्शनी भी इसमें शामिल थीं।

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ खेल-कूद, कला और संस्कृति तकनीकी समिति

13.7 दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ की खेल-कूद, कला और संस्कृति तकनीकी समिति की सातवीं बैठक 28-29 अक्तूबर, 1988 को काठमांडु में सम्पन्न हुई।

पुस्तकें और कला-वस्तुएं भेंट करना तथा निबंध प्रतियोगिताएं

13.8 भारतीय जीवन और संस्कृति के संवर्धन और इसकी बेहतर समझ के लिए पुस्तकों, कला-वस्तुओं और निबंध प्रतियोगिताओं के महत्वपूर्ण होने के कारण संस्कृति विभाग ने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद को विदेशी सरकारों, संगठनों, पुस्तकालयों और व्यक्तियों को पुस्तकें और कला-वस्तुएं भेंट करने के लिए तथा भारतीय मिशनों के माध्यम से विदेशों में निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित करने के लिए धन उपलब्ध करवाना जारी रखा।

भारत-विदेश मैत्री संघ

13.9 भारत-विदेश मैत्री संघ विदेशों में भारतीय संस्कृति के संवर्धन के लिए एक उपादेय माध्यम हैं। ये संघ व्याख्यान, महोत्सव, प्रदर्शनियां और भारतीय कलाकारों के प्रदर्शन आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। कुछ संघ छोटे पुस्तकालय तथा वाचनालय भी चला रहे हैं। संस्कृति विभाग विदेश स्थित भारतीय मिशनों की सिफारिश पर इन संघों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। इस वर्ष भी यह कार्यक्रम जारी रहा। इन संघों को सहायता प्रदान करने के अतिरिक्त, कुछ चुनिंदा भारतीय मिशनों को भारतीय मूल की स्थानीय आबादी में सांस्कृतिक कार्यकलापों को बढ़ावा देने के लिए भी अनुदान किया गया था।

भारत भवन (मैसन डी ल ''इन्डे)

13.10 भारत सरकार ने सिटे यूनिवर्सिटी, पेरिस के परिसर में एक भारतीय छात्रावास का निर्माण किया था और 1960 में इसे विश्वविद्यालय को सौंप दिया गया। छात्रावास मैसन डी ल इन्डे नाम से जाना जाता है और इसमें लगभग 104 छात्रों के आवास की व्यवस्था है। इसका प्रबन्ध भारत द्वारा किया जा रहा है। भारत सरकार को इसे चलाने में प्रतिवर्ष घाटा हो रहा है। 1988-89 में घाटे की भरपाई के लिए भारत सरकार ने 1.38 लाख रुपए दिए।

अध्याय 14

भारत महोत्सव

14.1 जुलाई, 1988 में सोवियत संघ में चल रहा वर्ष भर का भारत महोत्सव समाप्त हुआ। महोत्सव भव्य स्तर का था, विश्व के किसी भी देश में सर्वाधिक भव्य भारतीय प्रदर्शन। महोत्सव को 80 से भी अधिक शहरों के लोगों तक पहुंचाने के लिए 1700 कला निष्पादकों, 20 प्रदर्शनियों, 80 फीचर फिल्मों, खेल प्रदर्शनों तथा युवाओं ने सोवियत संघ का भ्रमण किया।

हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक दोनों शास्त्रीय संगीत के बेहतरीन कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। सिक्किम के मोनस्टिक नृत्य, थेरु कुट्टू, तमिलनाडु का स्ट्रीट थिएटर, राजस्थान के चक्री तथा तेरहताली जैसे भारत की लोक परम्पराओं सहित अनेक भव्य कला कार्यक्रम प्रदर्शित किए गए।

शास्त्रीय तथा परम्परागत ललित कलाओं को प्रदर्शित करने वाली अनेक प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। 2500 ईसा पूर्व से 19वीं शताब्दी तक भारतीय मूर्तिकला व चित्रकला का विकास शास्त्रीय कला प्रदर्शनी में देखा जा सकता है। एक अन्य प्रदर्शनी में मैसूर व तंजावूर शैली की चित्रकला भी प्रदर्शित की गई। भारतीय सजावटी कलाएं तथा आभूषण नामक एक तीसरी प्रदर्शनी में 16वीं से 19वीं शताब्दी की जड़े पत्थर, शीशा, हाथी दांत व मदर-पर्ल की 200 वस्तुएं प्रदर्शित की गई। इस प्रदर्शनी का शुभारम्भ लेनिनग्राद में किया गया।

विख्यात वायलन वादक डा. एल. सुब्रमण्यम ने सोवियत टी.वी. व रेडियो आर्केस्ट्रा के साथ प्रदर्शन किया। वैदिक मंत्रों पर स्वप्रचित्र नामक उनकी रचना का अपार स्वागत हुआ। कांग्रेस के क्रेमलिन पैलेस में पंडित रवि शंकर, कुमुदिनी लाखिया तथा सोवियत संघ की बखोर नृत्य कम्पनी का संयुक्त भारत-सोवियत संगीत व नृत्य प्रदर्शन आयोजित हुआ।

14.2 भारत में सोवियत महोत्सव भी 19 नवम्बर, 1988 को सोवियत राष्ट्रपति श्री मिखाइल गोर्बाचोव तथा भारत के राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन की उपस्थिति में भव्य समारोह के साथ समाप्त हुआ। बर्फ पर बैले, लोक नृत्य बैले तथा किरोव थिएटर के आर्केस्ट्रा व बर्योज्का राज्य नृत्यकला कम्पनी के प्रदर्शन समापन कार्यक्रमों में थे। वर्ष भर चलने वाले इस उत्सव के दौरान भारत के लगभग 100 नगरों व शहरों में सोवियत कला व संस्कृति प्रदर्शित की गई।

जापान में भारत महोत्सव 15 अप्रैल, 1988 से नेशनल थिएटर, टोकियो में एक शानदार प्रदर्शन के साथ प्रारम्भ हुआ। भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी तथा जापान के प्रधानमंत्री श्री एन. ताकेशिता इस अवसर पर मौजूद थे।

छः महीने चलने वाले उत्सव का मुख्य आकर्षण पीटर ब्रुक के "महाभारत" का प्रस्तुतीकरण था।

बुद्ध की शिक्षाओं पर भारतीय संग्रहालय से 24 कलाकृतियां लेकर, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली ने नारा में सिल्क रोड प्रदर्शनी में भाग लिया।

विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में 25 भारतीय फिल्मों का फिल्मोत्सव बहुत लोकप्रिय सिद्ध हुआ। यह प्रदर्शन जापान के 35 से अधिक शहरों व नगरों में हुए।

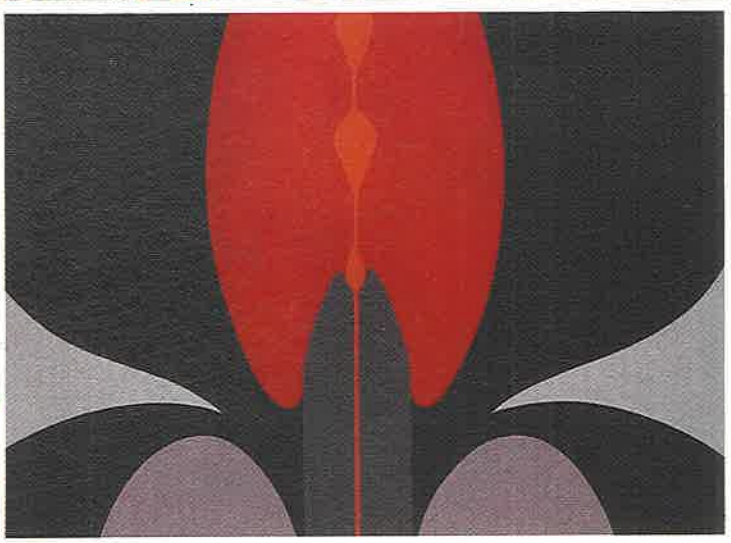

14.3 वर्ष के दौरान भारत में फ्रांस उत्सव के आयोजन के लिए कदम उठाए गए। उत्सव, फ्रांस के राष्ट्रपति श्री फ्रांस्वा मितरां तथा भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की उपस्थिति में बम्बई के चौपाटी समुद्रतट पर एक शानदार लेज़र शो के साथ शुरु हुआ। साथ ही, उत्सव के एक भाग के रूप में 'आधुनिकता का जन्म तथा जीवन' नामक चित्रकला की एक प्रदर्शनी राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि, नई दिल्ली में प्रस्तुत की गई। प्रदर्शित वस्तुएं मुख्यतः पोम्पिदू संग्रहालय तथा द ओर्से संग्रहालय से ली गई थी।

भारत में फ्रांस उत्सव के दौरान बैले, थिएटर, जैज़ तथा माइम सहित अनेकों सांस्कृतिक प्रदर्शन प्रस्तुत किए जाएंगे। प्रदर्शनियां तथा एक फिल्मोत्सव भी प्रदर्शन सूची में हैं।

जर्मन जनवादी गणराज्य में भारत महोत्सव के आयोजन का निर्णय, जून 1988 में भारत के प्रधान मंत्री तथा ज.ज.ग. के चांसलर के बीच हुई बैठक में लिया गया। उत्सव के आयोजन के लिए कदम उठाए जा चुके हैं।

1990 में भारत में स्वीडन उत्सव के लिए भी आयोजन शुरु किए जा चुके हैं।

अध्याय 15

अन्य कार्यकलाप

हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

15.1 संस्कृति विभाग को राजभाषा अधिनियम, 1976 के अनुभाग 10 (4) के अन्तर्गत इस आधार पर अधिसूचित किया गया कि विभाग में कार्यरत 80 प्रतिशत स्टाफ को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान हैं। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए वार्षिक कार्यक्रम राजभाषा विभाग से प्राप्त हो चुका हो चुका है तथा सभी संबंधित लोगों के ध्यान में लाया जा चुका है।

15.2 विभाग की अपनी एक राजभाषा कार्यान्वयन समिति है तथा एक संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति संस्कृति तथा कला विभागों के लिए गठित की जा रही है। राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा इस विभाग का निरीक्षण यह देखने के लिए कि, किस सीमा तक राजभाषा नियमों का कार्यान्वयन किया जा रहा है, किया जा चुका है। इसके साथ ही इस विभाग के लेह, कलकत्ता, हैदराबाद, बंगलौर, मैसूर, मद्रास, त्रिवेन्द्रम, बड़ोदरा तथा पोर्ट ब्लेयर स्थित अधीनस्थ कार्यालयों का निरीक्षण, उनके सरकारी कार्य में हिन्दी के प्रयोग की प्रगति के अनुवीक्षण के लिए किया जा चुका है। इस विभाग में एक हिन्दी अनुवाद एकक है। फिर भी, यहां भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन कार्य के निरीक्षण के लिए कोई एकक नहीं है। इस विभाग में एक ऐसे एकक की संस्थापना का प्रस्ताव है।

विभिन्न अध्यायों में वर्णित मदों के लिए वित्तीय आवंटन

(रुपये लाखों में)

क्र.सं.	मद	योजनागत/ योजनेतर	बजट प्राक्कलन 1988-89		बजट प्राक्कलन 1989-90
			मूल	संशोधित	
1.	भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण	योजनागत	730.00	730.00	790.00
		योजनेतर	1900.00	1900.00	1995.00
2.	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली	योजनागत	180.00	162.00	205.00
		योजनेतर	94.17	121.67	135.80
3.	भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता	योजनागत	65.00	53.00	95.00
		योजनेतर	55.00	67.00	75.00
4.	सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद	योजनागत	60.00	52.00	87.00
		योजनेतर	37.00	45.00	46.00
5.	नेहरू केन्द्र सहित संग्रहालयों के के पुनर्गठन और विकास के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	100.00	100.00	100.00
		योजनेतर	1.70	1.70	1.80
6.	विक्टोरिया मैमोरियल हाल, कलकत्ता	योजनागत	40.00	39.00	70.00
		योजनेतर	20.00	30.90	30.60
7.	रतन तथा आभूषणों के लिए संग्रहालय की स्थापना	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	1.00	1.00	1.00
8.	राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथि, नई दिल्ली	योजनागत	75.00	70.00	90.00
		योजनेतर	17.90	22.65	23.80
9.	नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली	योजनागत	66.00	59.32	65.00
		योजनेतर	95.00	94.60	100.00
10.	इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद	योजनागत	35.00	35.00	35.00
		योजनेतर	—	—	—
11.	राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय, कलकत्ता	योजनागत	618.00	318.00	650.00
		योजनेतर	203.47	208.00	217.00
12.	राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षण अनुसंधान प्रयोगशाला, लखनऊ	योजनागत	60.00	58.00	70.00
		योजनेतर	17.75	17.75	19.20
13.	कला वस्तुओं की प्रदर्शनी का अन्तर संग्रहालय विनिमय	योजनागत	5.00	5.00	5.00
		योजनेतर	—	—	—
14.	भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता	योजनागत	90.00	77.00	100.00
		योजनेतर	186.50	194.50	206.50
15.	राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल	योजनागत	150.00	140.00	175.00
		योजनेतर	—	—	—
16.	भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली	योजनागत	159.00	109.00	165.00
		योजनेतर	161.55	166.93	174.75
17.	खुदा बख्श प्राच्य पब्लिक लाइब्रेरी, पटना	योजनागत	25.50	25.50	27.00
		योजनेतर	12.48	12.92	15.23

(रुपये लाखों में)

क्र.सं.	मद	योजनागत/ योजनेतर	बजट प्राक्कलन 1988-89		बजट प्राक्कलन 1989-90
			मूल	संशोधित	
18.	टी.एम.एस.एस.एम. लाइब्रेरी	योजनागत	15.00	15.00	24.00
		योजनेतर	—	—	—
19.	रामपुर रजा लाइब्रेरी, रामपुर	योजनागत	11.50	11.50	12.50
		योजनेतर	—	—	—
20.	एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता	योजनागत	59.00	59.00	65.00
		योजनेतर	45.00	44.54	54.72
21.	केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह	योजनागत	50.00	50.00	57.00
		योजनेतर	30.58	30.58	33.00
22.	केन्द्रीय उच्च तिब्बतीय अध्ययन संस्थान, वाराणसी	योजनागत	61.00	61.00	70.00
		योजनेतर	31.00	43.00	40.00
23.	तिब्बतीय कृतियों और अभिलेखों का पुस्तकालय, धर्मशाला	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	8.00	8.00	8.00
24.	सिक्किम तिब्बतीय विद्या अनुसंधान संस्थान, गंगटौक	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	6.00	6.00	6.00
25.	बौद्ध तथा तिब्बतीय संगठनों के विकास के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	50.00	25.00	55.00
		योजनेतर	—	—	—
26.	राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता	योजनागत	102.00	77.35	140.00
		योजनेतर	194.46	206.80	232.56
27.	केन्द्रीय संदर्भ पुस्तकालय, कलकत्ता	योजनागत	12.00	5.00	12.00
		योजनेतर	18.40	21.90	24.00
28.	केन्द्रीय पुस्तकालय, बम्बई	योजनागत	5.00	1.00	5.00
		योजनेतर	5.00	6.75	7.00
29.	केन्द्रीय सचिवालय पुस्तकालय नई दिल्ली	योजनागत	18.00	18.00	21.00
		योजनेतर	1.90	2.00	2.05
30.	दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली	योजनागत	55.00	55.00	65.00
		योजनेतर	69.50	69.50	85.35
31.	कौन्नेमरा पब्लिक लाइब्रेरी, मद्रास	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	7.00	5.00	7.00
32.	राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान, कलकत्ता	योजनागत	140.00	140.00	180.00
		योजनेतर	12.50	12.50	13.00
33.	भारतीय विश्व कार्य पुस्तकालय परिषद्, नई दिल्ली	योजनागत	6.00	4.00	6.50
		योजनेतर	2.50	2.50	2.00
34.	साहित्य अकादमी, नई दिल्ली	योजनागत	100.00	98.86	120.00
		योजनेतर	53.00	47.94	53.00
35.	संगीत, नाटक अकादमी, नई दिल्ली	योजनागत	100.00	112.00	140.00
		योजनेतर	67.00	71.00	81.00
36.	ललित कला अकादमी, नई दिल्ली	योजनागत	100.00	100.00	120.00
		योजनेतर	71.00	68.90	96.85

(रुपये लाखों में)

क्र.सं.	मद	योजनागत/ योजनेतर	बजट प्राक्कलन 1988-89		बजट प्राक्कलन 1989-90
			मूल	संशोधित	
37.	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली	योजनागत	73.00	73.00	98.00
		योजनेतर	42.00	42.00	50.00
38.	राष्ट्रीय हिन्दुस्तानी संगीत स्कूल की स्थापना, जयपुर	योजनागत	2.00	—	1.00
		योजनेतर	—	—	—
39.	सांस्कृतिक संसाधन तथा प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली	योजनागत	81.00	81.00	110.00
		योजनेतर	25.00	25.00	30.00
40.	स्वैच्छिक सांस्कृतिक संगठनों को भवन अनुदान	योजनागत	30.00	20.00	50.00
		योजनेतर	15.00	10.00	15.00
41.	नृत्य, नाटक तथा थियेटर मंडलियों को वित्तीय सहायता	योजनागत	30.00	30.00	75.00
		योजनेतर	35.00	35.00	35.00
42.	कला प्रदर्शनियां (भारतोत्सव)	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	1000.00	1000.00	550.00
43.	शंकर अंतर्राष्ट्रीय बाल प्रतियोगिता	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	1.75	1.75	1.75
44.	सांस्कृतिक संगठनों का विकास	योजनागत	5.00	5.00	5.00
		योजनेतर	—	—	—
45.	भारत में सांस्कृतिक संगठन	योजनागत	20.00	20.00	35.00
		योजनेतर	15.00	15.72	16.25
46.	इनटैक	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	100.00	100.00	—
47.	साहित्यिक कार्यकलापों में लगी संस्थाएं तथा व्यक्ति	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	1.40	1.40	1.40
48.	सौ नए समारोह	योजनागत	20.00	—	20.00
		योजनेतर	—	—	—
49.	सांस्कृतिक शिविर तथा राष्ट्रीय उत्सव	योजनागत	40.00	195.27	35.00
		योजनेतर	—	—	—
50.	हिमालय कलाओं की प्रोन्नति के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	40.00	20.00	40.00
		योजनेतर	—	—	—
51.	जनजातियों/लोक कलाकेन्द्रों की प्रोन्नति के लिए वित्तीय सहायता	योजनागत	45.00	45.00	50.00
		योजनेतर	—	—	—
52.	संस्कृति को शिक्षा, जन-संचार आदि के साथ जोड़ने की परियोजनाएं	योजनागत	30.00	30.00	50.00
		योजनेतर	—	—	—
53.	कलाकारों के स्तर को बढ़ाना	योजनागत	1.00	—	1.00
		योजनेतर	—	—	—
54.	क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र	योजनागत	1300.00	1300.00	100.00
		योजनेतर	—	—	—
55.	केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड	योजनागत	5.00	5.20	5.00
		योजनेतर	41.12	47.75	45.67

(रुपये लाखों में)

क्र.सं.	मद	योजनागत/ योजनेतर	बजट प्राक्कलन 1988-89 मूल	बजट प्राक्कलन 1988-89 संशोधित	बजट प्राक्कलन 1989-90
56.	सेंसर अपील ट्रिब्यूनल	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	2.00	1.27	2.00
57.	विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कार्यकर्ताओं के लिए छात्रवृत्तियां	योजनागत	11.00	11.00	14.00
		योजनेतर	—	—	—
58.	अभिनय; साहित्य और प्लास्टिक कलाओं के क्षेत्र में उत्कृष्ट कलाकारों को शिक्षावृत्तियां प्रदान करना	योजनागत	12.50	9.80	15.00
		योजनेतर	2.00	2.00	3.00
59.	साहित्य कला तथा जीवन के ऐसे ही अन्य क्षेत्रों के अभावग्रस्त परिस्थितियों में रहे व्यक्तियों को वित्तीय सहायता की योजना	योजनागत	10.00	4.00	12.00
		योजनेतर	8.00	2.00	2.00
60.	सेवानिवृत्त छात्रवृत्तियां	योजनागत	4.50	8.00	5.00
		योजनेतर	2.00	7.00	8.00
61.	गांधी स्मृति और दर्शन समिति	योजनागत	10.00	10.00	10.00
		योजनेतर	35.00	35.00	36.00
62.	नव नालन्दा महावीर तथा ह्वेनसांग स्मारक का समेकित विकास	योजनागत	2.00	—	1.00
		योजनेतर	—	—	—
63.	राष्ट्रीय स्मारकों का विकास तथा रख-रखाव	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	50.00	50.00	50.00
64.	शताब्दियां/जयन्तियां	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	50.00	40.00	50.00
65.	अभिलेख वेत्ताओं, संग्रहालय वेत्ताओं तथा पुस्तकाध्यक्षों आदि के दौरों का विनिमय	योजनागत	1.00	1.00	1.00
		योजनेतर	—	—	—
66.	अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यकलाप	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	12.00	12.00	12.00
67.	पुस्तकों तथा कलावस्तुओं का प्रस्तुतीकरण	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	20.00	20.00	20.00
68.	अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा विश्व विरासत निधि	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	3.00	2.45	2.70
69.	शिष्ट मंडल	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	6.00	6.00	6.00
70.	यात्रा सहायता, यात्रा भत्ता दैनिक भत्ता तथा अन्य मद	योजनागत	—	—	—
		योजनेतर	8.27	9.93	9.42
71.	दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन केन्द्र	योजनागत	1.00	—	5.00
		योजनेतर	—	—	—
72.	संस्कृति विभाग का सचिवालय	योजनागत	20.00	16.20	25.00
		योजनेतर	150.00	156.70	173.60

1987-88 के दौरान मानव संसाधन विकास मंत्रालय (संस्कृति विभाग) से एक लाख अथवा इससे अधिक रुपयों का आवर्ती सहायता अनुदान प्राप्त करने वाले निजी और स्वैच्छिक संगठनों के नाम दर्शाने वाला विवरण

क्र.सं.	निजी और स्वैच्छिक संगठनों का नाम पता	संगठन के संक्षिप्त कार्यकलाप	1987-88 के दौरान जारी की गई आवर्ती सहायता अनुदान की राशि रु.	प्रयोजन जिसके लिए अनुदान का उपयोग किया गया	टिप्पणियाँ
1.	केन्द्रीय पुस्तकालय, टाउनहाल, बम्बई (महाराष्ट्र)	एशियाटिक सोसाइटी, बम्बई के पुस्तक वितरण अधिनियम धारा का रख-रखाव	5,00,000	पुस्तकालय के पुस्तक वितरण अधिनियम धारा का रख-रखाव	अनुदान राज्य सरकार की सिफारिश पर बराबर के आधार पर दिया जाता है
2.	रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, गोल पार्क, कलकत्ता (प. बंगाल)	चिन्तन, ज्ञान और शिक्षा की प्रोन्नति	39,41,000	वार्षिक अनुरक्षण, पुस्तकालय का रख-रखाव और विकास भवनों और संयंत्रों आदि का रख-रखाव।	
3.	तिब्बती कृतियों और अभिलेखों का पुस्तकालय, धर्मशाला, जिला कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)	तिब्बती पुस्तकों और पांडुलिपियों का अधिग्रहण और संरक्षण, तिब्बती स्रोत सामग्री से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए गहन संदर्भ केन्द्र की व्यवस्था करना तथा तिब्बती सूची का संकलन और प्रकाशन करना	7,75,000	स्थापना, फुटकर खर्चों, भवनों, पुस्तकों पांडुलिपियों, उपस्कर और फर्नीचर आदि जैसी मदों का खर्च वहन करना	
4.	श्री राम भारतीय कला केन्द्र, कोपरनिकस मार्ग, नई दिल्ली	नृत्य, नाटक और थियेटर कार्यकलाप	1,63,488	वेतन, रखरखाव, स्थापना और पुस्तकालय प्रलेखन।	
5.	दिल्ली कला थियेटर, फ्लैट-36 शंकर मार्किट, कनाट प्लेस, नई दिल्ली	वही	2,65,000	वही	
6.	त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली	वही	1,42,000	वही	
7.	कला क्षेत्र, तिरुवनमियूर, मद्रास (तमिलनाडु)	वही	3,19,000	वही	
8.	अभिनय कला दर्पण अकादमी अहमदाबाद	वही	1,99,000	वही	
9.	रंगश्री लिटिल बैले ट्रुप, भोपाल (मध्य प्रदेश)	वही	3,18,000	वही	
10.	भारतीय राष्ट्रीय थियेटर, बम्बई (महाराष्ट्र)	वही	3,28,000	वही	
11.	नन्दीकर, कलकत्ता (पश्चिमी बंगाल)	वही	1,62,500	वही	
12.	मणिपुरी जगाई मरूप, इम्फाल (मणिपुर)	वही	2,65,750	वही	
13.	बैले यूनिट, बम्बई (महाराष्ट्र)	वही	2,10,000	वही	
14.	नया थिएटर, नई दिल्ली	वही	1,20,000	वही	

क्र.सं.	निजी और स्वैच्छिक संगठनों का नाम पता	संगठन के संक्षिप्त कार्यकलाप	1987-88 के दौरान जारी की गई आवर्ती सहायता अनुदान की राशि रु	प्रयोजन जिसके लिए अनुदान का उपयोग किया गया	टिप्पणियाँ
15.	दि लिटिल थिएटर ग्रुप, नई दिल्ली	वही	1,60,000	वही	
16.	अन्तर्राष्ट्रीय कथकली केन्द्र, नई दिल्ली	वही	1,40,750	वही	
17.	यक्षगान केन्द्र, उडिपि (कर्नाटक)	वही	1,08,000	वही	
18.	भूमिका, नई दिल्ली।	वही	1,47,000	वही	
19.	श्री राम कला तथा संस्कृति केन्द्र, नई दिल्ली	वही	1,37,000	वही	
20.	ए.एन.के., बम्बई	वही	1,15,000	वही	
21.	कुचिपुड़ी कला अकादमी, हैदराबाद	वही	1,62,000	वही	
22.	लिटिल थिएटर, (बालरंगभूमि) बम्बई	वही	1,12,000	वही	
23.	पर्वतीय कला केन्द्र, नई दिल्ली	वही	1,33,000	वही	
24.	ब्रेख्तियन दर्पण, नई दिल्ली	वही	1,26,750	वही	
25.	भारतीय राष्ट्रीय कला तथा सांस्कृतिक विरासत न्यास, 71, लोदी स्टेट, नई दिल्ली	संगठन की स्थापना लोगों में सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागृति पैदा करने के लिए की गई है।	1,00,00,000	कोर्पस फंड के लिए	

प्रशासनिक चार्ट

संस्कृति विभाग

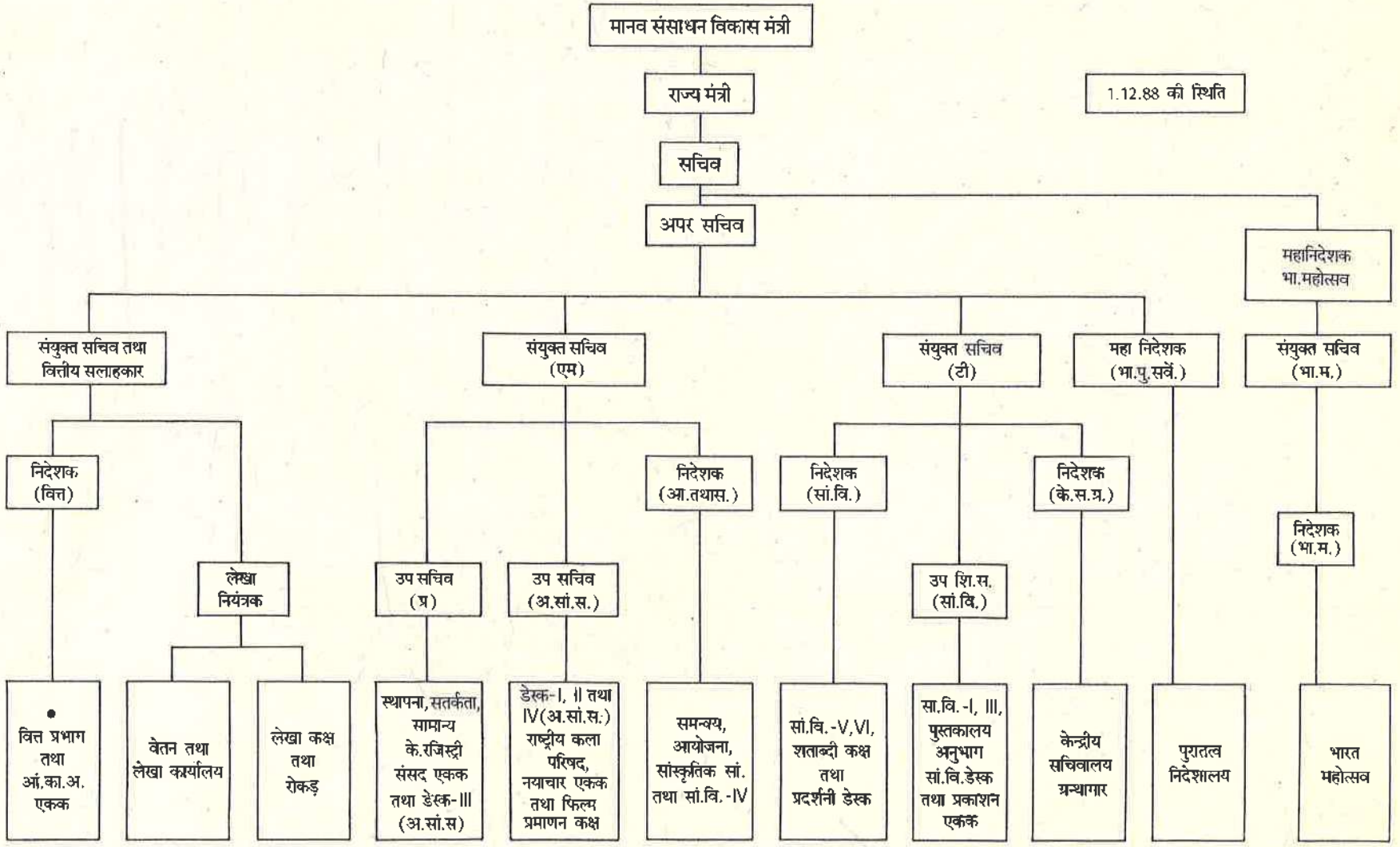

शीर्षक

आ० तथा स०	आयोजना तथा समन्वय
भा०पु०सर्वे०	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
आ०का०अ०ए०	आन्तरिक कार्य अध्ययन एकक
के०स०ग्र०	केन्द्रीय सचिवालय ग्रंथागार
•	मानव संसाधन विकास मंत्रालय में शिक्षा, संस्कृति तथा कला सभी विभागों के लिए

सां०वि०	सांस्कृतिक विरासत
अ.सां.स.	अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्बेध
क्षे०सां०के०	क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र
भा०म०	भारतीय महोत्सव

Contents

Introductory 1

Retrospective 1985-89 3

An Overview 1988-89 6

1. Organisation 14
2. Archaeology 16
3. Museums 26
4. Institutions of Anthropology and Ethnology 45
5. Archives and Records 49
6. Institutions of Tibetan, Buddhist and other Historical Studies
7. Libraries 59
8. Akademies and National School of Drama 67
9. Promotion and Dissemination of Culture 70
10. Schemes for Training and Research 78
11. Memorials 83
12. Centenaries and Anniversaries 87
13. Cultural Relations 91
14. Festival of India 94
15. Other Activities 98

Financial Allocations of items discussed 99

Statement showing the names of Private and Voluntary Organisations which received recurring grant-in-aid of Rs. 1 lakh and more from the Department of Culture during 1987-88 102

Administrative Chart 104

Introductory

1.1 One of the basic strategies of development under the 7th Five Year Plan has been Human Resource Development. National Policy on Education 1986 has concluded by saying:

> "The main task is to strengthen the base of the pyramid, which might come close to a billion people at the turn of the century. Equally, it is important to ensure that those at the top of the pyramid are among the best in the world. Our cultural well-springs had taken good care of both ends in the past; the skew set in with foreign domination and influence. It should now be possible to further intensify the nation-wide effort in Human Resource Development, with Education playing its multifaceted role."

1.2 The United Nations Children's Fund (UNICEF), in its report on the state of the world children in 1989, has come to the findings that in several developing countries of the world, investments on Human Resource has drastically come down; that spending per head on Education has fallen by nearly 50% due to cut backs on public expenditure; that State intervention in support of Human Resource Development programmes should be placed high on the agenda and that a real development pact, "a new Marshall Plan", should be brought under implementation under which advanced nations would significantly enhance access to real resources for the developing countries, these countries, on their part, committing themselves for a re-orientation of their investment strategies towards the pattern of real development which unequivocally puts the poor first.

1.3 Human Resource Development calls for coordinated and all-round efforts for the development of human potential in the areas of Education, the Youth, Women and Children, Arts, Culture and Sports.

1.4 Presented, in the following five parts of the report, is a picture of the performance of the Ministry of Human Resource Development on various fronts:

Part I — Department of Education
Part II — Department of Culture
Part III — Department of Arts
Part IV — Department of Women and Child Development
Part V — Department of Youth Affairs & Sports

1.5.1 In implementing the various programmes under the National Policy on Education, 1986, keeping the Human Resource Development concerns in view, the following areas were given special attention —

- Universalisation of Elementary Education;
- Adult literacy including skill development and inculcation of values;
- Access the education for the disadvantaged sections — Scheduled Castes, Scheduled Tribes, educationally backward, minorities and women;
- Improvements in content and process of education.

1.5.2 Three important strategies followed in giving special attention to the above areas were provision of access to education outside the formal system (either through Non-Formal Education Centres or through Distance Education); use of the existing education infrastructure for the benefit of the rural poor-for manpower development, transfer of technologies etc. like under the scheme of Community Polytechnics; and mass mobilisation for education efforts (for adult literacy — for example, by utilising the services of College students, NCC cadets, NSS volunteers, ex-servicemen etc.)

1.6 The Department of Culture continued its efforts for the preservation, promotion and enrichment of the cultural traditions of the country — through its infrastructure of Zonal Cultural Centres and supportive institutions. Conclusion of Festivals of USSR and France in India, commencement of the Festival of India in Japan and APNA UTSAV in Bombay have been the highlights of the current year in the area of cultural dissemination abroad and at home. Cultural Exchange programme with 56 countries and agreements with 81 countries are under implementation too, bringing the peoples of various countries of the world closer to the people of India.

1.7 The Department of Arts has nearly completed its task of setting up the infrastructural facilities for the Indira Gandhi National Centre for Arts (IGNCA). The five principal divisions of the IGNCA, Kala Nidhi, Kala Kosa, Janapada Sampada, Kala Darsana and Sutradhara facilitated the nucleation of the various academic programmes of the Centre. The principal activities envisaged under the Centre are:

- Creation of a computerised National Information System and Data Bank on Arts, Humanities and Cultural Heritage with supportive facilities, library, archives, etc.
- Fundamental research through programmes for production of lexicons on arts and crafts, texts of Indian Arts, reprints of writings, multi-volume encyclopaedia of Indian Arts etc.
- Documentation of folk and tribal arts and crafts; and
- Conduct of inter-disciplinary seminars.

1.8 A National Perspective Plan (NPP) — 1988-2000 A.D. has been finalised as a base for future strategies — so as to bring about major thrusts in the programme for women's development, particularly to raise the social and economic status of women. The Department of Women and Child Development continued its priority concentration in rendering early childhood services. The Integrated Child Development Services (ICDS) was expanded to cover nearly 2000 projects during the year — for the benefit of children in the age group of 0-6 and expectant and nursing mothers.

1.9 A National Policy on Youth (NPY) was placed before the Parliament in November, 1988 after extensive nationwide consultations. The Policy envisages creation of opportunities for the development of the personality and functional capability of the youth of the country. Massive national integration camps held in different parts of the country have kept the value of national integration foremost in the minds of the youth. The Nehru Yuvak Kendra Sangathan has come to diversify its activities. The Sports Authority of India (SAI) is focussing on the training of sports-persons for Asian Games scheduled to be held at Beijing in 1990. Adventure programmes like participation in International Ski expedition to the South Pole, Talent Search by the Sports Authority of India, provision of infrastructure facilities for sports activities, initiation of the Sports Project Development Area (SPDA) scheme have been the other highlights of the activities of the Department of Youth Affairs and Sports. The Government of India have also sought to involve itself in greater measure with sports by introducing, in the Rajya Sabha, the Constitution (sixty first) Amendment Bill, 1988, seeking transfer of "sports" from the State List to the Concurrent List in the Constitution of India.

Retrospective 1985-89

1. The basic objective of the Department of Culture concern efforts to arouse a cultural resurgence in the country. The thrust of major schemes and programmes of the Department is to disseminate culture covering disciplines of the vast range of human creativity. This objective has been to promote, project and to preserve the myriad features of Indian Culture in their indescribable richness. It is difficult to describe bounds and parameters of a living vital culture like the Indian Culture.

2. An event of the truly historic kind in the sequence of our cultural efforts is the emergence of the Zonal Cultural Centres. Our Prime Minister conceptualised this idea in the year 1985. Since then, 7 Centres have been inaugurated. The avowed aim of this project is to emphasize cultural kinships that transcend territorial bounds. In a kind of three tier linkages our idea is to arouse and deepen awareness of the local culture and how this diffuses into Zonal identities and eventually forms the rich diversity of India's composite culture. Our Prime Minister has often said that we need to involve people in our cultural programmes and more than that to renew and upgrade their cultural conciousness. At the inaugural of the Cultural Centre at Santiniketan, the Prime Minister had said that the culture of India is like a garden of flowers where flowers blossom and grow and are neither cut nor put out of water. Through these Cultural Centres we not only intend to emphasize cultural commonality but also to document and preserve and to the extent possible sustain the dying art forms and traditions.

3. The Festivals of India were organised in London, USA and France during 1985-86. Then there was a Festival of India in USSR and a reciprocal Festival of USSR in India in 1987-88. The Festival of India in Japan was inaugurated by the Prime Minister in April 1988. The Cuban Cultural Week was held in New Delhi in April/May 1988.

4. Georgetown, Guyana had a weeklong celebration to commemorate the "150th Anniversary of the Arrival of Indians in Guyana". In June 1988. the Department organised a Cultural Manifestation in Bulgaria and a reciprocal Manifestation is being held in India in January 1989.

5. Then there is the French Festival to commence early in 1989 and later, the Festival of Japan. There is also the Festival of India scheduled to be held in the Federal Republic of Germany in 1990.

6. Besides, Cultural Exchange Programmes have been signed with 56 countries and Agreements with 81 countries have been signed envisaging exchanges in many spheres of activity on a reciprocal basis in the years to come. Among the most significant is the

Cultural Agreement and Cultural Exchange Programme for 1988-89 with China, a historic event acclaimed by both countries.

7. In keeping with our decision to honour our departed eminent leaders who have contributed to the socio-political landscape of the nation, centenaries of the following persons were celebrated over the past few years:

1. Acharya Kaka Kalelkar
2. Rabindra Nath Tagore
3. Pt. Madan Mohan Malaviya
4. Maithili Sharan Gupt
5. Pandit Govind Ballabh Pant
6. Dr. Shri Krishna Sinha
7. Dr. S. Radhakrishnan
8. Maulana Abul Kalam Azad
9. Raja Sawai Jai Singh-II
10. Bahadur Shah Zafar
11. Shri. K.M. Munshi.

Apart from these, the nation also observed Sankara Jayanti Mahotsav.

8. In the Department of Arts, action was initiated for nucleating the programmes of the Indira Gandhi National Centre for Arts (IGNCA) as per the conceptual plan of the Centre. Important intiatives included enlargement of the Cultural Reference Library and streamlining of the computerised national information system and data bank on arts, humanities and cultural heritage. Another highlight has been drawing up of a plan for compiling a Tribal Art Atlas. The IGNCA itself was registered as an autonomous trust with Shri Rajiv Gandhi as the President of the trust and Shri P.V. Narasimha Rao as Chairman of its Executive Committee.

9. The Archaeological Survey of India established in 1861 continued its activities in different fields. In the course of explorations, the discovery of 117 sculptured pieces of railing made of red standstone from Sanghol, in district Ludhiana, Punjab proved to be significant.

10. A joint project entitled "Exploratory Survey of Buddhist Sites in UP and Bihar and Excavation at Sravasti" has commenced in collaboration with the Kansai University, Japan. Extensive Chemical preservation work has been undertaken at the Khajuraho Temples, Ajanta & Ellora Caves, and other important sites and monuments. 13 of our monuments and sites have been inscribed in the World Heritage List. Each year, we observe a World Heritage Week beginning 19th November 1988 to coincide with the birth anniversary of Smt. Indira Gandhi whose love and concern for cultural and natural heritage was only two well known.

11. Under the SAARC programme, regular seminars and workshops have been held at various places in collaboration with other member countries.

12. An Archaeological team has been sent to Khajuraho for structural repairs as well as chemical preservation of the famous temple complex of Angkor Vat.

13. The Anthropological Society of India has completed the studies of 3695 communities under the project, "People of India."

14. In the sphere of the Akademies-in pursuance of the decision of the National Council for Culture, a High Powered Review Committee under the Chairmanship of Shri P.N. Haksar has been constituted to review the working of the three Akademies-Sahitya, Sangeet Natak, Lalit Kala as well as the National School of Drama. The report is expected in a year's time.

15 Apna-Utsav was held in New Delhi in 1986 bringing together an array of artists and craftsmen, both folk and classical, from all parts of the country. A similar festival took place in Bombay in 1889.

16. The National Archives of India, New Delhi addresses itself to activities relating to

accession and preservation of records. Two important exhibitions were organised namely "Towards Freedom" and "A Tryst with Destiny", both relating to the story of our freedom struggle with original documents and photographs.

17. The Department of Culture continued to provide financial assistance to dance, drama and theatre ensembles as also to voluntary cultural organisations, and to offer scholarships, fellowships and financial assistance to artistes in different cultural fields. Grants to the extent of about Rs. 45 lakhs were also sanctioned to a number of Buddhist/Tibetan organisations in 1987-88.

SCHEMES FOR TRAINING AND RESEARCH

18. The main objective of the scheme is to spot talent within the age group of 10-14 years and to award scholarships with a view to developing their talents in different cultural fields. The scheme provides for 100 fresh scholarships every year, including 25 reserved for children belonging to families of traditional artists. The scholarships are tenable upto the age of 20 years or completion of first degree of education, whichever is earlier. The scheme is being implemented by the Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi, an autonomous organisation fully financed by the Government of India. There are about 350 live scholars under the scheme.

19. Another scheme is to give financial assistance to young artists of outstanding promise for advanced training within India in the fields of music, dance, drama, painting, sculpture, book illustration and design, woodcraft, etc.

20. There are also schemes for awards every year of 15 senior and junior fellowships. Assistance is also given to needy persons distinguished in letters, arts, and so on. The scheme of Emeritus Fellowships has been formulated so that the artists who have achieved a high degree of excellence in their respective fields but have since retired from the profession, can be given financial support to enable them to continue experimentation in a spirit of financial freedom.

21. The National Museum participated in the Nara Silk Road Exhibition in Japan as part of the Festival of India. The biggest museum event this year was the exhibition "Art Treasures from the State Museums of Kremlin" under the aegis of the Festival of USSR in India. There were armoury, gold and silver jewellery on display, one of the most resplendent collections of 17th Century Moscow.

22. In recognition of India's dual problem of diverse Culture and the need for its airing and exposure the Government and a legion of private organisations have been attempting to conserve and promote culture and to refurbish the cultural identity of the Indian people. It is only too easy for parochialism and bigotry to rend the gossamer fabric of our national cultural identity. To quote Nehru, "The cultural mind, rooted in itself, should have its doors and windows open. It should have the capacity to understand the other's view-point fully even though it cannot always agree with it. The question of agreement or disagreement only arises when you understand a thing. Otherwise, it is blind negation which is not a cultural approach to any question."

An Overview
1988-89

1. The Department of Culture continued to address itself to the preservation, promotion and enrichment of the rich and historic cultural heritage and cultural traditions of the land. The highlights of the year have been the varied activities of the Zonal Cultural Centres, which have focussed on cultural kinships and dissemination of culture, the Festivals of India in Bulgaria and Japan, the Festival in India from USSR, France and the Bulgarian Manifestation. The following seeks to summarise the major activities of 1988-89 under the aegis of the Department of Culture.

2. The Department of Culture comes in with its own schemes of support to creative individuals, institutions and voluntary organisations. To broadly state them — the functions of the Department. Culture are: to administer libraries and museums of national importance; to excavate, conserve and protect ancient monuments and historic rites; to promote performing plastic and literary arts; to administer scholarships in the field of art and culture; to observe centenaries and anniversaries of important personalities; to enter into cultural agreements and friendship treaties with foreign countries. The Department also coordinates matters relating to incoming and outgoing exhibitions.

3. The Festival of India in the USSR came to a memorable close in July, 1988. The winding up presented a kaleisdoscope of concerts, exhibitions and the unveiling of a statue of Mahatma Gandhi at the Lomonovsky Prospect opposite that of the Indira Gandhi statue unveiled by our Prime Minister at the beginning of the Festival.

The Soviet Festival in India concluded on 19th November, 1988 with a spectacular performance at the Indira Gandhi Stadium in the august presence of H.E. Mr. Gorbachev, our President Shri R. Venkataraman, Shri Rajiv Gandhi our Prime Minister, their spouses and a host of other dignitaries. The show had a participation of 600 Soviet and 400 Indian artistes.

4. The Festival of India in Japan was inaugurated by the Prime Minister in April, 1988 in the presence of the Prime Minister of Japan. This was followed by a colourful programme of classical dance and music.

The Cuban Cultural Week was held in New Delhi in April/May'88. Georgetown, Guyana had a weeklong celebration to commemorate the "150th Anniversary of the Arrival of Indians in Guyana".

5. In June this year, in accordance with the terms of the Indo-Bulgarian Cultural Exchange Programme, the Department of Culture organised a Cultural Manifestation.

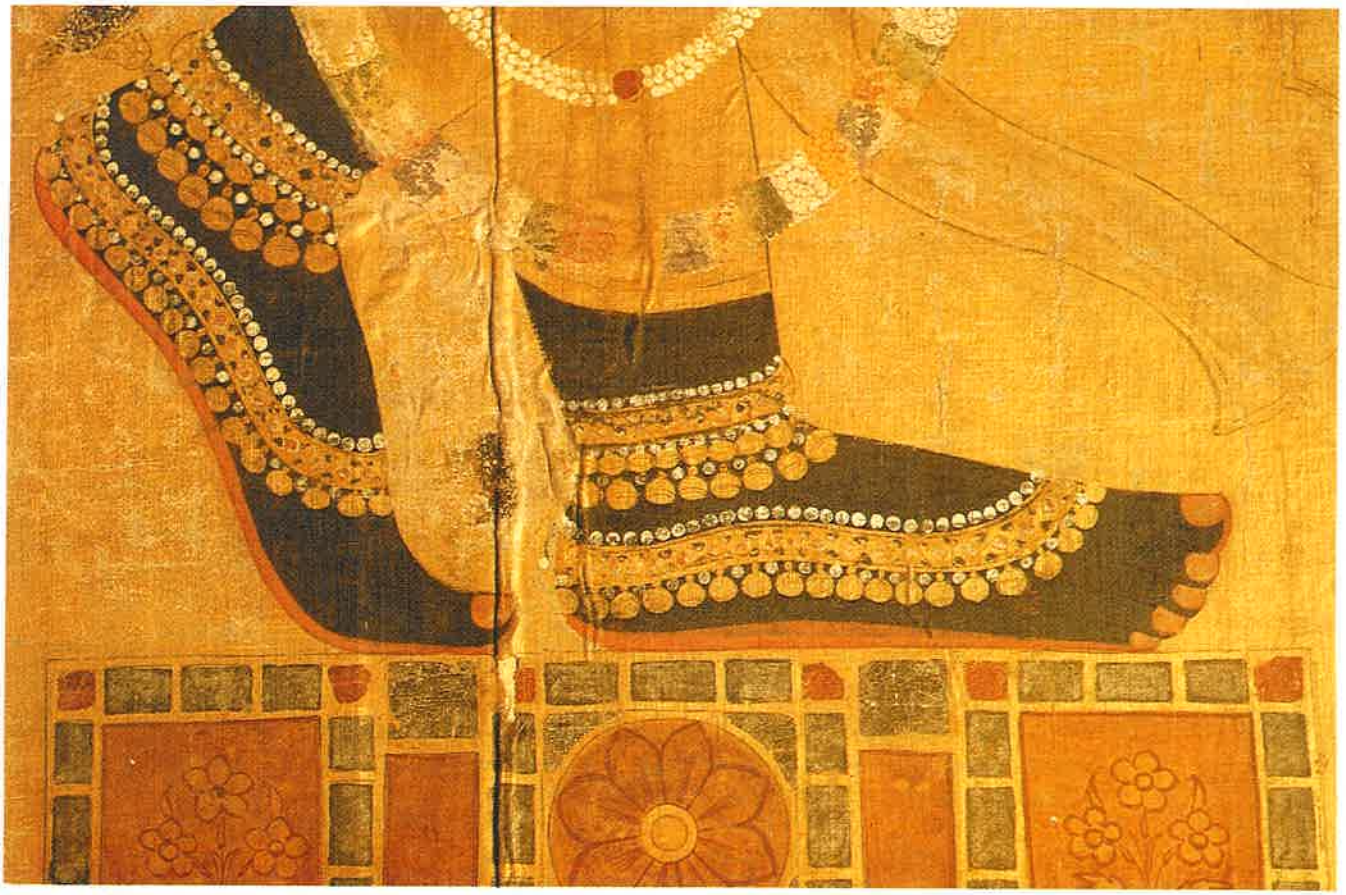

Other Festivals and Manifestations to look forward to is the French Festival to commence early in 1989. There is at the other end of the spectrum, a Festival of India in the Federal Republic of Germany scheduled for 1990. Besides these, a number of Cultural Exchange Programmes with as many as 56 countries and Agreements with 81 countries have been signed envisaging exchanges in many spheres of activity on a reciprocal basis in the years to come.

6. In keeping with our decision to honour our departed eminent leaders who have contributed monumentally to the socio-political landscape of the nation, six centenaries were celebrated in 1988-89, besides the Rashtriya Shankara Jayanti Mahotsava; the nation honoured luminaries like Govind Ballabh Pant, Dr. S. Radhakrishnan, K.M. Munshi, Maulana Azad and Dr. Sri Krishna Sinha. The inaugural and concluding (in some cases the celebrations are yet to be concluded), ceremonies were conducted at a gathering of VVIPs with great solemnity. For a year the occasions were marked by stamp and book releases, bust or statue unveiling, seminars and exhibitions both at the centre as well as at appropriate regional areas.

7. In the sphere of the Akademies — in pursurance of the decision of the National Council for Culture, a High Powered Review Committee under the Chairmanship of Shri P.N. Haksar has been constituted to review the working of the three Akademies —Sahitya, Sangeet Natak, Lalit Kala as well as the National School of Drama. The report is expected in a year's time. The Akademies have been active throughout the year and mention may be made of — The Traditional Terracotta Exhibition, — a product of the SAARC Terracotta Workshop held earlier in Madras. The Lalit Kala Akademi participated in the International Book Fair at Beijing, China, with books from the National Book Trust. This Akademi, again, under the Exchange Programme with Poland, organised an exhibition of Polish Modern Art both at Delhi and at Madras. The Sangeet Natak Akademi awarded its Fellowship to Shri Kumar Gandharva; 24 artists in various fields of performing arts were also given awards.

8. Begun in 1984, the Lok Utsav is an event greatly looked forward to — with its traditional music, dance and theatre performances by artists from all over the country. The 5th Lok Utsav organised by the Sangeet Natak Akademi, was held in Delhi in October '88 with 250 folk and tribal participants.

9. Our museums, galleries and archives may rightly be regarded as the crucibles of our cultural heritage, while our Archaeological and Anthropological Societies continue with their quest into the past — to throw fresh light and further our knowledge of our evolution.

10. The National Museum participated in the Nara Silk Road Exhibition in Japan as part of the Festival of India. The biggest museum event this year was the exhibition 'Art Treasures from the State Museums of Kremlin' under the aegis of the Festival of USSR in India. There were armoury, gold and silver jewellery on display — one of the most resplendent collections of 17th Century Moscow.

11. The Indian Museum, Calcutta, in collaboration with the State Museum, Meghalaya and Directorate of Museums, Assam, organised two Inter-State Exhibitions on 'Heritage of our Decorative Arts' sponsored by the Department of Culture, Government of India.

The 102nd Birthday of Nawab Mir Yousuf Ali Khan Bahadur Salar Jung III was celebrated in the Museum from 31st May, 1988 to 6th June, 1988. The celebrations were inaugurated by Dr. Alladi P. Raj Kumar, Minister for Backward Class Welfare and Tourism, Government of Andhra Pradesh.

12. Exhibitions by National Gallery of Modern Art, New Delhi — Under the Cultural Exchange Programme, the following art exhibitions with different countries were exchanged —

Out-going Exhibitions — "Indian Women Artists" sent to Bulgaria (Sofia) and Poland, "Indian Contemporary Art" was sent to Japan, "Paintings of Rabindranath Tagore and his Relics" were sent to Japan.

Incoming Exhibitions — "Poetry through Material, Light and Movement" from FRG, "Russian Paintings" 19th to early 20th Century under the aegis of Festival of USSR in India, "Visions of Inner Space" from the University of California, "India through the eyes of Soviet Artists" under the aegis of Festival of USSR in India, "Graphics of the

70's" from the FRG, "Collection from the Josip Broj Tito Art Gallery" of the Non-Aligned Countries, Titogard, Yugoslavia.

13. The Nehru Memorial Museum which illustrates through visual materials, the life and times of Jawaharlal Nehru, continued to be the focus of interest for the visitors from India and abroad. About eight lakh visitors came to the museum: which means an average daily attendance of 3817 on working days; and 4337 visitors on Sundays and other holidays. It also continued to figure prominently in the itenerary of dignitaries visiting the capital from India and abroad. The exhibitions which are part of the permanent display in the museum also continued to evoke deep interest of the visitors.

14. The Nehru Memorial Library, which focuses upon modern Indian History and Social Sciences, continued to grow in holdings as well as in the quality of its services. 3685 books were added taking the stock up to 1,16,652. The titles in the Nehruana collections have gone up to 1,095 the Gandhiana to 1,677 and the Indirana has 282 titles. The books acquired under these three sections are in English, Hindi and in various other Indian and foreign languages. The number of newspaper files and dissertations (on microfilms) rose to 4,668 and 825 respectively. The photo section of the library raised its collection of photographs to 74,482.

15. Among the discoveries by the Archaeological Survey of India this year were the excavations on Banawali — a complete moat associated with Harappan fortification has come to light. At Sangol in Punjab excavations revealed kiln manufacturing seals. The ASI celebrated the World Heritage Day on April 18, 1988 during which special plaques were unveiled at the 13 monuments inscribed in the World Heritage List. A World Heritage Week was then organised beginning November 19, 1988 to coincide with the birth anniversary of Smt. Indira Gandhi whose love and concern for cultural and natural heritage was only too well known. Photo exhibitions were held at the monument sites.

16. In the Taj Mahal complex at Agra the replacement of the decayed ornamental dasa stones, steps, verandah, flooring, plastering of the walls and moulded plaster in the ceiling was done in the forecourt. Replacement of the damaged and decayed stones, pointing of facade walls, provision for new moulded and carved ornamental stones, drinking water fountains of the western side enclosure were attended to.

17. The Air Pollution Laboratory at Agra has been constantly monitoring the variations of sulphurous gases and various other factors which may affect the famous monuments at Agra and carrying out research for their check and the Central Laboratory of the A.S.I., at Dehra Dun has been conducting various research projects relating to different problems associated with chemical treatment and preservation of monuments, antiquities and paintings. TG-DTA studies of black potteries have revealed that the firing temperature of these objects have been between 300‡C to 600‡C. Similarly, potteries and other objects are also being studied in the laboratory.

18. The Seven Zonal Cultural Centres set up in the country during 1985-86 and 1986-87 have become fully operational. They are bristling with activities and each month, in addition to celebrating local festivals and national events with great fanfare and gusto they often collaborate to give festivals on intra-national rather than just a zonal on regional colouring.

19. The South Central Zone Cultural Centre (SCZCC) conducted an Adivasi Lok Kala Mahotsava at Nagpur with a participation of 224 artists from Andhra Pradesh, Karnataka, Madhya Pradesh and Maharashtra.

A graphics studio was inaugurated in the West Zone Cultural Centre (WZCC), the facility is expected to spark off a number of new activities and experimentations. Himachal Day in Shimla (April 27, 1988) was observed with a cultural manifestation by the North Zone Cultural Centre; the celebrations lasted till April 30 and the Prime Minister graced the concluding function. The celebration was in accordance with the Prime Minister's meeting in December last year wherein it was decided there should be more inter-zonal events in each Zonal Cultural Centre.

20. A Beach Festival at Puri in collaboration with the Orissa Government was a major activity of the East Zone Cultural Centre, 74 artists regaled a vast crowd at the Puri beach. The SCZCC, during the summer vacation organised a workshop for the benefit of the

underprivileged children of Nagpur. They were given training on various crafts and an opportunity to display their innate talents.

21. "Parvatiya Parv" as a festival is almost gaining traditional popularity, conducted by the North Central Zone Cultural Centre (NCZCC) once a year the festival of dance and music by eminent and local artists move across the hills of Garhwal and Kumaon of Uttar Pradesh.

The North Zone Cultural Centre organised a pottery workshop at Gurgaon, both professional and 'hobby' potters attended from the States of Punjab, Chandigarh, Rajasthan and Haryana.

At the Onam Festival organised by SZCC at Cannanore — fifty artistes were sent out by the WZCC to participate.

22. The WZCC participated in the popular annual "Phool Walonke Sair" Festival aimed at national integration at New Delhi in October.

The Cultural Centres apart from organising their own festivals and participating at State and inter-zonal levels also collaborate with international festivals, as the SCZCC did with the Festival of USSR-India programme of Ballet at Nagpur in September.

23. Anthropological Survey of India, Calcutta — The Survey concentrated its efforts on the national project, 'People of India', which had been launched in October, 1985. The project seeks to generate uptodate information on 4986 communities of the country and to highlight the linkage that bring them together. Most of the 200 scientific and technical members of the Survey are deployed on this project. Until November 1988, field work for 4373 communities has been completed. Writing of reports, completion of abstracts and filling up of computer formats were done for 2634, 3946 and 3956 communities respectively. The general formats have also been filled for 2663 communities.

24. Rashtriya Manav Sangrahalaya, Bhopal an autonomous organisation under the Department of Culture is dedicated to the depiction of the story of mankind in time and space.

'The Tribal Habitat', an open-air exhibition of tribal houses highlighting aspects such as architecture, material culture, life style, environmental features and so on was organized. It was the RMS's first permanent exhibition opened to the public.

25. The collections of the National Archives of India were further enriched by acquisition of the following records: Public records — 5147 files belonging to the following Ministries/Departments for the period (1873-1950) were accessioned; Ministry of Defence, Ministry of External Affairs and Cabinet Secretariat; Private Papers — A set of Gandhi papers covering the period from 1905-48 and comprising 4335 items titled Gandhi-Polak Correspondance has been transferred to the custody of National Archives of India after these were acquired by the Government of India through a publilc auction held at the Sotheby's, London. The collection includes letters, telegrams, notes, articles, printed materials, press cuttings, photographs and so on. The letters are mostly written by Gandhiji to Henry Polak, Gandhiji's articled clerk and legal partner in Johannesburg.

26. The National Library is the biggest Library in the country with a collection of about 1.96 million volumes housed mainly at Belvedere, Calcutta. It is one of the recipient libraries under the provisions of the Delivery of Books Act, 1954 (amended 1956) and is the foremost repository of the United Nations documents. It also acts as a referal centre for research scholars.

The prime source of acquisition of current books, newspapers and journals, published in India is under the Delivery of Books Act. English Books and Journals published abroad are acquired through purchase. The Library has a book exchange programme with 192 institutions in 80 countries. This programme is an excellent source for the acquisition of foreign publications otherwise not obtainable through normal trade channels.

During the year, the National Library published four publications namely (1) Conservation of Library Materials; (2) Rabindra-granthasuchi (in Bengali), compiled by Swapan Majumdar; (3) Bibliographical Central in India; and (4) Indological Studies and South Asia Bibliography.

27. The Central Secretariat Library, including the Hindi and Regional Languages Wing at Bahawalpur House and a branch library at Ramakrishna Puram, New Delhi have been engaged in providing research and reference services to government organisations, members of the library, research scholars and others. A small collection of material for lending in English, Hindi and other Indian languages is maintained for members only.

The Library added about 8661 books in Hindi, English and other regional languages to its main collection of over seven lakh volumes. In addition 32177 items of Central and State Government publications including gazettes, legal documents and proceedings of the legislative bodies, were received by the library. Official publications received from International Agencies, such as UNESCO, United Nations, ILO and other Foreign Government exceeded 2330. The library has also received 400 U.S. Government publications in microfiche forms.

28. The Raja Rammohan Roy Library Foundation, Calcutta is an autonomous organisation engaged in the promotion of library services in the country, which it does in cooperation with the State/Union Territory Governments.

In order to improve public library services in the country, it has implemented nine schemes of matching and non-matching assistance. The volume of assistance during 1987-88 amounted to Rs. 189.00 lakhs. About 6000 libraries at different levels were assisted.

29. The Khuda Bakhsh Oriental Public Library, has emerged as one of the richest collections of manuscripts in the sub-continent with over 1600 manuscripts, 90,000 old and rare printed books and over 200 paintings of Mughal, Rajput, Iranian and Turkish schools. Declaring it by an Act of Parliament an Institution of National Importance, the Government of India took over its control in 1969. It is now managed by a Board headed by the Governor of Bihar.

30. The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) an autonomous body fully financed by the Government of India is responsible for propagation of culture among college and school students.

During the year the Centre organised six Orientation Courses in which 414 teachers were trained from different States and Union Territories. For teachers and students, various workshops were organised in different parts of India.

Five programmes were conducted to train teachers in Puppetry for Education, 400 teachers took part. Under the Programme "Teacher Educator and Education Administrator" six seminars with 180 teachers were organised. A special programme for American School teachers and college teachers on "Ancient and Modern India" was also organised in July-August 1988.

31. The CCRT has taken up five schemes connected with the Programme of Action under the New Education Policy. Educational facilities to over two thousand school students to study "India's Artistic Heritage in museums, visits to important historical monuments were provided. Various art forms in slides, photographs and recordings were documented.

32. To promote national and emotional integration through community singing, various camps are being organised in different parts of the country since 1982. The National Council of Educational Research and Training (NCERT) is implementing this Scheme. During 1988-89 NCERT intends to hold 24 regional level camps, and 4 national level camps.

33. Out of 773 feature films certified in 1988, 471 were granted 'U' certificates, 95 'UA' and 207 'A' certificates.

Of the 118 foreign feature films certified in 1988, 52 were given 'U' certificates, 11 'UA' certificates and 55 'A' certificates. 43 foreign films were refused certification.

The Central Board of film Certification certified, 1662 Indian Short films (1630 with 'U' certificates, 3 with 'UA' and 29 with 'A') while the number of certified foreign shorts was 486 (464 with 'U' certificates, 3 with 'UA', 12 with 'A' and 7 with 'S').

The total number of long Indian films and foreign films certified during 1988 was 5 and 4 respectively.

424 films was classified as predominantly educational films.

34. The CBFC issued certificates to 589 video films. Of these, 41 were Indian feature films, 42 Indian long films (other than feature films) 6 foreign long films, 570 video films received 'U' certificates, 2 'UA', 6 'A' and 11 'S' certificates. 66 Indian shorts and 434 foreign shorts were also certified.

35. Financial assistance — The Scheme provides for financial assistance to persons distinguished in letters, arts and such other walks of life who may be in indigent circumstances and are above 58 years of age. In certain cases their dependents who have been left unprovided for are also considered under the Scheme. Expenditure is shared by the Government of India and the respective State Governments on 2:1 basis. In exceptional cases, the entire expenditure is borne by the Government of India. At present, there are 474 beneficiaries and 60 persons were selected in 1988-89.

36. The Gandhi Smriti and Darshan Samiti has organised periodical exhibitions, cultural and educational programmes, seminars, conferences, camps, publications, competition, debates and film shows on Gandhiji and other national leaders.

The Samiti is setting up an information and documentation centre and proposes to establish a complete reference library of Gandhian literature.

The Samiti proposes of publish lectures, monographs and so on, on Gandhiji and make them available to scholars, libraries and other interested parties.

37. It is proposed to draw up programmes, exclusively for youth and children and there is a scheme "Taking Gandhi to Schools".

The Gandhi Smriti and Darshan Samiti have also envisaged a scheme for popularising Gandhiji through the supply of photographs to institutions whose aims and objectives are Gandhian in thought and action.

38. The proposal for the merger of the Huen-T-sang Memorial Hall at Nalanda constructed by the Government with the Nav Nalanda Mahavihara, Nalanda is under the consideration of the Government of India in consultation with the Government of Bihar.

39. The Department of Culture was notified under Section 10(4) of the Official Language Rules, 1976, on the basis that 80% of the staff in the Department have a working knowledge of Hindi. The Annual Programme for the progressive use of Hindi has been received from the Department of Official Language and brought to the notice of all concerned.

40. The above is a synoptic summary of the salient aspects of the activities of the Department of Culture. The Chapters that follow give a detailed review of the activities under various heads.

CHAPTER 1

Organisation

1.1 The Department of Culture forms a constituent part of the Ministry of Human Resource Development set up under 174th amendment to the Government of India (Allocation of Business) Rules, 1961, and is headed by the Minister of State, under the overall charge of the Minister of Human Resource Development. The Secretariat of the Department is headed by the Secretary, assisted by an Additional Secretary, and two Joint Secretaries. The Festival of India Cell is headed by a Director General, Festival of India, who reports directly to Secretary. The set up of the Department of Culture has been indicated in the Organisational Chart at Annexure-I.

1.2 The Department has two attached offices, viz., The Archaeological Survey of India and the National Archives of India, and a number of subordinate offices and other autonomous organisations under it.

1.3 The Department of Culture administers several innovative and support schemes, which have a vital role to play in the dissemination of culture. Under the Scheme of Zonal Cultural Centres, 7 Zonal Cultural Centres have been set-up, as Registered Societies at Patiala, Santiniketan, Thanjavur, Nagpur, Kohima, Udaipur and Allahabad.

1.4 Some of the important functions of the Department of Culture are to administer libraries and museums of national importance; to promote performing, plastic and literary arts; to administer scholarships in the field of art and culture; observance of centenaries and anniversaries of important personalities, memorials, and cultural agreements and cultural exchange programmes with foreign countries. The Department also coordinates matters relating to incoming and outgoing exhibitions, like those undertaken under the Festival of India in the U.S.A., France, U.K., Sweden, USSR and the like.

BUDGET

1.5 The Budget provision for 1988-89 and 1989-90 for the Department of Culture are as under:

(Rs. in lakhs)

PARTICULARS	BUDGET ESTIMATES 1988-89	REVISED ESTIMATES 1988-89	BUDGET ESTIMATES 1989-90
Demand No. 50 (now revised) Art & Culture	123,59	123,59	117,14

Note: This includes provision of Secretariat and Archaeological Survey of India

I. ATTACHED OFFICES

1. Archaeological Survey of India, New Delhi.
2. National Archives of India, New Delhi.

II. SUBORDINATE OFFICES

1. Anthropological Survey of India, Calcutta.
2. National Museum, New Delhi.
3. National Gallery of Modern Art, New Delhi.
4. National Library, Calcutta.
5. Central Reference Library, Calcutta.
6. National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property, Lucknow.
7. Central Board of Film Certification, Bombay.

III. AUTONOMOUS ORGANISATIONS

1. Rashtriya Manav Sangrahalaya, Bhopal.
2. National Council of Science Museum, Calcutta.
3. Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi.
4. Sangeet Natak Akademi, New Delhi.
5. Sahitya Akademi, New Delhi.
6. Lalit Kala Akademi, New Delhi.
7. National School of Drama, New Delhi.
8. Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi.
9. Gandhi Smriti and Darshan Samiti, New Delhi.
10. Allahabad Museum, Allahabad.
11. Delhi Public Library, Delhi.
12. Raja Ram Mohun Roy Library Foundation, Calcutta.
13. Central Institute of Higher Tibetan Studies, Varanasi.
14. Central Institute of Buddhist Studies, Leh (Ladakh).
15. Victoria Memorial Hall, Calcutta.
16. Indian Museum, Calcutta.
17. The Asiatic Society, Calcutta.
18. Salar Jung Museum, Hyderabad.
19. Khuda Baksh Oriental Public Library, Patna.
20. Rampur Raza Library, Rampur.
21. Jallianwala Bagh National Memorial Trust, Amritsar.
22. T.M.S.S.M. Library, Thanjavur.

CHAPTER 2

Archaeology

Archaeological Survey of India

2.1 The Archaeological Survey of India (ASI) founded in 1861 with the primary objective of locating, preserving, conserving and studying the archaeological remains in the country, has been carrying out its functions effectively. With its Directorate at New Delhi, it has developed into a vast organisation with sixteen Circles, two mini Circles and thirteen specialised branches and a few other units located in different parts of the country.

2.2 The principal functions of the Survey include preservation and conservation of centrally-protected monuments, archaeological sites and remains, maintenance of archaeological gardens around monuments, archaeological sites and remains; chemical preservation of monuments and antiquities; exploration and excavation of ancient sites; discovery and deciphering of inscriptions; establishment and maintenance of Site Museums; promotion of specialised studies in various branches of archaeology through the Institute of Archaeology, architectural survey of secular and religious buildings; undertaking excavation and exploration, and conservation of monuments and sites and studies on different aspects of archaeology both in India and abroad, publication of guide books on monuments, archaeological sites and remains, excavation reports, monographs on architectural studies, coloured and black and white picture postcards, and so on.

2.3 The Survey's functions also include the implementation of the Antiquities and Art Treasures Act, 1972, to regulate export trade in antiquities and art treasures and to prevent smuggling and fraudulent dealing in antiquities.

EXPLORATION

2.4 In the course of carrying out the village-to-village survey and exploration in parts of Assam, Gujarat, Jammu and Kashmir, Haryana, Himachal Pradesh, Karnataka, Madhya Pradesh, Maharashtra, Orissa, Punjab, Rajasthan, Tamilnadu, Uttar Pradesh and West Bengal, a large number of sites, and remains yielding antiquities from the pre-historic to medieval periods were discovered. Amongst important discoveries, mention may be made of temples of medieval period and loose sculptures in district Goalpara of Assam; a rectangular Harappan seal in terracotta near the excavated site at Lothal, district

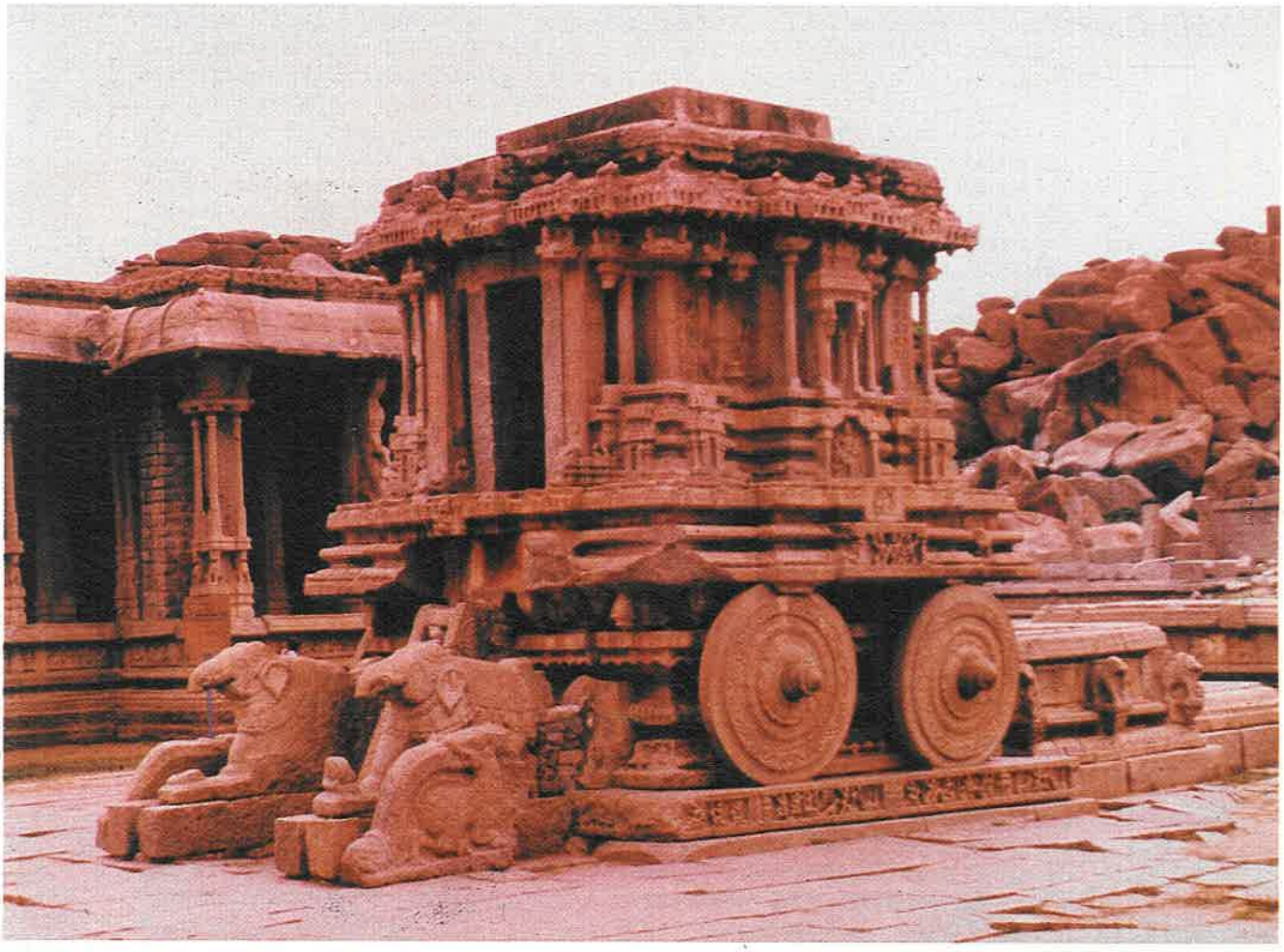

Ahmedabad, hero stones, microliths, medieval sculptures of Brahmanical gods and goddesses and an old medieval dam and palaeolithic tools in district Surat of Gujarat; a temple complex at Atah, a mound at Basera, baolis with steps and an old temple with octagonal Sikhara at Chulukana, on old well, an extensive mound at Jurases, Jattipur and an Idgah at Rakshera; a medieval Siva temple at Saher Malpur in district Karnal of Haryana; stone sculptures, temples including a wooden shrine & baolis in Mandi district Himachal Pradesh; a stone age site at Alchi district Ladakh; and historical sites at Stock, Randhirpur and Nimmo; monasteries at Rungdum, Padam, Phey, Sani, Dzonkhul, Karsha Rizing, Tonda, Bardan, Zangla and Tungri; rock carvings at Biyama Khanto, Padam, Phey, Tonde and Zangla; rock-cut sculptures at Kartche-Khar, and Zangla in Zanskar valley of Jammu and Kashmir; sites indicating iron smelting activities and bastions in Toranagal taluka of district Bellar; few medieval habitation mounds in Mulbagal taluka; inscribed hero stones in Kannada, characters and inscriptions of 9-10 century A.D. at Trimmarawa tanahalli and other places in district Kolar; an inscription of Rashtrakuta period at Isur, district Shimoga; Hoyasala temples, two inscriptions at Pattadevarahalli district Tumkur; and at Murukanahalli, a number of sculptures of Hoyatala period Sindhagatta of district Mandya; and a mutilated Bhairava image of the early Chalukyan period at Aihole, district Bijapur of Kamataka; a step well of Paramara period at Gulna, district *Dhar*; ruins of temples of the Paramara period near Badakeshwara, district Hoshangabad; a chalcolithic site near village Kotwar, district Morena; lower palaeolithic artifacts from Balwara, Bijapur Kalyan; middle paleolithic artefact at Kukdal, microliths at Karoli, early historical site and stone objects and Bijalpur Kalan, incised design on the brick, iron objects and copper ring at Kotra a historical site at village Bijalpur Khurd, sculptures in temple remains at Jogibida and memorial stones at Bijalpur Kalan of district East Nimar of Madhya Pradesh; mutilated figure of a goddess Bhadangwari, Sivalinga and a sculpture of Ganesha at Lodatgaon, a medieval dam and temple of Khandoba at Manmodiwari; Durga temple and loose sculptures at Sindkhed; an unfinished rock-cut cave with a portico and two pillars at Vakarul, district Raigad, temple sites in district Dhenkaral; rock shelters with paintings and a royal summer bath at Khariar and adjoining area in the Kalhandi district of Orissa; two ancient sites and remains of a Haveli in district Bharatpur of Rajasthan; medieval temples at Umrarai, Chakwa Burz, Longpur, an old mosque at Dugaoli, early historical sites and Tamil inscriptions at Erikalangal; Durga temple at Siruvanakunaram, Iyyanar temple at Vadakkuputhur megalithic burials, cairn circles and early historical and unusual quern, Tamil inscriptions on a standing stone slab, Siva temple with a five hooded snake, Nandi Lakshmi Narayan temple with a beautiful sculpture of Vishnu and Lakshmi at Kongarai Mambattu, neolithic and microlithic tools, Vishnu temple with a monolithic lamp at Orathi in district Chengalpattu.

TEMPLE SURVEY

2.5 Documentation of old Sarai and cenotaph of Chhatri of Peshwa Bajirao-I at Raver District Khargone, survey of Paramara temples in districts Dewas, Ujjain, Dhar, Mandasaur in Madhya Pradesh; Paramara temples at Purgilana and Kothadi, district Jhalawar of Rajasthan were undertaken for detailed study and documentation.

The survey of the Chola temples in Karnataka is in progress. Secular buildings like the library of Dara Shikoh, area around Flag Staff Tower, Badli-Ki-Sarai, Rang Mahal area, remains of Sultan Charist Tomb in the Union territory of Delhi; architectural remains at Kankhal, district Saharanpur, U.P.; and district Jaisalmer of Rajasthan, were surveyed for studies and documentation.

EXCAVATION

2.6 Excavations were undertaken at Kushi, Banawali, Hampi, and Sannati, (in collaboration with Society for South Asian Studies, London) Karnataka, Khajuraho, Daulatabad, Lalitgiri and Udayagiri, Sanghol, and Sravasti, (in collaboration with Kansai University, Japan).

Interesting structural remains, and a number of antiquities were brought to light like terracotta figurines, beads, balls, conical objects, seal and sealing, plaques, brick platform and pottery of Kushana period at Kushi; antiquities from historical period to late medieval period at Thanesar; stone water cistern, a covered channel with terracotta pipes inside it

Ardha Mandapa Navaranga of Veerabhadra Temple, a large number of architectural members, basement of platforms a drain in north-south side at Hampi, a broken, inscribed memorial stone slab, lead coins of Satavahanas, glass beads and copper alloy object at Sannati; a stone structure of Pratihara period, terracotta beads, pendants, animal figurines, gamesman, discs, dagger, spearheads, pottery, stone and glass beads, seals, iron arrow heads, terracotta lamps, spindles, tooth nails, a sword, cowrie shells, ornaments and pottery of Yadava and Muslim periods at Daulatabad were among the antiquities found.

EPIGRAPHY

2.7 During the epigraphical survey, 316 stone inscriptions and 95 copper plate inscriptions from various parts of India have been copied for study. Of the epigraphical discoveries, mention may be made of a twelfth century Kannada record from Hemavathi, Andhra Pradesh, regarding reconstruction of temples; a badly worn out painted inscription in Brahmi characters closely resembling Asokan Brahmi at Chhibarnala, Madhya Pradesh; an inscription from the island/Maharashtra in Brahmi characters; a Prakrit inscription in Brahmi characters from Lalitgiri in Orissa; a pillar inscription from Thanjavur in Tamilnadu, a Salankayana inscription from Allahabad; a record in Prakrit and Sanskrit from Mathura. 111 Persian and Arabic inscriptions were copied from Bihar, Gujarat, Haryana, Rajasthan and Tamilnadu for detailed study.

CONSERVATION, PRESERVATION AND ENVIRONMENTAL DEVELOPMENT OF MONUMENTS

2.8 There are 3527 centrally protected monuments and sites in the country, and are looked after by 16 Circles and specialized branches, headed by Superintending Archaeologists.

2.9 Besides the normal up keep and maintenance, the Archaeological Survey of India has identified 153 monuments/sites for special attention during the VII Five Year Plan. Conservation programmes include both structural repaires to the monuments and excavated remains of national importance and also the chemical preservation of the monuments. In addition 452 monuments/sites are also being carried out.

In the Taj Mahal complex at Agra the replacement of the decayed ornamental dasa stones, steps, verandah, flooring, plastering of the walls and moulded plaster in the ceiling was done in the forecourt. Replacement of the damaged and decayed stones, pointing of facade walls, provision for new moulded and carved ornamental stones, drinking water fountains of the western side enclosure were attended to.

2.10 In Agra Fort complex, replacement of decayed and missing stones, reconstruction of Kangooras, under-pinning, pointing and plastering was completed at Jama Masjid, Agra dismantling and reconstruction of the remaining two bulged minarets, at Akbar's Tomb, Sikandara, relaying of lime cement concrete on the roof terrace of the main tomb, replastering of outer walls, have all been taken up and at Sini-Ka-Rouza, Agra, a protection wall of lakhauri brick masonry has been provided on the river side.

2.11 Restoration of collapsed walls and barbed wire fencing at Badrinath Temple, Dwarahat, reconstruction of broken stone wall including pointing of the facade stones at Radha Vallabh Temple, Brindaban has been taken up.

2.12 In Aurangabad Circle, resetting of the uneven stone flooring and removing of dead plaster relaying of Hemadpanthi temple at Daulatabad Fort and restoration work at Ajanta and Ellora are in full swing. Replacing of broken and missing ceiling stone slabs, laterite stone pavement around the Mahadeva Temple at Tambde Surl; repairs and applying wood preservative and repairs to the doors and windows of Se Cathedral; debris clearance to expose the plinth of the St. Augustine Church; restoring the missing and dilapidated portion of the Bom Jesus Church at Velha Goa; filling of breaches of the fallen portion of fort wall at Aguada Fort; laying of foundation for transplantation of Mahadeva temple of Kurdi are all in various stages of completion.

2.13 In Bangalore Circle, relaying of the cement concrete in the bed of the tank, resetting of the edge stones and reconstruction of the compound wall of Asar Mahal, Bijapur; comprehensive repairs like reconstruction of the sunken stone wall of the eastern and the southern prakara wall at Amruteshwar temple are underway.

2.14 In Bhopal, construction of the RCC pillars in caves 4 and 6, laying of lime concrete on the roof of Bagh Caves; restoration of the facing stones of Koshak Mahal, water-tightening the domes of Jama Masjid at Chanderi; restoration of the plinth platform and fencing the archaeological area around the temple at Khajuraho are in various stages of completion.

2.15 In Calcutta, minor repairs to the dining and dancing hall in Cooch Bihar Palace; repairs to Murli Mohan temple and various other temples at Bishnupur; Baidyapur Kalna, Ramchandra temple complex Lotton Mosque, Cunamat Mosque, Chamkata Mosque, Lukochuri gate, Adina mosque at Malda; repairs to the boundary wall of Hanseswari and Basudeva temples at Bansberia; Hazarduari palace, Murshidabad tomb and mosque of Murshid Kuli Khan at Katra Murshidabad, are also nearing completion.

2.16 In Chandigarh structural repairs at the historic Buddhist monastery at Tabo in Lahaul and Spiti valley; reconstruction of the retaining walls near the Hamam and graveyard, reconstruction of retaining wall between Jahangiri and Andheri Gates, removal of debris around the temples of Adinath and Ambika Devi, concreting of the flooring in the cells in Kangra Fort will shortly be over.

2.17 In Delhi underpinning and watertightening the disturbed and bulged mansonry of the Adilabad Fort; structural repairs, replacing of corroded iron clamps of the ground floor at Qutab Minar; structural conservation of Humayun's Tomb; restoration of the pulversised terrace, floor concrete, extensive watertightening at Isa Khan's Tomb; Baoli Mosque and the adjacent Mosque; restoration of the southern fortification wall at Kotla Ferozshah are at various stages of completion.

2.18 In Hyderabad, jobs are being completed like watertightening of the roof of Raja Rani Mahals, providing missing stone Chajjas at Chandragiri Fort; removal of decayed plaster from the ceiling, watertightening the domes and fixing grills in the mosque at Gulbarga; restoration of fallen gateways, repairs to breaches in walls of Gooty Fort; resetting of the tilted Kalyan Mandapa of Shri Chintala Venkataramana temple (Tadipatri); improving the environs around the monolithic bull at Lepakshi; replastering the external surface of the Gopura of Shri Somayananda temple at Nandalur; and laying of floors and watertightening the terraces of cellars in Golconda Fort.

2.19 In Jaipur structural repairs to the moat wall, reconstruction of portions of the fort wall at Bharatpur Fort; replacing the broken beam in Maharani's room of the Gopal Bhavan of Deeg Palace; filling of embankment of Jawahar Burj at Bharatpur; replacing the damaged stone beam and lintel of Deo Somanath; reconstruction of damaged portion of the Jaisalmer Fort; structural repairs to monuments in Tonk, Chittorgarh, and in Lucknow Circle, underpinning and pointing of the stupa and monastery of Sakya, (Piprawah) and lime plastering the walls, and laying of flooring in Jhansi Fort are work taken up for the year.

2.20 The Madras Circle has undertaken replacement of the damaged beams in the Aman Shrine of Panchanadeswara temple, (Pondicherry) replacement of the ceiling slab and chajjastones of the terrace and watertightening of the terrace of Kalyan Mandapa of Shri Sikhanatha Swamy Temple at Kudumiya Malai, Pudukottai; laying of stone flooring and watertightening of the terrace of Shri Sundara Chotiswara temple (Kulathur); repairs to the excavated remains at Nalanda; laying of pathways at the Hussainshah Suri's and Shershah Suri's tomb at Sasaram and reconstruction of the boundary wall and laying of pathways at Kumrahar.

2.21 Similarly, the Srinagar and Vadodara Circles are finishing the structural repair and restoration work undertaken by them.

CHEMICAL PRESERVATION

2.22 Chemical conservation was carried out on the centrally protected monuments, remains and sites by the Science Branch of the Archaeological Survey of India with its headquarters at Dehra Dun and regional and Zonal offices at Bhubaneswar, Hyderabad, Ajanta, Indore, Agra, Madras, Patna, Chandigarh, Aurangabad, Mysore, Vadodara and Delhi.

2.23 In Assam, chemical cleaning for eradication of thick vegetational growths, at Shivdol and Vishnudol temples at Sibsagar; and in the Union Territory of Daman, treatment and

reframing of highly damaged, soiled and faded paper paintings of Holy Jesus Church were carried out.

2.24 Chemical conservation work in Gujarat have revealed the beauty of the sculptures of Lord Shiva, Vishnu and Varah at Patan; removal of old and hard incurstations of lime plaster by chemico-mechanical means, with care to preserve the disintegrating sculptures and structure of the Sun Temple at Modhera is nearing completion.

2.25 In Madhya Pradesh, a large panel of mural painting from Cave No. 4 has been mounted in fibre glass and epoxy resin at Bagh Caves; and by the removal of thick deposit chemically the Mahamandopa of the Kandariya Mahadeo Temple, Khajuraho was restored to its original texture and beauty. In Maharashtra, beautiful paintings of human figures with pavilions of animals have been exposed and preserved by chemical treatment on Cave No. 17 as per recommendations of the 'Expert Committee' at Ajanta Caves. The Kirti Stambha, Dhwaj Stambha and sculptures of the Kailash temple were subjected to chemical treatment. During the course of chemical treatment in the Tin-Tal Cave (Cave No. 12) of Buddhist association at Ellora belonging to 8th and 9th century A.D., new paintings consisting of flying figure, floral, scrolls and ancillary figures on either side of Bodhisatva have been discovered.

2.26 The removal of yellowishness caused by superficial deposition, was carried out in U.P. from the external marble wall by using Clay Pack Technique at Taj Mahal, Agra. Walls of Prince Khusro Tomb were chemically cleaned externally to remove accretions and this was followed by fungicidal treatment and preservation at Khusro Bagh at Allahabad. External surfaces of group of temples were under chemical treatment and preservation to get rid of algae, fungi and other microphytes at Jageshwar group of temples at Almora and in West Bengal. Various museum objects like paintings, marble objects, ivory objects, metal show pieces, wooden furniture and books from the vast collection in the library were chemically treated/fumigated at the Hazarduari Palace Museum Murshidabad.

LABORATORIES

2.27 The Air Pollution Laboratory at Agra has been constantly monitoring the variations of sulphurous gases and various other factors which may affect the famous monuments at Agra and carrying out research for their check and the Central laboratory of the A.S.I. at Dehra Dun has been conducting various research projects relating to different problems associated with chemical treatment and preservation of monuments, antiquities and paintings. TG-DTA studies of black potteries have revealed that the firing temperature of these objects must have been between 300°C to 600°C. Similarly, potteries and other objects are also being studied in the laboratory.

2.28 Studies of pigments from ancient paintings from Tabo monasteries, Khusro Bagh, Deeg Palace, Kila Androon (Patiala) have been undertaken and experts from the A.S.I. team working at Angkor Vat temple, Kampuchea are executing chemical treatment and preservation jobs. The processes involved are chemical to eradicate the cryptogamic growth, consolidation, anti micro-biological treatment and preservation.

2.29 A team from the Science Branch continued the work and restoration of murals in various monasteries as desired by the Government of Bhutan.

ENVIRONMENTAL DEVELOPMENT

2.30 Environmental and horticultural operations are supervised by the Horticultural Branch under the Chief Horticulturist with headquarters at Agra and zonal offices at Delhi, Agra and Mysore.

2.31 Attempts to landscape and layout new archaeological gardens are being developed at Parihaspura, Avantiswamy and Avantiswar Temples at Avantipur in Jammu & Kashmir; Brihadiswara Temple at Thanjavur, Gangaikon-dacholapuram, in Tamilnadu, Kalachand and Radha Madhav Temples at Bishnupur, West Bengal; Shahi Qila, Jaunpur, Uttar Pradesh.

2.32 The well known archaeological gardens in Taj Mahal, Agra, Uttar Pradesh; Humayun's tomb and Red Fort, New Delhi, Bibi-ka-Maqbara, Aurangabad and Shanwarwada, Pune, Maharashtra; Chittorgarh Fort, Rajasthan; around the churches at Velha Goa, are being maintained in perfect condition.

SITE MUSEUMS

2.33 The Museum Branch of the Survey looks after 29 Site Museums spread over the country. With its headquarters at Calcutta, this branch functions through four regional offices located at Delhi, Calcutta, Madras and Velha Goa.

2.34 The work of setting up new museums at Singhpur Palace, Chanderi, Gwalior Fort, Madhya Pradesh; Hazardurai Palace, Murshidabad, West Bengal, Raja Mahal, Chandragiri, Andhra Pradesh is in progress. The organisation of 9 galleries chemical treatment and manuscripts and books in the Hazarduari Palace, Murshidabad has been completed. The work of Site Museums at Chandragiri, Chanderi and Gwalior Fort is in progress.

2.35 The work of reorganization of galleries in the Site Museums at Red Fort, Purana Qila and Indian War Memorial Museums at Delhi, Kondapur, Amaravati and Nagarjunakonda in Andhra Pradesh, Bodhgaya, Nalanda and Vaishali in Bihar; Lothal in Gujarat, Velha Goa in Goa; Aihole, Badami, Bijapur, Hampi, Halebid and Srirangapatna in Karnataka; Khajuraho and Sanchi in Madhya Pradesh; Konarak in Orissa, Kalibangan in Rajasthan and Sarnath in Uttar Pradesh is progressing.

2.36 A close circuit TV has been installed in the Site Museum at Sarnath to provide periodical lectures to the large number of visitors coming to the museum. The work of indexing and photo-documentation of the exhibits in various museums listed above has made considerable progress.

2.37 The building for the site museum at Ratnagiri is nearing completion. The building for the Site Museum at Ropar has recently been taken over and is being made ready for organisation of galleries therein.

2.38 Antiquities and art objects were made available for the following international exhibitions apart from other local exhibitions.

'Druzbha Dosti' during Festival of India in USSR, Moscow.

'Druzbha Dosti' during Festival of USSR in India, New Delhi.

'Silk Road Exposition' at Nara during the Festival of India in Japan.

2.39 Photographic exhibitions on the Monumental Heritage of Andhra Pradesh, Bihar, Delhi, Gujarat, Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, Karnataka, Madhya Pradesh, Maharashtra, Orissa, Rajasthan, Tamilnadu, Uttar Pradesh and West Bengal were held during the celebration of World Heritage Week between 19.11.88 and 25.11.88.

The Tri-Centenary of Maharaja Sawai Jaisingh II was celebrated in November, 1988.

UNESCO ICOMOS

2.40 The Convention for the Protection of the World Cultural and Natural Heritage adopted by the General Conference of UNESCO at the 17th Session held on 16th November, 1972 was ratified by India in 1977.

2.41 The World Heritage Committee at its meeting held in 1977, decided to invite nominations for inclusion of the Cultural and Natural Sites of outstanding universal value in the World Heritage List. India submitted proposals in respect of 25 Cultural Sites. In addition, 9 National Sites were also proposed for inclusion in the said list. Out of 25 Cultural Sites, 13 have already been inscribed in the World Heritage List by the end of 1987.

2.42 As per the decision of Government of India, World Heritage Day was celebrated on 18th April, 1988 for promotion of World Heritage Monuments and Sites in India. Functions were held at 13 World Heritage Monuments. Aesthetically designed token passes were presented to visitors to serve as souvenirs. Metal plaques bearing the logo of World Heritage and the ASI with an inscription proclaiming the World Heritage status were unveiled at all the above monuments and banners were put up at these monuments to highlight the celebrations. Film shows on the Heritage of India with special reference to these monuments and cultural programmes based on the ancient arts and historic art creations, formed part of the celebrations at the sites.

2.43 The Archaeological Survey of India observed the World Heritage Week from November, 19-25, throughout the country coinciding with the birth anniversary of Smt.

Indira Gandhi, Late Prime Minister of India. At Delhi two photo exhibitions on the World Heritage Monuments in India were held at Bal Bhawan, Kotla Road and All India Fine Arts and Crafts Society Hall, New Delhi. At Bal Bhawan, special emphasis was laid on the work of art, portraying birds, animals, games, ancient pastimes, Buddhist legends and so on.

INSTITUTE OF ARCHAEOLOGY

2.44 The ASI established the School of Archaeology in 1959 in order to cater to the growing needs of training and research in various disciplines of Archaeology. To impart practical training it was renamed Institute of Archaeology and it introduced its first session in 1986-88.

2.45 The training of the 1986-88 batch of the two year Post Graduate Diploma in Archaeology has been completed. The trainees passed out from the Institute in September, 1988, the training of the 1987-89 batch student is in progress, and the selection of the 1988-90 has been completed and 15 candidates have been selected. The students of this batch are receiving field training in the excavations at Thaneswar, Haryana.

2.46 A short term training programme in Chemical Conservation was held at Kangra in Himachal Pradesh in June-July, 1988 attended by the students of '87-'89 batch of the Institute and 16 nominees of the A.S.I., State Department of Archaeology and other institutions. A short term course in Epigraphy and Numismatics is being organised. Six applicants have been selected for the grant of fellow-ship for higher studies/research in Epigraphy, Palaeography, extinct languages, Scripts and Numismatics during the year 1988-89.

PUBLICATIONS

2.47 The following books were brought out by the ASI —The report on Surkotada excavation is under print and of the series Architectural Survey of Temples, 'Pratihara Temples' and 'Khajuraho Temples' are also in the press.

Books on Epigraphy, Annual Reports of the years 1974-75, 1979-80 and 1980-81, Epigraphia Indica Volumes 40 (pt. 3-7), 41 and 42 will all be printed. Under the series Corpus Inscriptions Indicarum, Vol. VII (pt. II) and the printing of South Indian Inscriptions Vol. XXVI will also be completed. Under the reprinting programme, indexes and other publications presently are out of stock will be printed.

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY

2.48 The Central Archaeological Library of the Archaeological Survey of India has 87, 791 books of which most are rare books on the various disciplines of archaeology. During 1988-89, 1949 new books and periodicals have been added on to the collection.

EXPEDITION ABROAD

2.49 In continuation of last year's programme, a 13 member team of the ASI was sent to Kampuchia for structural repairs and chemical preservation of the temple complex of Angkor Vat and an all ASI member team has been deputed to Angola for the project work 'Renovation of the Central Armed Forces Museums' at Luanda.

CULTURAL EXCHANGE PROGRAMME

2.50 Under the CEP of Indo-Netherland, two delegates came in April, 1988, under Indo-Afghan, a delegate came in August, 1988, under Indo-USSR, a delegate came in November-December, 1988, and under Indo-GDR, two delegates came in January, 1989.

2.51 Action under the CEP of Indo-Afghan; Indo-Bahrain; Indo-Bangladesh; Indo-Egypt; Indo-French; Indo-Italy; Indo-Greek; and Indo-Czech for the exchange visit of Indian delegates is in process.

2.52 Under the Indo-French CEP, the eight member team from France undertook joint archaeological exploration of the Rohtak-Jind-Hissar region of Haryana in collaboration with the Archaeological Survey of India and laid trial trenches to ascertain the cultural sequence of the region.

SAARC ACTIVITIES

2.53 A four member delegation from the Archaeological Survey of India, visited Islamabad in December, 1988 and participated in the Third South Asian Archaeological Congress.

MONUMENTS AND ANTIQUITIES

2.54 The following 16 monuments have been declared of national importance under the provisions of Ancient monuments, Archaeological Sites and Remains Act, 1958:

Group of monuments at Sarai Shahji, Delhi; ancient site at Surkotada, district Kutch: Gujarat; ancient site at village Goraj, district Vadodara, Gujarat; ancient stupa at Tisseru, Leh, Jammu & Kashmir; ancient site at Naurangabad, district Bhiwani, Haryana; ancient Jain vestiges at Aratipur, district Mandya, Karnataka; rock shelters with megalithic, monasteries etc. at Barhat, district Rewa, Madhya Pradesh; Ghau Mukh Nath Temple, Nachna, district Panna, Madhya Pradesh; group of temples at Bateswar, district Morena, Madhya Pradesh; Ukadeshwar Temple and Mahadeo Temple at Ukkad, district Bhir, Maharashtra; Bhubaneswar Mahadev Temple, Bhubaneswar, district Cuttack, Orrisa; site of Babur's Garden at Jhor, district Dholpur, Rajasthan; Dubdi Monastery, West district, Sikkim; Rabentse site of ancient capital of Sikkim; coronotation throne of Norbuganj near Yuksan, West district Sikkim; and ancient remains at Bakshnagar, West Tripura, Tripura.

2.55 Considerable progress has been made in connection with the implementation of the Antiquities and Art Treasures Act, 1972. 7419 antiquities have been registered till September, 1988.

2.56 In all 17 appeal meetings were held for examination of objects detained as antiquities by the Customs, C.B.I. as well as by the private owners. 210 objects were examined by the Appellate authority of the Archaeological Survey of India of which 66 objects were declared as antiquities and the remaining 144 objects as non-antiquities.

2.57 Twelve Temporary Export Permits for 4196 antiquities/paintings have been issued for display of antiquites in various exhibitions abroad.

Six cases of theft of idols and one case of damage to idol were reported from the various centrally protected monuments. These have been reported to the C.B.I. for investigation.

Five antiquity shops were inspected by the Licensing Officer for issuing renewal of licences to the firms dealing in antiquities.

FESTIVAL OF INDIA

2.58 During the Festival of India in USSR, eight members from the Archaeological Survey of India participated in the exhibition titled Dosti-Druzhba Archaeology Section and ten objects were lent for the exhibition 'Silk Road Exposition' at Nara during Festival of India, Japan.

SALVAGE ARCHAEOLOGY

2.59 An intensive exploration has been undertaken for the salvage of important and significant archaeological wealth in the submergence area of the Indirasagar Project under the Narmada Valley Project.

2.60 The work of transplanting the Mahadeva Temple of Kurdi, Goa is in progress. The foundation of the temple has been laid down at the site of transplantation.

2.61 Due to the construction of a dam at Sri Sailam, the Kudavalli Sangameswara Temple at Alampur had to be dismantled and transported for its reconstruction in the original form at another site. The reconstruction of the temples at its new site Alampur is in progress.

UNDERWATER ARCHAEOLOGY

2.62 The Archaeological Survey of India has now collaborated with the National Institute of Oceanography, Goa for underwater archaeology by deputing staff members for training and other activities.

CHAPTER 3

Museums

I. Museums of Indian Art and Archaeology

National Museum, New Delhi

ACQUISITIONS

3.1 840 art objects amounting to Rs. 82,37,842.50 were documented in the General Accession Registers.

Two art objects viz., (1) a painting on palm-leaf showing Krishna Lila scenes and (2) a manuscript with 47 illustrations on Krishna Lila, acquired for Rs. 45,000/- for Sri Krishna Museum, Kurukshetra, were also documented.

3.2 Other outstanding art objects acquired during this period are: ivory palanquin from Kerala; Mysore School paintings, an illustrated manuscript of Kalpsutra; woollen shawls; four phulkaris; Rajasthani paintings; one base gold coin of Padmatanka; one gold coin of Nadir Shah; one club, gold damascened; one gold damascened matchlock gun; a gold hansuli; a pair of gold and diamond bangles; a set of four ivory payas; Firman of Aurangzeb in Persian; painted Jain pichhwai; embroidered bedspreads; embroidered woollen chogas; baluchar sarees; a painted Jain Patt; Kangra miniature paintings; silver surahis; wall hangings; painted curtains; silver huqqah; one silver phooldan; a set of horse ornaments; a silver screen with ivory paintings; a painting of Mahisasuramardini and Rasikpriya and so on.

DONATIONS, GIFTS

3.3 a) 21 anthropological objects from the Prime Minister's office.
b) A marble box gifted by the President of Afghanistan.
c) A palm-leaf manuscript in Tamil script from by Ms. Suzene Wejland from Sweden.
d) A silver plate by the Prime Minister of Sri Lanka.
e) A copper medal by the Rubliev Museum, Moscow.

1928 art objects acquired during the Art Purchase Committee meetings amounting to Rs. 1,36,64,155.15 were photo documented and distributed to the various departments.

Assessment of jewellery and precious stones in the collections of the National Museum was made. Report submitted to the Department of Culture.

CULTURAL EXCHANGE PROGRAMME

3.4 The Government of India has Cultural Exchange Programmes with various countries and the National Museum is actively involved with 88 countries in regard to — (i) exchange of museum personnel, (ii) exchange of art exhibitions, (iii) exchange of art publications and (iv) exchange of reproductions of works of art.

3.5 The National Museum sent an exhibition of 69 miniature paintings to Sofia, Bulgaria in connection with the Indian Cultural Days in Bulgaria.

The National Museum is also negotiating with various countries like China, Italy, Australia, Algeria, Afghanistan, Yugoslavia, Cuba and USSR to have exhibitions on reciprocal basis.

INDO-U.S. SUB COMMISSION ON EDUCATION AND CULTURE

3.6 The National Museum being the Secretariat of the Joint Committee a Cultural Heritage and Endeavour, all items pertaining to the Committee have been kept up to date with concerned organisations as well as the American Secretariat of the Sub-Commission, ICCR and USIS, New Delhi.

The annual meeting of this Committee is held alternately in India and U.S.A. This year the Joint Meeting will be held in India and preparations are underway.

EXHIBITIONS IN INDIA

3.7 "The Art Treasures from the State Museums of Kremlin, Moscow" organised under the aegis of Festival of U.S.S.R. in India.

"Tribal Art" from Nagaland, Bastar, Andaman and Nicobar; and Santal Paragana, Bihar.

"Tanjore and Mysore School Paintings" of exhibits loaned by India for the exhibition held in U.S.S.R. under the aegis of Festival of India.

"French Bronzes — Renaissance to Rodin-from the Louvre, Paris", a curtain raiser exhibition to the Festival of France, in India.

"The Indus Valley Civilisation" — a photo exhibition organised in collaboration with Max Muellar Bhavan.

Reorganization of Manuscripts gallery, Prehistory gallery, Central Asian Antiquities gallery and Anthropology gallery.

EXHIBITIONS ABROAD

3.8 "Silk Route Exposition" at Nara National Museum, Japan.

Indian paintings sent to Bulgaria.

Art objects borrowed for Festival of India exhibitions returned to concerned individuals.

EDUCATIONAL ACTIVITIES

3.9 Conducted 20th short-term In-service Training course in Museology.

Special training programmes in Museology organised for curators and students.

Mobile Exhibition Bus with 'Architects of India's Glory' sent on a month's tour in Rajasthan.

Each month 1500 copies of 'Calendar of Events' printed and sent to educational institutions, museums and other interested persons.

3.10 1,01,232 visitors including V.I.ps, visited the museum.
Eight guided tours were conducted daily for general public and school children.
Four films shows projected daily.
Four gallery talks arranged each month.
Summer programme on 'Indian Art' organised for school children.
Four months course on 'Art Appreciation' conducted.
A four months course 'India: Art and Culture' introduced.
A seminar on 'The Indus Valley Civilisation' organised.

Two lectures on Polish Art by scholar Mr. Weodzimiers Bronsz.
Twelve gallery sheets put on sale.

6000 slides have been prepared during the year till 30th November, 1988. In addition to that a gift of 1000 slides was received from U.S.A. Over 5000 slides have been identified and accessioned.

NATIONAL INSTITUTE

3.11 The National Institute of History of Art, Conservation and Museology is being set up as an integral part of the National Museum and is deemed to reach University status shortly.

CONSERVATION

3.12 Of 335 objects from different departments completed and work on 204 objects in progress.
Long term projects for technical study undertaken.
Oil and other paintings examined analytically and cross-sectionally.
Standard samples prepared for metallographic examinations.
Specific gravity of 3 stone objects found out.
Hardness of water sample from National Museum tubewell determined.
Purity of doubtful chemicals ascertained.

3.13 Photo documentation, preparation of treatment charts, records and index cards for objects received were made.
Slides prepared to show processes of conservation.
Preparation of Condition Report of 24 stone sculptures before and after Nara (Japan) exhibition; of miniature paintings sent to Bulgaria; of jewellery received from USSR.
Staff member sent to Sofia, Bulgaria, for on the spot study of environmental conditions in the galleries.

MODELLING

3.14 Plaster casts of 2591 raw casts of masterpieces of sculptures prepared. Out of that 2491 casts were finished and 2373 casts were coloured. Besides, thirteen mastercopies and twenty two rubber moulds were prepared.

Twenty images from the Indira Gandhi Memorial Museum repaired.
Nine rubber moulds and 137 replicas in fibreglass prepared.
Two new replicas from original sculptures and one, size to size eye copy, to be prepared for Sri Krishna Museum, Kurukshetra.

PUBLICATION

3.15 a) An illustrated album on the life of Dr. Zakir Hussain.
b) Certificates for the 'Summer Course on Indian Art' for children.
c) Certificates for the 20th short-term In-service Training Course in Museology.
d) Layout of the publication 'Rajasthani Paintings'.
e) 5000 illustrated folders for the exhibition 'South Indian Paintings'.
f) Labels for the exhibition 'South Indian Paintings'.
g) Bidriware "Catalogue'.
h) Posters, labels, folders, brochures for the exhibition 'Art Treasures from Kremlin — Moscow' and for exhibition 'French Bronzes'.

LIBRARY

3.16 a) Enriched with 408 books on art, archaeology, culture and history, worth Rs. 1,73,564/
b) 1212 books were accessioned, 844 books were catalogued and 671 books classified.
c) 153 books and journals were got bound.

SCHEME OF FINANCIAL ASSISTANCE TO VARIOUS MUSEUMS

3.17 Under the scheme of "Financial Assistance for the Reorganisation and Development of Other Museums" grants of Rs. 13 lakhs were given to various institutions.

Indian Museum, Calcutta

3.18 The largest and the oldest Museum in the country the Indian Museum, Calcutta was founded in 1814. Its subjects include Art, Archaeology, Anthropology, Geology, Zoology and Industrial Botany, with a number of galleries in each section. The administrative control of the three cultural sections, rests with the Board of Trustees under its Directorate and that of three science sections is with the respective Survey of India offices.

EXHIBITIONS

3.19 In observance of 174th Foundation Day of the Museum on 2nd February, 1988, an exhibition on 'Sakti Icons' was inaugurated by Dr. Bhaskarananda Ray Chaudhury, Vice-Chancellor, Calcutta University.

An exhibition depicting Buddha's life in Gandhara stone sculpture was inaugurated on March 1, 1988.

An exhibition on Hindi activities of the Indian Museum in collaboration with 11th Annual CALTOLIC Meeting on 4.8.88 was organised on that date.

A glimpse of Folk and Tribal Art collection in the Gurusaday museum was held on 6.9.88 and opened by Justice Sri A.N. Ray, former Chief Justice of the Supreme Court of India.

Mohenjodaro a Forgotten City was organised in collaboration with Max Mueller Bhavan, Calcutta from 20 to 31 December, 1988.

The Indian Museum, Calcutta in collaboration with State Museum Meghalaya and Directorate of Museums, Assam, organised two Inter State Exhibitions on the 'Heritage of our Decorative Arts' sponsored by the Department of Culture, Government of India.

EXHIBITIONS ABROAD

3.20 Indian Museum sent from its Archaeological section a stone sculpture of Buddha in Abhaya Mudra to the 'Silk Road Exposition' at Nara National Museum, Japan.

TRAVELLING EXHIBITION

3.21 Two exhibitions were sent to different places of West Bengal. Greatmen on Museum and Early Organisers of the Indian Museum and 'Recent Anthropological collections in Indian Museum.

EXHIBIT OF THE MONTH

3.22 'Rama Sita in Indo Burmese Art' on the occasion of Ramnavami.
'Sculptures and Paintings inspired by Kalidasa' on the occasion of Kalidas Jayanti.
'Birds of Calcutta' on the occasion of 298th Foundation Day of the city of Calcutta.
'Chinese Decorative Arts'.

SEMINARS

3.23 A workshop seminar on 'Sakti Icons' was organised to coincide with an exhibition on the same topic on the occasion of Foundation Week celebration of the Museum.

A day long seminar jointly organised by the Indian Museum and Numismatic Society of Calcutta on 'Coin and Currency of Early Bengal' and another jointly organised by the Indian Museum and Photographic Association, Dumdum, on 'Numismatic Photography'

A one day seminar was arranged in collaboration with Goethe Institute, Max Muller Bhavan, Calcutta, to highlight recent research, scientific and numismatic achievement of the prote historic period of Harappan Culture.

TRAINING PROGRAMMES

3.24 The second In-Service Museum training course was held. The two months course covered 52 lectures and demonstration talks delivered by eminent scholars and museologists of city as well as directors of museums from Lucknow, Dehradun, New Delhi, Gauhati and a representative from British Museum, London.

The fourth short course in Museum Studies on the origin, growth and development of

Indian sculptures, paintings and coins, temple architecture as well as care of antiquities was conducted.

SPECIAL LECTURES

3.25 Six lectures were arranged — 'Technical Analysis of Terracottas in the Gangetic Valley', 'Far Eastern Art', 'Korean Art', 'Diamond Mining in Panna', 'An Introduction to folk and tribal Art of India' and 'History, Anthropology & Sarat Chandra Roy'.

Ten lectures were arranged to correlate museum education with school and college curriculum. The classes were followed by a film-show.

A mass communication programme was arranged. A film on Uday Shankar was screened.

A 3 day Film Festival was arranged on the theme 'Paintings and painters of India and Europe. Another film festival was organised, the theme being Wild life.

PUBLICATION

3.26 Envelopes for photography unit, coloured picture post-cards, colourful annual folder for highlighting achievements of the year 1987-88 and targets for 1988-89. Indian Museum Bulletin, Vol.XXI. Annual Report (Eng), 1987-88, folders and posters for the Inter State Exhibition at Shillong and Guwahati. The Publication Unit participated in three Book Fairs — World Book Fair, New Delhi, Calcutta Book Fair and Patna Book Fair.

Salar Jung Museum, Hyderabad

3.27 A new gallery of Far Eastern Porcelain was re-organised on modern scientific lines. In this 267 porcelain of the far eastern region i.e. China & Japan have been displayed in 18 show cases. Another gallery of Far Eastern Statutary has been taken up for re-organisation on modern scientific lines. In this gallery, 62 objects have been selected from Burma, Nepal, Tibet, China and Japan.

Air-conditioning of six galleries has been entrusted to C.P.W.D.

DOCUMENTATION

3.28 Officers have physically verified 2440 art objects of various categories. The Keeper-I and Keeper-II of the Museum have countersigned 150 photographs of art objects in the Master Ledgers.

EDUCATIONAL ACTIVITIES

3.29 Four temporary exhibitions were arranged on "40 years of contemporary art of Andhra Pradesh since 1947", "Calligraphy of Qutab Shahi period", "Forgotten cities of Indus Valley" and finally "Birds and animals in Indian art".

Five lectures were arranged — "Salar Jung-III and his Times", "Museum Display Techniques" "The Kevorkian Album: Discovery of a lost collection", "Tonk Museum and Library", "Indus Valley Civilization — History of Discovery" and "The art of the Indus Civilization"

Six gallery talks on "Founder's Gallery, "Clocks Gallery", "Modern Indian Paintings", "Bronzes and Painted Textiles", "Ivory Gallery" and "South Indian Minor Arts Gallery" were delivered by the officers of the Education Wing of the Museum.

A workshop on "Museum Display" was organised by Mr. Christopher Hudson from the United Kingdom for two days.

PUBLICATIONS

3.30 The Salar Jung Museum Bi-Annual Research Journal Vol.XXI-XXII devoted to Decorative Arts of India.

The dummy copy of Catalogue of Arms & Armour is ready to be sent for printing.

The 'dummy' copy of the Catalogue of Arabic Manuscripts Vol.VI.

A Catalogue on "40 Years of Contemporary Art of Andhra Pradesh since 1947" was brought out on the occasion of the temporary exhibition.

OTHER ACTIVITIES

3.31 Salar Jung III Birthday Celebrations. The 102nd Birthday of Nawab Mir Yousuf Ali Khan Bahadur Salar Jung III was celebrated in the Museum from 31st May, 1988 to 6th June, 1988. The celebrations were inaugurated by Dr. Alladi P. Raj Kumar, Minister for Backward Class Welfare and Tourism, Government of Andhra Pradesh.

3.32 Installation of electronic devices in some of the galleries of the Museum have been completed in all respects.

A seminar on "Trends in the development of contemporary Art of Andhra Pradesh since 1947" was arranged.

During the period, the officers of the manuscripts section have physically verified 3439 manuscripts (Urdu, Persian and Arabic Manuscripts) and enlisted 4801 Persian manuscripts including enclosures.

The library staff varified 7452 printed books, 2415 catalogue cards were prepared and 1175 books were classified subject-wise.

794 art objects and miniature paintings were chemically treated by the conservation laboratory staff. The picture restorer restored 10 oil paintings.

Allahabad Museum, Allahabad

3.33 The Allahabad Museum was formally handed over by Allahabad Municipal Corporation on 29th April, 1986 to the present Allahabad Museum Society, a registered autonomous body fully financed by the Central Government with a fixed financial support of Rs. 5.36 lakhs from Government of Uttar Pradesh. This Museum has the distinction of having the collections of distinguished luminaries like Pt. Jawaharlal Nehru, Munshi Prem Chand, poets like Surya Kant Tripathi Nirala, Maithili Saran Gupta and Smt. Mahadevi Verma.

The Museum has started its programme of non-normal education through museum education and publications. Currently, it has set up a special exhibition to coincide with the centenary celebrations of Pt. Jawaharlal Nehru. The Museum has acquired objects worth Rs. 8 lakhs which include the collection of Tibetan and Chinese Tankhas. The Central Government is starting various Plan schemes to develop the Museum into one of the National Museums capable of receiving and sending international exhibitions in the near future.

EXHIBITIONS

3.34 1. Hosted exhibition on "Tolstoy and Gandhi: Life and Work" as a part of the Festival of U.S.S.R. in India.
2. The following temporary exhibitions arranged:
(i) Modern Indian Painting
(ii) Nehru Personalia on the occasion of the beginning of the Nehru Birth Centenary Celebrations.
3. In collaboration with the Allahabad Film Society and North-Central Zone Cultural Centre, Allahabad an exhibition on "75 years of Indian Cinema" was organised from 26th October to 30th October, 1988.
4. Organised an exhibition on "Nehru and Making of Modern India" in collaboration with G.R. Sharma Archaeological Society, Allahabad. Hon'ble Dr. S.D. Sharma, Vice-President of India inaugurated this exhibition on 27th November, 1988.
5. Gaurav Nagari Prayag — an exhibition on Allahabad through the Ages' organised at Kumbha Mela, January-December, 1989.

SEMINARS AND SYMPOSIUMS

3.35 1. National Seminar on 'Tolstoy and Gandhi' from 29th to 31st May, 1988, inaugurated by Prof. B.R. Nanda.
2. International Symposium on "Museology and Developing Countries" organised by ICOMOFOS on 29th November, 1988.

3. Seminar-cum-educational trip made by a group from Faculty of International Relations, Daito Bunka University, Japan — 6th December 1988.
4. In collaboration with the Allahabad Film Society and North Central Zone Cultural Centre, Allahabad held a seminar on "Women in Indian Cinema" from 28th October to 30th October 1988.
5. Closing ceremony of Govind Ballabh Pant Birth Centenary Celebrations was organised by the Institute of Social Sciences, Allahabad on 9th September 1988. Shri L.P. Shahi, Minister of State for Culture, Government of India was the Chief Guest.

EDUCATIONAL ACTIVITIES

3.36 1. 5,886 students from 80 schools and colleges of Allahabad district visited the Allahabad Museum under our Out-reach Programme.
2. Regular documentary Film shows are held, twice a day, on art, culture and heritage.
3. Regular guided gallery tours organised for students, twice a day; tours taken by curatorial staff and the Education Officer.
4. Three special lectures on art history by eminent scholars for students were organised.
5. Regular slide-lectures are organised on elementary science for visiting school children by Allahabad Vigyan Manch.
6. Commencement of Pt. Jawaharlal Nehru Birth Centenary Celebrations: 14th November 1988 —
Pt. Jawaharlal Nehru's portrait unveiled.
On-the-spot painting competition for school children of various age groups. Collage competition;
Creative writing workshop, Hindi and English, for school and college students under the guidance of eminent writers and poets.
Quiz competition.
Poetry reading session.
7. Indira Gandhi Birth Anniversary: 19th November, 1988 —Inaugurated exhibition on Nehru personalia.
Painting and college exhibition.
Cultural programmes by schools.
Prize distribution function.

GENERAL ACCESSION REGISTERS: PREPARATION OF

3.37	1.	Sculptures	— 560	art objects physically verified and entered in the GAR.
	2.	Terracotta	— 2,725	-do-
	3.	Nehru collection	— 1,221	-do-
	4.	Manuscripts	— 1,500	-do-
	5.	Decorative Arts, Prehistory, Arms, etc.	— 617	-do-

GALLERIES RE-ORGANISED

3.38 1. A new look given to the 'early sculpture gallery' with new lighting system and colour scheme.
2. Medieval sculptures shifted to a new gallery.
3. One special gallery developed as an ideal gallery for temporary exhibitions provided with modern lighting system and display technique.
4. Four galleries pre-organised to provide free and comfortable circulation for visitors.

MISCELLANEOUS

3.39 1. Staff canteen: Existing shed is being converted into a canteen for the staff and visitors.
2. Water pipe-line has been laid from pump house to the lawn and other required places.
3. Construction of overhead tank completed.
4. Development of lawns, partially completed.
5. Pipe-line laid from boring pump to the residential quarters.

VISITORS

3.40 1,03,232 Indians and foreigners visited the Allahabad Museum as tourists and researchers. (This figure excludes the children who visited the Museum).

LECTURE-CUM-PRACTICAL DEMONSTRATION AND TRAINING TO STAFF

3.41 1. Mrs. Sunita Baxi, Former Director, Crafts Museum, New Delhi.
2. Sri H.K. Naithani, Scientist, National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property, Lucknow.

II. Museums of Contemporary History and Art

Victoria Memorial Hall, Calcutta

EDUCATIONAL PROGRAMME

3.42 The cultural and educational programme, a regular feature of the activities of the Memorial, continued and consisted of periodical lectures for the public, special exhibitions, publications and guide services.

SPECIAL EXHIBITION

3.43 Three special exhibitions were installed in the Durbar Hall of the Memorial in the months of April, May and November 1988. The first two were in connection with the USSR Festival in India. They were on Contemporary Decorative and Applied Arts of the Peoples of USSR and on Soviet Women.

The third exhibition was on the Conservation of our Architectural Heritage on the occasion of the seminar on the subject jointly sponsored by the Memorial and the Indian Institute of Architects, West Bengal Chapter. A large number of photographs, engravings and lithographs were on view for the people.

SEMINARS

3.44 Apart from the seminar on Conservation of Our Architectural Heritage, another seminar was held on An Urban, Historical, Perspective for the Calcutta Tricentenary, held in December, 1988 in the Durbar Hall. The Seminar was inaugurated by Professor S. Nurul Hasan, Governor of West Bengal.

The Victoria Memorial joined hands with the East Zone Cultural Centre and INTACH (Burdwan) to organise a programme of variety performance for the underprivileged children of Calcutta. Over a hundred children from the slums of Calcutta took part.

PUBLICATIONS

3.45 New picture postcards on the Victoria Memorial illuminated and reprinted picture postcards depicting the Memorial from various angles were released for sale during the period. An urdu Guide Book and a descriptive catalogue of Emily Eden's Sketches (two new publications) and a reprint of select documents of the British Period and a history portfolio on Bengal Nawabs will be put on sale very soon. A multi-coloured folder on the Victoria Memorial is under print.

The total number of publications sold from the publications sale counter of the Memorial during the period were 5060.

VISITORS

3.46 3,800 visitors were taken around the galleries by the guide and a total number of 76 students and teachers from various educational institutions visited. Students of 150 schools from various parts of the country visited the Memorial free of charge. 22 dignitaries and important visitors were shown round the Memorial.

National Gallery of Modern Art (NGMA), New Delhi

3.47 The National Gallery of Modern Art is a subordinate office of the Department of Culture. The Gallery acquires and preserves works of Modern Art from 1850's onwards and organises special exhibitions in the country and abroad.

ART COLLECTION

3.48 A collection of 252 works of art was purchased for Rs. 17,92,445/-. Four art objects were received as gift (two from U.S.S.R. one from Portugal and one from Calcutta).

EXHIBITIONS

3.49 Under Cultural Exchange Programme, the following art exhibitions with different countries were exchanged —

Out-going Exhibitions

"Indian Women Artists" sent to Bulgaria (Sofia) and Poland.

"Indian Contemporary Art" was sent to Japan.

"Paintings of Rabindranath Tagore and his relics" were sent to Japan.

Incoming Exhibitions

3.50 "Poetry through Material, Light and Movement" from FRG.

"Russian Paintings" 19th to early 20th Century under the aegis of the Festival of USSR in India.

"Visions of Inner Space" from the University of California.

"India through the eyes of Soviet Artists" under the aegis of Festival of USSR in India.

"Graphics of the 70's" from the FRG.

"Collection from the Josip Broj Tito Art Gallery of the Non-Aligned Countries, Titogard, Yugoslavia.

Other exhibitions like "The Art of Post Independence Period", "New Acquisition and Painting from Rabindranath Tagore" were also on view during the year. "Contemporary Modern Art in Prints" in the Mobile Exhibition bus was sent to the important archaeological sites and 2023 visitors viewed this exhibition.

OTHER ACTIVITIES

3.51 About 119 school groups visited the National Gallery of Modern Art. 89 foreign groups were provided conducted tours. A special educational programme "Introduction to National Gallery of Modern Art" was conducted for students of Art, New Delhi and Jamia Millia Islamia, New Delhi. 258 film shows were arranged. Art sketch meetings were held for various age groups on 26 alternate Sundays.

Three prestigeous monographs on the three artists i.e. Abanindranath Tagore, Rabindranath Tagore and Amrita Sher Gill were brought out billingually.

In the Art reference library 790 books on art were added and 38 journals and dailies were subscribed to.

The photo section prepared 2223 negatives, 6779 black and white photographs, 521 colour photographs and 517 slides of 35mm and 240 slides of 2¼ x 2¼ for different projects including special exhibitions. Six albums of special exhibitions have been prepared for research and documentation.

3.52 Restoration work was carried out on — 15 paintings, all in-coming and out-going exhibits were examined. The relative humidity and temperature of the displayed area of the gallery were examined. 96 works of art in the collection of the Bombay Branch were fumigated and restored.

It has been decided to renovate the existing Sir C.J. Public Hall, Bombay immediately and open a branch of NGMA to the public within a year.

Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi

3.53 The Nehru Memorial Museum and Library maintains: (i) a personalia museum which focuses on the life of Jawaharlal Nehru and the Indian struggle for freedom, (ii) a library of printed materials, books, periodicals, newspapers and photographs having a bearing on the history of modern India; (iii) a repository of unpublished records of institutions and private papers of eminent Indians, which provide original material for historical research; (iv) a reprography unit for microfilming old documents, records and newspapers; (v) an oral history division for supplementing written records with the recollections of men and women who have taken part in public affairs, and (vi) a centre for research.

3.54 The museum which illustrates through visual materials, the life and times of Jawaharlal Nehru, continued to be the focus of interest for the visitors from India and abroad. About eight lakh visitors came to the museum: which means an average daily attendance of 3817 on working days; and 4337 visitors on Sundays and other holidays. It also continued to figure prominently in the itenerary of dignitaries visiting the capital from India and abroad. The exhibitions which are part of the permanent display in the museum also continued to evoke deep interest of the visitors.

3.55 The library, which focuses upon modern Indian History and Social Sciences, continued to grow in holdings as well as in the quality of its services. 3685 books were added taking the stock up to 1,16,652. The titles in the Nehruana collections have gone up to 1,095, the Gandhiana to 1,677 and the Indirana has 282 titles. The books acquired under these three sections are in English, Hindi and in various other Indian and foreign languages. The number of newspaper files and dissertations (on microfilms) rose to 4,668 and 825 respectively. The photo section of the library raised its collection of photographs to 74,482.

3.56 Collections in the Archives recorded further additions. Some of these were F.I.Rs. of the Delhi Police for (1861-1960), Papers of Dr. Salim Ali, Sir C.P. Ramaswami Aiyar, V.R. Bhende, Mridula Sarabhai, Sadashiv Bagaitkar, Dr. K. Ramiah, K.F. Rustamji, Dinesh Singh and Atmaram Mirchandani.

The Reprography unit augmented the library's microfilm collections for research and reference and prepared 1,55,829 frames of negative film of newspapers, journals and private papers, 10,000 meters of positive microfilm, 33222 microfiche frames, 8,291 photographs, 13408 electrostatic prints from microfilms and 63,196 xerox copies for record and distribution to scholars. The unit also prepared 554 copy negatives of the old photographs for its record.

During the period from January to March 1989 the unit will be engaged in preparing microfilm copies of The Madras Mail 1868-1981.

3.57 The Preservation Unit continued to render useful service in respect of repair and rehabilitation of valuable documents.

Researches in history and social sciences conducted in the organisation made substantial progress. The Nehru Museum arranged 3 lectures and 16 seminars and symposium on the themes relevant to the understanding and transformation of Indian Society.

Four publications — Jawaharlal Nehru Correspondance: A Catalogue, Indian National Congress: A Reconstruction Vol.II, Jawaharlal Nehru on Science and Society and Private Face of a Public Person: A Study of Jawaharlal Nehru; were brought out. Jawaharlal Nehru: A Bibliography; is under print.

National Council of Science Museums, Calcutta

3.58 The National Council of Science Museums (NCSM) is primarily engaged in the task of popularising science and technology among students in particular and the masses in general, through a wide range of programmes and activities.

The following Science Museums/Centres are administered by the NCSM —

1. Birla Industrial & Technological Museum, Calcutta.
2. Visvesvaraya Industrial & Technological Museum, Bangalore.
3. Nehru Science Centre, Bombay.
4. National Science Centre, Delhi.
5. District Science Centre, Purulia.
6. Shrikrishna Science Centre, Patna.
7. District Science Centre, Gulbarga.
8. District Science Centre, Dharampur.
9. District Science Centre, Tirunelveli.
10. Raman Science Centre, Nagpur.
11. Regional Science Centre, Bhubaneswar.

OBJECTIVES

3.59 a) To popularise science and technology.
b) To supplement science education and technology.
c) To organise training programmes.
d) To render assistance to universities, technical institutions, museum schools and colleges or other bodies.
e) To design, develop and fabricate science museum exhibits, demonstration equipment and scientific teaching aids.
f) To collect, restore, and preserve important historical objects.
g) To conduct research in the history of science and technology with special reference to India.

3.60 NCSM concentrated on planning of new exhibits in the permanent galleries of the museums/centres; commissioning new galleries in different science museums and centres; and establishment of new science centres. Construction work for Regional Science Centres at Bhubaneswar, Lucknow, Guwahati and the main building of the National Science Centre in Delhi are almost complete. Science Parks and Mobile Science Exhibition Units of Raman Science Centre in Nagpur and Regional Science Centre in Bhubaneswar were completed. And they attract a number of visitors. Planning work for establishment of five District Science Centres at Bhopal, Goa, Calicut, Vijayawada, Tirupati and Shimla was on during the year. Fabrication work for three permanent galleries — "Sun" at RSC, Bhubaneswar, "Earth" at RSC, Guwahati and "Fluidics" at RSC, Lucknow are also nearing completion.

CENTRAL RESEARCH & TRAINING LABORATORY, CALCUTTA

3.61 The Central Research & Taining Laboratory is coming up in a big way at Salt Lake City, Calcutta. Construction work for this impressive 10 storied building with 45,000 sq.ft. floor area in the first phase with a provision for substantial expansion on a land of 2.5 acres involving an expenditure of Rs. 2 crores, is complete. It will provide facilities for research and prototype exhibit development, evolution of new museum technique and training of science museum personnel from all over India and abroad. The Centre has been made fully operational during the year.

BIRLA INDUSTRIAL & TECHNOLOGICAL MUSEUM (BITM), CALCUTTA

3.62 1. BITM conducted the State Level Science Seminar with students from all districts of West Bengal.
2. BITM continued with its spectacular demonstration —"Chemistry is Fun". An important aspect of this programme is that it is designed not only for students but for the lay public too.
3. 250 science demonstration programmes were conducted both in-house and outsie the Museum. About 25,000 students participated.

4. 18 creative abilities or Hobby Centre programmes were held in the Museum. 60 students took part.
5. 19 Sky Observation Programmes with about 1300 people were held.
6. 32 popular lectures were arranged, attended by about 3000 people.
7. 5 teachers' training programmes were held and 90 teachers received training.
8. 6 amateur radio programmes were held. 30 trainees were trained in 74 classes.

NEHRU SCIENCE CENTRE (NSC), BOMBAY

3.63 1. Nehru Science Centre, Bombay celebrated its 3rd anniversary on November 11, 1988, with various programmes for students.
2. The mobile science exhibition units of NSC held shows at 59 sites, over 123 exhibition days. A total distance of 7000 km. was covered. Over 2,00,000 people attended the exhibition and film shows.
3. 22 science demonstration lectures were arranged. 2000 students benefitted.
4. 8 creative ability centre programmes were held in which about 500 students participated. 126 projects were completed.
5. 25 sky observation programmes were held, attracting about 1000 visitors.
6. 2 computer training programmes were held. 45 children took part and developed 2 softwares.
7. Over 100 amateur radio operators were trained in 28 sessions.
8. 350 school children from 173 schools took part in 21 science quiz contests.

VISVESVARAYA INDUSTRIAL & TECHNOLOGICAL MUSEUM (VITM), BANGALORE

3.64 1. The mobile science exhibition units of VITM attracted about 3,50,000 visitors to their shows at 43 sites, over 101 exhibition days. Total distance travelled was 7,176 kms.
2. 12 science demonstration programmes were held, attended by about 900 students.
3. 8 popular lectures were held, attended by 610 people.
4. 2 teachers' training programmes were held, 20 teachers were trained.
5. 6 computer training programmes were held, students trained was 63.
6. 15 science quiz contests were organised, 30 students participated.
7. 12 hobby centre programmes were arranged, 100 students took part, and completed 20 projects.
8. VITM organised the Southern India Science Fair at St. Abba's High Secondary School at Madras. 123 schools from 5 States in the southern region took part.

NATIONAL SCIENCE CENTRE (NSC) DELHI

3.65 1. The giant "Energy Ball" exhibit at the National Science Centre, Delhi continues to be a great attraction. Balls move all over 3000 sq.ft. of space having a 650 ft. path. They demonstrate transformation of energy from muscle to potential, from potential to kinetic, from kinetic to potential, from kinetic to electricity. Transfer of momentum, centrifugal force, conservation of angular momentum and even Kepler's Law on Planetary Motion were demonstrated. The exhibit is possibly the largest of its kind ever placed in a science centre.
2. The mobile science exhibitions of the Centre were held at 56 sites, over 88 days. About 1,00,000 people attended.
3. Four popular lectures were arranged, for about 400 people.
4. 2 teachers' training programmes were held 20 teachers took part. 10 teaching aids were developed.
5. A computer training programme was held. 31 school students were trained.
6. A science quiz contest was held, with participation by 22 students.
7. NSC, Delhi hosted the National Science Seminar 1988 and the International Workshop on Science Museums in its newly opened facilities.

SHRIKRISHNA SCIENCE CENTRE, PATNA

3.66 Shrikrishna Science Centre, Patna continued its activities. The new gallery "Our Senses", "Children's Corner" and "Life Science Laboratory" were completed last year have become an attraction for all age groups. Over 100,000 people visited the Centre.

Other important activities of the Centre were organising State Level Science Seminar,

conducting various educational programmes for school children and application oriented programmes for adults.

DISTRICT SCIENCE CENTRES (DSC)

3.67 The District Science Centres at Purulia, Gulbarga, Dharampur and Tirunelveli continued their activities for school students, tribal people and rural communities. A large number of people visited these centres and participated in various programmes conducted by them. DSC, Purulia and Gulbarga opened their new Popular Science Galleries. DSC, Tirunelveli added on a permanent auditorium and infrastructure for temporary exhibition.

Regular activities apart, there were extra-mural programmes, ranging from "Know the Insects" and "Bakery Demonstration" to "Computer Awareness".

EXTENSION ACTIVITIES

3.68 Museobuses or the mobile science exhibition units travelled across the length and breadth of the States and Union Territories of India. They travelled to the remote interior areas of West Bengal, Bihar, Orissa, Karnataka, Maharashtra, Gujarat, Delhi, Dadra and Nagar Haveli. The buses, carrying a series of working exhibits on specific scientific themes held shows at about 300 sites. About 10,00,000 people visited the exhibition, over the 16,000 km stretch. Over 200,000 attended the scientific film shows held at rural sites.

Science demonstration lectures on regular basis are held every year in VITM, Bangalore; NSC, Bombay; and BITM, Calcutta. Other science centres have also started the same process benefitting more people. The unique mode of presentation bring alive text book sciences and their effect supplements school education.

3.69 The museums/centres helped organise science fairs and camps in a big way in Guwahati and Bangalore. The Southern India Science Fair was organised by VITM, Bangalore in September — October, 1988. 123 schools took part in it. The Eastern India Science Camp was held during February 1987. 265 participants from 139 schools and 14 science clubs with 200 models assembled there. Exposure-oriented training camps on aeromodelling, life science and electronics were organised for 46 observers coming from all over eastern India.

BITM, Calcutta continued their fascinating science quiz contest, "Quest", over Doordarshan.

NATIONAL SCIENCE SEMINAR — 1988

3.70 The National Council of Science Museums organised the National Science Seminar — 1988 at the National Science Centre in New Delhi on December 20, 1988. The topic was 'Information Revolution'. Students from all the States and Union Territories participated.

INTERNATIONAL COLLABORATION

3.71 NCSM organised an international workshop in India "Science Museums Without Walls", during December, 1988. 60 science museum experts from all over the world participated. The workshop was held at Delhi, Bombay, Bangalore and Calcutta, four places where NCSM has developed infrastructure for spreading the science museums movement across the country. UNESCO, International Council of Museums (ICOM) and the Indo-US Sub-Commission on Education and Culture collaborated with NCSM in this project.

FUN SCIENCE

3.72 Concurrently with the workshop, the 'Fun Science' gallery was inaugurated at the National Science Centre, Delhi, on December 5, 1988, by Shri P. Shivshanker, Union Minister for Human Resource Development. This is a set of 101 interactive participatory exhibits on 13 topics of science that NCSM has developed by way of catalytic support to the upcoming science centres in India and abroad.

CELEBRATION OF BIRTH CENTENARY OF PANDIT JAWAHARLAL NEHRU AND C.V. RAMAN

3.73 To celebrate the centenaries of the two great personalities of India, NCSM has adopted extensive programmes which ranges over a year from November, 1988 to November, 1989. Under the Nehru Celebration Programme, NCSM is to open many new

facilities for people in different parts of the country. To commemorate C.V. Raman's Birth Centenary, two exhibitions on his life and works were simultaneously opened at Calcutta and Bangalore. Both the exhibitions will travel to different places in India. BITM, Calcutta has developed an interesting exhibition with help from VITM, Bangalore.

National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property (NRLC), Lucknow

3.74 The Laboratory, a subordinate office under the Department of Culture continued to make progress in research, conservation, training, library and documentation. The Laboratory received assistance from UNDP and UNESCO for its various programmes.

A national seminar on "Four decades of conservation in India" was held to commemorate the 40th anniversary of Independence of India. The Regional Conservation Laboratory, Mysore, an unit of the NRLC organised the National Conservation Seminar at Mysore in collaboration with the Indian Association for the Study of Conservation of Cultural Property.

RESEARCH PROJECTS

3.75 Compilation work on the eighteen iron age sites on which technical studies have been completed is in its final stages. On the basis of the findings, a paper, "Development of iron metallurgy in ancient India" was presented at the International Archaeometallurgical Colloquium held at Bologna, Italy. Another paper "Lamination technique in iron artifacts in ancient India" has been accepted for publication in the Historical Metallurgy Journal published from the U.K.

A survey was done, samples were procured and the preliminary studies were initiated for the study of corrosion of metals in contact with wood, comparative studies on the effect of different protective coatings for metals, protective coatings for controlling the rusting, utility of anion exchange resins in the removal of harmful salts from archaeological iron and copper objects, conservation of bronzes, development of new techniques of removing accretions without affecting the patina.

Various combinations of lime based mortars and plasters and indigenous additives were prepared and are being tested to develop a suitable crackfilling material for the Taj Mahal.

75 samples of marble were cut and polished uniformly on one surface, rust stains were developed on 50 samples, 14 different cleaning formulations were prepared. 12 samples of marble were subjected to 3 cycles of artificial weathering by sodium sulphate method and 10 samples were subjected to 10 cycles.

Efficacy of 14 formulations prepared for cleaning was tested on artificially stained samples.

Further studies were done by using following adhesives on birch-park, i.e. Methyl cellulose, CMC, starch, Polyvinyl acetate, Polyvinyl alcohol, glue.

CONSERVATION

3.76 The Laboratory is being regularly requested by museums and other institutions for the conservation and restoration of their objects. The Laboratory preserved various objects — 8 miniature paintings from the Bharat Kala Bhawan, Varanasi; 3 paintings from the Ananda Bhawan, Allahabad; 4 oil paintings from the Raj Bhavan, Calcutta; Krishna-Leela comprising 190 pages belonging to the State Museum, Lucknow; one big 'pichwai' belonging to the State Museum, Lucknow.

Preparation of conservation reports are on for the restoration of wall paintings at the Rumtek Dharamachakra Centre, Sikkim and wall-paintings and art objects in the Tawang Monastery, Arunachal Pradesh.

A National Project on the conservation of wall paintings in collaboration with the INTACH Conservation Centre has been formulated. This will seek to fill in the several gaps in our knowledge about Indian wall paintings. A meeting of experts from all over the country was held in the NRLC on 1st July, 1988 to discuss the project and finalise its mode of execution. The project has since taken off and several wall painting sites, like Nagaur Fort and Hampi have already been surveyed.

The project has initially been formulated for a period of 3 years.

SEMINARS

3.77 A 2-day national seminar on "Four decades of conservation in India" was held at the NRLC to commemorate the 40th anniversary of India's Independence. Renowned archaeologists, museologists, archivists and conservators from all over the country participated.

TRAINING AND WORKSHOPS

3.78 A six month course was held in the conservation of Archaeological materials. Ten candidates including three from Vietnam, Iran and Thailand attended the course. NRLC scientists and other invited experts from outside delivered lectures. Students did extensive practical work on different types of artifacts and were taken to Delhi, Mysore, Madras and Thanjavur for an on-the-spot study of problems and practicals.

A ten-day orientation workshop on care and maintenance of museums materials was held. 16 candidates including 3 from abroad participated in the workshop. The Union Minister of State for Education and Culture, Shri L.P. Shahi delivered the valedictory address and gave away the certificates.

A ten-day orientation workshop was held on care and maintenance of museum materials at the Regional Conservation Laboratory, Mysore.

A five-day workshop on the care of art objects in collaboration with the INTACH Conservation Centre, Lucknow. 40 army officers attended the workshop at Lucknow and Jodhpur.

An International Conference on Biodeterioration of Cultural Property from 20-25th February, 1989 was held.

LIBRARY AND DOCUMENTATION

3.79 Number of books acquisitioned and accessioned —574, number of issues of periodicals received and accessioned —860, number of books classified and catalogued — 610, entries fed into the computer-8500, new equipment, Minolta RP 505, Microfilm, Michofiche reader/printer.

PHOTO DOCUMENTATION

3.80 Number of black and white photographs of art objects — 1700 exposures, in colour transparency — 1200, in colour prints — 1500, Black and White transparency — 60, photo-prints and enlargements-2500.

PUBLICATIONS

3.81 About 10 books and papers were published by the NRLC.

CHAPTER 4

Institutions of Anthropology and Ethnology

Anthropological Survey of India, Calcutta

4.1 The Survey concentrated its efforts on the national project, 'People of India', which had been launched in October, 1985. The project seeks to generate up-to-date information on 4986 communities of the country and to highlight the linkages that bring them together. Most of the 200 scientific and technical members of the Survey are deployed on this project. Until November 1988, field work for 4373 communities had been completed. Writing of reports, completion of abstracts and filling up of computer formats were done for 2634, 3946 and 3956 communities respectively. The general formats have also been filled for 2663 communities. Computerisation of information was initiated at the National Informatic Centre, New Delhi. Computer formats for 2590 communities and abstracts for 1455 communities were transferred to the word processor. The reports on the communities of Andaman & Nicobar Islands have been readied for the press. There are also plans to compile volumes on the communities of Pondicherry, Lakshadweep, Manipur, Meghalaya, Andaman & Nicobar Islands and Mizoram by the end of March, 1989. Two final reports covering the communities of Manipur and Meghalaya have been received. Discussions were held at Guwahati, Itanagar, the Centre for Himalayan Study, North Bengal University, Bagdogra. Scholars of various university departments, Tribal Research Institutes and other organisation were involved in this project. A series of workshops were organised at Trivandrum, Pondicherry, Agartala and Lakshadweep for local scholars. The Director General spent about 90 days on tour visiting Arunachal Pradesh, Tripura and other places.

4.2 The An.S.I. has also undertaken 13 projects which have a bearing on general objectives of the Seventh Plan. The academic formats of the 13 new projects were finalised after a series of discussions held among the members of the An. S.I. and preliminary work has started on most of them.

Field investigation was undertaken of the Onge of Little Andaman under the Sixth Plan project Tribal Transformation in India.

Three Task Forces have been constituted to expedite the processing of three long pending projects. Their endeavours resulted in the publication of four volumes, All India Anthropometric Survey (South Zone), All India Anthropometric Survey (North Zone: Assam) and All India Anthropometric (North Zone: Bihar) and All India Bio-anthropological Survey (Preliminary tables).

EXHIBITIONS

4.3 Dr. K.S. Singh, Director, General, visited Moscow twice in connection with the Indo-Soviet exhibition. The Survey actively participated in this exhibition for the first time in an international exhibition held in Moscow in May, 1988. The Survey also participated in the Indo-Soviet exhibition at New Delhi. The An. S.I. also participated in India International Trade Fair exhibition at Pragati Maidan, New Delhi. The An.S.I. acquired ethnographic films and artifacts collected for the Indo-Soviet exhibition which have been transferred to the Dehra Dun office. The Director General also attended the XII International Congress of Anthropological and Ethnographical Seminar held in Zagrech, Yugoslavia and made presentations on the Ethnic situation in India, People of India and Anthropology of crisis-management. He also visited Leningrad and Hiedelberg for discussions with local scholars.

SEMINARS

4.4 Two national seminars, one on the history of the Anthropological Survey of India and the other on Jawaharlal Nehru, Tribes and Tribal Transformation were held as part of the celebration of the 40th Year of Independence and the Nehru Centenary.

Rashtriya Manav Sangrahalaya (RMS), Bhopal

4.5 The Sangrahalaya an autonomous organisation under the Department of Culture is dedicated to the depiction of the story of mankind in time and space.

MASTER PLAN

4.6 The construction of a temporary exhibition-cum storage building at the site is expected to be completed for use by March, 1989.

The construction of a limited number of staff quarters and a guest house-cum-hostel building at an estimated cost of Rs. 60 lakhs was entrusted to an autonomous body of the Government of Madhya Pradesh.

With the process of finalization of Master Plan reaching near completition, the RMS is likely to start the formalities of construction of the main museum building by the end of 1988-89.

Steps were taken towards providing infrastructural facilities like water, electricity, boundary wall, and plantation at the site.

OPEN-AIR EXHIBITIONS

4.7 'The Tribal Habitat', an open-air exhibition of tribal houses highlighting aspects such as architecture, material culture, life style, environmental features and so on. It was the RMS's first permanent exhibition opened to the public.

The development of a new open-air exhibition on Rock-Art Heritage was undertaken with the utilisation of prehistoric painted rock-shelters present in the premises of RMS.

INDOOR EXHIBITIONS

4.8 The exhibition 'Manav Ki Kahani' continued to attract visitors. Preparations are on to shift this exhibition to the temporary exhibition-cum-storage building coming up at the site.

Exhibits were prepared for the thematic exhibition 'Children in Tribal Society', likely to be opened soon. A special exhibition for children, based on the book 'Father's Letters to his Daughter', to commemorate the Centenary Celebrations of Pt. Jawaharlal Nehru, have been prepared. The exhibition will be opened to the public towards the end of 1988-89.

COLLECTION AND DOCUMENTATION

4.9 Over 550 objects of material culture, from various part of the country, were added on to the RMS collection. The most remarkable recent acquisition was a 10 meter wooden Dussehra Rath (chariot) from Bastar (M.P.), collected under the Museum's Operation Salvage Programme. Another 400 objects are likely to be added to the collection by the end of the year.

Filed-documentation and post-collection cataloging was carried out. Steps have been taken to computerize museum documentation.

PHOTOGRAPHY

4.10 About 100 objects in the museum collection were photographed for the preparation of index and catalogue cards. The interiors of tribal houses in the open air exhibition was photo-documented both for purposes of maintenance and preparation of publications. All other exhibitions and events taking place in the museum were also photo-documented. The field coverage of tribal and folk life produced 1200 colour negatives.

GRAPHIC UNIT

4.11 Paintings, drawings and sketches were prepared for two special exhibitions for children. Layout designs for planning open-air, and themetic exhibitions were prepared. For museum educational programmes, educational materials were prepared. A graphic documentation of the recently acquired Dussehra Rath was carried out.

MUSEUM EDUCATION

4.12 Guided tours and institution-sponsored group-visits of students, trainees from organisations engaged in tribal development and public administration and tour were arranged. Curriculam oriented educational programmes were prepared for pilot testing.

CONSERVATION

4.13 The conservation laboratory executed the following —

Preservative and remedial treatment of 200 objects displayed in open air situations, chemical conservation of 325 ethnographic objects in the reserve collection and restoration of damaged terracotta and musical instruments.

REFERENCE LIBRARY

4.14 The RMS is developing a specialized Reference Library and Documentation Centre to facilitate research exhibit preparation and education. 350 new books, 300 issues of foreign journals and 111 issued of Indian professional journal have been added.

NATIONAL AND POPULAR LECTURES

4.15 As part of a National Lectures series, organised by RMS to commemorate the 40th Anniversary of India's Independence, Dr. V.N. Mishra delivered a lecture on 'Recent Advances in the Study of Human Evolution'. Dr. Gopal Sarana delivered the last lecture of this series on the topic 'Contribution of Anthropology to the Knowledge of Mankind'. Under the Popular Museum Lecture Series, a script for the first lecture has been obtained from Dr. N.C. Chaudhuri on 'Manav Sangrahalaya aur Samaj'.

OTHER INSTITUTIONAL DEVELOPMENT

4.16 The museum undertook the task of setting up of a videotheque and a sound recording facility, to facilitate video and audio presentation and documentation of tribal and folk life.

Imp cos. A/56

सेवाग्राम ७-१२

भाई संपूर्णानंद—

आपका खत मिला. आपने पूर्ण विचार नहीं किया है. खादी वाले शुद्ध होंगे तो खादी काम गड़बड़ नहीं करेगा. आज खादी हमारे पास बहुत कम है. खादी शास्त्र का और खादी कार्य का गहरा अभ्यास कीजिये.

आपका

मो. क. गांधी

CHAPTER 5

Archives and Records

National Archives of India, New Delhi

5.1 The National Archives of India (NAI) is the largest repository of non-current records of permanent value of the Government of India with its activities relating to accession of public records, private papers of national importance and microfilm copies of records of Indian interest from abroad.

INDIAN HISTORICAL RECORDS COMMISSION

5.2 On the invitation of the Government of Jammu and Kashmir, the 52nd Session of the Indian Historical Records Commission was held on 15-16 October 1988 at Srinagar under the chairmanship of Shri L.P. Shahi, Minister of State for Culture, Government of India.

ANNEXE TO THE NATIONAL ARCHIVES OF INDIA BUILDING

5.3 Construction work on the annexe to the National Archives of India continued during 1988-89. Work on the suspension of air conditioning ducts is in progress.

PUBLICATIONS

5.4 The following publications were brought out during the period (i) The Indian Archives, Volume XXXV, No.2; (ii) Annual Report of the National Archives of India, 1986 (Hindi); (iii) National Register of Private Records, Volume XVI; (iv) Reprographics and Archives.

ACCESSION

5.5 The collections of the National Archives of India were further enriched by acquisition of the following records:

PUBLIC RECORDS: 5147 files belonging to the following Ministries/Departments for the period (1873-1950) were accessioned: Ministry of Defence, Ministry of External Affairs and Cabinet Secretariat.

PRIVATE PAPERS: A set of Gandhi papers covering the period from 1905-48 and comprising 4335 items titled as Gandhi-Polak Correspondance has been transferred to the custody of National Archives of India after these were acquired by the Government of India through a public auction held at the Sotheby's, London. The collection includes letters, telegrams,

notes, articles, printed materials, press cuttings, photographs and so on. The letters are mostly written by Gandhiji to Henry Polak, Gandhiji's articled clerk and legal partner in Johannesburg.

The Department has in its custody a collection of Gandhi-Kallenbach papers acquired by the Government of India again through Sotheby's London. Comprising 287 letters and 137 telegrams and covering the period 1909-46, these papers, so far unpublished, throw light on Gandhiji's years in South Africa. They provide a vivid description of his life and activities at the Phoenix settlements and Tolstoy farm where Gandhiji's experiment with self sufficient communities began. These papers also depict the gradual formulation of Gandhiji most powerful concept, i.e. philosophy of 'Ahimsa' and 'Satyagraha', and his plans to fight against apartheid in South Africa.

Photocopies of five letters written by Mahatma Gandhi to G.B. Pant (1932-48) and relating to the selection of Hindus, Muslims and others in the Congress Working Committee and 41 rolls of C.P. Ramaswamy Aiyer Papers (1914-66) of his speeches, lectures, radio talks have been acquired.

5.6 MICROFILMS: The following items were received under the Charles Wallace Trust Grant from the British Library, London — 111 rolls of War Staff files (1939-49) containing information on subjects dealing with Defence, Kashmir issue, and Nationalization of Indian Army; 6 rolls of Thompson Collection (1903-35) dealing with matters like land tenure in Punjab, Brig. General Dyer's report on Jallianwala Bagh shootings; 1 roll of Sir Louis Dane Collection (1849-1939); 4 rolls of Fazl-i-Husain Collection (1924-36); 14 rolls of Temple Wood Collection (1926-53) containing Parliamentary Papers and notes on Gandhi's life; 8 rolls of Hartog Collection (1928-29); and 2 rolls of Stoppford Collection (1930-32).

5.7 The following 13 rolls were received under an Exchange Agreement from the British Library, London 5 rolls pertain to the office of the Private Secretary to the Viceory (1947); 6 rolls of the prescribed publications; 1 roll on Political and Secret Department records and 1 roll dealing with Sir John Malcom's notes on the threatened invasion of India by Russia.

RESEARCH AND REFERENCE

5.8 About 8,681 scholars visited the Archives to avail of the research room and library facilities. Of the 260 scholars enrolled during the period, 18 were from foreign countries, Afghanistan, Australia, Canada, France, Greece, Japan, Switzerland, West Germany, U.K., U.S.A., U.S.S.R. About 79,000 requisitions for records, books and microfilms were attended to and 10026 pages of excerpts from records (in type/xerox copies) were released to them. There were 120 queries seeking information and they were attended to by the Department.

REFERENCE MEDIA

5.9 A summary inventory of 6210 letters of Central India Agency (1858-1870) was prepared and about 7707 items of private papers were listed. 2002 documents of Inayat Jang Collection were descriptively docketed. A descriptive list of 245 letters of Persian Correspondence (1803) were prepared.

RECORDS AND ARCHIVES MANAGEMENT

5.10 79599 files of various Departments and Ministries were appraised. Ministry of Home Affairs (1956-62), Department of Personnel and Training (1955-62), Ministry of Parliamentary Affairs (1952-62), Department of Administrative Reforms and Public Grievances (1954-62) and Department of Company Affairs (1954-62). As a result of this appraisal an amount of Rs. 30,542/- per annum and 153 meters of shelf space was saved.

Vetting of Retention Schedule for records of 20 ministries/departments/offices were completed; record rooms of 20 ministries/departments/offices were inspected; Record Management study of 6 ministries/offices was conducted and on the spot advice was rendered to them.

TOWARDS FREEDOM

5.11 Selection of material relevant to the 'Project' was continued. In this connection public and private records/microfilms covering the years 1940-47 that are available in the National Archives of India and in the various State/Union Territory Archives were examined. About 6565 pages of selected excerpts were forwarded to the Indian Council of Historical Research, New Delhi, for inclusion in the projected volume.

SCHOOL OF ARCHIVAL STUDIES

5.12 The School continued with its One Year Diploma Course in Archival Studies, alongside various short-term courses of eight weeks duration for both professionals and sub-professionals.

The Department organised two workshops, on 'Reprography' and on 'Conservation of National Documentary Heritage' at the National Archives of India, New Delhi, from 18-19 November, 1988 and 28-30 September respectively.

SCHEME FOR FINANCIAL ASSISTANCE

5.13 a) The Grants Committee for the implementation of the scheme entitled "Scheme of Financial Assistance for Preservation of Manuscripts" was reconstituted on 18th July, 1988. In its first meeting held on 6 October 1988 under the Chairmanship of the Director of Archives, the Committee has recommended that an amount of Rs. 15,39,300/- be disbursed as grant to 27 organisations.

b) The Grants Committee for the implementation of "Scheme of Financial Assistance for the Development of State Archives" was reconstituted on 8 August 1988. In its first meeting held on 15 November 1988 under the Chairmanship of the Director of Archives, the Committee had recommended that an amount of Rs. 22,23,000/-be disbursed as grant to the following 7 States: Gujarat, Himachal Pradesh, Kerala, Madhya Pradesh, Manipur, Orissa and Uttar Pradesh.

c) With a view to accelerate the work of survey and listing of records in private custody under the National Register Scheme, a sum of Rs. 1.10 lakhs was sanctioned during the financial year 1987-88 Rs.15,000/- each to the following State Archives: Assam, Gujarat, Kerala, Rajasthan, Tamil Nadu.

EXHIBITION

5.14 Under the Festival of India in U.S.S.R., the Department participated in an exhibition 'DRUZHBA-DOSTI, INDO-USSR links through the Ages' at Tretykov Art Gallery, Moscow.

The Department also particpated in the return exhibition entitled 'DOSTI-DRUZHBA', 'India and the Soviet Union in Time and Space' held at Lalit Kala Akademi Gallery, New Delhi under the Festival of U.S.S.R. in India.

An exhibition 'The Last Phase-Story of our Freedom Struggle in the Last Decade' was organised by the Department from 4 November 1988 to 25 December 1988.

ARCHIVES WEEK

5.15 The 'Archives week' was celebrated in November 1988. During the period, guided tours to a section of the stack area, preservation and reprography units were arranged. Besides, an exhibition of original documents on 'Development of Education in India' was organised.

TECHNICAL SERVICES

5.16 Apart from providing technical information on conservation and reprography to 95 Government and private institutions, a total number of 1,17,416 sheets of records were repaired, 4800 volumes and books were bound. Besides 2,00,000 exposers of microfilms, 74,000 Xerox copies, 16,000 metres of positive microfilms and 2473 prints were prepared in the Department.

REGIONAL OFFICES

5.17 The regional offices at Bhopal, Pondicherry and Jaipur continued with their normal activities.

The regional offices repaired approximately 43,238 sheets of documents and bound 556 volumes/books. Archives Week was celebrated at the Pondicherry Record Office from 1-7 November 1988 and an exhibition on 'Aspects of Social Change' was organised. During the celebration at the Jaipur Record Office a workshop on Record Management was organized. Bhopal Record Office organised an exhibition on 'Aspects of Social change — 1900-1947'.

The Asiatic Society, Calcutta

5.18 The Asiatic Society a premier academic institution in the country acquired prestigeous status of an Institution of National Importance in 1984. Its activities are — improvement in library; preservation and conservation of library materials and museum objects; augmentation of research activities and publications.

The Advisory Committee authorised the Administrator to arrange for the teaching programme for 32 students of Sanskrit studies. The Government of India has sanctioned an ad-hoc grant of Rs. 1,62,000 for six months for the purpose. It is also decided to abolish the Institute of Higher Sanskrit Studies along with other Institutes started in 1985.

With a view to augment research work, the Advisory Committee approved the institutions of 6 research fellowships. Each research fellowship will be for two years but renewable for another year. Remuneration of the fellowship will be Rs. 3000/-per month plus a contingency grant of Rs. 10,000/- per annum.

5.19 Steps have been taken to regularise the publication of journals. The monthly bulletin of the Society has resumed regularity. For augmentation of the sale of the Society's publications as well as for its publicity, the Society participated in the National Book Fair in Lucknow and in the Calcutta Book Fair.

The Asiatic Society in collaboration with the National Library and the Ramakrishna Mission Institute of Culture arranged a Conference on Indological Studies from 21 to 23 November, 1988. Many eminent foreign scholars participated.

The Society organised a number of academic lectures each month starting from June 1988. On the occasion of Calcutta Book Fair a Seminar on "200 years of Asiatic Researches" was arranged.

5.20 On the suggestion of Government of India, the Society decided to implement the Cultural Exchange Programme as far as possible. In March 1987 Dr. I. Serebriani, Research Fellow, Gorky Institute of World Literature, Moscow, USSR visited the Asiatic Society under Indo-USSR Cultural Exchange Programme.

The Society's library, the oldest library in the country, has improved facilities for helping scholars and research workers in their studies. A stock verification unit has been created to make a proper account of the books and manuscripts for rectification of reading room card cataloguing and bibliographical and indexing work.

MUSEUM AND ARCHIVES

5.21 Cataloguing of the manuscripts continued. 174 manuscripts were catalogued. Stock taking and physical verification of 2913 Sanskrit manuscripts were done. Preparation of alphabetical index of the archival documents was carried out. About 28,449 manuscripts to be cleared.

The Conservation Section was active through out the year in preserving and restoring books and manuscripts, paintings and other documents kept in the Library and Museum and Manuscripts Sections.

In the Reprography Section a total number of 31030 folios were photocopied. 7089 folios of micro film copy and 36000 folios of positive copy were carried out from various books and manuscripts under collection of the Society.

Publication Section — two books have been published and four more expected by 31st March, 1989. A catalogue of available books has also been published.

Library of Tibetan Works and Archives, Dharamsala

6.4 The aims of the Library of Tibetan Works and Archives (LTWA) a voluntary organisation, are to acquire and conserve Tibetan books and manuscripts, provide reference service and act as a reference centre for queries on Tibetan source material, manuscripts and painting and objects of art.

The Library has the following Departments:

i) Tibetan Books and Manuscripts Library with 60,000 books and manuscripts including a large and invaluable hand written manuscripts.

ii) Foreign Languages Reference Library with 5,000 books, periodicals and newsletter in English and other European languages on Tibet, Himalayas and Buddhism.

iii) Museum and Archives which houses 700 icons, paintings, stupas, ritual objects and 350 historical documents and 4600 old photographs of Tibet dating back to 13-19 centuries.

299 Tibetan texts and manuscripts on Tibetan Culture and Buddhist Studies acquired from Tibet were added to the Library.

6.5 Microfilming of the 90 volume Phugdrag of the Kagyar, the only one of its kind in world, calligraphed during the time of the 6th Dalai Lama and exposure of 337 rare documents were completed in collaboration with Bayer Academy of Central Asian Studies in West Germany.

The Oral History Project conducted 7 in-depth interviews on various aspects of Tibetan knowledge with senior Tibetans, recorded 15 orally transmitted teachings, and transcribed 29 important historical works recorded earlier.

22 accredited scholars sponsored by different universities of America and Europe, and scholars dupted by the Indian Government under the Cultural Exchange Programme carried out research under the guidance of LTWA scholars.

An art school offering a seven-year training programme covering all aspects of traditional Thangka Painting, and a craft school offering a three year practical training in the traditional skills of woodcarving have been established. These schools are major centres of Tibetan Fine Arts in India recognised by the Government of India.

The Library receives regular grants from the Government of India for its maintenance and other projects.

Financial Assistance to Buddhist/Tibetan Organisations

6.6 The Department of Culture is administering a scheme of financial assistance for the development of Buddhist/Tibetan organisations, including monastries, engaged in the propagation and scientific development of Buddhist/Tibetan culture, tradition and research in related fields. Grants are on an ad-hoc and non-recurring basis given up to a maximum of Rs. 2.00 lakhs for any single organisation. Expenditure on each of the approved projects is to be shared in the ratio of 3:1 between the Central Government and the concerned State Government organisation. 84 institutions have been selected for grants of financial assistance so far.

CHAPTER 6

Institute of Tibetan, Buddhist and Other Historical Studies

Central Institute of Buddhist Studies, Leh (J&K)

6.1 The Central Institute of Buddhist Studies, Leh, is an autonomous organisation fully financed by the Central Government. The basic objectives of the Institute are to develop the multifaceted personality of the students by training them in Buddhist philosophy, literature and the arts along side modern subjects. While compulsory subjects are Sanskrit, Hindi, English, Bhot Literature and Buddhist Philosophy, the optional subjects are Social Science, Political Science, Mathematics and Economics. The curriculum has been prescribed by the Sampurnanand Sanskrit Vishwavidyalaya, Varanasi, to which the Institute is affiliated.

The Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi

6.2 The Central Institute of Higher Tibetan Studies, Sarnath, an autonomous organisation fully financed by the Central Government, was established with the objective of preservation of Tibetan culture and tradition, restoration of ancient Indian literature preserved in the Tibetan language and provision of higher education in Buddhist Studies to students from the border areas. The Institute prepares students for various courses of the Sampurnanand Sanskrit Vishwavidyalaya. The Institute has made great headway since its declaration on April 5, 1988 as a "Deemed-to-be University".

Sikkim Research Institute of Tibetology, Gangtok

6.3 The Institute (SRIT) is an autonomous organisation under the Government of Sikkim, with the Governor of Sikkim as President of its governing body, and has been set up for research and studies in Tibetology. The Institute has done significant work in promoting research and associated subjects like iconography, medicine, astrology and history. It has a special research and publication programme.

During the year besides its research journal, *Bulletin of Tibetology* (3 issues) *Sangsryyas-Stong* (Thousand Buddhas) a book on Buddhist Iconography — consisting of 4 colour photos and 80 sketches of Buddhas and Bodhisattvas with explanations of the symbols of 'Mudra' were published.

CHAPTER 7

Libraries

National Library, Calcutta

7.1 The National Library is the biggest library in the country with a collection of about 1.96 million volumes housed mainly at Belvedere, Calcutta. It is one of the recipient libraries under the provisions of the Delivery of Books Act, 1954 (amended 1956), and is the foremost repository of the United Nations documents. It also acts as a referal centre for research scholars.

The prime source of acquisition of current books, newspapers and journals, published in India is under the Delivery of Books Act. English books and journals published abroad are acquired through purchase. The Library has a book exchange programme with 192 institutions in 80 countries. This programme is an excellent source for the acquisition of foreign publications otherwise not obtainable through normal trade channels.

7.2 Providing bibliographical and reference services to readers and research scholars from India and abroad is one of the standard activities of the Library. The Library has published bibliographies and catalogues of its holdings with a view to disseminating information, it plans and arranges exhibitions of books and illustrations to mark national and international events. Mention may be made of the exhibitions of letters, documents and photographs of Sarat Chandra Bose organised on the occasion of his Birth Centenary on the 5th September, 1988; and an exhibition on "Jawaharlal Nehru and Independent India" on the occasion of Pandit Jawaharlal Nehru's Birth Centenary on 14th November, 1988.

Under the microfilming programme, the Library preserved the contents of rare and out of print publications. The Library also prepares microfilm/photo/xerox copies of research materials available in the collection of the Library and supply them to the scholars at cost.

The Library renders "reader services" to about 7,000 readers on the rolls as "Reading Room Members" It also functions as the National Centre for International Loan. During the year about 88,500 were issued to the readers and approx. 32,000 books were lent out to the borrowers.

During the year, the National Library published four publications namely 1) Conservation of Library Materials, 2) Rabindragranthasuchi (in Bengali), compiled by Swapan Majumdar, 3) Bibliographical Central in India and 4) Indological Studies and South Asia Bibliography.

Central Reference Library, Calcutta

7.3 The Central Reference Library a subordinate office of the Department of Culture, located in the National Library campus is mainly responsible for the implementation of two schemes (i) Compilation, printing and publication of Indian National Bibliography (both in Roman scripts and in respective Indian language scripts and (ii) Compilation and publication of Index Indiana (in Roman script), an Index to articles appearing in current Indian periodicals in major Indian languages.

INDIAN NATIONAL BIBLIOGRAPHY

7.4 The most important achievement is the revival of the monthly Indian National Bibliography (INB) in Roman script which was discontinued from 1978 due to delay in composing and printing through Government of India presses. A photo-composing machine imported from USA has been pressed into service. The monthly issues of 1984 and 1985 have already been published. Action has been taken to print the 1986 and 1987 monthly issues through a private printer to clear the backlog. Accordingly, the monthly issues from January to December 1986 will be published during this period. Cumulated annual volume for 1980-81 is expected to be published in this period. Preparation of the manuscripts for 1983 annual volumes are in progress. The manuscript of 1984 annual volume has been submitted to the Government of India Press, Coimbatore for printing. Hindi language Bibliography for 1986 and 1987 (annual volumes), Malayalam for 1987 (annual, Tamil for 1984 (annual) and Urdu 1981-82 and 1986-87 (Cumulated) language Bibliographies have been published. Steps have been taken to print other language Bibliographies also during this period.

INDEX INDIANA

7.5 Index Indiana is published at present as annual volumes covering only six Indian languages — Bengali, Hindi, Gujarati, Marathi, Malayalam and Tamil. The remaining languages will be covered in future and the publication will be brought up-to-date as soon as the proposed new posts of sub-editors for the remaining languages are created. Annual volume 1983 of the Index Indiana has already been published. 1984-85 Cumulated volume is getting ready for the press.

PROGRESSIVE USE OF HINDI FOR OFFICIAL PURPOSE OF THE UNION GOVERNMENT OF INDIA

7.6 An Official Language Implementation Committee has been set up for implementation of the Government orders relating to progressive use of Hindi in the Central Reference Library, in all, four meetings were held during the year. A Hindi Assistant has been appointed specifically for Hindi work, 80% of employees (other than Group D Staff) have passed either the Pragya Examination or acquired proficiency in Hindi language equivalent to or higher than Pragya standard.

Central Secretariat Library

7.7 The Central Secretariat Library, including the Hindi and Regional Languages Wing at Bahawalpur House and a branch library at Ramakrishna Puram, New Delhi have been engaged in providing research and reference services to government organisations members of the library, research scholars and others. A small collection of material for lending in English, Hindi and other Indian languages is maintained for members only.

The Library added about 8661 books in Hindi, English and other regional languages to its main collection of over seven lakh volumes. In addition 32177 items of Central and State Government publications including gazettes, legal documents and proceedings of the legislative bodies, were received by the library. Official publications received from International Agencies, such as Unesco, United Nations, ILO and other Foreign Government exceeded 2330. The library has also received 400 U.S. Government publications in microfiche forms.

The Library enrolled 4076 members and lent out 169590 volumes. Over 553 volumes were supplied on Inter-library loan basis to different local libraries and 112 books were

borrowed on inter-library loan basis to meet the demands of the members. The library provided 21104 photo copies of the documents to research scholars, individuals and institutions.

Reading Halls of the Central Secretariat Library Complex cater to the needs of registered members and non-members by providing them popular dailies in Hindi, English and other Indian languages published locally as well as elsewhere in India. The total number of such dailies regularly subscribed stands at 45. Similarly the total number of periodicals received by the library in English, Hindi and regional languages through subscription, gift and exchange is 1047.

7.8 Under the Library's extension activities programme, the following were organized:

1. A lecture under 'National Integration Lecture Series' by Shri Aslam Sher Khan, M.P. and former Captain, Indian Olympic Hockey Team on 15th March, 1988 on the theme 'National Integration through Games and Sports'.

2. Micrographic Unit was further strengthened for preparing better quality microfiches and microfilms. Microfiche/microfilm copies are being made of brittle rare books from the collection as part of our Preservation Programme.

3. Organised 'MINISIS' a training programme with the help of IDRC resource person from 5th to 16th December, 1988. Complete records of periodical holdings are now available in machine readable form. Current monographs are regularly being added to create a CSL-Bibliography Database.

Three fresh graduates from the library schools were given 3 months practical training during the year as a part of our regular programme.

The work of data collection for Hindi Bibliography Project is in progress. Bibliographical Survey of India Manuscripts (a joint project sponsored and funded by INTACH) is also progressing satisfactorily.

Central Library, Bombay

7.9 Under the Delivery of Books Act, the Central Government has declared four libraries as recipient libraries for receipt of a copy of the books/newspapers published in the country. The Central Library, Bombay, is such a recipient library. The Central Government releases grants to the Library for maintenance of the Delivery of Books Act Section.

Delhi Public Library, Delhi

7.10 The Delhi Public Library established in 1951 by the Ministry of Education, Government of India with financial and technical assistance from UNESCO has been providing free library service to the citizens of Delhi. Started as a small unitary library in Old Delhi it has since developed into a Metropolitan Public Library System consisting of a central library, a zonal library at Sarojini Nagar, a rural zonal library at Bawana, 29 branches and sub-branches, 31 R.C. libraries, a Braille department and a network of mobile service stations serving 66 areas and 19 deposit stations spread all over the Union Territory of Delhi.

Two sports libraries were established in collaboration with Sports Authority of India at National Stadium and Talkatora Swimming Pool Complex for the use of sports lovers.

The Library has a new collection of 8,49,902 volumes and 84,468 registered borrowers. It issued 21,94,056 volumes for home reading during the year.

Raja Rammohan Roy Library Foundation, Calcutta

7.11 The Foundation, is an autonomous organisation engaged in the promotion of library services in the country, which it does in cooperation with the State/Union Territory Governments.

In order to improve public library services in the country, it has implemented nine schemes of matching and non-matching assistance.

The volume of assistance during 1987-88 amounted to Rs. 189.00 lakhs. About 6000 libraries at different levels were assisted.

The Foundation has also initiated a number of promotional activities with a view to promoting library movement in the country. The Annual Raja Rammohan Roy memorial lecture was delivered by Professor S. Gipal. A national seminar was organised to celebrate the 40th year of Independence and birth centenary of Pandit Jawaharlal Nehru.

7.12 The Foundation has taken up a programme for collection, compilation, storage and dissemination of information on public libraries on a regular basis. It has taken up a project for collecting statistics from State Central Libraries and District Libraries. It is also decided to update the "Directory of India Public Libraries" periodically.

In addition to the Northern Zonal Office set up in 1986, three more Zonal Offices were opened in Bombay, Madras and Calcutta. The work for the extension of the Foundation's building with three additional floors has started.

Indian Council of World Affairs Library, New Delhi

7.13 The Indian Council of World Affairs (ICWA) Library, New Delhi, provides research facilities on international and area studies. It has the richest collection of books, documents, periodicals and press clippings on international relations. It has also a impressive collection of microfilms and maps. It is a depository library of the United Nations Library system. The Central Government provides an ad-hoc grant to the ICWA for maintenance.

Khuda Bakhsh Oriental Public Library, Patna

7.14 An illustrious son of Bihar, an advocate by profession and a bibliophile by taste, Khuda Bakhsh Khan, established a "public library" in 1891 out of his own personal collection of manuscripts and printed books and, by a Deed of Trust, donated to the public his entire collection the same year. The Library, now known as Khuda Bakhsh Oriental Public Library, has emerged with one of the richest collections of manuscripts in the sub-continent with over 1600 manuscripts, 90,000 old and rare printed books and over 200 paintings of Mughal, Rajput, Iranian and Turkish schools. Declaring it by an Act of Parliament an Institution of National Importance, the Government of India took over its control in 1969. It is now managed by a Board headed by the Governor of Bihar.

PRESERVATION OF KNOWLEDGE

7.15 The Library is engaged in preservation and dissemination of knowledge alongwith acquisition of valuable national heritage in the form of manuscripts in particular and books in general. With the help of trained hands the manuscripts and rare books are being given a new lease on life through chemical treatment, lamination, necessary repairs and binding. The Library is extending its cooperation to other collections as well in respect of preservation.

DISSEMINATION OF KNOWLEDGE

7.16 Towards disseminating knowledge on a wider scale, Khuda Bakhsh Library has formulated a multi-dimensional programme to provide the scholars all possible help in their research pursuits. Twenty-one volumes of Descriptive Catalogues of the manuscripts have been published, while experts are busy with the task of completing 10 more volumes to be released within the next few years; Union Catalogues (handlists) of Arabic and Persian manuscripts on a few of the Library's special subjects have been completed and published during the three South Asian Regional Seminars. Critical edition and publication of 36 rare manuscripts and monographs have been printed. The entire periodical collection of the Library, is being indexed to provide micro-information to scholars. Annual extension lectures, talks and symposia are being held regularly wherein eminent scholars are being invited to deliver lectures.

RESEARCH AND PUBLICATION

7.17 Jawaharlal Nehru, while visiting the Library in 1953 expressed his desire to see the rare material of the Library reproduced by the latest techniques. To fulfil his desire, critical editions and publications of 30 rare items have been taken up. To facilitate availability of material, the Library has been descriptively cataloguing its entire collection of manuscripts. The Library's quarterly research journal, containing articles based on the material preserved in the Library is yet another effort towards disseminating material.

There is a great amount of material on the freedom movement still lying in the old periodicals. The Library is collecting all such material to be published in thirty volumes. A rare speech of Motilal Nehru covering about sixty pages has already been published.

ACADEMIC SAARC IN EVOLUTION

7.18 The Library's scheme of South Asian Regional Seminar is aimed at creating an academic infrastructure to provide a strong base for the political superstructure for South Asian Regional Cooperation. Of the three Seminars held so far, one each was devoted to Tibb, Tasawwuf and Urdu manuscripts on the respective subjects scattered over South Asian countries. In addition, these Seminars have been playing a vital role in strengthening the SAARC ties on the academic level.

RECOGNITION AWARD

7.19 The Library has instituted an award for scholars for outstanding research contribution in the Library's special fields of Arabic/Persian/Urdu/Islamic Studies/Tibb/South Asian Studies/West Asian Studies/Central Asian Studies/Comparative Religion/Sufism/Composite Culture of India. The Awards are on the pattern of Sahitya Akademi and Jannpith Award.

ACQUISITION

7.20 Acquisition of manuscript through purchase, exchange, gift or in-consideration is a continuing feature of the Library. The Library has been able to acquire 287 manuscripts to its holdings alongwith some 9260 printed books and about fifty microfilms/photostats each year.

PRESERVATION OF EMINENTS

7.21 A separate collection of audio and video tapes is being built up to record and preserve the eminent people of India. Over 100 audio and 43 video tapes have been prepared.

Thanjavur Maharaja Serfoji's Saraswati Mahal Library, Thanjavur

7.22 The Thanjavur Maharaja Serfoji's Saraswati Mahal Library, Thanjavur is an institution of acknowledged repute. It contains rare and valuable collections of manuscripts on manifold aspects of art, culture and literature. The main aim and object of this library is to publish rare and old manuscripts so that scholars and the reading public may benefit.

The Library has a wide collection of manuscripts and books from the times of the Maratha Kings. The Library, which was under the management of the Maratha royal family till 1918, became a Registered Society in 1986, under the chairmanship of the Minister of Education, Tamilnadu.

The Library has over 44,477 manuscripts both in palm-leaf and paper in Sanskrit, Marathi, Telugu and Tamil languages and a few in Persian. Among these, the largest collections is in Sanskrit, numbering 37,499 manuscripts, both in palm-leaf and paper in different scripts such as Grantha, Devanagari, Nandinagari and Nagari scripts. Besides the manuscripts the Library is in possession of 4500 old books in European languages printed in Britain during the period of Maharaja Serfoji (before 1832).

Rampur Raza Library, Rampur

7.23 To provide better management and adequate financial support, the Government of

India took over the Library on 1st July, 1975 under the Rampur Raza Library Act, 1975. The Library was also declared as an Institution of National Importance. While it is funded by the Department of Culture, it receives a modest annual grant of Rs. 48,000 from the U.P. Government. The Library is managed by a high powered Board, with the Governor of Uttar Pradesh as the Chairman. There is a provision for a Vice-Chairman and 12 other members who represent the erstwhile ruling family of Rampur, distinguished historians/scholars in Arabic, Persian and Urdu literature besides officials of the Central and State Governments concerned with the affairs of the Library.

The Library has a collection of about 50,000 printed books, 15,000 manuscripts besides a large number of miniature paintings and bhoj patras. As the Library's collections had never been physically verified earlier, the Rampur Raza Library Board at its meeting held on 13th December, 1986, set up a committee to ensure stock taking of the Library's holdings. The work of listing of manuscripts commenced in March, 1987 and was completed in July, 1988.

CHAPTER 8

Academies and National School of Drama

Sangeet Natak Akademi, New Delhi

8.1 The Sangeet Natak Akademi was set up by the Government of India in 1953, for the furtherance of the performing arts in the country. To achieve its objectives, the Akademi has initiated several schemes for preservation, promotion, documentation and dissemination of folk, tribal and classical art forms of the country.

The Akademi has set up two training institutes namely: Kathak Kendra, New Delhi and Jawaharlal Nehru Manipur Dance Academy, Imphal where training is given in Kathak and Manipuri Dances. The Akademi grants financial assistance to institutions for cultural programmes, training and production and in 1988, 156 institutions received grants from the Akademi.

Some of the important programmes undertaken and presented by the Akademi during the year were:

Indo-Soviet Seminar of Music, Indo-Soviet Seminar on Dance, Festival of India in Japan, Festival of France in India, Project on Balasaraswati's style of Bharatnatyam, Lok-Utsav'88 and Nrityotsava.

ASSISTANCE TO YOUNG THEATRE WORKERS

8.2 This scheme was introduce during 1979-80 and four important theatre festivals were organised during the year.

DOCUMENTATION & DISSEMINATION

8.3 For the archival collection, 72 hours 50½ minutes video recordings and 85 hours 25½ minutes audio recordings were done by the documentation unit of the Akademi.

PUBLICATION

8.4 Two issues of the quarterly journal Sangeet Natak Nov. 87-88 were brought out. Two more issues will be published by March 1988.

A quarterly on the Akademi's activities Sangeet Natak Akademi News Bulletin appeared regularly during the year.

INTER-STATE CULTURAL EXCHANGE PROGRAMME

8.5 Seven different tours were organised under the Exchange Programme in the country during the period.

Sahitya Akademi, New Delhi

8.6 Sahitya Akademi is an autonomous organisation set up by the Government of India in 1954 to work actively for the development of Indian letters and to set high literary standards, to foster and co-ordinate literary activities in all Indian languages and to promote through them the cultural unity of the country.

Some of the functions of the Akademi are: Popularising writers and languages, declaring literary awards, offering fellowship honours, assessing literary trends, encouraging experiments in the Indian languages through its journals, encouraging younger generation of writers through its various workshops, offering grants to authors and scholarships for comparative study of literature.

The Akademi published 68 books in various Indian languages the II volume of the Encyclopaedia of Indian Literatures, Ten seminars/workshops were organised during April-December, 1988. 18 literary forum meetings were held at the Akademi's four offices at New Delhi, Bombay, Calcutta and Madras. In the "Meet the Author" series organised in collaboration with India International Centre, New Delhi, five authors were invited to address the literary fraternity. A "Poets Meet" was organised at New Delhi on 14th November, 1988 to mark the birth centenary of Pandit Jawaharlal Nehru.

Four issues of "Indian Literature" and three issues of "Samakaleen Bharateeya Sahitya (Hindi quarterly) were published.

Books worth Rs. 11.00 lakhs were sold during the period.

EXHIBITIONS

8.7 (i) Exhibition of Sahitya Akademi Publications; (ii) Sahitya Akademi publications in Gujarati; (iii) Published works of Maulana Abul Kalam Azad; (iv) an exhibition in collaboration with Sahitya Akademi and the New Zealand High Commission to India were organised at Calcutta, Bombay and Delhi.

Annual Akademi Awards to 22 distinguished writers in various Indian languages were awarded.

Lalit Kala Akademi, New Delhi

8.8 The Lalit Kala Akademi set up in 1954 and registered in 1957 works principally for the promotion of art and has undertaken various programmes and projects.

The following two exhibitions were sent abroad:

(i) Triennale of Realistic Art, Sofia, Bulgaria.
(ii) 2nd Asian-European Art Biennale, Ankara, Turkey.

Incoming Exhibitions were —

(i) Cuba in Paper.
(ii) Exhibition of Polish Modern Art.
(iii) Exhibition of paintings and sculptures of two Bulgarian artists.

Miscellaneous exhibitions were —

(i) Exhibition of Traditional Terracotta in the workshop at Regional Centre Madras during the SAARC festival.
(ii) Exhibition of selected works of Prof. R.S. Bisht.
(iii) Circulating exhibition of selected works of National Exhibition of art — 1988.
(iv) Exhibition of the recent acquisitions of Lalit Kala Akademi.
(v) Selected 15 sculpture pieces from the Akademi's collection at Calcutta.

CIRCULATING EXHIBITION NO. 17

8.9 A collection of 39 paintings, 6 graphics and 5 sculptures from the Akademi's collection was shown at Palghat, Kalpetta Calicut and Cochin.

National School of Drama, New Delhi

8.10 The National School of Drama (NSD) is a premier theatre institute established in 1959 by Sangeet Natak Akademi in 1975. It was registered as an autonomous institution, fully financed by the Department of Culture. Its main objective is promoting theatre in India, with a specific responsibility of developing and establishing high standards of theatre education in the country.

8.11 Presently, the School has 55 students on its rolls, under the Fellowships Scheme. The School awards 20 Apprentice Fellowships to post graduates for working on their projects.

Annual Convocation, 1988 was presided over by Shri L.P. Shahi, Minister of State for Education and Culture.

In February, 1988 NSD played host to an Indo-USSR Theatre Seminar in collaboration with the Festival of India as part of the USSR Festival in India.

Mrs. Sheila Dikshit, Minister of State, Government of India inaugurated a three day seminar "Development of Theatre of India and USSR — Method and Practices".

8.12 The Repertory Company of the School visited Calcutta, Gwalior, Kanpur and rural areas of Liluah and presented 50 performances of different plays. The School has assigned translations of the classical theatre form of Japan. Three plays from English and Tamil have been translated into Hindi for students and for Repertory Production. About 400 children presented 8 plays on "90 years of Indian Freedom Struggle", under the Children's Theatre Workshop.

CHAPTER 9

Promotion and Dissemination of Culture

9.1 The Government of India, in the Department of Culture, as a part of its programme of promotion, preservation and dissemination of culture, has formulated two schemes —

(i) Scheme for promotion and dissemination of Tribal and Folk Art and Culture.
(ii) Scheme for the preservation and development of Cultural Heritage of the Himalayas;

Under the Seventh Five Year Plan —

The schemes purport to provide financial assistance to voluntary organisations and institutions as per the details given below:

Scheme for Promotion and Dissemination of Tribal and Folk Art and Culture

This scheme envisages to provide grants/subsidies to registered voluntary organisations institution and individuals who are engaged in the area of the preservation of tribal art and crafts for undertaking projects of:

(a) documentation, research survey and photographic record of artistic manifestations;
(b) identifying project in the system of formal and non formal education to disseminate awareness of the richness of tribal culture and life; and
(c) preservation and propagation of tribal art, craft oral traditions and other facets of tribal and rural culture.

Individuals applying for financial assistance should either be associated or will have to associate themselves with some institution having the necessary infrastructure facilities for undertaking their projects.

Scheme for the Preservation and Development of Cultural Heritage of the Himalayas

9.2 This scheme envisage to provide financial assistance to (a) institutions including the concerned Department of Universities, (b) voluntary organisations, museum, library research bodies, and (c) individual experts, engaged in the task of

CHAPTER 10

Schemes for Training and Research

Award of Scholarships to Young Workers in Different Cultural Fields

10.1 The objective of the Scheme is to give financial assistance to young artistes of outstanding promise for advanced training, within India, in the fields of music, dance, drama, painting, sculpture, illustration and design woodcraft among other cultural activities. The number of scholarships has been increased from 100 to 150 from the financial year 1988-89. The usual duration of these scholarships is two years but in exceptional cases, it may be extended by another year. The value of the scholarships is Rs. 400/- per month. The emphasis is on award of scholarships in fields which are becoming extinct.

Emeritus Fellowships to most eminent Artistes in the fields of Performing, Literary and Plastic Arts

10.2 The scheme of Emeritus Fellowships has been formulated so that artistes who have achieved a high degree of excellence in their respective fields but have since retired from the profession, could be given financial support to enable them to continue experimentation in a spirit of financial freedom. The fellowships are of the value of Rs. 2,000/- each per month, tenable for a period of two years and are awarded every year. The Scheme came into operation from the financial year 1983-84 and at present there are 20 Fellows.

Award of Fellowships to Outstanding Artistes in the Fields of Performing, Literary and Plastic Arts

10.3 The Scheme provides for the award of Senior Fellowships of the value of Rs. 1,000/- per month and Junior Fellowships of the value of Rs. 500/- per month each. The number of Senior Fellowships has been increased from 15 to 30 and that of Junior Fellowships from 35 to 75 from 1988-89 onwards. The awards are given every year. The main objective is to provide basic financial support to outstanding men in the fields of literary, plastic and performing arts in the age group of 25-65 years for very advanced training of individual

FOREIGN FEATURE FILMS

9.21 Of the 118 foreign feature films certified in 1988, 52 were given 'U' certificates, 11 'UA' certificates and 55 'A' certificates. 43 foreign films were refused certification.

SHORT FILMS

9.22 The Central Board of Film Certification certified 1,662 Indian Short films (1630 with 'U' certificates, 3 with 'UA' and 29 with 'A') while the number of certified foreign shorts was 486 (464 with 'U' certificates, 3 with 'UA', 12 with 'A' and 7 with 'S').

LONG (NON FEATURE) FILMS

9.23 The total number of long Indian films and foreign films certified during 1988 was 5 and 4 respectively.

EDUCATIONAL FILMS

9.24 424 films were classified as predominantly educational films.

VIDEO FILMS

9.25 The CBFC issued certificates to 589 video films. Of these, 41 were Indian feature films, 42 Indian long films (other than feature films) 6 foreign long films, 570 video films received 'U' certificates, 2 'UA', 6 'A' and 11 'S' certificates. 66 Indian shorts and 434 foreign shorts were also issued certificates.

(d) The Centre sent the Kachari Dimasa Cultural troups of Nagaland to Nainital to participate in the cultural programme organised by the NCZCC.
(e) A week long workshop on art and craft was organised at Guwahati from 27.7.88 to 2.8.88.

NORTH CENTRAL ZONE CULTURAL CENTRE, ALLAHABAD

9.15 (a) The first Inter-Zonal Cultural Festival entitled 'Chalo Man Ganga Yamuna Teer' at Magh Mela was organised with the participation of all the seven zonal cultural centres. About 1000 artistes from all parts of the country presented their special forms of folk and classical dances and songs.
(b) The 'Chaupal Manch' cultural awareness programme was organised from July 7-19, 1988 in 16 blocks of Rai Bareli District for the rural audience. Two new programmes of Bal Milan and Prerna Manch for women were held at Allahabad.
(c) A theatre workshop was organised at Allahabad, Varanasi and Gorakhpur. Versha Mangal Utsav — a festival on the rainy season was held at Indore.
(d) Seemachal Sanskritik Yatra was held from 2.10.88 to 23.10.88 in select areas of Uttar Pradesh and Rajasthan. Artistes from UP, Haryana, Himachal Pradesh, Manipur, Orissa, Bihar, Madhya Pradesh, Rajasthan participated.
(e) Sharad Utsav in Jaipur and Prerna Manch and Sanskriti Sandhyas at Allahabad were held.

EAST ZONE CULTURAL CENTRE, SANTINIKETAN

9.16 (a) Chotanagpur Mahotsav was organised at Ranchi where 33 artistes participated.
(b) The Centre in collaboration with the South Zone Cultural Centre organised the Dweep Mahotsava from 7.4.88 to 17.4.88 at Andaman and Nicobar Islands. 107 artistes from the two Centres participated.
(c) The Beach Festival was organised at Puri in collaboration with the Department of Culture, Government of Orissa. 74 artistes from Assam, Bihar, Orissa, Manipur, Sikkim and West Bengal took part.
(d) An exhibition on Soviet Women at Victoria Memorial Hall, Calcutta was organised. About 5 lakh people visited the exhibition.

Central Board of Film Certification

9.17 Films can be publicly exhibited in India only after they have been certified by the Central Board of Film Certification (CBFC). Set up under the Cinematograph Act, 1952, the Board consists of a part-time Chairman with head-quarters at Bombay. It has six regional offices, one each at Bangalore, Bombay, Calcutta, Hyderabad, Madras and Trivandrum. The regional offices are assisted in the examination of films by advisory panels, appointed by the Central Government and comprise eminent educationists, art-critics, journalists, social workers, doctors, lawyers and others.

Film Certification Appellate Tribunal (FCAT)

9.18 The FCAT constituted in March, 1984, with head-quarters at New Delhi continued to hear appeals against decisions of the Central Board of Film Certification.

FILMS CERTIFIED DURING 1988

9.19 India continues to produce the largest number of feature films in the world. From 219 in 1952 the number of certified feature films rose to 287 in 1955, 326 in 1965, 475 in 1975, peaking to 912 in 1985 but then dipping somewhat thereafter, with 840 films in 1986, 806 in 1987 and 773 in 1988. Whereas Tamil films dominated the scene in 1987 with 167 films, followed by Telugu with 163 films and Hindi 150 films the current year has seen a recovery by Hindi films which have regained the first position with 182 films. Unlike in the year 1987, foreign feature films certified by the Board registered a substantial fall from 199 last year to 118 this year.

INDIAN FEATURE FILMS

9.20 Out of 773 feature films certified in 1988, 471 were granted 'U' certificates, 95 'UA' and 207 'A' certificates.

(b) The Centre cosponsored the Himachal Utsav at Shimla with the North Zone Cultural Centre, 25 artistes from Tamil Nadu participated in the Utsav.
(c) A major festival 'Fete de Pondicherry' was conducted from 10.8.88 to 18.8.88 to coincide with De Jure Day of Pondicherry. The festival was inaugurated by Governor of Tamil Nadu and presided over by the Lt. Governor of Pondicherry. 75,000 audience witnessed the festival each day.
(d) Vijayanagara Dasarah Mahotsava was organised at Hampi, Karnataka state and presided over by the Chief Minister of Karnataka. Handicrafts and painting exhibitions were organised. 350 Karnataka folk and classical artistes and 130 artistes from the other constituent states presented colourful dances. The festival was momentous for the traditional dance festival had been revived after 400 years of Krishnadevaraya.
(e) The Centre cosponsored with 'Soorya' a cultural organisation of Kerala, on the occasion of its 10th Anniversary Celebrations. It was a month long festival and about 10,000 audience witnessed it.

SOUTH CENTRAL ZONE CULTURAL CENTRE, NAGPUR

9.12 (a) Short summer workshops were held for children of the backward classes and tribals on the following: science, soap carving and theatre.
(b) A cultural troupe of 17 artistes from Maharashtra was sent to participate in the Himachal Utsav held at Shimla from 27.4.88 to 30.4.88 organised by the North Zone Cultural Centre, Patiala.
(c) The Bal Natya Prashikshan Shivir for children of all participating states was organised.
(d) Four troups of 50 artistes participated in the inter zonal Onam festival organised at Cannanore by the South Zone Cultural Centre from 25-27 August, 1988.
(e) The Centre participated in the Festival of USSR in India programme of ballet artistes at Nagpur in collaboration with ICCR Delhi.
(f) The Centre participated in the Centenary Celebrations of Dr. S.K. Sinha at Patna (Bihar) from 25.10.88 to 6.11.88. 76 artistes from Andhra Pradesh, Karnataka, MP, Maharashtra participated.

WEST ZONE CULTURAL CENTRE, UDAIPUR

9.13 (a) A colourful programme of folk songs and play 'MARKHANIA' produced by the Tribal Repertory was presented in the Central Jail of Udaipur. 700 prisoners and workers in the prison comprised and audience.
(b) 50 Siddhi artistes of Gujarat were sent to participate in the Himachal festival at Shimla organised by the North Zone Cultural Centre.
(c) A silent theatre workshop for deaf and blind children was organised at Dali. District Shimla in which 50 children took part.
(d) The Centre participated in the National Festival of Ballard Singers organised by NCZCC at New Delhi. The Paschimalap programme was inaugurated at Nasik, Ahmedabad and Jodhpur on 15.9.88.
(e) The Tribal Repertory of the Centre toured the tribal villages of Udaipur and Durgapur districts staging plays — "Markhania, Tido Rao and Ujala Dekh Andhera Bhage" based on themes like illiteracy, environment, dowry, blind faith and liquor. 20 prisoners of the Central Jail who were trained by the Centre in drama earlier staged in a play "Mohammed Bhai Ki Dushman".
(f) An inter zonal festival 'Maru se Sagar Tak' — (Bharat Milan) intended to celebrate at once the diversity and the continuity of traditions of India was held over 3 weeks. 300 performing artistes/artisans representing all the Zonal Cultural Centres participated in the festival at Jaipur, Ajmer, Pali in Rajasthan, Gandhinagar, Ahmedabad, Baroda and Surat in Gujarat, Daman and Panaji in Goa.

NORTH EAST ZONE CULTURAL CENTRE, DIMAPUR

9.14 (a) The Centre in collaboration with EZCC and the cooperation of the Government of Mizoram organised the NEHU function at Aizwal (Mizoram) over 2 days.
(b) The May Festival, 1988 was organised at Dimapur connected with the Moatsu festival of Ao tribes of Nagaland. 630 artistes participated in the festival.
(c) A Pop Music Festival was held at Dimapur at the instance of the Director General of Festival of India. Tribals from Nagaland participated in this function.

financial assistance to well-established institutions in the field of performing arts. 53 institutions are in receipt of financial assistance under this Scheme during 1988-89.

The second scheme provides assistance to professional groups and individuals for specified performing arts, projects, dramatic groups, music ensembles, orchestration units, children's theatres, puppet theatres, socio-artists and all types of performing arts are considered. About 97 groups and individuals are in receipt of financial assistance on a non-recurring ad-hoc basis under this scheme during 1988-89.

Community Singing Programme

9.7 To promote national and emotional integration through community singing various camps are being organised in different parts of the country since 1982. The National Council of Educational Research and Training (NCERT) is implementing this Scheme. During 1988-89 NCERT intends to hold 24 regional level camps, and 4 national level camps.

Grants to Cultural Organisations

9.8 Financial assistance is being given to institutions of all India character, engaged in the development of cultural activities, to meet part of their expenditure on maintenance and developmental activities. The institutions assisted include the Ramakrishna Mission Institute of Culture (Calcutta), Institute of Historical Studies (Calcutta), Numismatic Society (Varanasi), Bhartiya Vidya Bhavan (Bombay), and Institute of Traditional Culture (Madras).

Zonal Cultural Centres

9.9 The Seven Zonal Cultural Centres set up in the country during the years 1985-86 and 1986-87 have become fully operational. The Centres have put in nearly 3 years of creditable performance. Some of the more striking programme undertaken by the Zonal Cultural Centres during the year 1987-88 are as follows —

NORTH ZONE CULTURAL CENTRE, PATIALA

9.10 (a) The Himachal Utsav was organised at Shimla from 27.4.88 to 30.4.88. The Utsav was inaugurated by the Governor of Himachal Pradesh, Vice-Admiral Shri R.K.S. Gandhi and presided over by the Chief Minister of Himachal Pradesh, Shri Bir Bhadara Singh. About 400 artists from five States of the North Zone participated. The daily audience at all the venues ranged between 1,25,000 to 1,50,000.
(b) A pottery workshop was held at Gurgaon. It facilitated an exchange of ideas among the master craftsmen and an opportunity to the participating students to learn from the master craftsmen.
(c) The Centre participated in the Minjor fair at Chamba in Himachal Pradesh with a 15 member group of Ghoomar dancers from Haryana.
(d) A team of 52 artistes from J&K, Punjab and Haryana was sent to Cannanore (Kerala) for participation in the Inter Zonal Cultural festival organised by the South Zone Cultural Centre.
(e) An International photographic exhibition was held at Quila Mubarak from 5.9.88 to 11.9.88 and a Terracotta exhibition at Gurgaon from 5th to 11th September, 1988.
(f) A 25 day children's design workshop was held at Patiala on the following — paper cutting, terracotta, fabric painting, mask making and poster card making.
(g) A major festival-Haryana Utsav was organised from 23.10.88 and covered four districts before finally converging at Rohtak. About 210 artists from the states of J&K, Punjab, Haryana, Himachal Pradesh, Rajasthan participated in the Utsav.

SOUTH ZONE CULTURAL CENTRE, THANJAVUR

9.11 (a) Dweep Mahotsava was organised at Andaman and Nicobar Islands in collaboration with the East Zone Cultural Centre in which 250 artistes participated in the festival.

(a) Study and research of all aspects of cultural heritage
(b) Collection of objects of art and craft and documentation of cultural artifacts including folk, music, dance and literature;
(c) Dissemination through audio-visual programmes of art and culture
(d) Training in traditional and folk art; and
(e) Assisting and setting up of museums and libraries of Himalayan Culture.

This scheme is being implemented for long term programmes by the Rashtriya Manav Sangrahalaya and for short term programmes by the Department of Culture.

The two schemes have now been circulated amongst all the State Governments/Union Territories and the U.G.C. advising them to obtain the applications, from the eligible organisations, institutions and the same is forwarded to the Department of Culture along with their recommendations. The following is the budget provision for the scheme during 1988-89:

I. Financial assistance for promotion of Tribal/Folk Arts	— Rs. 45 lakhs
II. Financial assistance for preservation and promotion of Himalayan Art and Culture	— Rs. 40 lakhs

Centre for Cultural Resources and Training

9.3 The Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) an autonomous body fully financed by the Government of India is responsible for propagation of culture among college and school students.

During the year the Centre organised six Orientation Courses in which 414 teachers were trained from different States and Union Territories. For teachers and students, various workshops were organised in different parts of India.

Five programmes were conducted to train teachers in Puppetry for Education, 400 teachers took part. Under the programme "Teacher Educator and Education Administrator" six seminars with 180 teachers were organised. A special programme for American school teachers and college teachers on "Ancient and Modern India" was also organised in July-August 1988.

9.4 The CCRT has taken up five schemes connected with the Programme of Action under the New Education Policy. Educational facilities to over two thousand school students to study "India's Artists Heritage in museums visits to important historical monuments were provided. Various art forms in slides, photographs and recordings were documented.

300 cultural kits comprising colour slides, cassettes, books and equipment were freely distributed to schools where teachers had been trained in the Orientation Course.

The scheme "Cultural Talent Search Scholarship" provides facilities is outstanding young students in the age group of 10-40 years. The Centre selected 300 candidates for Scholarship from different parts of India. In all, over 1122 students are receiving Scholarships under the scheme.

Building Grants to Cultural Organisations

9.5 The object of the Scheme is to give grants to voluntary cultural organisations for construction of buildings and purchase of equipment. The Scheme covers organisations (other than religious institutions, public libraries, museums, municipalities, schools, universities and institutions fully financed by the Central/State Governments) exclusively working in the fields of dance, drama, music, fine arts, Indology and literature.

Applications were invited from cultural institutions through State Governments for giving grants for construction of buildings and purchase of equipment. Grants were sanctioned to 11 organisations.

Financial Assistance to Dance, Drama & Theatre Ensembles

9.6 Two schemes of financial assistance are in operation. The first scheme provides for

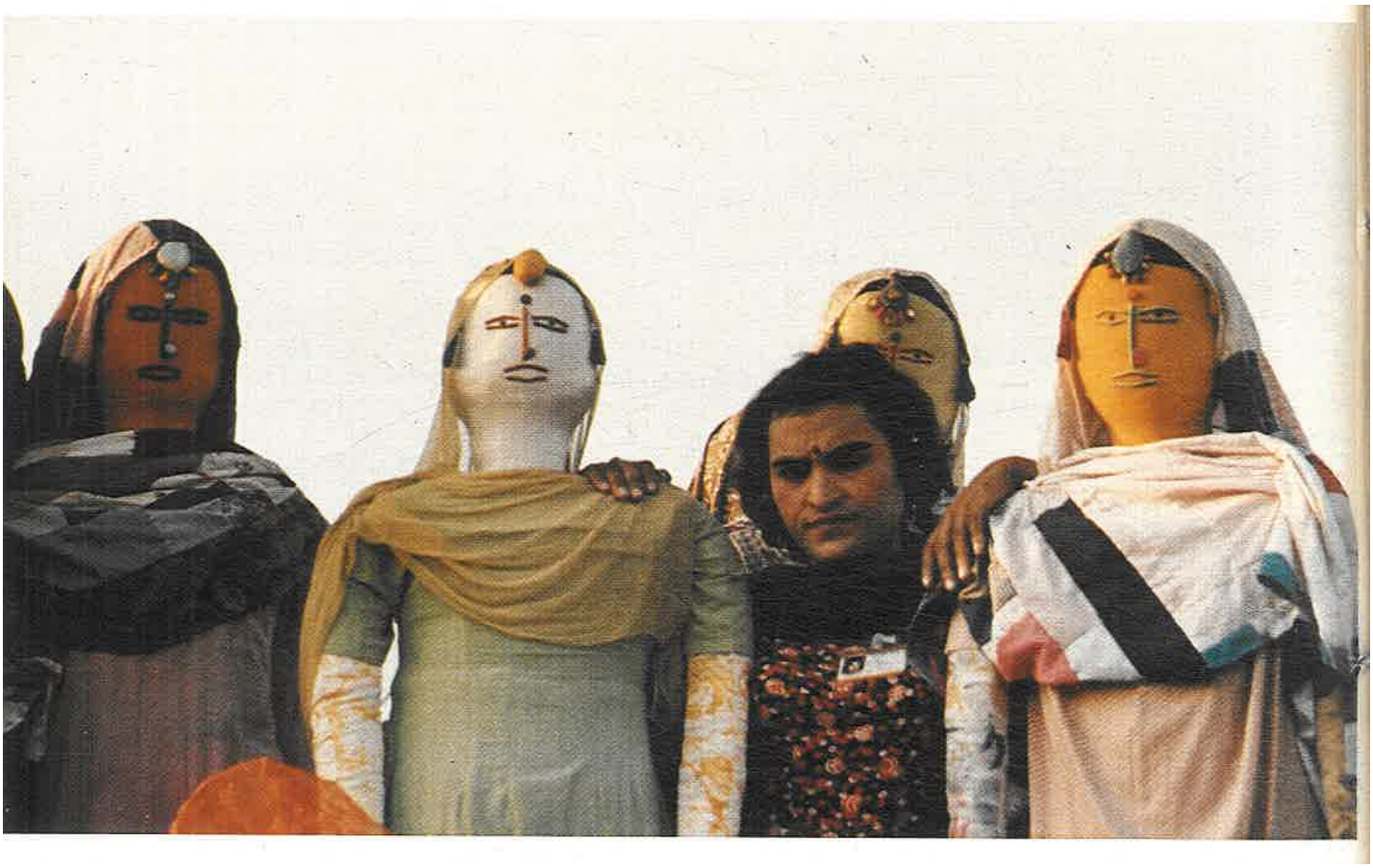

exhibitions to be organised on days of national importance will seek to depict Gandhian message through paintings, charts, writings and quotations.

CHILDREN'S CORNER

11.4 A Children's Corner is being set up in the Gandhi Darshan complex, like the one that existed in Gandhi Darshan during the Centenary year 1969.

The Gandhi Smriti and Darshan Samiti exhibition consists of five theme pavilions and two galleries. It is now proposed to make certain additions and alterations in the display arrangements of the pavilions with a view to make them more relevent, meaningful and educative, all the while retaining their original theme.

Huen T-Sang Memorial Hall

11.5 The proposal for the merger of the Huen-T-sang Memorial Hall at Nalanda constructed by the Government with the Nav Nalanda Mahavihara, Nalanda is under the consideration of the government of India in consultation with the Government of Bihar.

PANDIT
GOVIND BALLABH PANT

DR. S.K. SINHA

MAULANA
ABUL KALAM AZAD

K.M. MUNSHI

DR. S. RADHAKRISHNAN

SANKARA JAYANTI
MAHOTSAVA

CHAPTER 12

Centenaries and Anniversaries

12.1 One of the important activities undertaken by the Government of India since Independence has been the commemoration of the anniversaries of distinguished Indians, who have left an indelible impression on the history and life of our country. Independence gave the means and the opportunity for the Government to bring into focus the valuable contribution that such men and women have made for the enrichment of the socio-political landscape of our sub-continent. Three important aims are sought to be achieved through such programmes. The first is to bring to light in detail the life and activities of such outstanding personalities and through them inform the world about the ideas and ideals they stood for and their relevance to India through the ages. The second is to create and arouse in the younger generation of our own country an awareness of our heritage and to re-interpret through these programmes, the cultural and spiritual values India stands for. Finally, these programmes seek to promote international understanding through the inclusion of commemoration/celebrations of noted personalities of other countries in the world community.

12.2 National Committees are set up for the centenaries/anniversaries which are considered to be of such importance. Year long programmes are drawn up by the Committees for implementation during the centenary year. These programmes normally include organisation of national seminars, installation of statues, other functions, stamp release, publications and exhibitions.

The Department of Culture also provides financial assistance of registered voluntary organisations for celebrating the centenaries/anniversaries of outstanding personalities, which are not taken up for celebration by the Government of India.

CENTENARIES AND ANNIVERSARIES

12.3 The following important centenaries and anniversaries were taken up for celebration in 1988-89:

1. Pt. Govind Ballabh Pant Birth Centenary Celebrations.
2. Dr. S.K. Sinha Birth Centenary Celebrations.
3. Maulana Abul Kalam Azad Birth Centenary Celebrations.
4. K.M. Munshi Birth Centenary Celebrations.
5. Dr. S. Radhakrishnan Birth Centenary Celebrations.
6. Tri-Centenary of Raja Sawai Jai Singh-II
7. Rashtriya Sankara Jayanti Mahotsava.

National Committees have been set up under the chairmanship of the Vice-President of India to celebrate the centenary of Dr. S. Radhakrishnan and K.M. Munshi. National Committees for celebrating the Rashtriya Sankara Jayanti Mahotsava and the Maulana Abul Kalam Azad Birth Centenary have also been set up under the Chairmanship of the Prime Minister. The Department of Culture has also initiated steps to undertake the programme for celebrating the birth centenary of Khan Abdul Gaffar Khan.

FINANCIAL ASSISTANCE TO VOLUNTARY ORGANISATIONS FOR CELEBRATION OF CENTENARIES AND ANNIVERSARIES

12.4 Financial assistance to registered voluntary organisations include grants for celebrations of the 125th birth anniversary of Baba Allauddin Khan, 97th birth anniversary of Baba Saheb Dr. B.R. Ambedkar, 11th death anniversary of Late President Fakhruddin Ali Ahmed, death centenary of Nawab Wajid Ali Shah, centenary of Pt. Gauri Shanker Mishra, 101st birth anniversary of Ustad Hafiz Ali Khan, birth centenary of Tamil Poet Namakkal Ramalingam Pillai, birth centenary of Asaf Ali, birth centenary of Dr. S.D. Kitchlu, 107th birth anniversary of Prof. Puran Singh, 2nd centenary of Pt. Jugal Kishore Shukla, 150th birth anniversary of Bankim Chandra Chattopadhyay, birth centenary of Rajkumari Amrit Kaur, 125th death anniversary of Bahadur Shah Zafar.

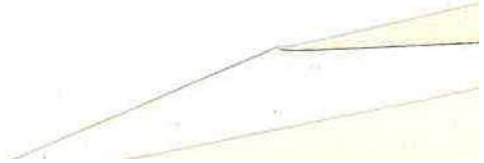

CHAPTER 11

Memorials

Gandhi Smriti and Darshan Samiti, New Delhi

11.1 The Gandhi Darshan Samiti was set up in 1969 as part of the Centenary Celebrations by the National Committee for Gandhi Centenary and the Gandhi Smriti Samiti was set up in 1973. The two Samitis were merged and taken over in 1984 by the newly established Gandhi Smriti and Darshan Samiti, a registered society under the Societies Registration Act.

OBJECTIVES

11.2 i) To acquire, maintain and preserve the personal papers and other historical materials pertaining to the life and works of Mahatma Gandhi.
ii) To preserve and maintain pavilions, Martyr's Column and ground of the Gandhi Darshan and Samiti complexes.
iii) To undertake activities through Gandhi Smriti and Darshan Samiti which will lead to greater understanding of Mahatma Gandhi's life, work and thought.
iv) To plan and carry on activities for the promotion of Mahatma Gandhi's ideals and of the national causes identified with him.

ACTIVITIES

11.3 The Samiti has organised periodical exhibitions, cultural and educational programmes, seminars, conferences, camps, publications, competition, debates and film shows on Gandhiji and other national leaders.

The Samiti is setting up an information and documentation centre and proposes to establish a complete reference library of Gandhian literature.

The Samiti proposes to publish lectures, monographs and so on, on Gandhiji and make them available to scholars, libraries and other interested parties.

It is proposed to draw up programmes exclusively for youth and children and there is a scheme "Taking Gandhi to Schools".

The Gandhi Smriti and Darshan Samiti have also envisaged a scheme for popularising Gandhiji through the supply of photographs to institutions whose aims and objectives are Gandhian in thought and action.

A photo-section is already functioning in the Samiti and the mobile and periodical

creative efforts or for revival of traditional forms of arts. 39 Senior and 57 Junior Fellowships were awarded.

Financial Assistance to Persons Distinguished in Letters, Arts and such other Walks of Life who may be in indigent circumstances

10.4 The Scheme provides for financial assistance to persons distinguished in letters and arts who may be indigent circumstances and are above 58 years of age. In certain cases their dependents who have been left unprovided for are also considered under the Scheme. Expenditure is shared by the Government of India and the respective State Governments on 2: 1 basis. In exceptional cases, the entire expenditure is borne by the Government of India. At present, there are 474 beneficiaries and 60 persons were selected in 1988-89.

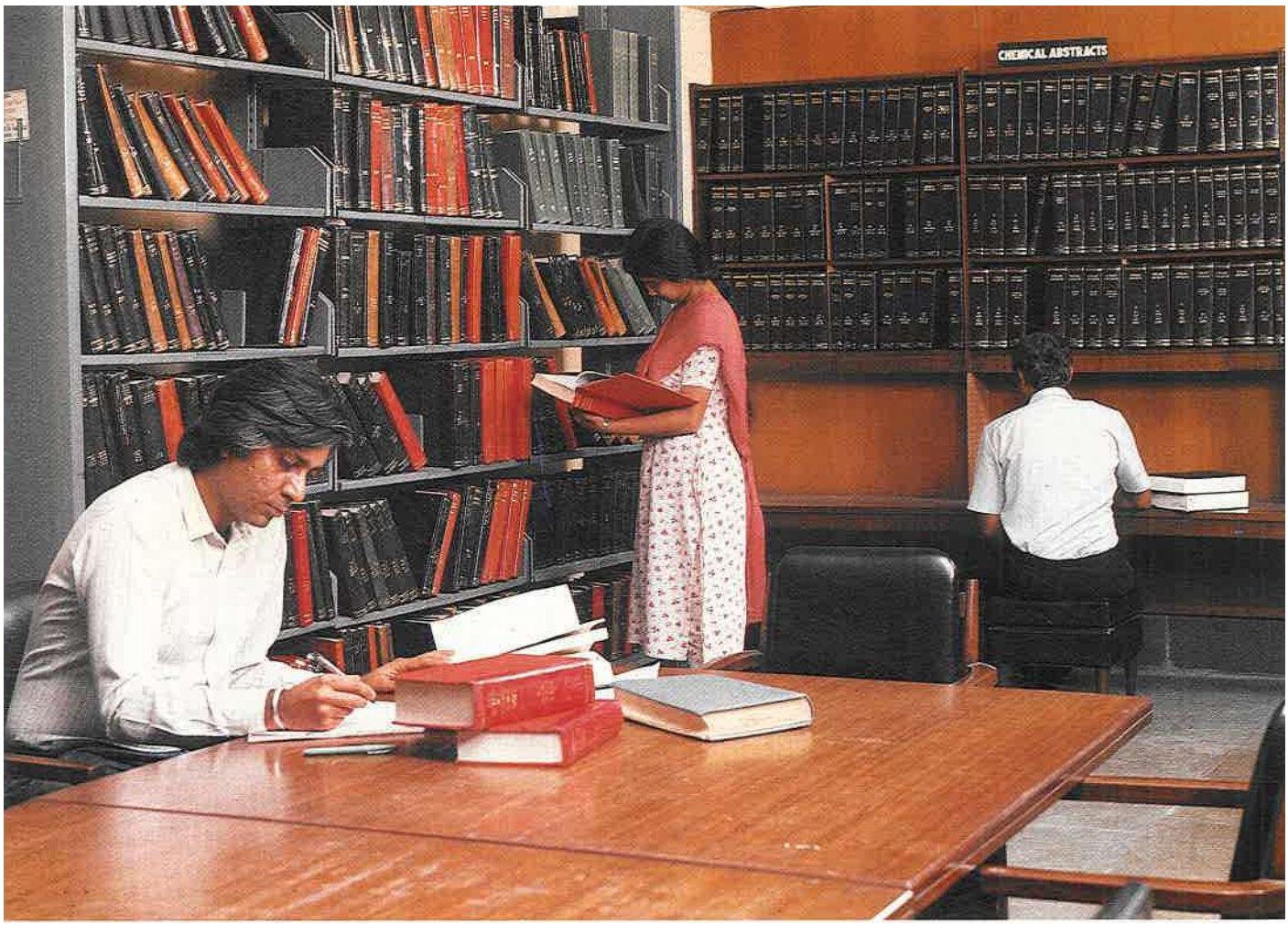
CHEMICAL ABSTRACTS

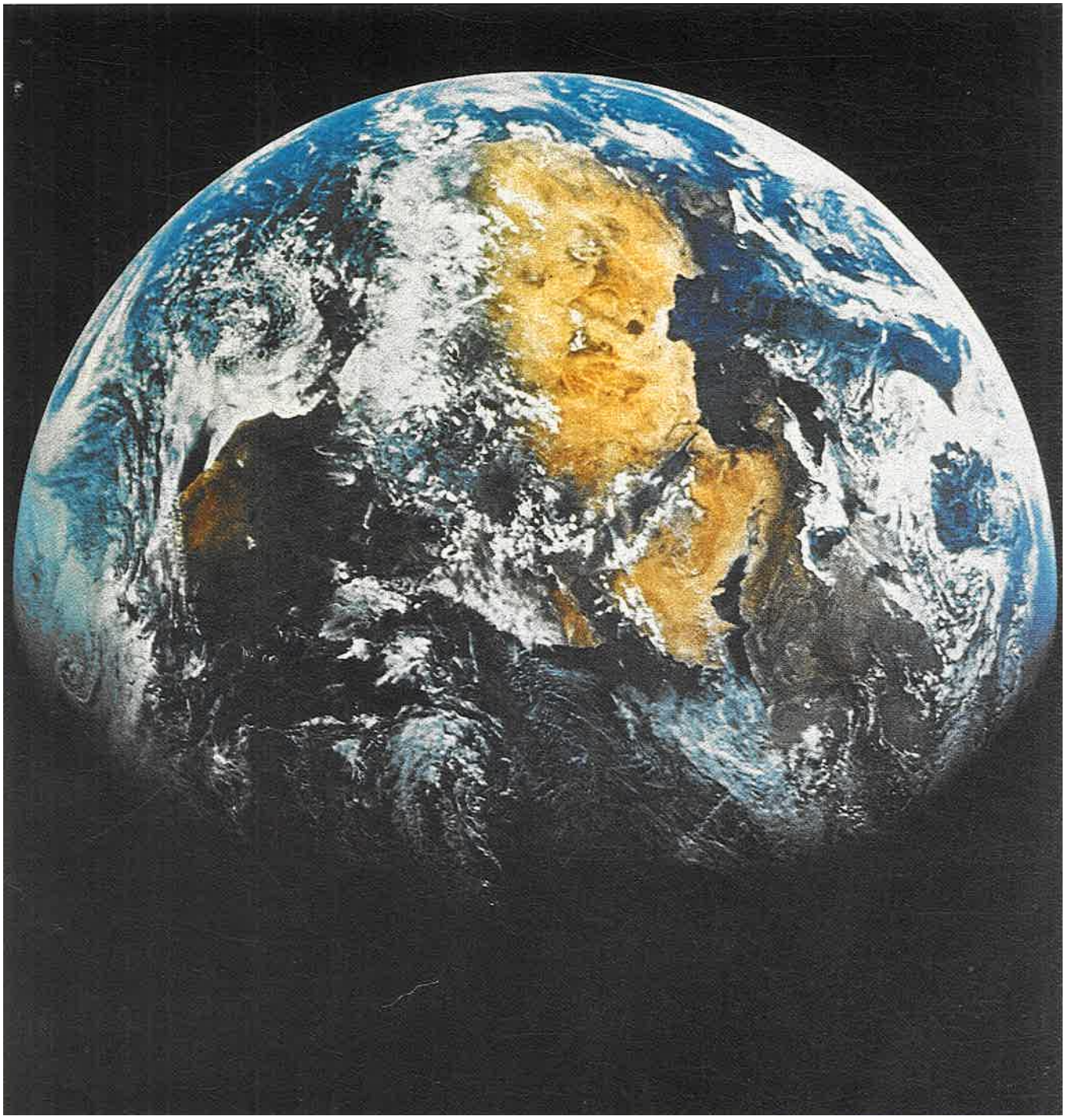

CHAPTER 13

Cultural Relations

Cultural Agreements/Cultural Exchange Programmes

13.1 Exchange in education, arts, science, technology and information are most useful for fostering and strengthening the spirit of international understanding between peoples and nations. There is an increased recognition among countries about the importance of such exchanges in building a stable world community and supporting social and economic development.

The Department of Culture has been actively pursuing a policy of cultural relations with many countries in the world and this forms an essential and viable part of India's total international efforts. From a small figure of 21 Cultural Agreements until 1970, the number has increased to 81 at present, including 3 Cultural Agreements signed this year with China, Pakistan and Djibouti.

Cultural Agreements lay down the broad principles of cooperation and are implemented through Cultural Exchange Programmes (CEPs), which specify the details of exchanges. These programmes are formulated and reviewed every 2-3 years. Efforts have been sustained, to develop within the framework of Cultural Agreements, regular programmes of exchanges with a number of countries. Their number is 56 at present, including 14 CEPs entered into/renewed this year with Algeria, Arab Republic of Egypt, Australia, China, Cyprus, Federal Republic of Germany, France, German Democratic Republic, Poland, Somali, Spain, Tunisia, Turkey and USSR.

13.2 In respect of countries with which regular programmes of cultural exchanges have not so far been evolved, bilateral cultural relations are maintained on the basis of ad-hoc cultural activities such as visits of performing troupes and offers of scholarships. Cultural presentations through performing delegations, exhibitions and exchange of scholars have played an important role in cultural projection and in creating a favourable environment in our overall external relations on a bilateral basis. However, our exchange programmes are new exploring new avenues and are not restricted to the standard pattern of students, teachers and art exchanges programmes. Many more areas of cooperation such as sports, media, academic links between institutions of higher learning in India and abroad, language study programmes, exchange of specialists, participation in conferences, professional and technical training, museology, and archaeology have been included. These programmes are proving invaluable in providing better international cultural relations.

13.3 In the development of Cultural Relations, goodwill visits at the highest level have been historically important. A 2-member delegation led by Shri M. Varadarajan, Secretary, Department of Culture visited Guyana in February, 1988 in connection with India's participation in the celebrations for the 150th Anniversary of Indian Immigration to Guyana. Shri L.P. Shahi, Minister of State for Education and Culture visited Japan during May, 1988. A high powered official delegation led by Shri P.V. Narasimha Rao, the then Minister of Human Resource Development and Shri L.P. Shahi, Minister of State for Education and Culture visited Bulgaria in June, 1988 for "Days of Indian Culture in Bulgaria".

Smt. Anshu Vaish, Deputy Secretary, Department of Culture visited Kabul as a member of the Indian delegation for attending the mid-term review meeting of the VIII Indo-Afghan Joint Commission on Economic, Technical and Trade Cooperation held during June, 988. Shri Man Mohan Singh, Joint Secretary, Department of Culture, visited Caire in October, 1988 for participation in the 2nd session of the Indo-Arab Republic of Egypt, Joint Commission. As a member of the Indian delegation seponsored by Ministry of External Affairs, Shri R.C. Tripathi, Joint Secretary, Department of Culture visited kathmandu during October, 1988 to attend the seventh meeting of the SAARC Technical Committee on Sports, Arts and Culture.

13.4 A Japanese delegation led by Mr. Takashi Jajima, Director General, Cultural Affairs Department in the Ministry of Foreign Affairs of the Government of Japan visited India in January, 1988 to attend a meeting of the Indo-Japan Commission. A US high level delegation led by Mr. John R. Hubbard, American Co-Chairman, Indo-US Sub Commission on Education and Culture visited India for the 14th Joint Meeting of the Indo-US Sub Commission on Education and Culture held in New Delhi. A 10-member Burmese cultural delegation led by the Burmese Minister for Culture and Information, Mr. U. Aung Kyaw Mying and also including the Burmese Deputy Minister for Home and Religious Affairs, Col. Khin Mung Wing visited India during April, 1988. A 2-member cultural delegation led by Mrs. Marcia Leyseca, Cuban Deputy Minister of Culture visited India during April-May, 1988 in connection with the celebration of Cuban Cultural Week in India. On an invitation from Minister of Human Resource Development, H.E. Mr. A. Parsuraman, Minister of Education, Art and Culture of Mauritius visited India. Mrs. A. Sendova, Chief of the Department of Developing countries in the Bulgarian Committee for Culture visited India in September, 1988 in regard to preparations for "Days of Bulgarian Culture in India". Mrs. Esteve-Coll, Director, Victoria & Albert Museum, London and Mr. Robert Skelton, Adviser, visited India during November, 1988.

13.5 The Cultural Agreement and the Cultural Exchange Programme for the year 1988-89 between India and China were negotiated, finalised and signed at Beijing at a visit of a 4-member Indian official delegation led by Secretary, Department of Culture in May, 1988. The Indo-Cypriot, Indo-Turkish and Indo-Tunis Cultural Exchange Programmes for the period 1988-90 were signed in June, 1988 at Nicosia, Ankara and Tunis respectively during the visit of the Indian delegation led by Joint Secretary, Culture. Cultural Exchange Programmes between India and Spain and India and the Federal Republic of Germany for 1989-91 were signed in September, 1988 on the visit of an Indian delegation led by Joint Secretary, Department of Culture. H.E. Mr. Bensmail Mehdi, Director, Ministry of Higher Education, Government of Algeria visited India in March, 1988 and signed an Indo-Algerian Cultural Exchange Programme for 1988-90 in New Delhi. The Cultural Exchange Programme for the year 1988-90 between India and the German Democratic Republic was signed in New Delhi; Indo-French Cultural Exchange Programme for the year 1988-89 was signed in New Delhi in July, 1988. A Cultural Exchange Programme between India and the Arab Republic of Egypt and the Indo-USSR Cultural Exchange Programme for the years 1989-90 was signed in New Delhi. The Indo-Australian Cultural Exchange Programme for 1989-91 was finalised and signed in New Delhi during November, 1988. A Chinese delegation led by Mr. Liu Deyou, Vice Minister of Culture, China visited India during December, 1988 for finalising Indo-China Cultural Exchange Programme for the years 1988-1990. Mr. Ferenc Ratkai, Deputy Minister for Culture and Education of the Hungarian People's Republic and a 3-member Czech. delegation led by Mr. Machal Klepac, Director of Foreign Relations Department visited India in November, 1988 and December, 1988

respectively, for reviewing the implementation position of their Cultural Exchange Programmes with India.

13.6 The Indo-Bulgarian Cultural Exchange Programme for 1987-1989 envisages the organisation of manifestations. As follow up, an Indian cultural manifestation, known as the 'Days of Indian Culture', was organised in Bulgaria from 25th June to 2nd July, 1988.

The return Bulgarian cultural manifestation, known as the 'Days of Bulgarian Culture' in India, was organised by the Department of Culture from 5th to 12th January, 1989. Collectively the manifestation involved, besides the Department of Culture, Indian Council for Cultural Relations, Sahitya Akademi, Bal Bhawan, National Gallery of Modern Art, Directorate of Film Festival, National Council of Science Museums, Development Commissioner (Handicrafts), Lalit Kala Akademi and School of planning and architecture. The following events constituted the manifestation:

Pop group, puppet theatre, rhythmic gymansts, Trakia Folklore Ensemble and the Dimov Quartet.

There were besides — meeting of Indian and Bulgarian writers/poets; an exhibition of Bulgarian books, gramophone records and photographs and childrens' paintings; treasures from Bulgaria (bronze sculptures from the Roman age in Thrace (I-IV c); a week of Bulgarian cinema, an exhibition of Bulgarian handicrafts and works of Bulgarian women artists; an exhibition of ancient and contemporary architecture of Bulgaria.

SOUTH ASIAN ASSOCIATION FOR REGIONAL COOPERATION
TECHNICAL COMMITTEE ON SPORTS, ARTS AND CULTURE

13.7 The seventh meeting of the Technical Committee on Sports, Arts and Culture of the South Asian Association for Regional Cooperation was held at Kathmandu on October 28-29, 1988.

PRESENTATION OF BOOKS, ART OBJECTS AND ESSAY COMPETITIONS

13.8 Considering that books, art objects and essay competitions are important aspects for the promotion and better understanding of life and culture of India, the Department of Culture continued to provide funds to the Indian Council for Cultural Relations for presentation of books and art objects to foreign governments, organisations, libraries and individuals and for organising essay competitions abroad through the Indian missions.

INDO-FOREIGN FRIENDSHIP SOCIETIES

13.9 The Indo-Foreign Friendship Societies provide useful avenues for the promotion of Indian cultural abroad. These societies organise activities such as lectures, festivals, exhibitions and performances by Indian artistes. Some of these societies also maintain small libraries and reading rooms. The Department of Culture has been extending financial assistance to these societies on the recommendation of the concerned Indian missions abroad. The programme was continued during the year. Besides assistance to these societies, grants were given to a few selected Indian missions to encourage cultural activities among the local population of Indian origin.

MAISON DE L'INDE

13.10 The Government of India had constructed an Indian student's hostel in the campus of the Cite Universite Paris and donated it to the University in 1960. The hostel known as 'Maison de L'Inde' has accommodation for about 104 students. Its management has been retained by India. The Government of India meets the deficit in the running of the hostel each year. In 1988-89, the Government remitted Rs. 1.38 lakhs towards meeting the deficit.

CHAPTER 14

Festival of India

14.1 In July 1988, the curtain came down on the year long Festival of India in the USSR. The scale of the Festival was gigantic, the largest ever Indian manifestation in any country of the world. 1700 performing artistes 20 exhibitions, 80 feature films, sports events and young people travelled through the Soviet Union to bring the Festival to the people in more than 80 cities.

The finest exponents of both Hindustani and Carnatic classical streams were featured. The performing arts programme included many manifestations from the folk traditions of India like the monastic dances of Sikkim, Theru Kootu, the street theatre of Tamil Nadu, Chakri and Teratalli from Rajasthan.

A number of exhibitions displaying classical and contemporary fine arts were held. The development of Indian sculpture and painting could be traced from 2500 B.C. to the 19th century in the Classical Art Exhibition. The Mysore and Thanjavur Schools of painting were also on display at another exhibition. Indian Decorative Arts and Jewellery, a third exhibition, displayed 200 objects in jade, glass, ivory, mother-of-pearl dating from the 16th to the 19th century. This exhibition opened in Leningrad.

Noted violinist, Dr. L. Subramaniam performed with the USSR T.V. and Radio Orchestra. His composition entitled 'Fantasy on' Vedic Chants received a standing ovation. A joint Indo-Soviet concert of music and dance by Pt. Ravi Shankar, Kumudini Lakhia and the Bakhor Dance Company of USSR was held at the Kremlin Palace of Congresses.

14.2 The Festival of the USSR in India also concluded on a grand note on the 19th November 1988 in the presence of Soviet President Mr. Mikhail Gorbachev and the President of India, Shri R. Venkataraman. The closing events included ice ballet, folk dances, ballet and orchestra of the Kirov Theatre and the Beryozka State Choreographic Company. During the year long Festival the art and culture of the USSR was presented in almost 100 cities and towns in India.

The Festival of India in Japan opened with a splendid concert on 15th April 1988 at the National Theatre, Tokyo. Present on the occasion were the Prime Minister of India, Shri Rajiv Gandhi and the Prime Minister of Japan, Mr. N. Takeshita.

One of the highlights of the six months Festival was the presentation of Peter Brook's "Mahabharat."

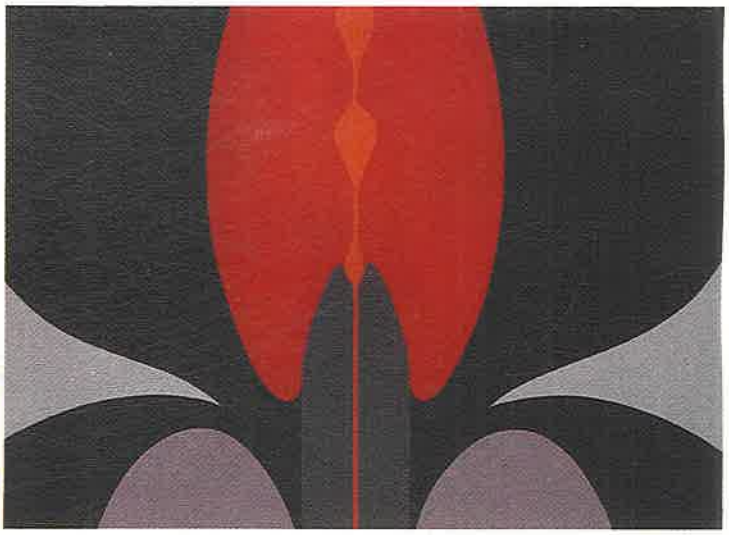

The National Museum, New Delhi participated in the Silk Road Exposition at Nara with 24 treasures drawn from Indian Museums on the theme of the Buddha.

A film festival of 25 Indian films in various regional languages proved to be most popular. These events covered more than 35 cities and towns of Japan.

14.3 During the year, steps were taken for the hosting of the Festival of France in India. The Festival was inaugurated with a spectacular laser show on Chowpatty beach in Bombay in the presence of the President of France, Mr. Francoise Mitterrand and the Prime Minister of India, Shri Rajiv Gandhi. Also, as part of the Festival, an exhibition of paintings entitled "Birth and life of Modernity" was presented at the National Gallery of Modern Art in New Delhi. The exhibits were drawn mainly from the Pompidou Museum and the Museum D'Orsey.

A number of cultural events including ballet, theatre, jazz and mime will be presented during the Festival of France in India. Exhibitions and a film festival are also on anvil.

The decision to hold a Festival of India in the Federal Republic of Germany was taken in a meeting between the Prime Minister of India and the Chancellor of the FRG in June 1988. Steps have been initiated for drawing up event for the holding of the Festival.

Arrangements have also been initiated for a Festival of Sweden in India in 1990.

CHAPTER 15

Other Activities

Progressive Use of Hindi

15.1 The Department of Culture was notified under Section 10(4) of the Official Language Rules, 1976, on the basis that 80% of the staff in the Department have a working knowledge of Hindi. The Annual Programme for the progressive use of Hindi has been received from the Department of Official Language and brought to the notice of all concerned.

15.2 This Department has its own Official Language Implementation Committee and a Joint Hindi Advisory Committee is being constituted for the departments of Culture and Arts. This Department was inspected by the officials of the Department of Official Language to monitor the extent of the implementation of the Official Language Rules. At the same time the subordinate offices under this Department at Leh, Calcutta, Hyderabad, Bangalore, Mysore, Madras, Trivandrum, Baroda and Port Blair were inspected by the Officers of the Department of Culture to monitor the progress made in the use of Hindi in their official work. This Department has a Hindi Translation Unit. There is, however, no unit to supervise the implementation work of the Official Language Policy of the Government of India. There is a proposal to constitute such a unit in this Department.

Meetings of Consultative Committee

15.3 The Consultative Committee of Parliament for the Ministry of Human Resource Development met six times between April, 1988 and February, 1989; officers of the Department of Culture also participated.

Financial Allocations (in lakhs of rupees) of items discussed in various chapters

Sl. No.	Item	Plan Non-Plan	Budget Estimates 1988-89		Budget Estimates 1989-90
			Original	Revised	
1.	Archaeological Survey of India	Plan	730.00	730.00	790.00
		Non-Plan	1900.00	1900.00	1995.00
2.	National Museum, New Delhi	Plan	180.00	162.00	205.00
		Non-Plan	94.17	121.67	135.80
3.	Indian Museum, Calcutta	Plan	65.00	53.00	95.00
		Non-Plan	55.00	67.00	75.00
4.	Salarjung Museum, Hyderabad	Plan	60.00	52.00	87.00
		Non-Plan	37.00	45.00	46.00
5.	Financial Assistance for Reorganisation and Dev. of Museums including Nehru Centre	Plan	100.00	100.00	100.00
		Non-Plan	1.70	1.70	1.80
6.	Victorial Memorial Hall, Calcutta	Plan	40.00	39.00	70.00
		Non-Plan	20.00	30.90	30.60
7.	Setting up of a Museum for Gem and Jewellery	Plan	—	—	—
		Non-Plan	1.00	1.00	1.00
8.	National Gallery of Modern Art, New Delhi	Plan	75.00	70.00	90.00
		Non-Plan	17.90	22.65	23.80
9.	Nehru Memorial Museum & Library, New Delhi	Plan	66.00	59.32	65.00
		Non-Plan	95.00	94.60	100.00
10.	Allahabad Museum, Allahabad	Plan	35.00	35.00	35.00
		Non-Plan	—	—	—
11.	National Council of Science Museums, Calcutta	Plan	618.00	318.00	650.00
		Non-Plan	203.47	208.00	217.00
12.	National Research Laboratory for Conservation of Cultural Property, Lucknow	Plan	60.00	58.00	70.00
		Non-Plan	17.75	17.75	19.20
13.	Inter-Museum Exchange of Exhibitions of Art Objects	Plan	5.00	5.00	5.00
		Non-Plan	—	—	—
14.	Anthropological Survey of India, Calcutta	Plan	90.00	77.00	100.00
		Non-Plan	186.50	194.50	206.50
15.	Rashtriya Manav Sanghrahalaya, Bhopal	Plan	150.00	140.00	175.00
		Non-Plan	—	—	—
16.	National Archives of India, New Delhi	Plan	159.00	109.00	165.00
		Non-Plan	161.55	166.93	174.75
17.	Khuda Baksh Oriental Public Library, Patna	Plan	25.50	25.50	27.00
		Non-Plan	12.48	12.92	15.23
18.	T.M.S.S.M. Library	Plan	15.00	15.00	24.00
		Non-Plan	—	—	—
19.	Rampur Raza Library, Rampur	Plan	11.50	11.50	12.50
		Non-Plan	—	—	—
20.	Asiatic Society, Calcutta	Plan	59.00	59.00	65.00
		Non-Plan	45.00	44.54	54.72
21.	Central Institute of Buddhist Studies, Leh	Plan	50.00	50.00	57.00
		Non-Plan	30.58	30.58	33.00
22.	Central Institute of Higher Tibetan Studies, Varanasi	Plan	61.00	61.00	70.00
		Non-Plan	31.00	43.00	40.00
23.	Library of Tibetan, Works and Archives, Dharamsala	Plan	—	—	—
		Non-Plan	8.00	8.00	8.00
24.	Sikkim Research Institute of Tibetology, Gangtok	Plan	—	—	—
		Non-Plan	6.00	6.00	6.00
25.	Financial Assistance for Development of Buddhist & Tibetan Organisations	Plan	50.00	25.00	55.00
		Non-Plan	—	—	—

Sl. No.	Item	Plan Non-Plan	Budget Estimates 1988-89		Budget Estimates 1989-90
			Original	Revised	
26.	National Library, Calcutta	Plan	102.00	77.35	140.00
		Non-Plan	194.46	206.80	232.56
27.	Central Reference Library, Calcutta	Plan	12.00	5.00	12.00
		Non-Plan	18.40	21.90	24.00
28.	Central Library, Bombay	Plan	5.00	1.00	5.00
		Non-Plan	5.00	6.75	7.00
29.	Central Sectt. Library, New Delhi	Plan	18.00	18.00	21.00
		Non-Plan	1.90	2.00	2.05
30.	Delhi Public Library, Delhi	Plan	55.00	55.00	65.00
		Non-Plan	69.50	69.50	85.35
31.	Connemara Public Library, Madras	Plan	—	—	—
		Non-Plan	7.00	5.00	7.00
32.	Raja Rammohun Roy Library Foundation, Calcutta	Plan	140.00	140.00	180.00
		Non-Plan	12.50	12.50	13.00
33.	Indian Council of World Affairs Library, New Delhi	Plan	6.00	4.00	6.50
		Non-Plan	2.50	2.50	2.00
34.	Sahitya Akademi, New Delhi	Plan	100.00	98.86	120.00
		Non-Plan	53.00	47.94	53.00
35.	Sangeet Natak Akademi, New Delhi	Plan	100.00	112.00	140.00
		Non-Plan	67.00	71.00	81.00
36.	Lalit Kala Akademi, New Delhi	Plan	100.00	100.00	120.00
		Non-Plan	71.00	68.90	96.85
37.	National School of Drama, New Delhi	Plan	73.00	73.00	98.00
		Non-Plan	42.00	42.00	50.00
38.	Establishment of National School of Hindustani Music, Jaipur	Plan	2.00	—	1.00
		Non-Plan	—	—	—
39.	Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi	Plan	81.00	81.00	110.00
		Non-Plan	25.00	25.00	30.00
40.	Building Grants to Voluntary Cultural Organisations	Plan	30.00	20.00	50.00
		Non-Plan	15.00	10.00	15.00
41.	Financial Assistance to Dance, Drama and Theatre Ensembles	Plan	30.00	30.00	75.00
		Non-Plan	35.00	35.00	35.00
42.	Art Exhibitions (Festival of India)	Plan	—	—	—
		Non-Plan	1000.00	1000.00	550.00
43.	Shankar's International Children Competition	Plan	—	—	—
		Non-Plan	1.75	1.75	1.75
44.	Development of Cultural Organisations	Plan	5.00	5.00	5.00
		Non-Plan	—	—	—
45.	Cultural Organisations in India	Plan	20.00	20.00	35.00
		Non-Plan	15.00	15.72	16.25
46.	INTACH	Plan	—	—	—
		Non-Plan	100.00	100.00	—
47.	Institutions & Individuals engaged in Literary Activities	Plan	—	—	—
		Non-Plan	1.40	1.40	1.40
48.	Hundred New Festivals	Plan	20.00	—	20.00
		Non-Plan	—	—	—
49.	Cultural Camps & National Festivals	Plan	40.00	195.27	35.00
		Non-Plan	—	—	—
50.	Financial Assistance for promotion of Himalayan Arts	Plan	40.00	20.00	40.00
		Non-Plan	—	—	—
51.	Financial Assistance for promotion of Tribal Folk Arts	Plan	45.00	45.00	50.00
		Non-Plan	—	—	—
52.	Project for interlinking of Culture with Education Mass-media etc.	Plan	30.00	30.00	50.00
		Non-Plan	—	—	—

Sl. No.	Item	Plan Non-Plan	Budget Estimates 1988-89 Original	Budget Estimates 1988-89 Revised	Budget Estimates 1989-90
53.	Enhancing the status of Artists	Plan	1.00	—	1.00
		Non-Plan	—	—	—
54.	Zonal Cultural Centres	Plan	1300.00	1300.00	100.00
		Non-Plan	—	—	—
55.	Central Board of Film Certification	Plan	5.00	5.20	5.00
		Non-Plan	41.12	47.75	45.67
56.	Censor Appellate Tribunal	Plan	—	—	—
		Non-Plan	2.00	1.27	2.00
57.	Scholarships to Young Workers in Different Cultural Fields	Plan	11.00	11.00	14.00
		Non-Plan	—	—	—
58.	Award of Fellowships to Outstanding artists in the fields of Performing, Literary and the Plastic Arts	Plan	12.50	9.80	15.00
		Non-Plan	2.00	2.00	3.00
59.	Scheme of Financial Assistance to the Persons in the Letters, Arts & such other walks of life who may be in indigent circumstances	Plan	10.00	4.00	12.00
		Non-Plan	8.00	2.00	2.00
60.	Emeritus Fellowships	Plan	4.50	8.00	5.00
		Non-Plan	2.00	7.00	8.00
61.	Gandhi Smriti & Darshan Samiti	Plan	10.00	10.00	10.00
		Non-Plan	35.00	35.00	36.00
62.	Integrated Development of Nav Nalanda Mahavihara & Huen-T-Sang Memorial	Plan	2.00	—	1.00
		Non-Plan	—	—	—
63.	Development & Maintenance of National Memorials	Plan	—	—	—
		Non-Plan	50.00	50.00	50.00
64.	Centenaries/Anniversaries	Plan	—	—	—
		Non-Plan	50.00	40.00	50.00
65.	Exchange of visits of Archivists, Museologists Librarians etc.	Plan	1.00	1.00	1.00
		Non-Plan	—	—	—
66.	International Cultural Activities	Plan	—	—	—
		Non-Plan	12.00	12.00	12.00
67.	Presentation of Books & Art Objects	Plan	—	—	—
		Non-Plan	20.00	20.00	20.00
68.	International Co-operation & World Heritage Fund	Plan	—	—	—
		Non-Plan	3.00	2.45	2.70
69.	Delegations	Plan	—	—	—
		Non-Plan	6.00	6.00	6.00
70.	Travel Subsidy, TA/DA & Other Items	Plan	—	—	—
		Non-Plan	8.27	9.93	9.42
71.	Centre for South East Asian Studies	Plan	1.00	—	5.00
		Non-Plan	—	—	—
72.	Secretariat of the Department of Culture	Plan	20.00	16.20	25.00
		Non-Plan	150.00	156.70	173.60

Statement showing the names of private and voluntary organisations which received recurring grant-in-aid of Rs. 1.00 lakh and more from the Ministry of Human Resource Development (Department of Culture) during 1987-88.

Sl. No.	Name of the private and voluntary organisation with address	Brief activities of the organisation	Amount of recurring grant-in-aid released during 1987-88 (Rs.)	Purpose for which the grant was utilised	Remarks
1.	Central Library, Town Hall, Bombay (Maharashtra)	Maintenance of Delivery of Books Act Section of the Asiatic Society of Bombay	5,00,000	Maintenance of Delivery of Books Act Section of the Library	Grant is released on the recommendation of the State Government on matching basis.
2.	The Ramakrishna Mission Institute of Culture, Gol Park, Calcutta (West-Bengal).	Promotion of thought, knowledge and education	39,41,000	Annual Maintenance, maintenance and development of Library, maintenance of buildings and plants etc.	
3.	Library of Tibetan Works and Archives, Dharamsala District, Kangra (Himachal Pradesh)	To acquire and conserve Tibetan books and manuscripts, to provide intensive reference Centre for queries on Tibetan Source materials and to compile and publish catalogue of Tibet etc.	7,75,000	To meet expenditure on items like establishment, contingency, maintenance of buildings/books/manuscripts/equipment and furniture etc.	
4.	Shri Ram Bharatiya Kala Kendra, Copernicus Marg, New Delhi.	Dance, Drama and Theatre activities.	1,63,488	Salary, Maintenance, Establishment and Library Documentation,	
5.	Delhi Art Theatre, Flat, 36, Shankar Market, Connaught Place, New Delhi.	DO	2,65,000	DO	
6.	Triveni Kala Sangam, New Delhi.	DO	1,42,000	DO	
7.	Kalakshetra, Tiruvanmiyur, Madras (Tamil Nadu)	DO	3,19,00	DO	
8.	Darpana Academy of Performing Arts, Ahmedabad.	DO	1,99,000	DO	
9.	Ranga Sri Little Ballet Troupe, Bhopal (Madhya Pradesh)	DO	3,18,000	DO	

Sl. No.	Name of the private and voluntary organisation with address	Brief activities of the organisation	Amount of recurring grant-in-aid released during 1987-88 (Rs.)	Purpose for which the grant was utilised	Remarks
10.	Indian National Theatre, Bombay (Maharashtra)	DO	3,28,000	DO	
11.	Nandikar, Calcutta (West Bengal)	DO	1,62,500	DO	
12.	Manipuri Jagoi Marup, Imphal (Manipur)	DO	2,65,750	DO	
13.	Ballet Unit, Bombay (Maharashtra)	DO	2,10,000	DO	
14.	Naya Theatre, New Delhi	DO	1,20,000	DO	
15.	The Little Theatre Group, New Delhi	DO	1,60,000	DO	
16.	The International Centre for Kathakali, New Delhi	DO	1,40,750	DO	
17.	Yakshgana Kendra, Udipi (Karnataka)	DO	1,08,000	DO	
18.	Bhoomika, New Delhi	DO	1,47,000	DO	
19.	Shriram Centre for Art and Culture, New Delhi	DO	1,37,000	DO	
20.	ANK, Bombay	DO	1,15,000	DO	
21.	Kuchipudi Art Academy, Hyderabad	DO	1,62,000	DO	
22.	Little Theatre (Balrangbhoomi), Bombay	DO	1,12,000	DO	
23.	Parvatiya Kala Kendra, New Delhi	DO	1,33,000		
24.	Brechtian Mirror, New Delhi	DO	1,26,750		
25.	Indian National Trust for Art and Cultural Heritage, 71 Lodi Estate, New Delhi	The organisation has been set up to create awareness among the people about their Cultural Heritage	1,00,00,000	To make Corpus Fund	

ORGANISATION CHART
DEPARTMENT OF CULTURE

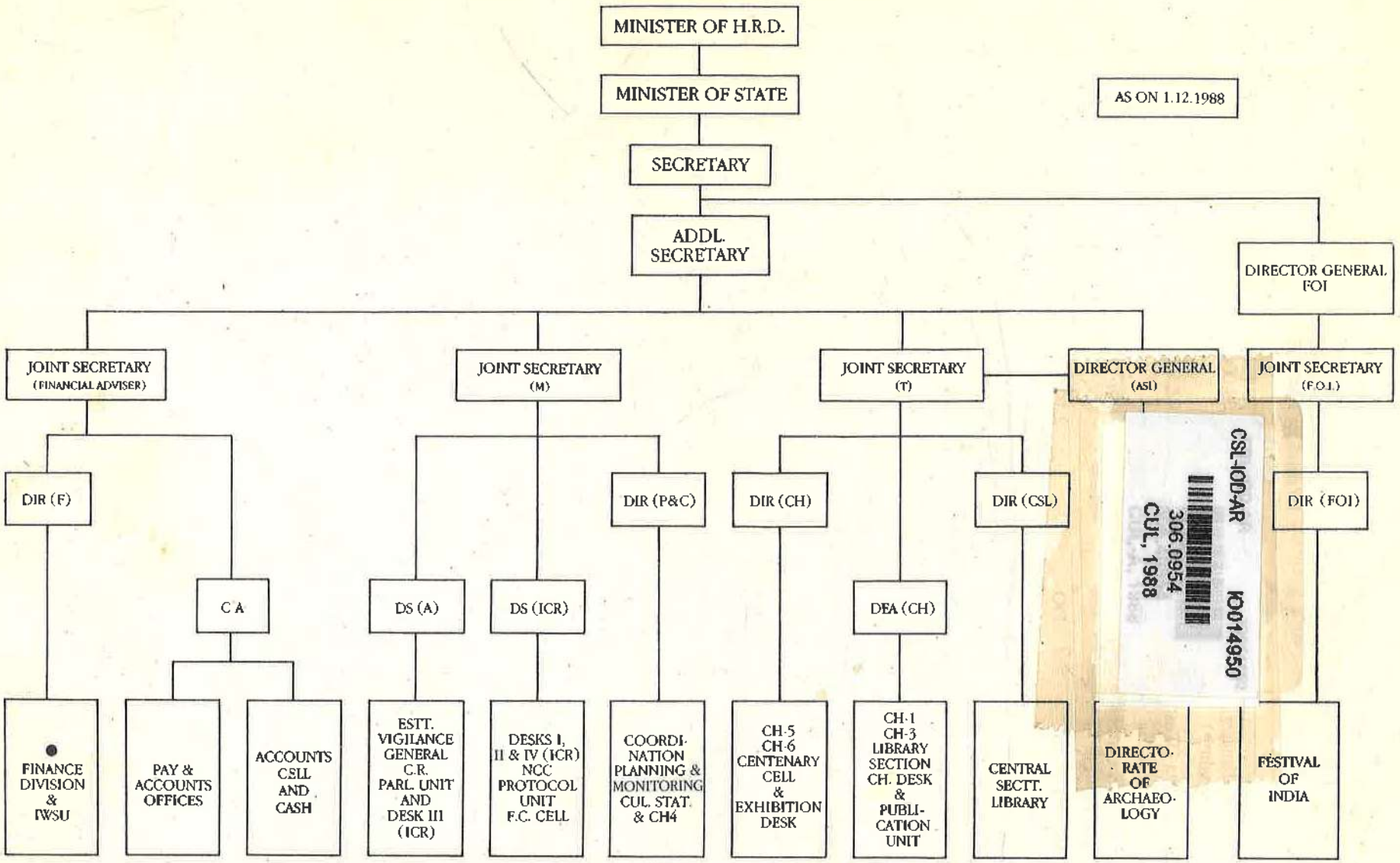

CSL-IOD-AR
306.0954
CUL, 1988
IO014950

LEGEND

•	COMMON TO THE DEPTTS OF EDU., CULTURE AND ARTS IN THE H.R.D.	CSL	CENTRAL SECTT. LIBRARY	A	ADMINISTRATION	NCC	NATIONAL COUNCIL OF CULTURE
IWSU	INTERNAL WORK STUDY UNIT	CA	CONTROLLER OF ACCOUNTS	CH	CULTURAL HERITAGE	P+C	PLANNING + COORDINATION
ASI	ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA	DIR	DIRECTOR	FC	FILM CERTIFICATION	FOI	FESTIVAL OF INDIA
		F	FINANCE	ICR	INTERNATIONAL CULTURAL RELATIONS	HRD	HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT